विश्वकर्मा शिल्पसागर दुर्गादास कृत सूचीपत्र ।

पृष्ठ	विषय
१	विज्ञापन
३	धन्यवाद
५	भूमिका
	प्रथम काण्ड ।
७	विश्वकर्मा जी का ध्यान
९	वन्दना गणनायक, विश्वविराट, विश्वकर्मा, विष्णु, गौरीशंकर, सूर्य देवता, हनुमानजी, सरस्वतीजी, व तुलसीदासजी, श्री गुरू स्वामी, श्रीमहाराजाधिराज राज राजेश्वर जार्ज पंजम और श्री महारानी क्वीन मेरी, स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी, निज पिताजी और सज्जन जन की वन्दना
	प्रारम्भ कथा संग्रहीत भविष्यपुराण पाण्डव कुल के राजा सतानीक और सुमन्त्र मुनि का सम्वाद
२१	सृष्टि रचना
२५	धर्म चारो वर्ण के
२६	द्विजाति संस्कार
२९	उपनयन संस्कार
३३	वेदारम्भ
३७	ब्रह्मचर्य धर्म
४१	स्त्री लक्षण देख विवाह करना
५२	शुभाशुभ जगह देख स्थान बनाना
५५	गृहस्थाश्रम में अपने कुटुम्ब को स्त्री पुरुष सहित रक्षा करना और गृहस्थी का सामान पालन पोषण के वास्ते इकट्ठा करना
६९	अग्निहोत्र बलिवैश्य और इष्टदेव की पूजन
७१	पुरुष लक्षण परीक्षा
८४	गणपति चौथ व्रत महात्म और प्रयोग पूजा विधि
८९	भौम तथा मंगल गृह पूजन विधान

पृष्ठ	विषय
९२	षष्ठि व्रत और षडानन पूजन विधान और ब्राह्मण के लक्षण
१०१	नवग्रह पूजन हवन और समिध विधान और उनके फल
१०४	गर्भवास और मरण पश्चात् यमयातना और नर्क स्वर्ग के कर्म और उनके फल
१११	सप्तमी व्रत सूर्य्यपूजा विधान और स्वप्न परीक्षा
११५	शुभ और अशुभ कर्म और उनके फल
१२७	दान फल
१३०	तुलादान विधान और उसके फल
१३६	सदाचार विचार निरूपन
१४६	मरण समय ईश्वर का ध्यान कैसे करना
१५०	बावली कुआं तड़ाग बनवाने के जो धर्म हैं उनके फल पाना और वेदी रचना विधि
१५५	बाग बगीचा लगाना और उनके फल
१६०	गोदान विधान हल दान पृथ्वीदान और उनके फल
१६३	श्री विश्वकर्मा पूजा दान और व्रत फल
	दूसरा काण्ड ।
१७४	श्रीविश्वकर्माजी से सूर्य्य भगवान का तेज उतरना और अंग शुद्ध होना
१७८	सूर्य्यवंश और मगद्विज की उत्पत्ति
१८३	सूर्य्य भगवान और दूसरे देवतों का स्थान
१८९	श्रीकृष्णजी की स्त्री जाम्बवती के पुत्र साम्बु का सूर्य्य भगवान को तपकर आराधन करना
१९२	साम्बुका तपकर श्रीसूर्य्य भगवान की काठ की प्रतिमा बनाकर साथ विधि के मंदिर रचकर स्थापन करना और बिरवा काटने और मन्दिर बनाने की विधि
२०४	प्रतिमा स्थापन और वेदीरचना और मूर्ति स्थापन पूजा विधान

पृष्ठ	विषय
२१७	ध्वजा आरोपन विधान और उसका फल
२२१	मगद्विज सूर्य्य देवता के वंश उनका मान और पूजन विधान
२३८	अश्वनीकुमार को यज्ञ में भाग मिलना
२४३	कुशिक वंश पिप्पलाद ऋषिकी उत्पत्ति और शनिश्चर और भद्रा की कथा
२५२	पंचमीव्रत और नाग पूजा विधान सांपों की जाति नाम वरण और उनका विष और उनके काटे की दवा
२६५	राजों के नाम जितने २ दिन पृथ्वी पर राज्य किया
	तीसरा काण्ड।
२७०	रुढ़ि शब्द रथकारद्विजाति संज्ञामें माना गयाहै प्रमाण कत्यायन सूत्र में है और साकल दीपी ब्राह्मणों में सूत्रधार संज्ञा सूर्य्यवंश कहलाते हैं जिन्होंने साम्बु की आज्ञा से सूर्य्यरूप काठकी सूरति बनाकर पूजन किया
२७१	पूर्णमासी अमावस वर्षा ऋतु में विश्वकर्मा के वंश यज्ञोपवीत धारण कर यज्ञ हवन करैं और अपने व्याह के समय उपनयन संस्कार कर यज्ञ हवन करैं सूत्र हिरण्य केशके बैजंती टीका में प्रमाण देखो प्रथम पाद शास्त्र प्रदीपिका में स्वारथ पारथ मुनि ने कहा है सो देखो कल्पमुनि सूत्र में कौशिकमुनि कहाहै कश्यप संहिता में महीधर ने कहा है सो देखो
२७९	द्विजाति सूत्रधार को संध्या कर्म अधिकार लिखा है शुक्ल संहिता और यजुर्वेद में लिखा है विरचना धनुषबाण और विमान और यज्ञ में प्रवेश होना मंत्र भाग ब्राह्मण ग्रन्थ में लिखा है सो देखो सूर्य्यवंश और कौशिक गोत्र सूत्रधार द्विजाति कहलाते हैं रावण वेदभाष्य में लिखा है और अथर्वणवेद में भी लिखा है भरद्वाज और अत्रि मुनि शिल्प-

पृष्ठ	विषय
	कार संज्ञा में द्विजगोत्र कहलाये हैं सायणाचार्य कहा है और स्कंध पुराण में लिखा देखो
२७३	विश्वकर्म यज्ञ और त्वाष्टमेध रथकार और सूत्रधार को करना अवश्यहै प्रमाण ब्राह्मण में लिखा है ऋभु, विश्वरूप, और सुधन्वा इत्यादि हमेशा ये यज्ञ किया करतेहैं और ब्रह्मा के मुख से इनकी उत्पत्ति सृष्टि विचार वेद में लिखा है इसलिये अश्वलायण और काश्यपगोत्र कहलाते हैं
२७५	उपनयन कर ग्रहस्थ बन गुरू से विद्या पढ़ कृषीकर्म गोरक्षा और शिल्प कर्म करे प्रमाण देखो न्याय सुधा और अथर्वण वेद शोमनाथ कृत कौस्तुभ ग्रन्थ में लिखा सो देखो
२७६	अत्रिमुनि कुश और काश्य और सुमन्त इत्यादि विश्वकर्मा यज्ञ किया करते थे मनज मतंग स्कंध और अश्वनि और ककुहास यह सब द्विजवंशी कहलाये हैं एक समय गंगा के तट पर मुनीश्वर रुद्र यज्ञ करते थे वहां पर यज्ञ पात्र लेकर सूत्रधार कुंड के पास बैठे थे उस समय मुशलिन्द मुनि से किसी मुनिने पूछा कि यह सूत्रधार कौनवर्ण कहलाते हैं मुशलइन्द ने जवाब दिया कि यह यज्ञ पात्र इत्यादि लेकर यज्ञ में शामिल होकर यज्ञभाग पाते हैं और द्विज बंसी कहलाते हैं रघु और आरज और मतंग के रुद्र यज्ञ में से सूत्रधार कौशिक गोत्र प्रसिद्ध हुए देखो दूसरा अध्याय निरुक्त दीपिका ग्रन्थ में
२७७	त्वाष्टा विश्वकर्मा की कन्या सूर्य को ब्याही गई उससे अश्वनीकुमार मुनि पैदा हुए जिससे माहिष वंश चला कौशिक संहता में कल्प कौशिकाचार्य ने कहा है कि यह द्विजगोत्री कहलाते हैं
२७८	प्रभास अष्टम वसु के विश्वकर्मा पैदा हुए प्रभास की स्त्री का

पृष्ठ	विषय
	नाम अंगरिसी था और विश्वकर्मा की स्त्री का नाम कीरती था और विश्वकर्मा के पांच लड़के हुए जिनके नाम मनु, मय, त्वाष्टा, शिल्पक और दैवग मनु ने लोहार का काम किया और मय बढ़ई का काम किया त्वाष्टा ने कंस कार का काम किया और शिल्पक ने थवई का काम किया और दैवगने सुनार का काम किया यह लिंगेशिवागम ग्रन्थ और मार्तण्ड ग्रन्थ में देखो
२८४	ब्रात्यवर्ण शिल्पी वह कहलाते हैं जिनका जन्म विश्वकर्मा से और घृताक्षी से हुआ और ब्रात्य वर्ण कहलाये यह शिवपुराण में लिखा देखो वैद्य की उत्पति जो अश्वनीकुमार से पैदा हुए वह धन्वन्तर वैद्य कहलाये और धनन्तर और शूद्रा के समयोग से जो पैदा हुए वह सपेरे और तबलदार बनकटवा कहलाये यह सब ब्रह्मखण्ड में लिखा है देखो
२८५	अश्वनी कुमार और उनकी भार्या से जो पुत्र पैदा हुये वह यह हैं ककुहास, कश्यप, मारुत और अरण्य और दो लड़की जिनका नाम काष्ठी और कपालका था काष्ठी उद्वन्ता को व्याही गई जिससे काष्ठकेता पैदा हुआ और वही आयसा चार्य भी कहलाये और कपालिका कन्या से पैदा हुए नार्स और मेढ़ मेढने शूद्रा से प्रसंग कर नाक कान छेदने वाले सोनार पैदा किए और नार्स सुधर्मी स्त्री से अलकाकार पुत्र पैदा किया जिसने अलकापुरी बनाया यह सब सौनष जी ने शंकर दिगविजय में और सतदेव में लिखा देखो सात जन्म शुभ और अशुभ कर्म करने से ब्राह्मण शूद्र हो सकता है और शूद्र ब्राह्मण हो सकताहै इसको मनुस्मार्त में देखो
२८६	शिव वासुकि सम्वाद में लिखा है कि वासुकि ने गरुड़के भयसे शिवजी के पास जा प्रार्थना की तब शिवजीने आज्ञा

पृष्ठ	विषय
	दी की भारतखंडमें मेवाड़ देश चित्रकूटके पासहै तहां जाकर शिवलिंग स्थापन कर मेरी पूजन करो और उसके पास एक नगर बनाओ जिसमे अनेक तरह के ब्राह्मण को बसाकर शिव समान पूजो तब मैं प्रसन्न हो बरदान देऊंगा और उस नगर को तीन पुर नाम रख याने मथहर, भटहर, नागर नाम से जाहिरकरो जिसमें मथहर मेवाड़े द्विज दूसरानागर तीसरा मेवाड़े भटहार यह सब २४ गोत्रके द्विज कहलातेहैं और चौरासी पुरमें इनकी जीविका विप्र संज्ञा तीन भेद से कहलाते हैं यह कथा मार्तण्ड ग्रन्थ में देखो
२९०	भवन के सुत त्वष्टा भये त्वष्टा के शिल्पाचार्य भये उनके वंश में भरद्वाज भये भरद्वाज के वितथ भये और वितथ के पांच पुत्र भये उन पांचों पुत्रोंमें सुहोतार थे जिनसे कुश और काश्य भये काश्यका पुत्र जिसका नाम अपभ्रंस को काश है और सुहोतार का आपाभ्रंस सुतार हुआ जो काष्ठक्रियामें से प्रवीन रहे काशके बहुत भांति के ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जाति के पुत्र पैदा हुए ॥
२९३	राजा दशरथ ने जिस समय पुत्र हेतु यज्ञ किया और गुरु वशिष्ठ से प्रार्थना की कि यज्ञ वस्तु और यज्ञमंडक, बनाने के वास्ते कर्मकार बढ़ई रथकार को आज्ञा दीजिये बालमीकी रामायण और आदि पर्व भारत में लिखा देखो
२९४	बात स्कंध, बिशाख, काल, बिधाता, विश्वकर्मा और तुम्बरु और कालदन्त इत्यादि की उत्पत्ति कहीं २ बिना योनि के पैदाहोना कहा है सायण वेद भाष्य में लिखा है कि भृगुका अर्थ रथकार है और ऋग्वेद की रिचा में लिखा है जो शिल्पी विमान बना चलाते हैं उनकी सब मिल पूजन करो ऋग्वेद में लिखा है जो अग्नि से काम करता है वह बहुत

पृष्ठ	विषय
	ग्यानमान पूजनीय है नहुष और युधिष्ठिर के सम्बाद से मालूम होता है कि ब्राह्मण जाति से नहीं बल्कि कर्म से हो सकता है जो द्विज कर्म करे वह द्विज कहलाता है ब्राह्मण ग्रन्थमें लिखा है कि विश्वकर्मा के नाम बामदेव, पुरू, क्षेप, दीर्घतमा, अगस्त्य, बिश्वामित्र, कण्व, अत्रया, मधुछंदा, अरु, गोतम, क्षेया, परमेष्ठी, बशिष्ठ, भरद्वाज, बत्स, भारतबर, सुश्रुत और सर्वस्य, यह सब ऋषिगण विश्वकर्मा नाम से विख्यात भये हैं,
२९८	स्कंधपुराण और पद्मपुराण में उमा शम्भु सम्बाद देखो शिवजी कहते हैं कि मैं कर्त्ता जगत का हूं और मेरा कर्त्ता शिल्पी है मुझमें और शिल्पी में कुछ भेद न समझो शिवजी ने विश्वकर्मा से कहा कि मेरे निमित्त एक अद्भुद मन्दिर रचो जो बैकुंठ और स्वर्ग से अधिक शोभायमान हो उसी समय शिवजी विश्वकर्मा की पूजन अष्टाक्षर मंत्र से किया और विश्वकर्मा ने अपने पुत्रों को बुलाकर मन्दिर तयार किया उस समय शिवजी ने विश्वकर्मा की पूजन कर बरदान दिया कि तुम्हारी विनास कभी न हो और तुम्हारी सन्तान वृद्ध सिद्ध रहै जगमें जो कोई तुमको सुमिरैगा वह पद पद पर सुख पावेगा विश्वकर्मा ने और ब्रह्मा बिष्णु महेश में कोई फर्क न समझना चाहिये अत्रय, ब्राह्मण ग्रन्थ में लिखा देखो, अग्नि हवा और सूर्य्य की किरणों से विश्वकर्मा बंशियों का काम है शिल्पशास्त्र के उपदेशक बीसनाम से गिनाये गयेहैं मच्छ पुराण भृगु अत्रि, बशिष्ठ, बिशेखा, विश्वकर्मायम, नारद, शेष अग्निजित, इन्द्र, बिशालाक्ष ब्रह्मा, नंदीश्वर, शन्तकुमार, शौनक बसुदेव, गर्गाचार्य, कृष्ण, अनिरुद्ध, शुक्रदेव
	चौथा काण्ड ।
३०१	चतुर्थकाण्ड वेद शास्त्रोद्धृत प्रमाण श्री विश्वकर्माजी के और

पृष्ठ	विषय
	उनके शिष्य और सन्तानों के द्विजाति होनेका प्रमाण
	पान्चवां काण्ड ।
३७३	लंका पर रामादल की चढ़ाई के समय विश्वकर्मा के पुत्र नल नील का सेतु रचना
३७६	विश्व कर्मा का कुबेर पुरी और पुष्पक विमान बनाना वास्ते कुबेर जी के
३८२	कंस के मरने के बाद जरासंध के भय से श्रीकृष्णजी का समुद्र के टापूके बीच में विश्वकर्मा जी से दूसरी द्वारिका-पुरी बनवाकर सहित प्रजा के बासकरना
३९८	दारिद्र अवस्था में सुदामा का जाकर श्रीकृष्ण जी से मिलना और श्री कृष्ण जीका आज्ञादेना विश्वकर्मा जी को कंचन जड़ित सुदामापुरी बनाने को
	छठवां काण्ड ।
४१३	दुर्गादास कृत भजन संग्रह
	सातवां काण्ड ।
४४६	ब्रह्मा का बास्तु देवता को कायम करना मकान बनाने के लिये अच्छी बुरी जमीन सोधने की उपाय
४४६	चार रंग के फूल और ग्रहपति के बरण से जमीन सोधना चार रंग के फूल और ग्रहपति के रास से जमीन सोधना जिस जगह में बासना घी खून अन्न और सहत की मालूम हो ग्रहपति के बरण से सोधो जिस भुम्य में कुसा, पतावर, दूब, और कास पैदा हो मकान के बनाने के वास्ते शुभ है जिस जमीन की मट्टी मीठी, कसहली, खट्टी, चरफरी, हो चार बरणों को शुभ है ॥
	जिस जमीनपर मकान बनाना नियतकरै पहिले खेत बोवे फिर उस जगह गो बांधे और फिर बास्तु देवता की और अपने

पृष्ठ	विषय
	इष्टदेवता की पूजन कर मिस्त्री और ब्राह्मणों की पूजा करै और एक रात सहित अपने कुटुम्ब के जागरण कर भोर को मकान की रेखा करे रेखा करते समय ब्राह्मण बर्ण सिर छुवै क्षत्री छाती, वैश्य जांघ, और शुद्र पैर छूकर रेखा करे, और अंगुली से सोना चांदी मणि मोती दही फल फूल अच्छत छूकर रेखाकरे तो शुभहै यदि शस्त्रसे रेखाखींचे तो शस्त्रसे उसकीमृत्यु हो लोह से करे बन्धुवा हो भस्म से करे तो अग्नि भयहो तृण से करे तो चोर भयहो काष्ठसे करे तो राज भयहो टेढ़ी या बुरे रूप की पैरसे खींचे तो शत्रुभयहो चमड़ा कोइला वा हाड़ या दांतसे रेखा खींचे तो अशुभ है जो रेखा दहिनी ओर से बांई ओर को खींची जाय तो वह बैर करती है और बांई ओर से द- हिनी ओर की रेखा सम्पत देती है रेखा करने के समय थू- कना छींकना और कठोर बचन बोलना अशुभ है॥
४४७	अथबने घरके शुभ और अशुभ चिह्न कारीगर गौर से देखे और ग्रहपति बास्तु पुरुष के किस अंग पर स्थिथि और किस अंग पर स्पृश कररहाहै सूत फटकने के समय गदहा बोले तो जानों कि ग्रह स्वामी जहां बैठा हो उसके नीचे हड्डी गड़ी है॥ और सूतको कुत्ता सियार नाघजाय तोभी उस स्थान पर हड्डी जानै अगर पक्षी मीठे बोल से बोल रहा हो तो जहां ग्रहपति जिस बास्तु पुरुष के जिस अंग पर बैठाहो उसके नीचे धन या द्रव्य गड़ा समझै जब सूत पसारे और टूट जाय तो ग्रहपति की मौत हो अगर कील गाड़ती समय झुकजाय तो मिस्त्री की स्मरण शक्ति न रहै
	लाने के समय जल का कलसा कंधे से गिरजाय तो ग्रहपति के सिरमें रोगहो अगर कलसा, औंधा होजाय तो उसके कुल में लड़ाई हो अगर फूटजाय तो कोई मजूर की मौत है

पृष्ठ	विषय
	अगर हाथ से कलसा छूटपड़े तो ग्रहपति की मौतहो बुनियादी ईंट अग्नि कोन में पूजा करके स्थापन करे और इसीतरह खम्भे भी खड़े करे खम्भे को फूल माला और कपड़े से उढ़ा पूजन कर खड़ाकरे इसीतरह चौखट को भी खड़ा करे और खम्भे में द्वार के ऊपर पक्षी बैठाले अगर दरवाजा खड़ा करने के समय गिरजाय या ठीक खड़ा न हो तो ग्रहपति को वैसाही फलहो जैसा कि इन्द्र ध्वजाध्याय में शुभ अशुभ फल कहा है
	बस्तुको बराबर तौलमें रक्खे घटा बढ़ा कर न रक्खे अगर कोई दोष से बढ़ाना हो तो पूर्व या उत्तर में बढ़ावे अगर पूरब की ओर बढ़ा होतो दोस्तों से बैर हो और दक्षिण की ओर बढ़ा हो तो ग्रहस्वामी की मौत हो पश्चिम को बढ़े तो धन का नाश और उत्तर की ओर बढ़ने में चित्त में सन्ताप हो इसलिये अगर बढ़ाना हो तो पूरब या उत्तर को बढ़ावे ॥
	घरके ईसान कोन में देवता घर अग्नि कोन में रसोई घर नइऋत्यकोन में गृहस्थी की सामग्री रखने का घर और बायव्य कोन में धन और अन्न स्थापन घर घरके पूरबदिशा में जल रखने का हो
४४२	पूरब में स्नान घर अग्निकोन में रसोई घर दक्षिण में शयन घर और नैऋत्यमें शस्त्र घर पश्चिम में भोजन घर बायव्य में अन्न भंडार उत्तर में खज़ाना ईसान में देव मन्दिर पूरब और अग्निकोन के मध्यमें दही मथन घर अग्नि और दक्षिण और नइऋत्य में पाखाना नइऋत्य और पश्चिम के मध्यमें विद्या घर और पश्चिम और बायव्य के मध्य में रोदन घर बायव्य और उत्तरके मध्यमें भोग घर उत्तर और ईसानके मध्यमें फालतू चीजें रखने का घर यह सब सोलह घर बनाने चाहिये घरकी भीतकी

पृष्ठ	विषय
	मोटाई का परिमाण घरकी चौड़ाई के सोलहवे हिस्सेभर मोटी भीत होनाचाहिये यहईटके घरोंके वास्तेहै लकड़ीके घरोंमें कोई मोटाई का परिमाण नहीं लिया जाता राजा और और सर्दार के घरके दरवाजे की उचाई मकान की चौड़ाईके दसवां हिस्सा जोड़कर सत्तर और जोड़ो जितने अंक आवें उतनेही अंगुर ऊंचा दरवाजा रखना चाहिये और द्वार की ऊंचाई का आधा चौड़ाई रखनी चाहिये इसीतौर ब्राह्मण के घर की चौड़ाईका पांचवा अंस लेकर आधे फल को लेकर उसमें अट्ठारा अंगुल जोड़देवे दरवाजे की दोनो बाजू को साखा कहते हैं और उतरङ्ग और देहली और चौखट को उदुम्बर कहते हैं जितने हाथ दरवाजा ऊंचा हो उतनेही अंगुल मोटाई बाजूकी रखनी चाहिये और उसकी डेवढ़ी मोटाई उदुम्बर की रखनी चाहिये खम्भों के जड़ की मोटाई का बर्णन चतुरस्र होय तो रूचक कहलाता है और अष्टास्र होय तो बज्र कहलावे
	दरख्त काटने की रीति।
	जिस दरख्त में चिड़ियों के घोंसले हों और देवता के मंदिर के मरघटे के जिनमें दूध निकलता हो थैय, बहेड़ा, नीम, और अरल इन बृक्षों को छोड़ कर और बृक्षों की लकड़ी मकान में लगाना चाहिये दरख्त काटने के पेश्तर रात्रि को पूजन और बल देकर प्रभात समय प्रदिक्षणकर ईसान कोणसे उस बृक्षको काटे अगर वह बृक्ष उत्तर या पूरब दिशा में गिरे तो शुभ और लेने के योग्य है काटने के समय अगर काटने की जगह में (याने छेद में) पीले रंग का मंडल देख पड़े तो जानो कि इसके नीचे (गोह) रहती है अगर लालमंडल देख पड़े तो (मेढ़क) रहता है और नीलारंग देख पड़े तो सर्प रहता है और रक्तबरण का रंग देख पड़े तो

पृष्ठ	विषय
	गिरगटरहताहै मूंग या हरारंग देखपड़े तो दरख्तके नीचे पत्थर है और धूमला रंग देखपड़े तो मूषक रहता है अगर खड्ग का रंग देख पड़े तो जल है ऐसा मुंहसे काटने के समय कह देवे ॥
	राजवल्लभ के मुताबिक नापने की डोरी या (साधन) आठ प्रकार की होती है ।
	बिलस्त प्रमाण, मनुष्य हस्त प्रमाण, मूजकी डोरी, सूत की डोरी, साधनी, गज, दंड, सावल इत्यादि ॥
	पत्थर और ईंटके मकान बनानेमें महीनोंकाफल
	छप्पर और काठ के मकान बनाने के वास्ते नहीं कहा है लेकिन धनिष्ठा, और पंचक में काठ या घास का मकान न बनाना चाहिये ॥
४४९	मकान बनाने में तिथियों का फल एकादशी और त्रयोदशी शुक्लपक्ष की लेना शुभ है मकान का दरवाज बनाने में राशि सूर्य को देख कर दरवाजा रक्खें ॥
	चारों दिशा में मकान का दरवाजा रखने का विचार मकान और मंदिर बनाने का शुभा शुभ फल और मकान की आय निकालने की रीति यह है कि मकान की लम्बाई चौड़ाई से गुणा करो वही उसका पिंड भया उसमें आठ का भाग दो जो बचे सोई आय हुआ यानी १ एक बचे तो धुज कहलावे २ बचे तो धूम्र ३ बचे तो सिंघ ४ बचे तो श्वान ५ बचे तो वृष ६ बचे तो खर ७ बचे तो गज और ८ बचे तो ध्वांक्ष यह ८ आठ आय पूरब दिशा का सम्बन्ध अग्नि से और दक्षिण दिशा का सम्बन्ध नैऋत्य कोण जानना चाहिये ॥
	४ आयु याने ध्वज, सिंह, वृष, गज, यह शुभ कर्म करने के वास्ते मनुष्य को लाभदायी है और अधर्म कर्म या तामसी कर्म करने वाले मनुष्यों को ग्रह में खर, ध्वांक्ष, धूम्र, श्वान,

पृष्ठ	विषय
	ये चार आय निषिध मनुष्य के मकान के वास्ते शुभ हैं ॥ ब्राह्मण के घर में ध्वज, आय उत्तम है क्षत्रिय के घर में सिंह आय अच्छा है वैश्यों के घर में वृषभ फल देती है और शूद्रों के घर के वास्ते गज आय अच्छा कहा है ॥ ध्वज आय में अर्थ लाभ होताहै और धूम्र में संताप होताहै सिंह आय में अनेक प्रकार के भोग विलास होते हैं और श्वान आय में हमेशा झगड़ा रहता है और वृषभ आय में धन, धान्य, इकट्ठा होतीहै और ग्रधम आय, में स्त्री मरण होती है गज आय में कल्याण होताहै और ध्वांक्ष में मरणहोताहै ॥
४५०	देवता के मंदिर, राजों के महल, मूर्त्ति, या शिव लिंग, बनाने में वेदि, या मंडफ, या हवनकुंड, यज्ञशाला, पताका, क्षत्र, चामर, बावली, कुआं, तालाब, कुंड इत्यादि में ध्वज आय शुभ होताहै ॥
	सिंहासन, या पोशाक, गहना, मुकुट इत्यादि बनाने में ध्वज आय उत्तम कहा है अग्नि से काम लेने की जगह यानी रसोई घर सोनार, लोहार, ठठेरा, और हलवाई, भड़भूजा, इत्यादि की भट्टी बनाने के वास्ते धूम्र आय अच्छा है और अखाड़ा के वास्ते भी अच्छा है सिलाखाना बनाने में, राजा के सिंहासन और मकान में सिंह आय अच्छा है वेश्या तथा नट और नाचने वालों के और कुत्ता पालने वालों के घर और जिन लोगों का अन्न ग्रहण न कियाजाय उनके घर बनाने में श्वान आय अच्छा है ॥
	बाणिजकी दूकान, व्यापारकी मंडी, भोजन शालामें बैठने के, मंडफमें बैल और घुड़शाल तथा गोशाला, विद्याघर, बाजाघर और जितने बाजाहैं उनके बनाने में वृष आय शुभ कहाहै ॥ जितने कौम गधहा पालते हैं यानी कुम्हार धोबी इत्यादि

पृष्ठ	विषय
	उनके मकान बनाने में खर आयु शुभ है सन्यासी, गुसाईं, चैत्यशाला, मरघटा, और जैनियों का मन्दिर, कारीगरों के मन्दिर, ध्वांक्ष आय शुभहै इसलिये अपने २ कहेहुये बरणों के आय के मुताबिक कल्याण देनेवाली मकान की आय होती है मकानके दरवाजा जिस २ दिशामें हो उस उस दिशामें आयी स्थापन करने का फल याने पूरब दिशाके दरवाजे में ध्वज आय हो तो उत्तम है अग्निकोण के दरवाजे के मकानमें धूम्र आय, दक्षिणमें सिंह आय नैऋत्यकोण के दरवाजे में श्वान आय और पश्चिम दरवाजे में वृष आय वायव्यकोण में ग्रधम आय और उत्तर दिशा में गज आय ईशानकोण के दरवाजों में ध्वांक्ष आय करना चाहिये ॥
	ध्वज आय पुरुष रूप है, धूम्र बिलार रूप है, और सिंह आय बाघरूप है श्वान आय कुत्ता रूप है गज आय हाथी रूप, ध्वांक्ष आय कौआ रूप ब्रषभ आय बैल रूप, खर आय गधा रूप इनके मुख ही ऐसे होते हैं दूसरा अंग नहीं आयों के पैर मुर्गा के पैरों के समान और गरदन शेर के समान और गरदन से कमर तक पेट हाथ मनुष्य के समान और चारो दिशा में आमने सामने मालिक होकर बैठे हुये हैं ॥
४५३	मिस्त्री को क्या क्या काम करना चाहिये
४५६	नक्शे नवीस या ड्राफ्ट मैन को क्या क्या काम करना चाहिये और उनके औजारों के नाम
४६३	घड़ीसाज़ का काम और उनके औजारों के नाम
४७०	रबड़ की मोहर बनाने की तरकीब
४७२	चांदी सोने की मुलम्मे साजी की तरकीब
४७४	फोटाग्रफी
४८०	तारबरकी

इति ॥

विश्वकर्म्मा प्रभासस्य पुत्रः शिल्पप्रजापतिः।
प्रासादभवनोद्यान प्रतिमा भूषणादिषु॥
तडागारामकूपेषु कथितो देव वार्द्धकिः॥ १॥

मत्स्य पु० अ० ५॥

भावार्थ—प्रभास नामक अष्टम वसु के विश्वकर्म्मा नामक पुत्र हुये जो कि शिल्प प्रजापति हैं और देवगृह, अन्यगृह, राज्यक्रीड़ा, बाग प्रतिमा, भूषण आदि तथा सरोवर, और कूप, बावड़ी आदि के रचने वाले हैं और जिनको महात्माओं ने देववार्द्धकि कहा है।

इस प्रमाण के अनुसार यह वंशावली है:—

हिरण्यगर्भ (विश्वकर्म्मा)

(ऋ० अ० ८ अ० ७ व० ३ मं० १)

† अङ्गिरा † अग्नि † वायु † आदित्य

(शतपथ ब्रा० ११।४।२।३।)

विराटपुरुष

(ऋ० अ० ८ अ० ३ मं० २-३)

ब्रह्मा

(य०।४।६।२)

मरीच (ऋ० ८।३।१७।२)
- कश्यप (शत०, व त० ब्रा०)
  - सूर्य्य (भा० व० को०)
    - मनु
    - ऋ०
    - नाभानेदिष्ट (ऋ० अ० ८ अ० २ व० १) ×
  - नैध्रुवि (शत० ब्रा०)

सनातन * स्कं० पु० ना० अ० १८१

धर्म्मऋषि (भाग० स्कं० ४ अ० ६)
- प्रभासवसु (भ० अ० प० अ० ६२)
  - विश्वकर्म्मा (वा० पु० अ० २२)
    - मनु* मय* त्वष्टा* शिल्पि* दैवज्ञ (तक्षा) *
    - (स्कन्द पुराण नागर खण्ड)

विश्वकर्म्मा भवत्पूर्वं ब्रह्मणस्त्व परातनुः ।
त्वष्टुः प्रजापतेः पुत्रोनिपुणः सर्वकर्मसु ॥
कृतोपनयनः सोऽथबालो गुरुकुलेवसन् ।
चकारगुरुशुश्रूषा भिक्षान्न कृतभोजनः ॥

स्क० पु० अ० ८६ श्लो० ३ । ४ ॥

भावार्थ—पूर्व समय में ब्रह्माजी के द्वितीय शरीर अर्थात् उनके समान सम्पूर्ण सृष्टि के कार्य्यों में निपुण त्वष्टा प्रजापति के विश्वकर्म्मा नामक पुत्र हुये, वह विश्वकर्म्मा यज्ञोपवीत संस्कार के उपरांत बाल्यावस्था में गुरुकुल में निवास करते हुये और भिक्षान्न भोजन करके अपने गुरू की शुश्रूषा अर्थात् सेवा किया । इस प्रमाण के अनुसार यह वंशावली है:—

हिरण्यगर्भ (विश्वकर्म्मा)

(ऋ० अ० ८ अ० ७ व० ३ मं० १)

† अङ्गिरा † अग्नि † वायु † आदित्य
(शतपथ ब्रा० ११ । ४ । २ । ३ ।)

विराटपुरुष
(ऋ० अ० ८ अ० ३ मं० २–३)

ब्रह्मा
(य० ४ । ६ । २)

भृगु
(भारत अनुशासन प० अ० ८५)

वारुणी भृगु
(ऐतरेय ब्रा० २ । ३ । १०)

सानग* (भा० व० को०) शुक्राचार्य्य (वा० पु० अ० ४) शुनक, (बौ० म० प्र०) वाध्यूश्य, वाधूल (बौ म० प्र०) × ×

त्वष्टा (वा० पु० अ० ४) शौनक (कौश० अ० ३) ×

विश्वरूप (वा० पु० अ० ४) विश्वकर्म्मा (वा० पु० अ० ४)

अहभून* (शत० ब्रा०)

मनु, * मय, * त्वष्टा, * शिल्पि, * तक्षा *
(रुद्रयामल वास्तुःतन्त्र)
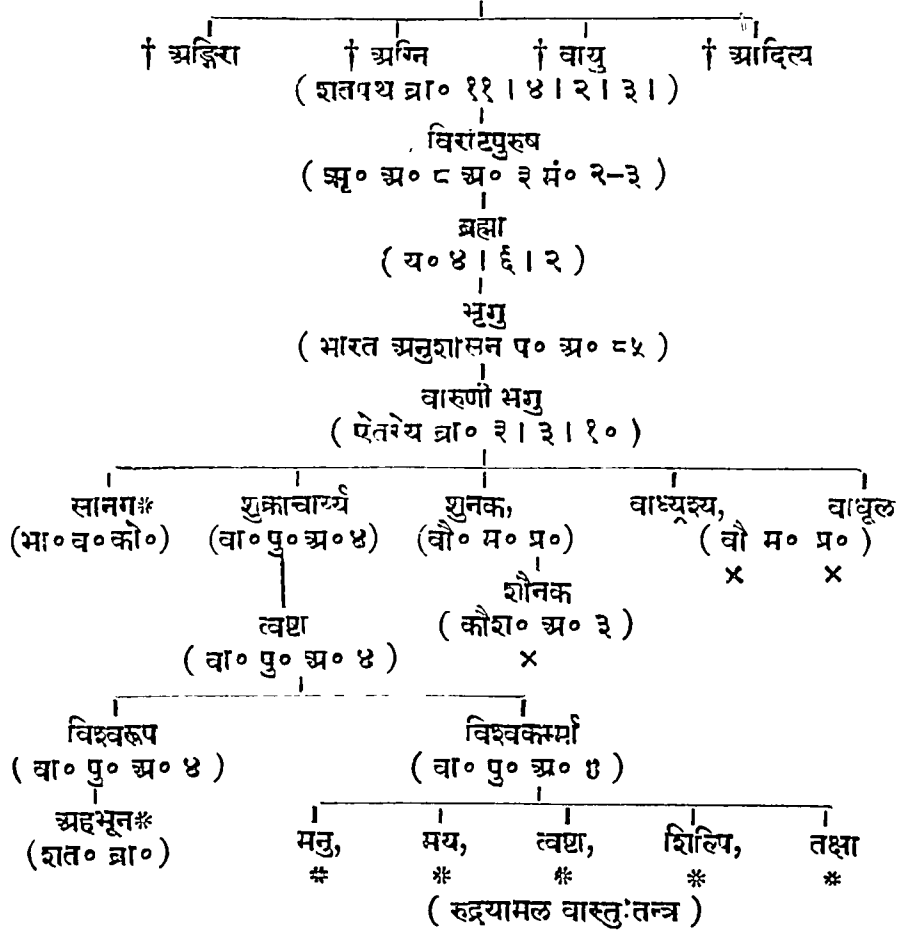
एतेन ह वा ऐन्द्रेण महाभिषेकेन कश्यपो विश्वकर्म्माणं भौवनमभिषिषेच । तस्माद्विश्वकर्म्मा भौवनः संमतं सर्वतः पृथिवींजयन् परियायाश्वैरुचमेध्यैरोजे ॥ ऋ० ऐत० पं० ८ । २१ ॥

भावार्थ—इस प्रकार कश्यप परमात्मा ने विश्वकर्म्मा को जो भुवन के पुत्र हैं अभिषेक किया, तब विश्वकर्म्मा ने पृथिवी के इस ओर से दूसरे ओर तक विजय को प्राप्त करके अश्वमेध यज्ञ किया। इस प्रमाण के अनुसार यह वंशावली है:—

हिरण्यगर्भ (विश्वकर्म्मा)

(ऋ० अ० ८ अ० ७ व० ३ मं० १)

† अङ्गिरा | † अग्नि | † वायु | † आदित्य

(शतपथ ब्रा० ११ । ४ । २ । ३ ।)

विराट्पुरुष

(ऋ० अ० ८ अ० ३ मं० २-३)

ब्रह्मा

(य० । ४ । ६ । २)

अङ्गिरस

(भारत व० प० अ० २१७)

वारुणी अङ्गिरस

(मत्स्य पु० अ० १६४)

- उतथ्याङ्गिरस (भा० व० का०)
  - राहू गण (भा० व० को०)
    - प्रत्न* (ऋ० पं० १ अ० १४ सू० ८८)
- केवलाङ्गिरस (भा० व० को०)
  - धौतर, कण्व, हारीत × (महाप्र०) ×
    - सुपर्ण* (भा० शा० अ० ३४)
- सुधन्वा (भा० अनु० अ० ८३)
  - ऋभु, विभ्व*, वाज* (ऋ० अ० १ अ० ७ व० ३ मं० ४)
    - कुत्स (ऋ० १ । ७ । ३०) ×
    - ऋभु (ऋ० १ । ० । १२ । १७६) ×
- संवर्त ×
- आद्य (आश्व० सर्वा०)
  - भुवन (षडगुरु भा० अ० ८)
    - विश्वकर्म्मा (ऐत० ब्रा० पं० खं० २१ अ० ४)
      - मनु* | मय* | त्वष्टा* | शिल्प* | विश्वज्ञ (तक्षा) *
      - (स्कन्द पुराण नागर खण्ड)
- बृहस्पति (ग० पु० अ० ४)
  - भरद्वाज (वा० पु० अ० ४)
    - भारद्वाज-अङ्गिरस (भा० व० को०)
      - मङ्गल, (प्रयागपारजात) ×
      - गर्ग (मत्स्य पु० ×

शैव पांचाल ब्राह्मण १	लक्षण २	गुण ३
मनु	शिवरूप	तमोगुण
मय	विष्णुरूप	सत्त्वगुण
त्वष्टा	ब्रह्मरूप	रजोगुण
शिल्पि	इन्द्ररूप	सत्त्व रज तमोगुण
दैवज्ञ, विश्वज्ञः वा तक्षा	नारायणरूप	शुद्धसत्त्वगुण

वर्ण ४	कुण्ड ५	दंड ६
स्फटिक शरीर	त्रिकोण कुण्ड	रूप्य दंड
नीलवर्ण	चतुष्कोण कुण्ड	वेणु दंड
लालवर्ण	वर्तुल कुण्ड	ताम्र दंड
धूम्रवर्ण	षट्कोण कुण्ड	लोह दंड
पीतवर्ण	अष्टकोण कुण्ड	सुवर्ण दंड

सूत्र अर्थात् जनेऊ ७	कर्म्म ८	गोत्र ९
रूप्य सूत्र	लोह कर्म्म	कौडिन्य
पद्म सूत्र	काष्ठ कर्म्म	अत्रि
ताम्र सूत्र	ताम्र कर्म्म	भारद्वाज
कार्पास सूत्र	पाषाण कर्म्म	गौतम
सुवर्ण सूत्र	सुवर्ण कर्म्म	काश्यप

प्रवर १०	वेद ११,	शाखा १२	सूत्र १३
सद्योजात	ऋग्वेद	विश्वकर्मा	आश्वलायन
वामदेव	यजुर्वेद		आपस्तंब
अघोर	सामवेद		बौधायन
तत्पुरुष	अथर्वण वेद		द्राक्षायण
ईशान	सुषुम्णाख्यवेद		कात्यायन

—:*:—

विश्वकर्म्म शिल्पसागर दुर्गादास कृत ।
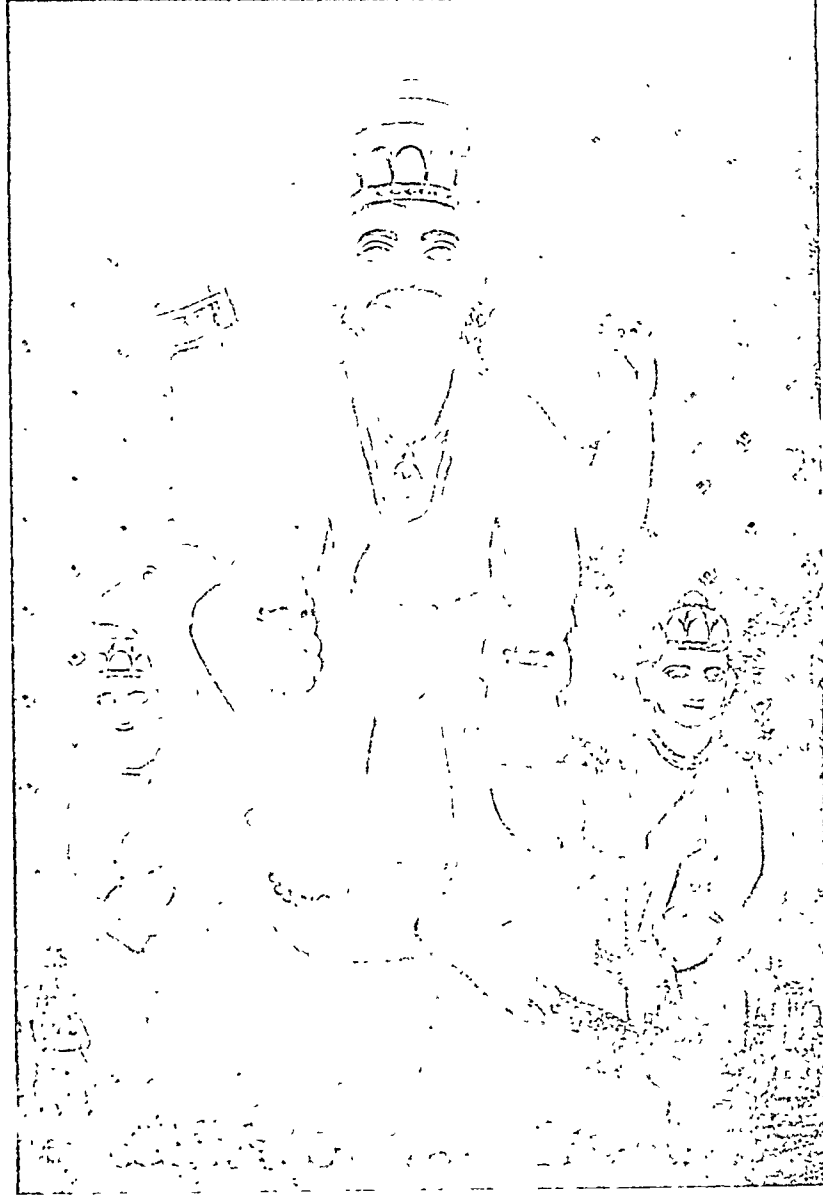
Engraved by P. Lal & Co. Lucknow

श्री विश्वकर्म्मा शिल्पाचार्य ।

स्थापित पाषाण मूर्ति मन्दिर मकबूलगंज लखनऊ ॥

विश्वकर्म्म शिल्पसागर दुर्गादास कृत ।
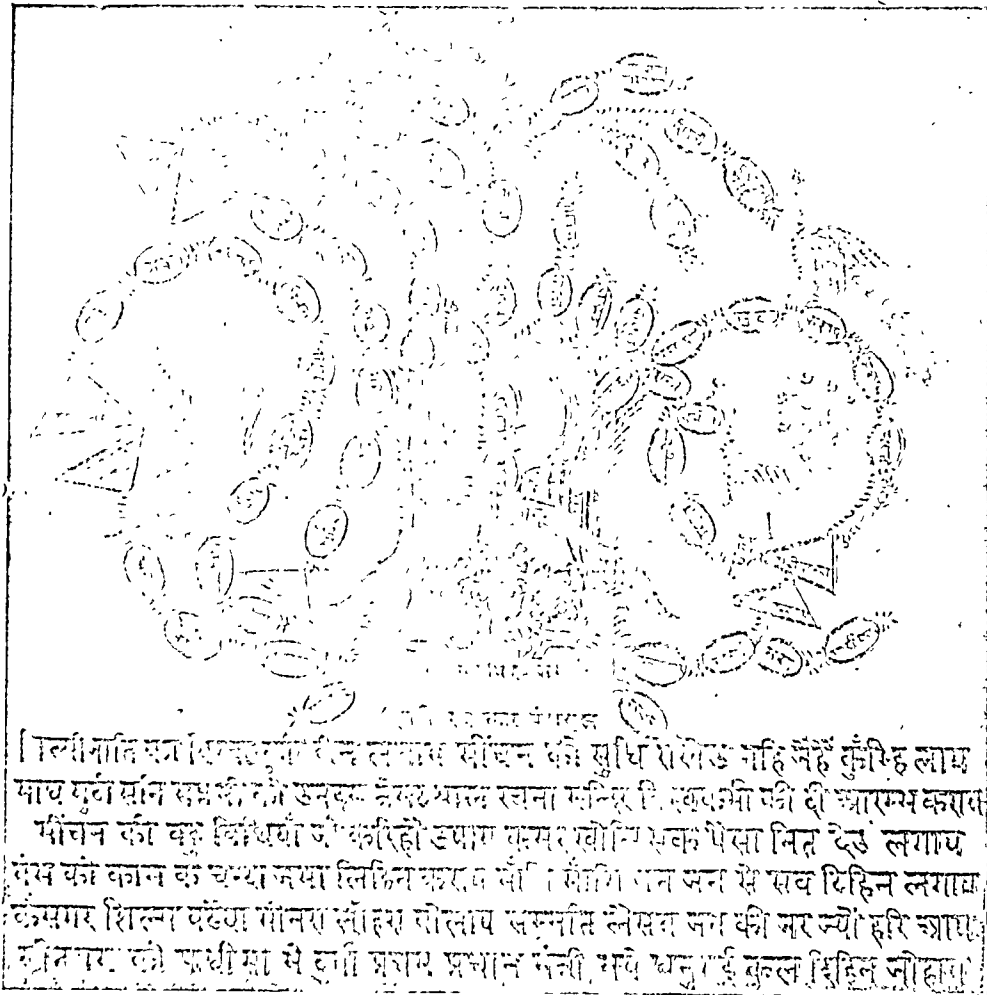
Engraved by P Dayal & Co Lucknow

वंशवृक्ष रथकार द्विजातीय ।

विश्वकर्म्म शिल्पसागर दुर्गादास कृत।

Engraved I. P. Dayal & Co. Lucknow
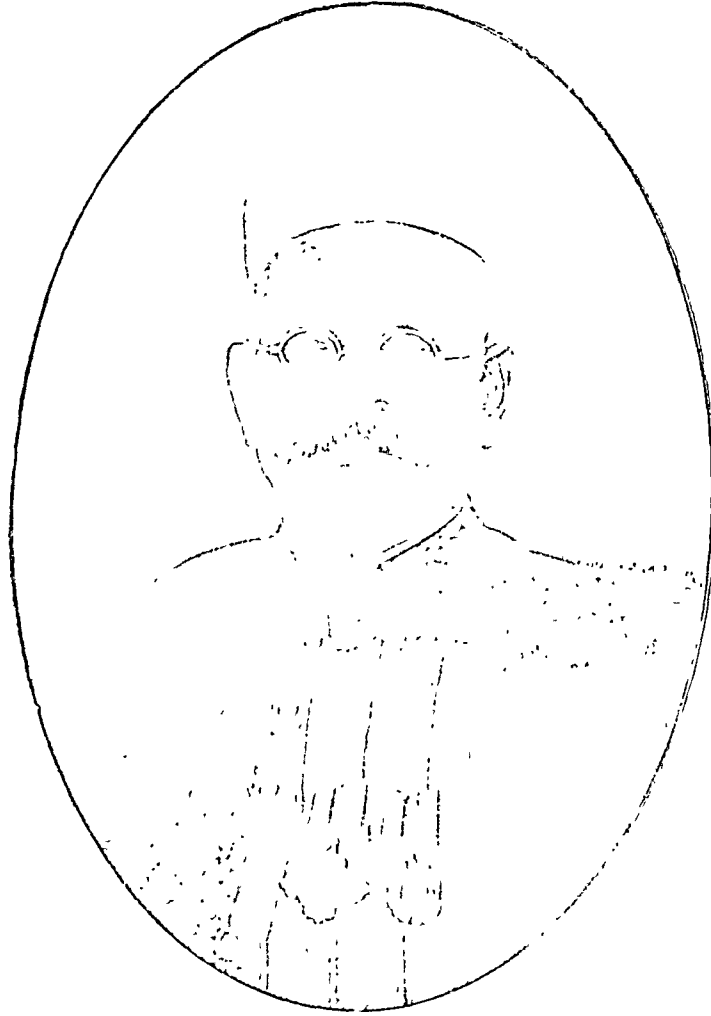
बा० दुर्गाप्रसाद् गोल्ड मेडालस्ट कारीगरी।

प्रथम प्रधान विश्वकर्म्मा सभा लखनऊ॥

विश्वकर्म्म शिल्पसागर दुर्गादास कृत ।
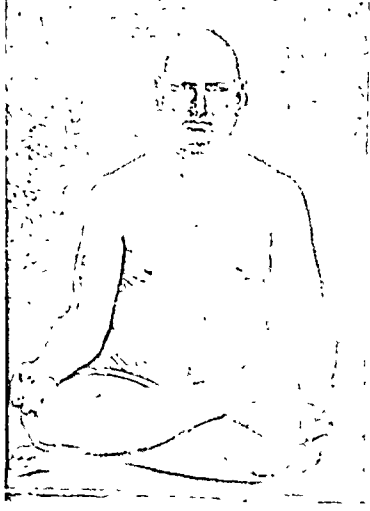
श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ।
अविद्यातिमिरभास्कर ।
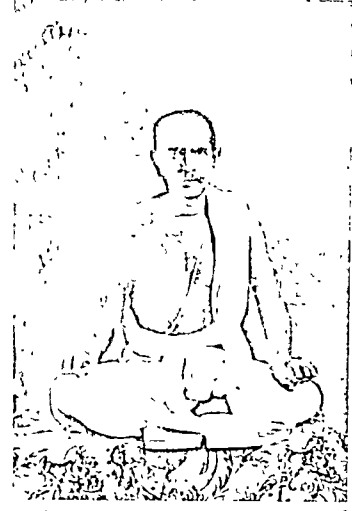
श्री पं० शिवशंकर झा काव्यतीर्थ।
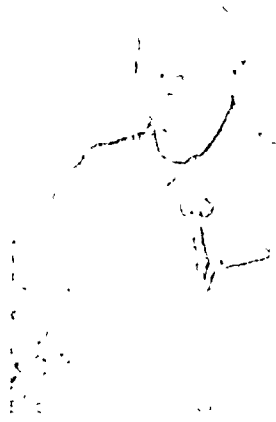
दुर्गाप्रसाद ग्रन्थकार ।
विश्वकर्म्मा शिल्पसागर उपनाम दुर्गादास
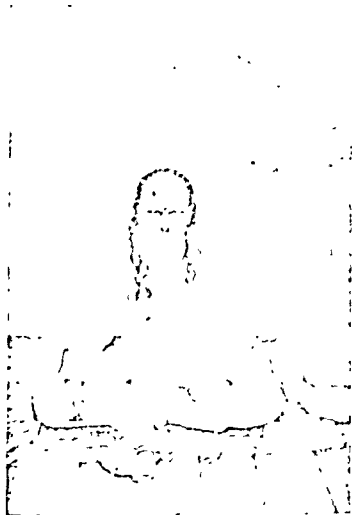
श्री पं० जगत्प्रसाद शास्त्री ।
तर्कशिरोमणि विद्याभूषण ।
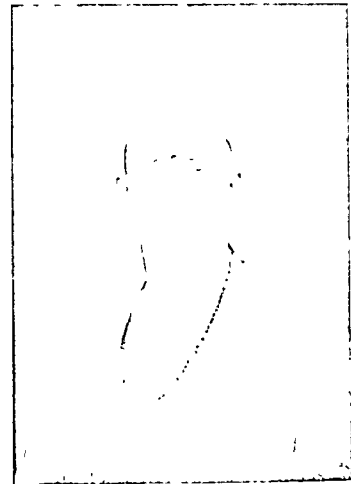
श्री पं० चन्द्रमौलजी पौराणिक ।

विश्वकर्म्म सिल्प सागर दुर्गादास कृत ।

बाबू मेड़ीलाल जी ।
उपप्रधान विश्वकर्म्मा सभा लखनऊ ॥
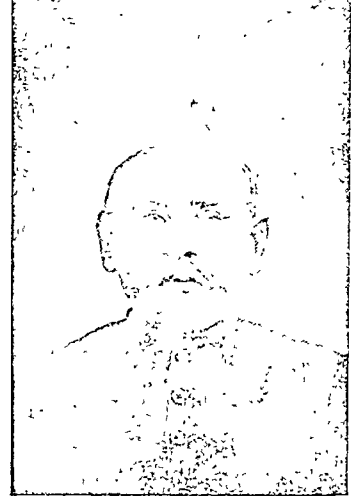
बाबू रघुवरदयाल जी ।
मेम्बर विश्वकर्म्मा सभा लखनऊ ॥
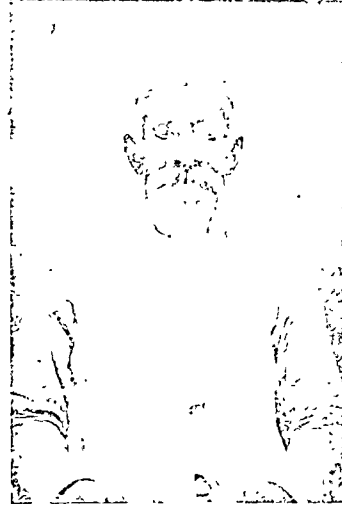
उस्ताद बिहारीलाल जी ।
मेम्बर विश्वकर्म्मा सभा सनदयाफ्ता कारीगर लखनऊ ॥
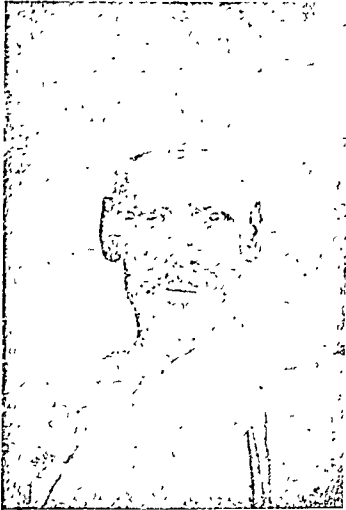
बाबू धनपतिराय जी ।
सेक्रेटरी मंत्री विश्वकर्म्मा सभा लखनऊ ॥
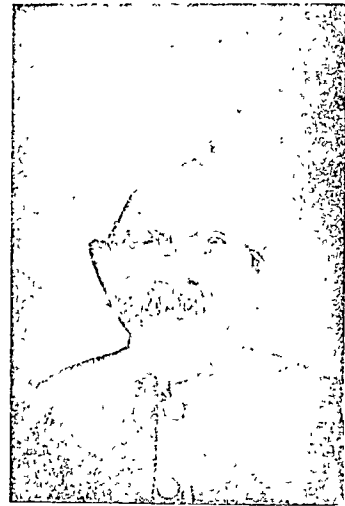
मिस्त्री सीताराम जी ।
कोषाध्यक्ष विश्वकर्म्मा सभा लखनऊ ॥
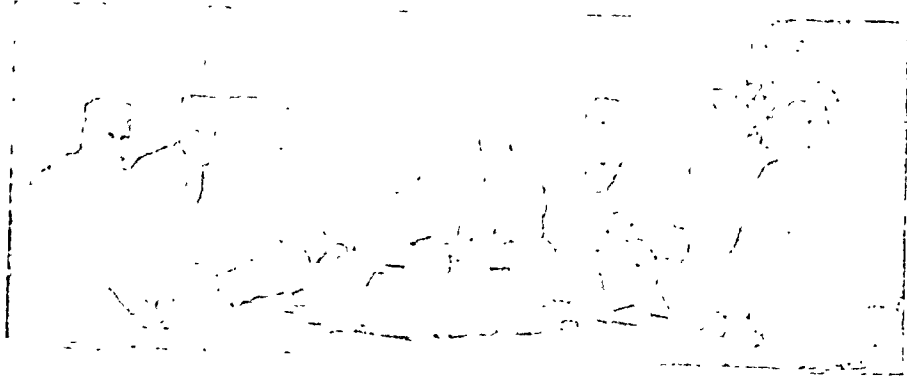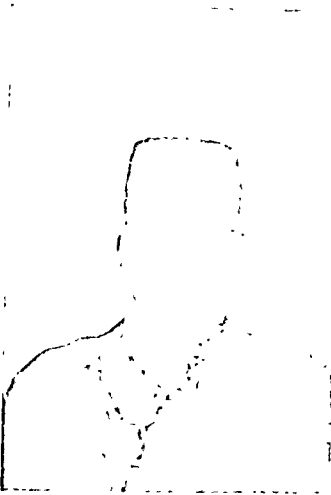
* विज्ञापन *

कुछ समय व्यतीत हुआ कि हमारी जाति के प्रधान बन्धुवर्ग विश्वकर्मा सूत्रधार कुशिकाश्यवंशी (बढ़ई) ऐसा कहा करते थे कि यदि लखनऊ ऐसी बड़ी प्राचीन बादशाही राजधानी में विश्वकर्मा शिल्पाचार्य का प्रतिमालय और शिल्पविद्यालय स्थापित होजाता तो हमारे कुशिकाश्यवंशी होने का परिचय लोगों को भले प्रकार हो जाता। श्रीविश्वकर्मा का स्थान जो दक्षिणप्रान्त में एलौरा नाम से प्रसिद्ध है, जो रेलवे लाइन मनमार से लासुर स्टेशन को गई है वहां से एक कोस के फ़ासले पर पहाड़ खोदकर प्राचीन निपुण शिल्पकारों की विद्याका एक अच्छा नमूना दिखाता है यही स्थान हमारे कुशिकाश्यवंशी सूत्रधारों का गुरुकुल है—जो अब विश्वकर्मा सुतार के झोपड़े के नामसे विख्यात है। इसके अन्दर की मूर्त्ति का दर्शन करना हमारे कुशिकाश्यवंशी सूत्रधारों को कष्टसाध्य होगया है क्योंकि वहां के पण्डे विना यज्ञोपवीत देखे किसी को मन्दिर के अन्दर नहीं जाने देते हैं। इस मन्दिर के सिवाय हमलोगों का और कोई दूसरा मन्दिर नहीं है। इस कष्ट के दूर करने के निमित्त हमारे कई उद्योगी भाइयों ने वैक्रमीय संवत् १९६३ वैशाख शुक्ल द्वादशी शनिवार तदनुसार ५ मई सन् १९०६ ईसवी को प्रातःकाल ७ बजे स्थान मक़बूलगंज लखनऊ में अनेक कुशिकाश्यवंशी महाशयों से चन्दा एकत्रित करके श्रीविश्वकर्मा सूत्रधार सभा मन्दिर की नींव का पूजन किया और उसीदिन से सभामन्दिर तथा कुशिकाश्यवंशावली शीघ्र

तैयार होजाने का पूर्ण उद्योग किया जानेलगा जिसमें हमारे बहुत से अविद्यारूपी अन्धकार में पड़ेहुये भाई सचेत होकर अपनी ठीक अवस्था को जानलें। अब श्रीविश्वकर्मा सूत्रधार सभा मन्दिर और कुशिकास्यवंशावली देखने व पढ़ने तथा हर जगह पर प्रचार करने से हमारी जाति की दशा उन्नति को प्राप्त हो, ऐसा प्रबन्ध सदा होता रहेगा॥

सर्व सज्जनों का अनुचर-

दुर्गाप्रसाद कुशिकास्य सूत्रधार

प्रधान-विश्वकर्मा सभा-लखनऊ.

❀ धन्यवाद ❀

भारतवर्ष की अनेक जातियों की वंशावली देखने से मेरे चित्त में इस बात की उमंग बहुत दिनों से उठती थी कि वह कौनसा दिन होगा जिस दिन मैं भी अपनी वंशावलीरूपी लता को किसी विद्वान् द्वारा प्रमाणरूपी जल से सींचकर हरीभरी देखूंगा। इसी अभिप्राय से मैं बराबर विद्वानों के खोजमें लगा रहता था और इधर उधर से पूछ जांच किया करता था। मेरे इस अभिप्रायको जानकर पं० दुर्गाप्रसाद, पं० चन्द्रमौलि, पं० रामभरोसे पौराणिक और बाबू चुन्नीलाल पीलीभीत निवासी ने इस मुरझाये हुये वृक्षको हराभरा करने का बड़ा उद्योग करतेरहे-पर पूरा अभिप्राय सिद्ध होने में मुझको सन्देह था। दैवयोग से मुझे श्रीमान् भारतसुप्रसिद्ध पण्डितवर जगत्प्रसाद शास्त्री तर्कशिरोमणि विद्याभूषण काशस्थि और पण्डित शिवशंकर झा काव्य तीर्थ के दर्शन लखनऊ में हुये तब मैंने अपना अभिप्राय उनलोगोंके प्रति निवेदन किया और विनय की कि यदि आप मेरे इस कष्टको दूर करदेते तो मुझपर आपकी बड़ी कृपाहोती-मेरे इन दीनवचनोंको सुनकर श्रीमान् शास्त्रियों ने मुझसे कहा कि इस कुशिकास्य सूत्रधार की उत्पत्ति वेद, स्मृति और पुराणों के अन्तर्गत अनेक प्रकरणों में पाई जाती है। इस विषय में हम पूर्ण रीति से कहसकते हैं कि आप लोग कुशिकास्यवंशी सूत्रधार द्विजातिकोटि में उत्तम हो इस बात को हमलोग प्रमाणों के

सहित लिखवादेंगे। ये बातें श्रीमान् शास्त्रियों की सुनकर मुझे वड़ा हर्ष प्राप्त हुआ और यह वाक्य स्मरण आया कि "जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ। वे वपुरी क्या पाइयां जो रहीं किनारे वैठ" मैं श्रीमान् दोनों शास्त्रियों को अनेकानेक धन्यवाद देताहुआ नहीं अघाता विशेष क्या कहूं जवतक जीवित रहूंगा इस उपकार को नहीं भूल सकता हूं।

धन्यवादक-

दुर्गाप्रसाद कुशिकाश्य सूत्रधार

प्रधान-विश्वकर्मा सभा

निवास स्थान-सदरबाज़ार, लखनऊ.
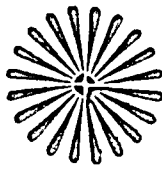
❀ भूमिका ❀
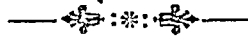
प्रिय महाशय बन्धुगण ! हमारे इस लेख को विशेष ध्यानपूर्वक पढ़िये और विचार करिये-क्योंकि, हमारा अभीष्ट केवल इतनाही है कि हमारे बन्धुवर्ग अपने कुल, गोत्र, वर्ण तथा प्राचीन निवास स्थान को यथार्थरूप से जान लें-जिसमें अन्य जाति के मनुष्य हमारे ऊपर नतो किसीप्रकार सन्देह करसकें और न आक्षेप करसकें। और हमलोग निर्विघ्नरूप से अपनी जात्युन्नति देश देशान्तर में प्रकाशित करें।

सम्पूर्ण भारतवर्षनिवासी महाशयों से हमारी सविनय प्रार्थना है कि हमारी इच्छा किसी महाशय से किसीप्रकार की छेड़छांड़ करने की कदापि नहीं है-यद्यपि हम सब लोगों की इष्ट उपासना पृथक् २ है तथापि एकही देशवासी होने के कारण हम सबको प्रेमपूर्वक रहना चाहिये। हमारी वृत्ति में अन्य जाति के लोग सम्मिलित होगये हैं इस कारण उनको पृथक् करना हमारा परमकर्त्तव्य है-जैसा किसी ने कहा भी है- शेर।

तहक़ीक़ हक़ के वास्ते बातिल को छोड़कर।
लाज़िम है हमको तोड़दें शीशा फ़रेब का ॥

तथा- दोहा।

सत्य जानिबे हेतु जन, परिहरि मिथ्या बोल।
उचित हमें है तोड़िबो, दर्पण कपट कपोल ॥

अब हम जिस आशय पर लेखनी को क्लेश देने के निमित्त कटिबद्ध हुये हैं वह यद्यपि हमारे लिखने योग्य नहीं था-कारण कि, जिस ज़ाति के पूर्वपुरुषों को स्वयं भगवान् वेदव्यास महर्षिजी ने इस कुशिकास्य सूत्रधारवंश की व्यवस्था को वेदों से उद्धृतकर पुराणोंद्वारा संसार में विस्तृत किया, फिर किसका साहस है कि इस जाति के विषय में चूं भी करसके। किन्तु कहीं कहीं पर मनुष्य को ऐसे कठिन स्थल आपड़ते हैं कि अपनेही दोष में स्वयं फँस जाना पड़ता

है-कारण कि, एक प्रकार का आवरण उसपर आजाता है, जिसके आच्छादित होने से वह अपनी प्राकृतिक अवस्था को भूलही जाता है-ऐसा करके कि पूर्णरूप से अस्त होगया यहभी कहना उचित नहीं है-आज वैसीही दशा में हमारे जातिवर्ग भी फँसे हैं, यद्यपि अद्यावधि हमारी जाति में पूजन हवन वर्षाऋतु में होता है तथा इसी अवसर व विवाह काल में यज्ञोपवीत आदि सब संस्कार द्विजातिप्रथानुकूल प्रायः होते चले आते हैं-जिनसे उनका द्विजातित्व होना स्पष्टही है-बस उन्हें उनकी पूर्व अवस्था को जतादेना हमारा मुख्य उद्देश्य है। हमने इस ग्रन्थ में उन्हीं प्रमाणों का संग्रह किया है जोकि द्विजाति कुशिकाश्य सूत्रधार जाति से सम्बन्ध रखते हैं-दूसरे नीचीश्रेणी के शिल्पकारों से कुछ सम्बन्ध नहीं रखते। इससे हमारा केवल इतनाही प्रयोजन है कि जिसप्रकार परमात्मा के बनाये नियम अविचलित हैं वैसेही गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था मानने का भी धर्म परमस्थिर या अविचलित है-इस विषय पर शतशः लेख लिखे जाचुके हैं। हमारे भारतवर्षीय सजातीय भाईलोग ऐसे अबोध होजाने से महाअन्धकार अधोगति को जारहे थे किन्तु कोटिशः धन्यवाद उस परब्रह्म जगदीश्वर को है कि जिसकी कृपा से पवित्र वर्णोपवर्णाश्रमों को दुस्सह दुःखों से बचाने के लिये श्रीयुत महाराजाधिराज राजराजेश्वर जार्ज पञ्चम महाप्रतापी के राज्य न्यायरूपी सूर्य का प्रकाश होतेही अपनी जाति की उन्नति के निमित्त इस पुस्तक [वंशावली] के बनने का उद्योग पूर्णरूप से कियागया क्योंकि उक्त महोदय अपने अन्तःकरण से यह चाहतेहैं कि भारत की प्रजा अपनी २ विद्या व कारीगरी से मनोवाञ्छित फल प्राप्त करे।

निवेदक-

दुर्गाप्रसाद कुशिकाश्य सूत्रधार

प्रधान-विश्वकर्मा सभा

निवास स्थान-सदरबाजार, लखनऊ.

श्रीगणेशायनमः।

अथ

❀ विश्वकर्माशिल्पसागर ❀

दुर्गादास कृत ॥

प्रथमकाण्ड बन्दना ॥
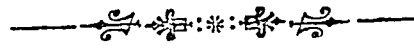
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥
सर्वाधारं सर्वनाथं जगत्कारणमीश्वरम् ।
प्रणमामि सदाभक्त्या शुद्धं मुक्तं सनातनम् ॥ २ ॥

अथ विश्वकर्मणः प्रभाववर्णनम् ।

विश्वकर्मा वै विधाता वै स्वयम्भूस्तथवच ।
हिरण्यगर्भ आदित्यस्त्वष्टा विष्णुः प्रजापतिः ॥ १ ॥

तस्मादेव समुद्भूता ब्रह्मा सर्वपितामहः ।
चतुर्मुखश्चतुर्बाहुश्चतुर्वेदसमन्वितः ॥ २ ॥

अथ विश्वकर्मणे (परब्रह्मणे) नमस्कारः ।

विश्वकर्मन्नमस्तेऽस्तु विश्वात्माविश्वसम्भवः ।
अपवर्गस्थसूतानां पञ्चानां परतः स्थितः ॥ १ ॥
नमस्ते त्रिषु लोकेषु नमस्ते परतस्त्रिषु ।
त्रिषु सर्वेषु त्वं हि सर्वमयोनिधिः ॥ २ ॥

[महाभारते शान्तिपर्वणि]

विश्वकर्मा चतुर्बाहुरक्षमालां च पुस्तकम् ।
कम्बां कमण्डलुं धत्ते त्रिनेत्रो हंसवाहनः ॥ १ ॥

[ल० शिल्पज्योतिःसार श्लोक २]

कम्बासूत्राम्बुपात्रं वहतिकरतलेपुस्तकंज्ञानसूत्रं
हंसारूढस्त्रिनेत्रःशुभमुकुटशिराःसर्वतोवृद्धकायः ।
त्रैलोक्यंयेनसृष्टंसकलसुरगृहंराजहर्म्यादिहर्म्यं
देवाऽसौसूत्रधारोजगदखिलहितःपातुनोविश्वकर्मा ॥ २

[रा० भा० अ० १ श्लो० ४]
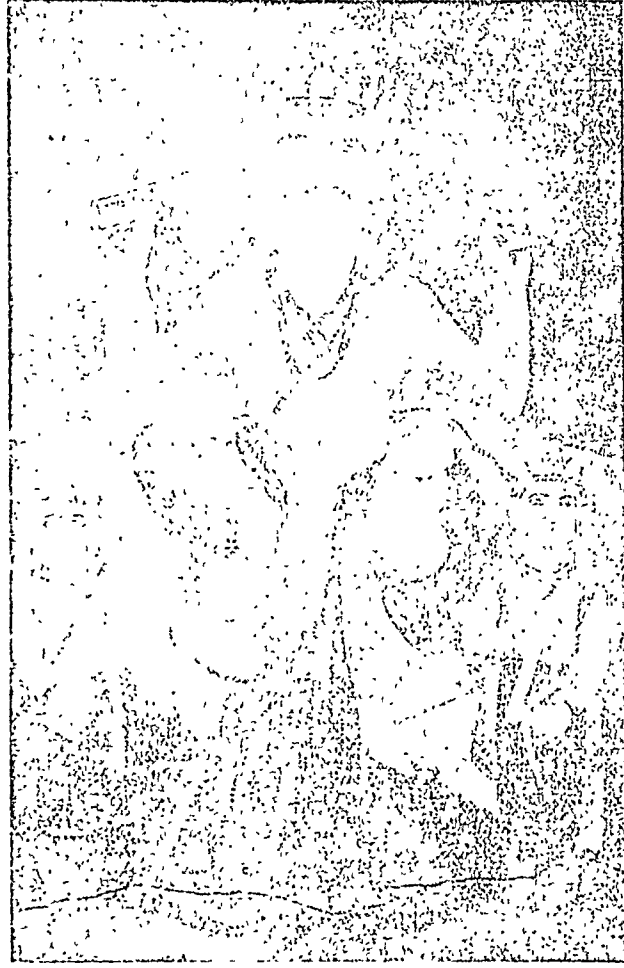
श्री विश्वकर्मा शिल्पाचार्य्य।

दो० विद्यानिधि गणनायकहिं, नमस्कार बहुबार।
शिल्पदेव के चरित को, बरणौं मति अनुसार॥

बहु प्रकार विनवौं प्रभु तोहीं ❀ बिनवत सिद्धि ज्ञानदे मोहीं॥
मैं अज्ञान दोष रस साना ❀ ग्रन्थ समुद्र पार चहौं जाना॥
करिवर बदन सिद्धिके दाता ❀ पुरवहु आस दास के ताता॥
मैं अल्पज्ञ न गुण तव जानूं ❀ नाथ कवन विधि बिनती ठानूं॥

दास जानि अब द्रवहु गणेशू ❀ कार्य सिद्ध करि हरहु कलेशू ॥
दुर्गादास नाथ तव चेरा ❀ बिनवत तोहिं न लावहि देरा ॥
ग्रन्थ पार अब जेहि विधि होई ❀ करहु उपाय नाथ तुम सोई ॥
दो० गणनायकहिं नवाय शिर, बहुप्रकार कर जोरि ।
बन्दौं विश्व विराट को, विनय सुनत जो मोरि ॥
तेहि विराट के उदर बिच, अण्डकटाह हजार ।
देखत योगी ज्ञानयुत, शास्त्र वेद कह चार ॥
वेद पुराण रूप यश गावा ❀ बरणौं नाथ जो मैं सुनि पावा ॥
अति विचित्र तहँ लोक अनेका ❀ रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा ❀ अगणित उडुगण रविरजनीशा ॥
अगणित लोकपाल यमकाला ❀ अगणित भूधर भूमि विशाला ॥
सागर सरिता विपिन अपारा ❀ नानाभांति सृष्टि विस्तारा ॥
सुर नर सिद्ध नाग मुनि किन्नर ❀ चारि प्रकार जीव सचराचर ॥
लोक लोक प्रति भिन्न विधाता ❀ भिन्नविष्णु शिवमनुदिशित्राता ॥
नर गन्धर्व भूत वेताला ❀ किन्नरनिशिचर खग अरुव्याला ॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना ❀ सब प्रपञ्च तहँ जात न जाना ॥
दो० ऐसे विश्व विराट को, शीश नाइ कर जोरि ।
बरणत दुर्गादास अब, बिनती करत बहोरि ॥
विशुकर्मा निज देवको, बहुरि करौं परणाम ।
कीनचरित जो विश्वबिच, रच्योअमित शुभधाम ॥
मणिमाणिक जग बिच रच्यो, रच्यो मोहनी बाम ।
रथ विमान बहु विधि रच्यो, रच्यो द्वारका धाम ॥
विशुकर्मा बिनवौं तव पादा ❀ राखहु दास केरि मरयादा ॥

करत जो पूजा तव चित लाई ❁ लै प्रसून माला सुखदाई ॥
अगर तगर केशर कर्पूरा ❁ चन्दन सकल गन्ध सों पूरा ॥
भोग अनेक भांति पकवाना ❁ करत समर्पण जे भगवाना ॥
अष्टसिद्धि नव निधि सो लहहीं ❁ तव पूजन कर अस फल अहहीं॥
अस जियजानि नवावहुँ शीशा ❁ सिद्ध करहु कारज जगदीशा ॥
तव गुण अमित भाँति जग छावा ❁ शिल्पशास्त्र वेदन बिच गावा ॥

दो० शिल्पाचार्यहि नाइ शिर, करौं विष्णु गुणगान।
जो जग बिच बहु चरित किय, जानत सकलजहान॥
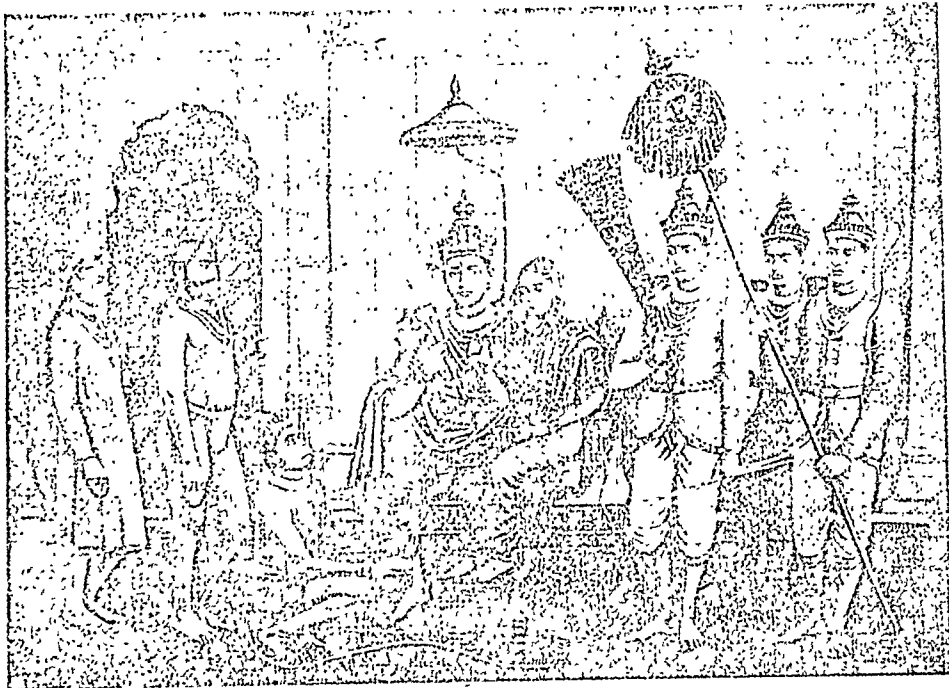
राजगद्दी श्रीरामचन्द्रजी की।

बिनवौं बहुरि रमापति चरणा ❁ विश्वविदित भक्तन दुखहरणा ॥
अमित वार लीन्हो अवतारा ❁ कीन्हो दुष्टन कर संहारा ॥

अब यह विनय सुनहु रघुनाथा ❀ बारम्बार नवावहुँ माथा ॥
तुम बिनु प्रभु रक्षक को मेरो ❀ दुर्गादास जानि निज चेरो ॥
मन सङ्कल्प पूर करु सांई ❀ अवगुण मोर नाथ बिसराई ॥
सब विधि तुम रक्षक जगकेरा ❀ अब जनि नाथ दुरावहु चेरा ॥

दो० ब्रह्मा उतपति करत हैं, शम्भु करैं संहार ।
तुम रक्षक सब विश्वके, कस न लेहु अवतार ॥
दुर्गा ऐसे प्रभुहि को, जो न भजहि छलत्यागि ।
ते नर शठ हठि परतहैं, तप्तकूप बिच भागि ॥

श्री शिवाय नमः ।

सो० कुन्द इन्दु सम देह, उमारमण करुणा अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करो कृपा मर्दन मयन ॥
जरतसकलसुरवृन्द, विषम गरल जेहि पानकिय ।
तेहि न भजसि मतिमन्द, कोकृपालु शङ्करसरिस ॥

उमानाथ तव बिनती करहू ❀ भक्तन केरि विनय तुम सुनहू ॥
जब जब देवन पर दुख परयऊ ❀ कियो सहाय विदित जगभयऊ ॥
अर्जुन कियो तपस्या जबहीं ❀ है प्रसन्न धन्वा दिय तबहीं ॥

लै गाण्डीव समर महँ जाई ❀ करि भारत सब सेन नशाई ॥
मथत सिन्धु विष निकल्यो जबहीं ❀ जरनलग्योजगचहुँदिशितबहीं ॥
सब देवन मिलि विनती ठानी ❀ तब तुम पियो गरल सम पानी ॥
पियत कण्ठ जासुनि सम भयऊ ❀ नीलकण्ठ पदवी तब लहयऊ ॥
नाथ सदा तुम रहत दयाला ❀ वस्त्र बघम्बर भूषण व्याला ॥
दो० चन्द्रमौलि को नाइ शिर, करि बिनती बहुबार ।
सूर्यदेव को विनयकरि, भनत ग्रन्थ श्रुतिसार ॥
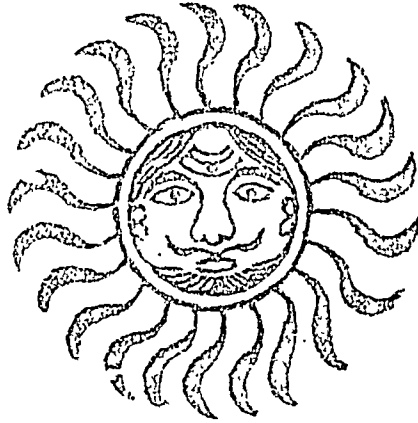
श्री सूर्य्याय नमः ।

सूर्यदेव मैं सुमिरौं तोहीं ❀ सुमिरत ज्ञान बुद्धि दे मोहीं ॥
तुम्हरी महिमा अगम अपारा ❀ करहुज्योति ममउर उजियारा ॥
वर्णि न जाइ ज्योति की लीला ❀ धर्म धुरंधर परम सुशीला ॥
अजनु अनादि सकल घटबासी ❀ त्वष्टादेव अदित अविनासी ॥
ज्योति कला चहुँ ओर विराजै ❀ त्वष्टदेव शिल्पी मन छाजै ॥
दो० सूर्य देवतहि नाइशिर, हुगा बिनवत ठाढ़ ।
बुद्धिप्रकाशहु मोरिअति, ग्रन्थ पारकरौंगाढ़ ॥
त्वष्टा देवहि नाइशिर, करिबिनती बहुवार ।
रामचन्द्र के दूतको, सुमिरहुँ पवनकुमार ॥

श्री हनुमते नमः ।

सुमिरौं पवनतनय मनलाई ❀ राम काज में जो चितलाई ॥
करि दण्डवत राम कहँ लाई ❀ कपि सुग्रीवहिं दियो मिलाई ॥
क्षणमहँ बालिहि दियो नशाई ❀ सुग्रीवहिं कपिराज बनाई ॥
सब कपिदल कहँ लियो बटोरी ❀ सीता खोजन चल्यो बहोरी ॥
चलत बाट सब भये दुखारी ❀ तृषावन्त नहिं पावत वारी ॥
विवर माहिं जल पान करायो ❀ मूँदि नयन सब बाहर आयो ॥
बहुरि मिलेउ सम्पातिहि जाई ❀ दुख यक क्षणमहँ दियो छुड़ाई ॥
तब सम्पाति कह्यो सब पाहीं ❀ अहहिं जानकी लङ्का माहीं ॥

दो० सुनि वाणी सम्पातिकी, सब गे सागर तीर ।
जामवन्त पूछन लग्यो, पार जात को वीर ॥

सब मिलि हाथ जोरि कह ताहीं ❀ पार जान लायक हम नाहीं ॥
तब हनुमान कह्यो सब पाहीं ❀ देखहु पार जाब क्षणमाहीं ॥
कूदि सिन्धु पारहि सो गयऊ ❀ रावणपुर महँ प्रविशत भयऊ ॥
फल भक्षण करि विटप उपारी ❀ रावण सुत बधि लङ्का जारी ॥
मिलि जानकिहि मुद्रिका दयऊ ❀ राम कथा सब वर्णत भयऊ ॥
बिदा मांगि सीतहि समुझाई ❀ पलटि वारि निधि पारहि आई ॥
सब को लै किष्किन्धहि आयो ❀ रामचरण में माथ नवायो ॥
सब वृत्तान्त राम सों कह्यऊ ❀ जेहि विधि लङ्कहि प्रविशत भयऊ ॥

दो० नल नीलहि बुलवाइकै, गये वारिनिधि तीर ।
क्षणमहँ सेतु बँधाइकै, पार भये रघुबीर ॥

लङ्का जाइ निशिचरन मारा ❀ कुम्भकरण क्षणमाहिं विदारा ॥
मेघनाद तब कोपत भयऊ ❀ लक्ष्मण के उर शक्तिहि दयऊ ॥
लागत शक्ति गिरेउ मुरझाई ❀ लाये हनुमत पीठ चढ़ाई ॥
देखी दशा लषण की जबहीं ❀ मूर्च्छित भये रमापति तबहीं ॥
हाथ जोरि कह पवनकुमारा ❀ लावों औषधि सहित पहारा ॥
कालनेमि मारग महँ मिल्यऊ ❀ क्षणमहँ वधि आगे कहँ चल्यऊ ॥
पर्वत सहित सजीवनि लाई ❀ तुरतहि लक्ष्मण दियो जिआई ॥
मेघनाद कहँ वधि ततकाला ❀ कियो मारि रावणहिं बिहाला ॥

दो० महिरावणहिं पताल महँ, हन्यो जाय हनुमान ।
पलटिरावणहिं वधेउ फिरि, बरणत वेद पुरान ॥

विशुकर्मा जो रचेउ विमाना ❀ पुष्पक नाम विदित सब जाना ॥
अलकापुर कुबेर के पासा ❀ सो रह सदा शास्त्र असभासा ॥
अलकापुर सो क्षणमहँ लाई ❀ प्रथमहिं सीतहि दियो चढ़ाई ॥
बहुरि राम लक्ष्मणहिं बिठाई ❀ अवधपुरी पशु मारग जाई ॥
भरतहि जाय मिले हनुमाना ❀ सो सुख को करिसकै बखाना ॥
भरत कहा अब सुनु हनुमन्ता ❀ कहहु तुम्हैं का देउँ तुरन्ता ॥
कौनिउ भांति उऋण मैं नाहीं ❀ कीन काम जो तुम जगमाहीं ॥
पुष्पक उतरि अवधपुर जाई ❀ सब कहँ क्षणमहँ मिल्यो गोसाई ॥

दो० भरत दियो हनुमानको, शोभित मुक्तामाल ।
फोरि फोरि देखन लग्यो, राम नाम ततकाल ॥
शरण गहे हनुमान की, सिद्ध होत सब काज ।

दुर्गा अति बिनती करत, अरज सुनो महराज ॥
बिनती करि हनुमान की, वाणिहि करौं प्रणाम ।
जो रसना बिच बैठिके, सिद्ध करत सब काम ॥

श्री सरस्वत्यै नमः ।

मातु सरस्वति बन्दौं तोहीं ❀ सुमिरत ग्यान बुद्धि दे मोहीं ॥
रूप अनूप विचित्र सुहावा ❀ स्फटिक माल मोरे मनभावा ॥
पुस्तक वीणा शोभित हाथा ❀ रतनजडित सुभ मुकटहै माथा ॥
भक्तन के ढिग यहि विधि आई ❀ देत मनोरथ बहु समुदाई ॥
अब विनवौं लक्ष्मी के चरणा ❀ जाकी कृपा होत दुख हरणा ॥
जाके गृह बिच बसहु भवानी ❀ सोइ सर्वज्ञ गुणी अति मानी ॥
सोइ पण्डित सोइ वक्ता ज्ञानी ❀ जगविच प्रकट कहत सबप्रानी ॥
जाके भवन न तुम पगु धारा ❀ सो अतिदीन सहत दुखभारा ॥

दो० जगदम्बा कहँ जोरि कर, दुर्गाहि दुर्गादास ।
बारम्बार नवाइ शिर, बिनवौं तुलसीदास ॥

बन्दौं गोस्वामिहि बहु नीके ❀ करहु कल्पना पूरण हीके ॥
मन बच कर्म तोर मैं दासा ❀ पुरवहु अब दुर्गा की आसा ॥
नहिं पण्डित नहिं चतुर कहाऊँ ❀ नाथ सदा तव दास बताऊँ ॥

भवसागर तरिबे को तरणी ❀ अनुपम ग्रन्थ भांति बहु बरणी ॥
पढ़त सदा जो भक्ति दृढ़ाई ❀ श्रवण कराहिं जे मानस लाई ॥
राम अयन कीन्ह्यो जेहि माहीं ❀ उपमा देउँ कवनि मैं ताहीं ॥

दो० निरवधिगुणनिरुपमविशद, रच्यो ग्रन्थ तुम नाथ ।
याते संग्रह करत हौं, स्वामी पुरवहु गाथ ॥

सो० बन्दौं गुरुपद कञ्ज, कृपासिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुञ्ज, जासु वचन रविकर निकर ॥

बन्दौं गुरुपद पद्म परागा ❀ सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥
अमिय मूरिमय चूरण चारू ❀ शमन सकल भवरुज परिवारू ॥
श्रीगुरु पद नख मणिगण ज्योती ❀ सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥
दलन मोह तम सो सु प्रकासू ❀ बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ॥
उघरहिं विमल विलोचन हीके ❀ मिटहिं दोष दुख भवरज नीके ॥
सूझहिं रामचरित मणि माणिक ❀ गुप्तप्रकट जहँ जो जेहि खानिक ॥

दो० गुरुहि बन्दि बरणौं सुयश, पञ्चम जारज राज ।
लक्ष्मी मेरी तनु धरे, राजन के महराज ॥

——:*:——
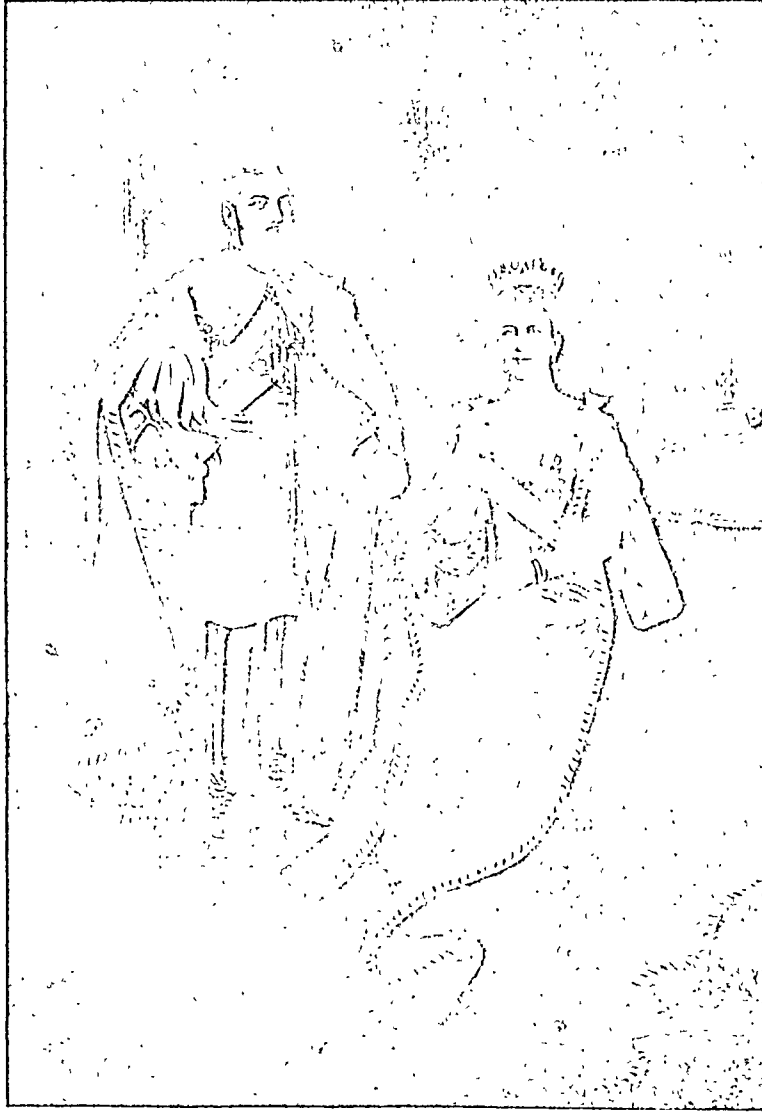
महाराजा धिराज राज राजेश्वर जार्ज पञ्चम और श्री महारानी क्वीन मेरी।

बन्दौं सन्त समान चित, हित अनहित नहिं कोय।
अञ्जलिगतशुभसुमनजिमि, समसुगन्धकरदोय॥
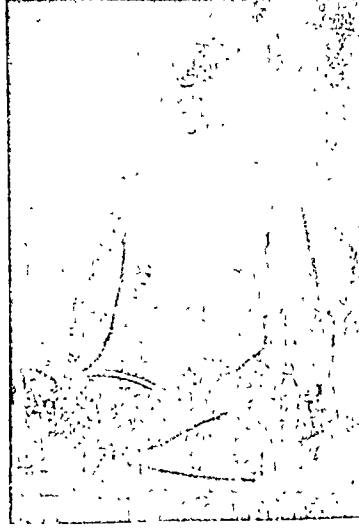
स्वामी दयानंद सरस्वती ।

दो० दयानन्दस्वामिहिसुमिर, बार बार शिरनाय ।
दलनतिमिर सूरजसरिस, सोवतदियो जगाय ॥
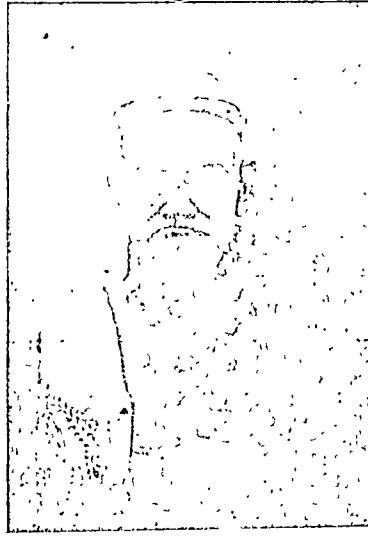
मि० गुरुदीनराम ठेकेदार लखनऊ ।

बन्दौं निज पितु मातुपद, शीस बार बहु नाय ।
करहु अनुग्रह पुत्रपर, ग्रन्थ पूर ह्वै जाय ॥

बहुरि बन्दि खलगण सतिभाये ❁ जे बिनु काज दाहिने बाँये ॥
उदय केतुसम हित सबहीके ❁ कुम्भकरण सम सोवत नीके ॥
मंद बुद्धि मोसम न जग, हौं मन कीन्ह बिचार ।
सुमति पाइहौं तो कृपा, दृढ़ भरोस उपकार ॥
जो धर्मज्ञ पढ़ै यह ग्रंथा ❁ करै कार्य वर्णन गुणि संथा ॥
ब्यासदेव श्रीहरि अवतारा ❁ चारि वेद गुणि सार निकारा ॥
जैमिनि पैल सुमंत पढ़ायो ❁ वैशम्पाणिहि सुरुचि सिखायो ॥
मीमांसादिक शास्त्र बनाये ❁ भारत आदि पुराण सोहाये ॥
कीन्ह सुमंत भविष्य पुराणा ❁ परम धर्म वरणौ विधिनाना ॥
विश्वकर्म्मा शिल्पसागर गाई ❁ दुर्गा वरनत प्रेम बढ़ाई ॥
भाषा वद्ध करौं गुरु ध्याई ❁ सुन्दर दोहा अरु चौपाई ॥
बीचि बीच रचि छंद गण, ब्रज भाषा अनुसार ।
दुर्गा बरनत मुदितमन, भजिपद नन्दकुमार ॥

दुर्गादासका स्वरूप ।

शतानीक पांडव कुल राजा ❁ नीतिनिपुण नृपसहित समाजा ॥

सुनि सुमंत सुनि तासु बड़ाई ❀ गये सभा मनमोद बढ़ाई ॥
नृप प्रणाम करि आसन दयऊ ❀ पुनि करजोरि कहत अस भयऊ ॥
तुम कृत कृत्य परम विज्ञानी ❀ कहो कथा वर बानि बखानी ॥
जो सुनि निवृत होय अघ मोरा ❀ सुनि कह नृप तव प्रेम न थोरा ॥
तुमहिं भविष्य पुराण सुनावौं ❀ जीवनमुक्त पंथ दरशावौं ॥
कीन्ह विरंचि अंग तेहि पांचा ❀ यह पुराण पातक हर सांचा ॥
पर्व बिरंचि विष्णु हर कीना ❀ त्वाष्ट और प्रति सर्ग प्रबीना ॥

सर्ग और प्रति सर्ग पुनि, वंश तृतीय सुजान ।
चौथो मन्वंतर बिबुध, वंश अनुचारित ज्ञान ॥

सो० लक्षण पंच पुरान, चौदह विद्या होत पुनि ।
सुनु नृप करौं बखान, मोहिं व्यास भाषी यथा ॥

चारि वेद तिनके षट अंगा ❀ धर्मशास्त्र मीमांसा संगा ॥
न्याय पुराण चारिदश जानौ ❀ ये चौदह विद्या अनुमानौ ॥
आयुर्धन गान्धर्ब कहायो ❀ धर्मशास्त्र उपवेद गनायो ॥
अब नृप सर्ग चरित्र सुनावौं ❀ भूतोत्पति परिपूरण गावौं ॥
एक समय छायो तमलोका ❀ नहिं जड़चेतन रूप विलोका ॥
सृष्टिकार इच्छा उपजाई ❀ प्रथमहि जल प्रभु लीन बनाई ॥
जल परि शुक्र अंडवत भयऊ ❀ हाटक वर्ण सुरंगति लयऊ ॥
ताते प्रगट भयउ मुख चारी ❀ जो त्रिलोक कारक ब्रतधारी ॥

तामहँ निज बीरज धरो, उपजे जिनसि अनेक ।
देवासुर नरनाग पशु, करु नभगादि विवेक ॥
बहुतकाल बिधिध्यानकरि, करो अंड विविभाग ।
एक भूमि दूसर गगन, रचा सहित अनुराग ॥

अष्ट दिशा जलराशि बनायो ❀ ब्रह्मा श्रेष्ठ ज्ञान जब पायो ॥
महत्तत्व त्रैगुण अहंकारा ❀ हेतु सर्व भूतोत्पति सारा ॥
प्रथम विरंचि रचो आकाशा ❀ क्रमसों वायु रग्नि परकाशा ॥
देव दनुज गण गृह नव भांती ❀ विरचे सरित सिंधु गिरिपांती ॥
काल विभाग कीन्ह ऋतुमासा ❀ काम क्रोध मोहादि निवासा ॥
कर्म विवेक धर्म निरमाना ❀ सब जीवन तन सो लपटाना ॥

ऋतुबशफलवृक्षनि लगत, जीव गहे तिमि कर्म ।
लोक वृद्धि हित आत्मभू, नर विरचे वरधर्म ॥

निज मुखते विधि बिप्र उपाये ❀ भुजते क्षत्रिय गण उपजाये ॥
वैश्य जंघते पदते शूद्रा ❀ रचे विरंचि सुबुद्धि समुद्रा ॥
पूरब मुख ऋगवेद प्रकाशा ❀ मुनिबशिष्ठ संग्रहो शुभाशा ॥
दक्षिण आनन यजु अवतारा ❀ याज्ञवल्क्य मन सो आधारा ॥
पश्चिम मुखते प्रगटो सामा ❀ धारण किय गौतम गुणग्रामा ॥
जन्म अथर्वण उत्तर आनन ❀ शौणक ग्रहण कियो वर गानन ॥
लोक प्रसिद्ध अस्य ते राजा ❀ भये पुराण स्मृति वर साजा ॥
पुनिविधिनिजतनकीन्ह द्विभागा ❀ दहिनपुरुष तिय बाम विभागा ॥

तिनते भयो विराट यह, पुनि तप कियो अपार ।
भांतिभांतिकीप्रजाहित दशऋषिलियअवतार ॥

नाम प्रजापति सकल कहाये ❀ नारद[२] भृगु[३] अंगिरा[३] गनाये ॥
पुलह[४] प्रचेता[५] क्रतु[६] मुनि जानौ ❀ अत्रि[७] पुलस्त्य[८] मरीचि[९] बखानौ ॥
प्रथम प्रजापति[१] आदि अपारा ❀ कीन्ह प्रगट तप तेज अगारा ॥
देव सुनीश दैत्य गंधर्वा ❀ किन्नर यक्ष पितृगण सर्वा ॥
राक्षस नर अप्सरा पिशाचा ❀ नागादिक विरचे बुधि सांचा ॥
धूम्रकेतु घन विद्युत चापा ❀ तारागण रवि शशि सुरदापा ॥

पशुपक्षी कृमि आदि बनाये ❀ चारिखानि मग द्विज उपजाये ॥
एक जरायुज जीव कहावै ❀ नर पशु आदिक जन्मनि पावै ॥

अंडजबहुजलगगनचर, स्वेदज चीलर आदि ।
उद्भिजवृक्षादिकगनिय, सकल सूज तृणगादि ॥

जेफल पाकत जात सुखाई ❀ औषधि तिनहिं कहतकविराई ॥
विना फूल फल जिनमहँ लागे ❀ कीन्ह बनस्पति नाम विभागे ॥
जिनमहँ फल फूलनि करि होई ❀ वृक्ष गटी जानौ बुध सोई ॥
बल्ली गुल्मादिक बहु भेदा ❀ उद्भिज विविध जितमहिछेदा ॥
बीज कांड उपजत विविभांती ❀ सुख दुख सब जानत तरुपांती ॥
कर्म विवशसे अचल शरीरा ❀ बोलि न सकत तदपि मतिधीरा ॥
प्रगटो सब जग ईश्वर अंशा ❀ शक्तिन सबकर करिय प्रसंशा ॥
सोई रहत जब जग कर्तारा ❀ होत लीन ता तन संसारा ॥

जागतही पुनि रचत है, पूरबवत संसार ।
दिवस रैनि उत्पति प्रलय, सदा करत कर्तार ॥
जेते युग को दिन कहो, ते तिय रैनि प्रमान ।
दिन मैं उपजावत जगत, रैनि प्रलय अनुमान ॥

प्रातजागि विधि मनहिं बनावत ❀ सृष्टिकार इच्छा मन आवत ॥
वायु ते तेज रूप गुण पायो ❀ तेजते जलरस गुण निरमायो ॥
जल ते धरागंध गुण सानी ❀ ताते प्रगट भये चहुँखानी ॥
जो हम प्रथम दिव्य युग भाषो ❀ द्वादश सहस वर्ष अभिलाषो ॥
अस इकहत्तर युग जब जाई ❀ मन्वंतर तब होत नृराई ॥
एक दिवस ब्रह्मा कर जोई ❀ चौदह मन्वंतर गत होई ॥

कृतयुग चारौ चरणवर, धर्म जगत ठहरान ।
प्रति युग घटि एक एक पद, कलि एकै श्रुतिगान ॥
धर्मनिष्ठ सत वचन निरोगा ❀ सतयुग गुणागार सब लोगा ॥
आयुर्दाय वर्ष शतचारी ❀ पाइ मुदित भे नर अरु नारी ॥
प्रति युग न्यून भयो चौथाई ❀ कलि नर आयु वर्ष शत पाई ॥
कृत तप त्रेता ज्ञान नृपाला ❀ द्वापर मष कलि दान दयाला ॥
पढ़ै पढ़ावै श्रुति उच्चरई ❀ करै करावै मष मुद भरई ॥
दान देइ अरु लेइ सुजाना ❀ विप्र कर्म षट वेद प्रमाना ॥
पढ़ै करै मष देवै दाना ❀ पालै प्रजा भोग विधि नाना ॥
ये क्षत्रिय के कर्म गनाये ❀ वैश्यकर्म सुनु जिमिश्रुति गाये ॥
दान देइ मष कृतकरै, विद्या पढ़ै अपार ।
पशु पालै खेती करै भांति, भांति व्यापार ॥
तीनि वर्ण सेवन करै, शूद्र धर्म यह भूप ।
आन कथा सुनु क्षोणिपति, उत्तम चरित अनूप ॥
नरतन महँ ऊपर को अंगा ❀ अति उत्तम गावत सतसंगा ॥
ताहू महँ मुख श्रेष्ठ बतायो ❀ विधि निज मुखते विप्र बनायो ॥
यहि कारण ब्राह्मण क्षिति राई ❀ अति उत्तम चहुँ वर्ण अथाई ॥
हव्य कव्य सुर सुख करि पावै ❀ याते विप्र पूज्य मन आवै ॥
सकल भूतमधि उत्तम प्रानी ❀ तिनमहँ बुद्धिमान गुणखानी ॥
तिन मधि ब्राह्मण वैदिक ताता ❀ तिनमहँ कृत बुद्धी वरगाता ॥
कृत बुद्धिन महँ कर्मप्रचारी ❀ तिनते उत्तम ब्रह्म विचारी ॥
ब्राह्मण धर्म हेतु अवतारा ❀ विप्र अधर्मिक शूद्र विचारा ॥
ब्राह्मण धर्माचरण युत, ब्रह्मलोक चलि जात ।
बिप्र धर्म रक्षक भणत, श्रुति आगम बिख्यात ॥

देखौ २-३ अध्याय ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में।

कौन गुणनि संयुक्त द्विज, ब्रह्मलोक चलिजात।
अरु पावंत ब्रह्मत्व प्रभु, सो वरणिय विख्यात॥

संस्कार अरतालिस जोई ❀ करत विप्र ब्रह्मत्वल होई॥
लोक प्राप्ति कारण संसकारा ❀ करि बिस्तार वदिय श्रुतिसारा॥
गर्भाधान पुंसवन राजा ❀ अरु सीमंत सजातक काजा॥
जात कर्म अरु अन्न परासन ❀ चौड़ मेखला चारि शुभासन॥
वेद व्रत स्नान उद्धाहा ❀ शर मष करि मेटै दुख दाहा॥
आद्धीष्टका पारबन जानौ ❀ श्रावण आग्रहायणी मानौ॥
चैत्री आश्व युजी महिपाला ❀ अग्नि होत्र सहदर्श भुआला॥

पौर्णमास पावन परम, चातुर्मास्य सुजान।
अरु निरूढ़ पशु बंधहै, सौत्रामणी प्रमान॥
सो० अग्नष्टो महि जानु, अत्यग्निष्टो मादिगनु।
और षोडसी मानु वाजपेय अति रात्रमनु॥

सप्तसोम आदिक धरणीशा ❀ संस्कार द्विज वसु चालीसा॥
अरु ब्राह्मण महँ वसु गुणहोवैं ❀ जिनकरि ब्रह्मलोक सुखजोवैं॥
अनूसूया अरु दया प्रबीना ❀ शांतिस अनायास छल छीना॥
मंगलसा कार्पण्य महीपा ❀ शौचस्पृहा बदत मुनि दीपा॥
गुण गुणवतन के न छपावै ❀ अगुणिहुँ की अस्तुतिहिलखावै॥
लखि परदोष न मनमहँ धरई ❀ अनूसूया यह बुध उच्चरई॥
निजपर मित्र शत्रु समजानै ❀ परदुख हरणि बुद्धि उर आनै॥
दयानाम तेहि भणत सुजाना ❀ जे वैदिक मुनि ज्ञान निधाना॥

मनसावाचा कर्म करि, जो दुख देवै कोइ।

क्रोध न लावै तासु पर, क्षमा कहावै सोइ ॥
सो० भक्ष्यअभक्ष्य न खाय, निंदितनर संगतितजै ।
साचारिक मनकाय, ताहिशौच गावत चतुर ॥

जो शुभ कर्महु जानिय भाई ❀ पै साधन महँ अति कठिनाई ॥
ताकह जो न करै अत्यंता ❀ अनायास तेहि वेद भणंता ॥
करै कर्म शुभ अशुभ विहाई ❀ मंगल ताहि भणत कविराई ॥
जो संकष्ट धन करतल आवै ❀ ताहूते कछु दान लगावै ॥
नाम अकार्पण्य तेहि जानौ ❀ अब लक्षण स्पृहा मुनि गानौ ॥
हरि इच्छा सम जो कछु पावै ❀ संतोषित निज काय चलावै ॥
परधन इच्छा मनहि न लावै ❀ नाम स्पृहा जगतमें गावै ॥
संस्कार वसु गुण युत जोई ❀ लहत ब्रह्मपुर ब्राह्मण सोई ॥

स्त्रियाति संस्कार ॥
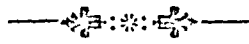
संस्कार वैदिक करै, वर्णाश्रम आचार ।
पावत मुक्ति द्विजातिवर, निश्चय यहिसंसार ॥

विप्र नाम सहशर्मा होई ❀ जिमि शिवशर्मा ब्राह्मण कोई ॥
सबल नाम क्षत्रिय बरवीरा ❀ यथा इन्द्रवर्मा रण धीरा ॥
वैश्य नाम धन वर्द्धक धारै ❀ यथा धनेश गुप्त उच्चारै ॥
शूद्र नाम दासत्व जनावै ❀ सर्व दास जस सबकह भावै ॥
नारि नाम पंडित अस धरई ❀ ललित प्रसन्नित जगउच्चरई ॥
आनँद दायक परम सोहावन ❀ आशिर्वाद युक्त मन भावन ॥
अन्ताकार होइ इकारा ❀ नारि नाम सो रुचिर सुवारा ॥

ब्राह्मण क्षत्री बणिक सुजाना ❀ तिनके संसकार सुनु काना ॥
गर्भा धान नाम जो पावा ❀ संसकार सो प्रथम सुहावा ॥
दूजा संसकार पुंसवना ❀ मनुजहि देत पुत्र फल जवना ॥
ताको समय सुनावौ सवहीं ❀ पावैं सुख जो प्राणी करहीं ॥
जादिन बीर्य्य गर्भ में जावै ❀ तादिन से पत्नी गनि आवै ॥
दुसरे तिसरे चौथे मासा ❀ करै पुंसवन श्रुति अस भासा ॥
तीसर संसकार सीमन्ता ❀ छठये मास होत कह सन्ता ॥
गर्भ दोष सब बिधि मिटि जाई ❀ जो सीमन्त करै मन लाई ॥
संसकार यह विधि करि कोई ❀ गुणी पुत्र पावै जग सोई ॥

दो० संसकार अब चौथजो, बरणत दुर्गादास।
बालक जेहि छन भूमिगिरै, करै पिता परकास ॥

ताको जात कर्म्म है नामा ❀ गोभिल गृह्य सूत्र है धामा ॥
पचवां संसकार सुनु भाई ❀ बरहे दिवस करै मनलाई ॥
नाम करण संज्ञा है ताको ❀ गोभि गृह्य सूत्र कह जाको ॥
धरै नाम पितु मातु बिचारी ❀ द्वयक्षर चतुरक्षरहिं सँवारी ॥
छठवां संस्कार सुख दाई ❀ जो निष्क्रमण कहै श्रुति गाई ॥
चारि मासकर बालक होई ❀ संसकार तब कर सब कोई ॥
विधिवत संसकार करवाई ❀ तब बालक बाहर लै जाई ॥
संसकार सब करै जो कोई ❀ ताकर पुत्र विदित जग होई ॥

संसकार सतवांविदित, अन्नपराशन नाम।
होतमास छठये सदा, यहिंविधिकहगुनिधाम ॥

अस्त्र शस्त्र पुस्तकैं किताबा ❀ कृषी केर कोई असवाबा ॥
बालक के आगे रख वाई ❀ बालक भूमि देइ पौढ़ाई ॥
है प्रसन्न जो बालक गहई ❀ सोइ जीविका समय पर लहई ॥

संसकार अठवां जेहिभांती ❀ करत निरन्तर सकल द्विजाती ॥
ताकर नाम सुनौ मनलाई ❀ चूड़ाकर्म कहत मनु गाई ॥
प्रथम तृतीय वर्ष के माहीं ❀ मुण्डन करत द्विजाति सदाहीं ॥
कर्ण वेध परासर भासा ❀ नववाँ संसकार जो खासा ॥
होत तीसरे पँचये वर्षा ❀ कर्णवेध सब करत सहर्षा ॥

कर्णवेध को बरणि अब, और कहत मनलाय ।
दुर्गादास सचेत ह्वै, करहु सो सब द्विजराय ॥

दशवाँ संसकार उपनयना ❀ द्विजसंज्ञा सूचक जग लयना ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्यन केरा ❀ पृथक् पृथक् है समय घनेरा ॥
करि उपनयन पढ़नके हेता ❀ ब्रह्मचर्य्य धरि तजैं निकेता ॥
वेदारम्ह करैं मन लाई ❀ संसकार ग्यारहवां है भाई ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य द्विजाती ❀ पढ़ैं वेद ये सब दिन राती ॥
केवल ब्राह्मण सकत पढ़ाई ❀ और बर्ण नहिं आज्ञा पाई ॥
ब्रह्मचर्य्य करि पढ़ि सब वेदा ❀ सांगो पाङ्ग पढ़ै सब भेदा ॥
यहि बिधि सकल कला जब पढ़ई ❀ संसकार बारहवां सो करई ॥
नाम समा वर्त्तन है ताको ❀ करत बिवाह हेत नर जाको ॥
संसकार तेरहवां है जोई ❀ नाम बिवाह अहै जग सोई ॥

दो० सोइ ग्रहस्थ आश्रम कहत, दुर्गादास बिचारि ।
संसकार तेरह भये, और कहौं निरधारि ॥

बानप्रस्थ नाम जो पावा ❀ संसकार चौदहवां गावा ॥
तीनि अवस्था देइ बिताई ❀ भगवति भजन करै चितलाई ॥
पत्नी सहित त्यागि गृह जाही ❀ भ्रमन करै दरशन फल लहहीं ॥
कछुक समय बन माहिं बितावै ❀ तब दुसरे आश्रम को जावै ॥
जो पन्द्रहवां सोह बिसाला ❀ सो सन्यास सभन ते वाला ॥

संसकार पन्द्रह यहि भांती ❀ करत सदा सुख हेत द्विजाती ॥
सोरहवां अन्त्येष्ठी नामा ❀ जाकर विष्णु लोक है धामा ॥
संसकार सोरह सुख दाई ❀ दुर्गादास कह्यो मन लाई ॥
गर्भ दिवस ते अष्टम वर्षा ❀ विप्र जनेऊ करै सहर्षा ॥
क्षत्रिय ग्यारह वर्ष बिताई ❀ वैश्य द्वादशे वर्षहि पाई ॥
ब्राह्मण गायत्री अधिकारी ❀ रहत वर्ष षोड़श लगुहारी ॥
क्षत्रिय रहत वर्ष बाईसा ❀ वैश्यहु रहत वर्ष चौबीसा ॥
याते अधिक आयु चलि जाई ❀ तब न रहत अधिकार नृराई ॥

ब्रात्य कहावत चाहिये, ब्रात्यस्तोमक कर्म ।
गायत्री अधिकार तब, यों गावत श्रुति धर्म ॥

सो० ब्रात्य होइ नरनाह, ताहि न वेद पढ़ाइये ।
अरु न कीजिये ब्याह, धर्मशास्त्र असबदतनृप ॥

मष उपवीत काल महिपाला ❀ होइ विशेषि त्रिवर्णिक छाला ॥
सिंहाजिन ब्राह्मण हितलावे ❀ क्षत्रिहि रुरु मृगचर्म बतावै ॥
वैश्यहि छाग चर्म अधिकारा ❀ सुनु अब बस्त्रन केर विचारा ॥
शण अतसी अरु ऊर्ण गनाये ❀ तीनि बर्ण तेहु बस्त्र बताये ॥
त्रिलरी चिक्कन मूँज सोहाई ❀ विप्र मेषला वेद बताई ॥
मुरा नाम तृण क्षत्रिय हेता ❀ वैश्यहि शण तंतुन रचिदेता ॥
जो न मिलै मूँजादिक भाई ❀ तौकुश अश्मक वल्वज लाई ॥
सुभग मेषला त्रिलर बनावै ❀ एक त्रीनि शर ग्रंथि लगावै ॥

देहु जनेऊ विप्र कहँ, जो विरचित कर्पास ।
क्षत्रिहिशण अरु वैश्यकह, ऊर्णित सहित हुलास ॥

बिल्वपलाश दंड द्विज केरा ❀ शीश प्रयंत उच्च बुध टेरा ॥

दंड खैर वर क्षत्रिहि चाहिय ❁ मस्तकलगु सो उच्चसराहिय ॥
पिप्पल गूलर विरचित जोई ❁ वैश्य दंड नासा लगु होई ॥
दंड रहित व्रण चीकन चाहिय ❁ आन दंड नहिं भूप सराहिय ॥
भिक्षा प्रथम मातुसन मांगै ❁ अथवा भगनी तट अनुरागै ॥
अथवा मातृ भगनि तट जाई ❁ जो कछु देइ विहँसि हरषाई ॥
भिक्षा चाहिय हाटक रूपा ❁ अथवा अन्न सुनौ वर भूपा ॥
लै भिक्षा गुरु आगे धरई ❁ गुरुआयसुलहि अचमनकरई ॥

पूरब मुख तेहि अन्न कहँ, भक्षण करै प्रवीन ।
बढ़ै आयु दक्षिण मुखै, यश बाढ़ै दुखहीन ॥

पश्चिम मुख लक्ष्मी बढ़ावै ❁ उत्तर सत्य अधिक उपजावै ॥
करि भोजन पुनि अचमन करई ❁ करै स्वच्छ इन्द्रिय मलहरई ॥
अन्नहि प्रमुदित करै प्रणामा ❁ कबहुँ न तेहि निंदै गुणधामा ॥
निंदित अन्न न भोजन योगा ❁ नाशि बलहि उपजावतरोगा ॥
निज उच्छिष्ट न दीजिय काहू ❁ अरु न बहोरि जूंठ भष काहू ॥
अन्नहिते बाढ़त बल तेजा ❁ अन्न भक्षि सोवत सुख सेजा ॥
बारम्बार न भोजन कीजिय ❁ एकबार निज उदर भरीजिय ॥
करि विच्छेद खात बहुबारा ❁ सो मेटत दुहुँ ओर सहारा ॥

धनवर्द्धन जिमि दुखलहो सो कहिये मुनिराय ।
सतयुग धनवर्द्धन वणिक पुष्कर बसत न्रराय ॥

ग्रीषम ऋतु मध्याह्नहि पाई ❁ करि बलि वैश्वदेव हरषाई ॥
मित्र पुत्र भ्राता सँग लीने ❁ भोजन करत मोद मनभीने ॥
दीन शब्द गृह बाहिर भयऊ ❁ तजि भोजन बाहिरचलिगयऊ ॥
लहो न भेद धाम चलि आयो ❁ निज उच्छिष्ट बहुरितेहिखायो ॥
करतहि भोजन काया त्यागी ❁ परलोकहु महँ भयो अभागी ॥

यहि कारण प्रति बार न खावै ❀ अरु न जूठ मुख बाहिर जावै ॥
भोजन अधिक खाहु जनि भाई ❀ नाहिंत रस होवै अधिकाई ॥
रसते उपजत रोग अपारा ❀ होत अजीरण बढ़त बिकारा ॥

होत न जप तप नेमव्रत, पाठ होम अरु दान।
रोगबढ़त तन विकलमन, आयु घटत बुधिमान ॥

बहु भक्षी निंदित जग रहई ❀ तनतजि अंत न सद्गति लहई ॥
बहुभषि बमन करत नरजोई ❀ भूत पिशाच ग्रसित जनहोई ॥
पुरुष पवित्र निकट नहिं आवै ❀ राक्षस प्रेत बिलोकि पलावै ॥
यहि कारण शुचि रहै सदाहीं ❀ इतसुख उत सुरपुर चलिजाहीं ॥
कौन कर्मकरि विप्र कृपाला ❀ होत पवित्र सुनहु महिपाला ॥
सविधि आचमन जो द्विजकरई ❀ ताहि पवित्र वेद उच्चरई ॥
सुनौ आचमन विधि नरनाहा ❀ जो सुनि लहौ परम उत्साहा ॥
कर पद धोइ सुआसन आई ❀ पूर्वोत्तर मुख बैठि नुराई ॥

जानु भीतरहि दहिनकर, करि पगजोरि समान।
शिखाग्रंथि पुनि छोरिकर, सथिरचित्त गुणवान ॥

शीतल निर्मल जलहिं मँगाई ❀ करै आचमन क्रोध दुराई ॥
दृष्टि अथिर मन क्रोध प्रचारा ❀ नहिं लाघव आचमन प्रकारा ॥
उष्णतोय अरु मलिन न होई ❀ बिधि अनुसार आचमन सोई ॥

तर्जनि अँगुठा सों चषनि, छुवै बिबुध हरषाय।
नासा छुवै अनामिका, अरु अंगुष्ठ मिलाय ॥

अंगुष्ठा मध्यमा मिलाई ❀ आनन छुवै चतुर मुद छाई ॥
बहुरि कनिष्ठा अँगुष्ठा साथा ❀ कर्णस्पर्श करै शुचि गाथा ॥
सर्वांगुली भुजा बुध छुवई ❀ होइ मुक्त जादिन नर सुवई ॥
अग्निरूप अंगुष्ठ बखाना ❀ बायु रूप तर्जनी प्रमाना ॥

भगत मध्यमा रूप प्रजापति ❀ अरुअनामिका दिनकरबपुगति॥
रूप कनिष्ठा इन्द्र समाना ❀ जानत विबुध न अबुधअयाना॥
विप्राचमन करै यहि भांती ❀ तृप्त होइँ सुर तेरह जाती ॥
पूजनीय ब्राह्मण सब काला ❀ सर्व देवमय विप्र नृपाला ॥

तीर्थ ब्राह्मय अरु प्रजापति, देव आचमन ठीक ।
पितृ तीर्थकरि आचमन, पृथ्वीपति नहिं नीक ॥
उपवीती ह्वै दहिनकर, जानु भीतरे लाइ ।
करै आचमन विप्रबर, सो पवित्र ह्वै जाइ ॥

संस्कार केशान्त विधाना ❀ अब महीप हौं करत बखाना ॥
ब्राह्मण केर षोड़शे वर्षा ❀ क्षत्रिय बाइस वर्ष सहर्षा ॥
वैश्य पचीस वर्ष वय पाई ❀ नृप केशान्त करै हरषाई ॥
करि केशान्त बसै गुरुधामा ❀ अथवा निजगृह करै सुबामा ॥
अग्निहोत्र करि लावै ब्याही ❀ बिनु उद्वाह उचित त्रिय नाहीं ॥

संस्कार जगमुख्य नृप, त्रिय हित एक बिवाह ।
यह उपनयन विधान भल, हम बरणो नरनाह ॥

अब सुनु आन कर्म क्षिति ईशा ❀ हौं वरणत जस बदत मुनीशा ॥
गुरुको चाहिय प्रथम भुवारा ❀ देइ जनेऊ श्रुति अनुसारा ॥
तत्पश्चात् शौच आचारा ❀ सिखवै संध्याकर ब्यवहारा ॥
अग्नि कार्य पुनि ताहि सिखावै ❀ ता पाछे श्रुति पाठ बतावै ॥
शिष्य सथिर ब्रह्मांजलि बांधै ❀ उत्तर मुख श्रुति पाठहि साधै ॥
पाठारंभ अंत हरषाई ❀ बन्दै गुरुपद प्रेम बढ़ाई ॥
छुवै दहिन कर दक्षिण चरणा ❀ बामे बाम यथा श्रुति बरणा ॥
कहै अधीष्वभोः गुरुबानी ❀ पाठारंभ हिये अनुमानी ॥

बिरामोस्तु पाठान्त महँ, कहै गुरू गुणखानि ।

ओंकार उच्चारई, आदि अंत पाठानि ॥

तोमरछंद ॥

नृप प्रजापति श्रुतिसार। तिहुँ वेद के अनुसार ॥
गुणितीनि अक्षर लीन। ते अउम शब्द प्रबीन ॥
अरु भूः भुवः स्वः जोइ। व्याहृति त्रिरूपक सोइ ॥
गायत्रि के पद तीनि। श्रुतिसारनिजमनचीनि॥
जो जपत दुहुँसंध्यानि। फललहत श्रुतिपाठानि॥
सरिकूल बैठे जाइ। दृढचित्त द्विज मनकाइ ॥

दो० एक सहस्र नित प्रतिजपै, गायत्री शुचि जोइ।
महापापते छुटत है, एकमास महँ सोइ ॥
द्विजक्षत्री अरुवैश्य जो, निजर क्रिया बिहीन।
साधुनमहँनिंदितजगत, उत अतिदीनमलीन॥

यहि कारण न कर्म बुध त्यागै ❀ यथा तथा नितही अनुरागै ॥
प्रणव सव्याहृति सुनौ भुवाला ❀ त्रिपदा गायत्री गुण माला ॥
सब मिलि मंत्र होत है जोई ❀ विधिमुख नृपति कहावत सोई ॥
जो यहि जपै वर्ष गुणगाता ❀ ब्रह्मलीन सो नर विख्याता ॥
होम दान मष आदि नशाहीं ❀ मग्न ब्रह्म सुख रहै सदाहीं ॥
प्रणव ब्रह्म एकाक्षर रूपा ❀ विधि मष ते जप यज्ञ अनूपा ॥
जपमहँ जो उपांसु जप गहई ❀ सो ब्राह्मण शतगुण फललहई ॥

ते जप मषकी षोडसी, कला तुलत नहिं तात।
ब्राह्मण को सर्वांग सिधि, जप मष करि अवदात ॥

आनकर्म चहुँ बिप्रन साधै ❀ गायत्री विशेष आराधै ॥

ब्राह्मण मैत्र विदित संसारा ❀ गायत्री बिनु विप्र असारा ॥
शेष रैनि कछु उडु दरसाई ❀ संध्या प्रात करै उठिभाई ॥
अरुणोदय लगु ब्राह्मण नेमा ❀ नित गायत्री जपै सक्षेमा ॥
शेष रहै कछु दिन सुनु भाई ❀ संध्या द्वितिय करै हरषाई ॥
जबलग होहिं प्रकाशित तारा ❀ गायत्री जप वेद विचारा ॥
जो ब्राह्मण संध्या नहिं करई ❀ शूद्र समान वेद उच्चरई ॥

गृह बाहिर जलके निकट, जप गायत्री ठीक।
जापक पावक फल घनो, होइ न वचन अलीक ॥
ब्रह्म यज्ञ संध्या हवन, मन्त्रन के उच्चार।
अनध्याय को महिपमणि, नाहिन करियविचार ॥

बिनु गुरु वेद पाठ जो करई ❀ रौरव नरक तीन नर परई ॥
गुरु विद्या दायक लखि भाई ❀ प्रथम प्रणाम करिय मुद पाई ॥
केवल गायत्री आधारा ❀ धर्मशास्त्र मारग पगधारा ॥
जो ब्राह्मण उत्तम नरराई ❀ सो पढ़ि वेद करै जड़ताई ॥
खाइ वस्तु सब बिक्रय करई ❀ ता कहँ अधम वेद उच्चरई ॥
गुरु आवत लखि आसन त्यागी ❀ बन्दै ठाढ़ होइ सुखभागी ॥
वृद्ध विलोकि तरुण कर प्राना ❀ ऊपर उठत वदत बुधिवाना ॥
अभ्युत्थान वृद्ध कहँ देवै ❀ सो निज प्राण सथिर करि लेवै ॥

जो प्रणाम कृत वृद्ध कह, तन मन आनँद पाय।
आयुबुद्धियश बल लहत, नतअतिकुटिलस्वभाय ॥

करै प्रणाम सहित निजनामा ❀ देइ आशिषा गुरु गुणधामा ॥
आयुष्मान भव: गुरु भाषै ❀ अथवा चिरंजीव शिव राषै ॥
प्रत्यभिवादन करै न जोई ❀ ताहि प्रणाम करो जनि कोई ॥
सुनि प्रणाम नहिं देइ अशीसा ❀ नरक निवास तासु बिसबीसा ॥

ब्राह्मण सों पूँछे कुशलाई ❀ पूँछु अनामय क्षत्रिय पाई ॥
वैश्यहि क्षेम शब्द वदि पूँछे ❀ शूद्रारोग्य जाइ जनि छूँछे ॥

होइ न निज सम्बन्ध कछु, जौन नारि सन तात।
भवती शुभगे भगिनि कहि, टेरिय सुनु बर गात ॥
पिता चचा ताऊ ममा, गुरु ऋत्वक पितु बाम।
इन सबको उत्थान दै, शुचि मन करै प्रणाम ॥
मातु मातु भगिनी बुआ, सासु ममानी पाय।
गुरुबामा युत मान्य सब, कहत सकल मुनिराय ॥

ज्येष्ठ बंधु बामा सम माता ❀ आदर तासु स्वर्ग फल दाता ॥
मात पिता भगिनी सुनु भाई ❀ निज भगिनी माता सम ताई ॥
सब कर आदर करै सुजाना ❀ सबते अधिक मातु सनमाना ॥
मित्र पुत्र बड़ भगिनी पूता ❀ निजसम लखि आदरिय बहूता॥
ब्राह्मण होइ बर्ष दश केरा ❀ क्षत्री वृद्ध वर्ष शत हेरा ॥
तदपि पिता सुत कर संबन्धा ❀ करै प्रणाम गतायुष धन्धा ॥
क्षत्रिय विप्र पिता सम जानै ❀ वैश्य पितामह सम अनुमानै ॥
शूद्र पितामह पितु कर बंदै ❀ आशिष पाइ सगोत्र अनंदै ॥

सो० धनभ्राता युतआयु, शुभाचरण विद्या नृपति।
पाँच बड़प्पन बायु, देखिपरत लागी जगत ॥

विद्या आयु शूद्र तन पाई ❀ कीजिय आदर यह मनुसाई ॥
वृद्ध रोग बश गुर्भिणि राई ❀ तापस मग लखि चलिय पराई ॥
जात होइ बर ब्याहन काजा ❀ ताहि पंथ दीजिय तजि लाजा ॥
मिलैं सकल मारग यक ठाईं ❀ नृपमुनि लखि विशेषि हटिजाई ॥

वेद भाग वेदांग वा, जौनु पढ़ावै तात।

शुभग जीविका हेतसों, उपाध्याय विख्यात ॥

गर्भाधान आदि जो करई ❀ अरु सु अन्न दै उदरहि भरई ॥
तासु नाम गुरु बदत सयाने ❀ जे सुजान श्रुति मारग साने ॥
उत्तम वेद पढ़ावन हारा ❀ मुख्य विप्र पढ़ि वेद बिचारा ॥
काम विवश माता पितु ताता ❀ या जग होत जन्मके दाता ॥
पूजनीय हम गने अनेका ❀ अधिक सबन ते गुरू विवेका ॥
चारो वर्ण पूज्य गुरु भूपा ❀ सुनि बोलो नृप बचन अनूपा ॥
लक्षण उपाध्याय मुनि गाये ❀ आचारय आदिक समुझाये ॥

सो० अक्षर सिखवै जौन, पूजनीय सो गुरु सरिस ।
करै निरादर तौन, अघ भागी तेहि जानिये ॥

नाहिं अवस्था केर बिचारा ❀ विद्या दानि गुरू अधिकारा ॥
मुनि अंगिरा सुत गुणवाना ❀ नाम बृहस्पति लोक बखाना ॥
वृद्ध पितरगण तौन पढ़ावै ❀ कहि कहि पुत्र शब्द समुझावै ॥
पितृ लजाइ सुरन ढिग आये ❀ वचन बृहस्पति तिनहिं सुनाये ॥
देवन कहो शोच जनि करहू ❀ न्याय वचन अपने उर धरहू ॥
अबुध मुग्ध बालक है सोई ❀ श्रुति ज्ञाता बालक पितु होई ॥
शिक्षक पिता सरिस श्रुति गायो ❀ श्वेत केश नहिं वृद्ध गनायो ॥
विद्या अधिक जासु उर होई ❀ सबसे वृद्ध कहावत सोई ॥

यथा काष्ट गज जानिये, चर्म रचित मृगहोइ ।
देत काम गज मृग नहीं, आदर करत न कोइ ॥

तथा अपढ़ ब्राह्मण नरनायक ❀ नाम मात्र ब्राह्मण नहिंलायक ॥
जिमि द्विज मूर्खदान फलहीना ❀ तिमि ब्राह्मण नृप वेदविहीना ॥
जो ब्राह्मण पढ़ि वेद सुबानी ❀ करै न वैश्य देव कर्मानी ॥
जानिय ताकहुँ शूद्र समाना ❀ जग ब्यवहारिक कारजसाना ॥

वैश्य वृत्ति करि शूद्रहि सेवै ❀ चोरी करि नट वृत्तिहि लेवै ॥
करै चिकित्सा करि निर्बाहा ❀ शूद्रतुल्य जानिय नरनाहा ॥
जेहिपुर विप्र वेद व्रतहीना ❀ भोजन लहै नृपाल प्रवीना ॥

दंडनीय पुर तौन नृप, दोष धरै नहिं कोइ ।
अग्नि होत्र श्रुति पढ़िकरै, सफल वेद तब होइ ॥
गुणी निर्गुणी पूज्य द्विज, गायत्री आधार ।
पतित होइ तौ त्यागिये, करि निज चित्त विचार ॥

जो पढ़ि वेद करै तप जाई ❀ वेद पाठ फल पाव अघाई ॥
पढ़ै वेद निज सुख हित लागी ❀ उपजावै जीविका अभागी ॥
शूद्र समान ताहि मन आनौ ❀ ब्राह्मण यदपि न ब्राह्मण मानौ ॥

ब्रह्मचर्य्यधर्म ॥

——:❀:——

तीनि जन्म ब्राह्मणके राजा ❀ मातु उदर प्रथमै तन साजा ॥
मष उपवीतहि पाइ द्वितीया ❀ मष दिक्षा लहि जन्म तृतीया ॥
प्रथम मातु पितु विदित जहाना ❀ सुनु दूसर पितु मातु प्रमाना ॥
गायत्री आचारय जोई ❀ माता पिता कहावत सोई ॥
जब लगि मष उपवीत न होई ❀ नाधिकार श्रुति पाठ व दोई ॥

मष उपवीत अनंतरहि, वेद पाठ अधिकार ।
दंड मेषला चर्म तब, धारण करै सुवार ॥

देव पितृ नर तर्पण करई ❀ दिजवर बनि वेदहि उच्चरई ॥
जल फल फूल समिध कुश राषै ❀ ब्रह्मचर्य्य बनि झूंठ न भाषै ॥
मास गंध रस बहुल प्रकारा ❀ पुष्प माल तिय तजै सुआरा ॥

खाइ न शुक्तादिक बहु अर्का ❀ दृग अंजन त्यागै करि तर्का ॥
अंग तैल मर्दन तजि देवै ❀ पग न त्राण कर छत्र न लेवै ॥
गीत नृत्य भूपै तजि डोलै ❀ निंदित वचन कतहुं नहिं बोलै ॥
नारि समाज विलोकि पराई ❀ काम क्रोध ढिग भूलि न जाई ॥
व्यभिचारिणि सन करै न वाता ❀ करै न वीर्य्य पात अपघाता ॥

ब्रह्मचर्य लखि स्वप्न महँ, वीर्यस्खलन सलाज ।
न्हायपूजि रवि पुनि जपै, गायत्री शुचिकाज ॥

गोमल मृतिका जल कुश फूला ❀ भिक्षा लावै नित्य अमूला ॥
वैदिक कर्म निपुण नर जानी ❀ भिक्षा लेइ धर्म अनुमानी ॥
निजकुल गुरुकुल के गृहजाई ❀ भिक्षा नहिं मांगै भुवराई ॥
जो न मिलै भिक्षा शुचि राजा ❀ निजकुल गुरु यांचै न अकाजा॥
पै सकलंक होइ जग जोई ❀ तासु अन्न संग्रहै न कोई ॥
संध्या प्रात हवन नित करई ❀ भिक्षाकाल मौनता धरई ॥
भिक्षा अन्न त्यागि दिन साता ❀ अन्न आन जो द्विजवर खाता ॥
अरु दिनसात हवन नृप त्यागै ❀ ताकहँ दोष नष्ट व्रतलागै ॥

ब्रह्मचर्य हित मुख्य नृप, भिक्षा अन्न पुनीत ।
लेइ न भिक्षा एक गृह, प्रति दिन विप्र विनीत ॥

भिक्षा अन्न फलद उपवासा ❀ केवल द्विज हित धर्म प्रकासा ॥
क्षत्रिय वैश्य धर्म महँ भेदा ❀ यह बरणत नृप चारिउ वेदा ॥
कर संपुटित जाइ गुरु आगे ❀ शुद्ध भाव छल छिद्रम त्यागे ॥
लहि आयसु बैठै निज आसन ❀ गुरु सन्मुख सबत्यागिकुवासन ॥
गुरुते पहिले उठै सवारे ❀ पीछे सोवै धर्म बिचारे ॥
बैठै सथिर तजै अनुकरणा ❀ गुरु निंदा त्यागै आचरणा ॥

१ सिरका । २ नकल ठट्ठा ।

सुनै न गुरु निन्दा सुवराई ❀ करि श्रुति बंद चलै उठिभाई ॥
गुरु निंदा सुनि खर तन धारै ❀ गुरु निंदक कूकुर अवतारै ॥

गुरुहि देखि बाहन तजै, भूतल करै प्रणाम ।
गुरुसँग एकासननित नहिं, होत बिबुध गुण धाम ॥

जब गुरु तन तजि हरिपुर जाई ❀ तब गुरु पुत्रहि देइ बड़ाई ॥
पै उच्छिष्ट न भोजिय आना ❀ त्यागि एक गुरु दया निधाना ॥
गुरु पत्निः गुरु सम आदरई ❀ आज्ञा भंग तासु नहिं करई ॥
गुरु पत्नी तन तेल न लावै ❀ अरु न ताहि असनान करावै ॥
तरुण शिष्य गुण दोष बिचारी ❀ चापै पग न पाइ गुरु नारी ॥
संगति नारि दोष मदजानी ❀ त्यागत ब्रह्मचर्य नर ज्ञानी ॥
दुहिता भगिनी यदि निजमाता ❀ नहिं एकांत बिबुध बतराता ॥
सुनु नृप इंद्रिय गण बलवाना ❀ निज बशकरत बिबुध अज्ञाना ॥

गुरुपत्नी नृप नारि कहँ, जो बुध करै प्रनाम ।
मधुरवाणिशोभित वचन, प्रथम कहै निज नाम ॥

जिमिमहिखनतमिलतजलताता ❀ तथा सुश्रुषा विद्या दाता ॥
मुंडित शिखा जटा बनवावै ❀ ब्रह्मचर्य ब्रत नर फल पावै ॥
संध्या प्रात ग्राम तजि जाई ❀ बंदै संध्या जल थल पाई ॥
संध्या प्रात सैन कृत जोई ❀ प्रायश्चित बिनु शुद्ध न होई ॥
मात पिता गुरु आपत काला ❀ आदर करिय बूझि असहाला ॥
माता बसुधा मूर्त्ति समाना ❀ पिताप्रजापति प्रतिमा साना ॥
आचारज विरंचि कर रूपा ❀ यहि कारण जग तीनि अनूपा ॥
सुत हित मात पिता दुख सहई ❀ बदलो तासु न यहिजग अहई ॥

यहि कारण पितु मातु गुरु, तीनों सेव्य अनूप ।
जो नहिं सेवतमनुजतन, अधम कहत तेहि भूप ॥

बिषहूते लीजिय अमृत, बालकते शुभ बात ।
अरिते शुभ आचरण, अरु कर्दम कंचन तात ॥

दुष्टकुलते लीजिये वरनारी ❁ रत्न लेत नर पाथर फारी ॥
विद्या धर्म शौच शुभ बाता ❁ जित पाइयलीजिय विख्याता ॥
मिलै न विप्र पढ़ावनहारा ❁ विपातिकाल श्रुति करत पुकारा ॥
वैदिक क्षत्रिय वैश्यहु पाई ❁ पढ़ै धाइ द्विज मन हरषाई ॥
वेदाध्ययन करै दिन जेते ❁ उन ढिग रहै बिप्र दिन तेते ॥
ब्राह्मण गुरु पहँ जन्म प्रयंता ❁ रहै न बुध कछु दोष अनंता ॥
करै जन्म भरि गुरु सेवकाई ❁ ब्रह्मलोक निवसै सुख पाई ॥
जब लगि विद्या पढ़ै सुजाना ❁ देइ न तब लगि गुरुकहदाना ॥

पढ़ि विद्या गुरु दक्षिणा, दीजिय शक्ति प्रमान ।
भूमि कनक गो अश्व धन, मत्त छत्र परिधान ॥

गुरु तन तजै रहै गुरु बामा ❁ तेहि पूजिय गुरुसम गुणधामा ॥
ता बिन ता सुत की सेवकाई ❁ करै शिष्य मन मोद बढ़ाई ॥
पावै नृप आनन्द अपारा ❁ जीवत मरत स्वर्ग सुख सारा ॥
होइ न गुरुसुत कुल नर कोई ❁ जानिय सेव्य आपनो सोई ॥
अग्निहोत्र नित करै सप्रेमा ❁ ब्रह्मचर्य धार्मिक वर नेमा ॥
सो द्विज बसै विरंचि समीपा ❁ आनकथा सुनु कुरुकुलदीपा ॥
ब्रह्मचर्य इमि कहो बखानी ❁ सुनु गृहस्थ आश्रम धर्मानी ॥
विप्र जनेऊ करिय बसन्ता ❁ क्षत्री ग्रीषम काल अनन्ता ॥

शरत्काल कीजिये अवाशि, बैश्य जनेऊ भूप ।
यहि विपरीत बिलोम वृत, देशकाल अनुरूप ॥
ब्रह्मचर्य वरधर्म इमि, लिखो भविष्य पुरान ।

बरणत दुर्गा मुदित मन, दायक मुदकल्यान ॥

विद्या पढ़ि नारी पुरुष के लक्षण देख कर विवाह करना ॥

——:*:——

देखो ४ । ५ अध्याय ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में.

ब्रह्मचर्य व्रत यथा बखाना ❀ करै तथा सो परम सुजाना ॥
संस्कार सम्पूरण करई ❀ जीवनमुक्त वेद उच्चरई ॥
अथवा अर्द्ध करै चौथ्याई ❀ व्रतके अन्त सुआसन लाई ॥
गुरुहि सुशोभितकै पद पूजै ❀ लखै न ता समया जग दूजै ॥
दै गोदान माल पहिराई ❀ बार बार बन्दै सुखपाई ॥
नाम समावर्तन संस्कारा ❀ करै गुरू आयसु अनुसारा ॥
पुनि आज्ञा लहि भवनहिं आवै ❀ करै विवाह सुलक्षणि पावै ॥
प्रथम मुनीश कहौ समुझाई ❀ नारि सुलक्षण मन हरषाई ॥

एकसमयबहु ऋषिनमिलि, करिप्रणामविधिपाद ।
कीन्ह प्रश्न अस विधि कहो, बरणौ तौन सुवाद ॥

कहविधि सुनो सकल मुनिराजा ❀ तिय लक्षण बरणौं भवकाजा ॥
कोमल अमल अरुण पदवारी ❀ महि परसै सम्यक् पगनारी ॥
होइ न ऊँच मध्य पग जाको ❀ सुबुधि सुलक्षण जानिय ताको ॥
सूखे चरण फटे पलहीना ❀ नारि दरिद्रा ऋषय प्रवीना ॥
पग अँगुली मिलित अरु गोला ❀ लम्बी सूधी परम अमोला ॥
सूक्ष्म नखनि संयुत तिय जोई ❀ सो शुभलक्षणि नृप प्रियहोई ॥
लघु अंगुलि आयुष लघुदानी ❀ दूरि दूरि अंगुलि धनहानी ॥

सूलवक्र दारिद्र दिखावै ❀ थूलांगुलि दासी पद पावै ॥

अँगुली पर अँगुली चढ़ी, मारै कंत अनेक ।
होय अंतसो टहलुई, कीजिय विबुध विवेक ॥

नखस्निग्ध[1] ऊंक्षे अरु मोटे ❀ अरुणरंग सुख रहत अगोटे ॥
श्वेत फटे नीले घुघुवारे ❀ रूखे नख दरिद्रता धारे ॥
जो नख पीत होइ ऋपिराई ❀ तौ तिय भक्ष्य कुभक्ष्यहि खाई ॥
गुल्फ शनिग्ध गोल नसहीना ❀ अति उत्तम मुनिराज प्रवीना ॥
रोम रहित गोरी अरु गोला ❀ जंघा शुभग सुनारि अमोला ॥
ताहि मिलैं गज वाहन बासन ❀ अथवा शिविका और सुखासन॥
रोमयुक्त जंघातिय जोई ❀ इतउत भ्रमण करै जगसोई ॥
काक समान जंघ नर नाहा ❀ निज पति हतै समेत उछाहा ॥

पिंडली ऊपरको खिंची, भोगै क्लेश अपार ।
जानु सिंह मार्जारवत, सुत धनादि दातार ॥

घटसम जानु करत धन हीना ❀ जानु अमांस कलह आधीना ॥
जासु जानु नाटिका[2] दिखाई ❀ तौन तिया हिंसक मुनिराई ॥
रोम जासु कुंचित[3] अरु फाटे ❀ एक कूप द्वै चारिक डाटे ॥
अरु पिंगल वरणी तिय सोई ❀ विष सम प्राण हारिणी होई ॥
दिवस सातवें होत विवाहा ❀ भक्षै पतिहि सुनौ नरनाहा ॥
जौन नारि जंघा मुनिराई ❀ करिकर सरिस गोल दिखराई ॥
कोमल गौर कि रंभस्तम्भा ❀ कामदेव सुखदानि अदम्भा ॥
शुष्क रोम युत जंघा जोई ❀ अति दुर्भाग्य दानि मुनि सोई ॥

जाकी भग रोमा रहित, स्निग्ध संधि दुहुँ ओर ।

---

१ चिकने २ टखना ३ घुंघुवारे ॥

उपजै यद्यपि नीचकुल, बिलसै नृपकी कोर ॥

पिप्पल पात सरिस भग रूपा ❁ कच्छप पृष्ठि तथा सुनु भूपा ॥
अथवा चन्द्र बिंब आकारा ❁ सुखदायक सो विविधि प्रकारा ॥
अग्रभाग गो खुर सम होई ❁ पीछे तिल प्रसूनवत जोई ॥
सो दरिद्र कारक तिय योनी ❁ सुनु अब आनचरितपतिक्षोनी॥
पुष्ट नितंब उत्तमा नारी ❁ ऊखल तुल्य शोक अधिकारी ॥
भारस्तन रोमावलि भूषित ❁ अतिकृशत्रिबली परमअदूषित॥
मध्यभाग अस जासु लखाई ❁ सो शुभगा योषिता नृराई ॥
होइ न उच्च पृष्ठि गत रोमा ❁ उत्तम अशुभ मुनीश विलोमा ॥

कुब्ज पृष्ठि रोमावली, अधिक भूप भणिजाहि ।
पतिभक्षक सोभामिनी, मिलतनपतिसुखताहि ॥
सो० विस्तृत औसुकुमार, होतउदर जेहि नारि कर ।
ताके विपुल कुमार, प्रगट होत भूपाल भणि ॥

कुक्षा मंडुक सम जो नारी ❁ होत अवश्य भूप महतारी ॥
ऊंच उदर बंध्या नृप ज्ञानी ❁ गोलपेट व्यभिचारिणि जानी ॥
अथवा जन्म भरे बनि दासी ❁ गुप्त बात नृप तोहिं प्रकासी ॥
उदर नीच अरु ऊँच लखाई ❁ क्षुद्रा वहे नारि मुनिराई ॥
गोल उच्च कुच युत विस्तारा ❁ भारी उत्तम भणत भुआरा ॥
गर्भ समय उन्नित कुच दाहिन ❁ ताके पुत्र होइ भ्रम नाहिन ॥
वाम कुचोन्नति कन्या जावै ❁ चिबुक लंब धूर्तता जनावै ॥
चिबुक दबी भीतर मुनिराई ❁ कन्त द्वैषिका बाम गनाई ॥

अहिफण जिह्वा स्वान सम, होहि जासु कुचराइ ॥
सो नारी अपभागिनी, दुख भोगै जित जाइ ॥

सपल पुष्ट वक्षस्थल जाको ❀ रोम रहित नाटिका बिनाको ॥
सो तिय भोग भोगिता होई ❀ चतुर सुजान वरै गुणि सोई ॥
छाती गोल करै हिंसा द्रुत ❀ होत कुशीला रोमनि संयुत ॥
बिधवा होइ होइ पल हीना ❀ चौड़ी छाती कलह प्रवीना ॥
गहिर स्निग्ध रेख रत नारी ❀ होत हस्त सुख भोगिनि नारी ॥
अस्त व्यस्त रेखा दुखदाई ❀ आन रेख लक्षण सुनु राई ॥
मूल कनिष्ठा तर्जनि ताई ❀ सूधी रेख एक चलिजाई ॥
सो जीवै शतवर्ष स भावा ❀ न्यून रेख जीवन घटि गावा ॥

कोमल रक्तित छिद्र बिनु, पतरी लांबी गोल ।
होहिं अंगुली हस्त जेहि, प्रमदा भूप अमोल ॥

अरुण उच्च चिक्कन नखवामा ❀ अति ऐश्वर्यवती गुण धामा ॥
रूखे श्वेत नील अरु पीता ❀ दारिद्री दुर्भगा कुगीता ॥
रूखे फटे विषम[1] कर जाके ❀ भोगै सुखन सदा दुख ताके ॥
कोमल अरुण स्निग्ध छोटेकर ❀ उत्तम तिय भोगै आनँद वर ॥
अँगुली पर्वनि में जब सोहै ❀ सुखियारहै न दुःख बिमोहै ॥
जेहि मणिबंध[2] त्रिरेखित राजै ❀ आयुर्बल बड़ि भोगनि साजै ॥
निम्नलिखित चिह्ननि युत हाथा ❀ नृप वामा होवै वर गाथा ॥
ध्वजा[1] कमल[2] श्रीवत्स[3] निकेता[4] ❀ गज[5] हय[6] बज्र[7] चक्र[8] गुणलेता ॥

स्वस्तिक[9] खड्ग[10] कुश[11] कलश[12], छत्र[13] मुकुट[14] केयूर[15] ।
हार[16] शंख[17] तोरण[18] नृपति, कुंडल[19]आदि भरिपूर ॥

जाके हस्त दराती फाला ❀ सीर जुआ ऊखल महिपाला ॥
सो तिय होत कृषी बल नारी ❀ अति धनाढ्यवामा कृषिकारी ॥

१ऊंचे नीचे २कलाई

भुज ऊपर गो पुच्छ समाना ❀ रोम नम्र शुभ वेद बखाना ॥
कर्पूर रोम रहित भल गूढ़ा ❀ कहत श्रेष्ठ तेहिसकल असूढ़ा ॥
नतस्कंध उत्तम तिय भाषी ❀ थूल कंधविधवाँ श्रुति साखी ॥
विषम कंध व्यभिचार चिन्हारी ❀ रेखा तीनि ग्रीव सुखकारी ॥
दुर्बल ग्रीव रहै धन हीना ❀ थूल ग्रीव दुख लहै अछीना ॥
लघु ग्रीवासृत बत्सा जानौ ❀ लंबी ग्रीव कुकर्म निसानौ ॥

युगुल कंध सक कांटिका, ऊँचे होइ न जासु।
पति जीवै बहुकाल तेहि, आयु होइ बड़ि तासु ॥
मुख चौखूटा घूर्तिका, गोल बदन शठ बाम।
असंतानिका छोटमुख, बड़मुख रत खलकाम ॥

कोल श्वान वृक कीस उलूका ❀ होइ क्रूर मुख वायस कूका ॥
असंतान पापिनि तिय जानौ ❀ बंधुहीन पुनि ताहि बखानौ ॥
कमला दर्श चंद्र मुख जाको ❀ उत्तम भोगवती कहु ताको ॥
चिक्कन अरुण ओष्ठ कृशनीके ❀ ऊपर मोट ओठ कलहीके ॥
ओष्ठ श्याम दुख दायक ताता ❀ तीक्षण ओष्ठ क्रोध उपजाता ॥
रसनालंब पातरी लाला ❀ अल्पनीर मय शुभ सबकाला ॥
लघु रसना टेढ़ी अरु मोटी ❀ कुत्सित रंग फटी बुध खोटी ॥
श्वेत स्निग्ध ऊँचे रदनीके ❀ विकट ऊँच लघु फूटे फीके ॥

थूल न पातरि नासिका, ऊँची श्रेष्ठ सुवाल।
नील कमल आकार दृग, उत्तम सुघर विशाल ॥
खंजन मृग बाराह सम, होइ नैन जेहि नारि।
भोगवतीअति उत्तमा, कहिय मुनीश विचारि ॥

---

१ कुहनी ॥

नैन जासु मधु पिंगल रंगा ❀ रेख रहित मल रहित सुढंगा ॥
अति ऐश्वर्य दानि तिय सोई ❀ दृग छोटे दुख भागिनि होई ॥
अरुण छोट अरु धूम्राकारा ❀ प्रेतश्वान चष के अनुसारा ॥
सो बालिका त्याज्य महिपाला ❀ करिय न ब्याह जानि अघबाला ॥
चष उद्भ्रांतिक केकर सूपा ❀ सो व्यभिचारिणि यदपि सरूपा ॥
मद्य मांस भक्षक सब काला ❀ आन बिचार सुनो क्षितिपाला ॥
श्रुति लंबित कोमल जेहिकेरे ❀ सो पहिरै आभरण घनेरे ॥
उष्ट्र कुल कपि खर उल्लूका ❀ कर्ण समान कर्ण दुखहूका ॥

कोमल गोल कपोल नृप, रोम रहित मल मासु ।
अर्द्धचन्द्र मस्तक लसत, सुखद प्रकाशित जासु ॥
नहिंलघुनहिंबड़ अतिभलो, तियललाट क्षितिपाल ।
मस्तक जासु गयन्दवत, सो सुनि उत्तम बाल ॥

पातर चिक्कन श्यामल केशा ❀ अति उत्तम जानिये नरेशा ॥
कोयल हंस भ्रमर सिखिबीना ❀ बंशी सुर सम बोल प्रवीना ॥
बोलत बाजत फूटी थाली ❀ अथवा काकशब्द दुखशाली ॥
हंस वृषभ गति मत्त समाना ❀ कुल विख्यातकरै बुधिमाना ॥
नहिं आश्चर्य होय नृप जाया ❀ गुणभेद सुनि तुमहिं सुनाया ॥
जंबुक श्वान काक मृगचाली ❀ दासी जासु नारि उत्ताली ॥
जात रूप गो रोचन सुरप्रिय ❀ चम्पक वरणी उत्तम है तिय ॥
सकल अंग कोमल गत रोमा ❀ रहित प्रसेद शुभग द्युति सोमा ॥

कपिल वर्ण हीनांगिनी, अधिकांगिनि बहु रोम ।
गिरिसरितरुखलनामिनी, करियनब्याहबिलोम ॥

---

१ ऐंचे ताने ॥

सकल अंग सुंदर तिया, रोमदन्त अरु केश।
सूक्ष्म होहि बिवाहिये, सुनि हमार उपदेश ॥

जो कुल होइ क्रिया ते हीना ❁ पुरुष रहित वा पुरुष मलीना ॥
वेदागम वर्जित नरपाला ❁ अपस्मार क्षय कुष्टहि शाला ॥
विपुल रोम लखिके नरनाहा ❁ चतुर सुजान न करै बिवाहा ॥
कहत बिरंचि सुनौ मुनिराई ❁ सब उत्तम लक्षण तन पाई ॥
अरु आचरण शुभग जेहि होई ❁ तासन ब्याह करिय भ्रम खोई ॥
धन सन्तान कीर्ति भलि पावै ❁ नर ऐश्चर्य जगत उपजावै ॥
अब सारांश सुनौ मुनिराई ❁ जो सुनि तुम सुखलहौ अघाई ॥
सद व्रत शुभ आचरना नारी ❁ ब्याह योग्य तिय परम पियारी ॥

जानि अधर्मिणि स्वैरिणी, करै ब्याह जो कोइ।
अपकीरति छावै जगत, अंत नरक तेहि होइ ॥

शतानीक नृप वद कर जोरी ❁ सुनिय महामुनि बिनती मोरी ॥
तिय लक्षण सुनि लहो उछाहा ❁ अब सद व्रत कथिये नरनाहा ॥
सुनु महीप सद व्रत विधि गायो ❁ ऋषिगणकहजिमिमुदितसुनायो ॥
पढ़ै प्रथम विद्या गुरु धामा ❁ द्रव्य उपार्जन करि परिणामा ॥
सुकुल सुलक्षणि पाइ सुनारी ❁ शास्त्र रीति ब्याहै शुभकारी ॥
विनु धन धर्म गृहस्थ सदोषा ❁ ग्रेहाश्रम न होत संतोषा ॥
यहि कारण धन संचित करई ❁ तब बिवाह कारज अनुसरई ॥
सहज नरक दुख चतुर विचारै ❁ क्षुधित न बालक नारि निहारै ॥

दुखित नारि सुत देखिकै, फटत न जाकर हीय।
ताहि देखि लाजत कुलिश, जानिकठोर हितीय ॥

वाके जीवन कहँ धिक्कारा ❁ तजे शरीर विशेषि उबारा ॥

जो धनहीन करत उद्वाहा ❁ ताहि न होत नारि सुख लाहा॥
केवल निज गल डारत फांसी ❁ काम कलावश बनत कुबासी॥
ग्रेहा श्रमन नारि बिनु सोहै ❁ यहि कारण प्रथमै धन जोहै ॥
मिलत त्रिवर्ग होत सन्ताना ❁ अर्थ धर्म अरु काम सुजाना ॥
तदपि नीति नीतिज्ञ कथोई ❁ हेतु त्रिवर्ग सुतिय धनदोई ॥
जगत धर्म नृप उभय प्रकारा ❁ एक इष्ट मष आदि बिचारा ॥
दूसर धर्म पूर्त कुरु केतू ❁ यथा कूप वापी सरि सेतू ॥

धन आश्रित दोनों धरम, करत न कोउ धन हीन ।
बंधु मित्र लाजत निरखि, नर दारिद्री दीन ॥

जानि धनाढ्य बंधु बहु आवैं ❁ प्रेम मिलित बर बचन सुनावैं ॥
मूल त्रिवर्ग अहै धन भूपा ❁ होत धनी तन सुगुण अनूपा ॥
निर्धनके गुण होत विनाशा ❁ यथा दिवस महँ चन्द्र प्रकाशा ॥
अधन होत नहिं धर्म सनेही ❁ अजागलस्तन सम नर देही ॥
पूर्व पुण्य जाकी अधिकाई ❁ होत धनी सो नर तन पाई ॥
फिरि धन पाइ करत मष दाना ❁ जात देव पुर बैठि ब्यमाना ॥
धन औधर्म परस्पर ताता ❁ एक द्वितीयाश्रित वरगाता ॥
यहि हितु प्रथम प्राप्ति धन करई ❁ बिनु धन ब्याह काज नहिंसरई ॥

जबलगि करत बिवाह नहिं, अर्द्ध शरीर पुमान ।
एक चक्र शकटी यथा, पहुँचावत न सुथान ॥
बिनु ब्याही कन्याहु नहिं, धर्म कर्म के योग ।
होत बिवाह त्रिभांति नृप, भणत सयाने लोग ॥

नीच उच्च सम ज्ञाति बिवाहा ❁ सुनु विवरण विशेषि नरनाहा ॥
ब्याह नीच कुल निंदा दायक ❁ करत न सुकुल कतहुँ नरनायक॥
जानि निरादर सुकुल जहाना ❁ नीचहि देत न सुता सुजाना ॥

यहि कारण समान कुल पाई ❀ करिय बिवाह भूप हरषाई ॥
औ न होइ सम्बन्ध बिजाती ❀ कोयल हंस कुसंग लखाती ॥
जेहि सम्बन्ध बढ़ै नित नेहा ❀ सो सम्बन्ध उचित नरदेहा ॥
सम्पति बिपति वृद्धि हितु होई ❀ करै सहाय परस्पर सोई ॥
जो कुछ शील धर्म समताई ❀ तो उत्तम सम्बन्ध नृराई ॥

करे बिवाह सलाह ऋषि, निज सम जानि सुजान।
विद्या धन प्रभुताय कुल, करु समता अनुमान ॥
होत परीक्षा बिपति महँ हितु कृतज्ञता केरि।
दुर्गा बरनत मुदितचित, सुनि सुमंत कृत हेरि ॥

मातु सपिंडा सुता न होई ❀ अरुण सगोत्रा पितु कर सोई ॥
सो तिहुँ वर्ण बिवाह न योगा ❀ यह भाषत पंडित मुनिलोगा ॥
द्विज द्विजसुता धर्म साधनहित ❀ लवै व्याहि लहै सुंदरिजित ॥
काम वृथा द्विज हृदय जनावै ❀ क्षत्री सुता व्याहि सुख पावै ॥
वैश्य शूद्र कन्या भलि जानै ❀ ताहि बिवाहि विप्र घर आनै ॥
क्षत्री क्षत्रीसुता बिवाहै ❀ धर्म साधना कृत निरबाहै ॥
क्षत्री हृदय काम उपराजै ❀ वैश्य शूद्र कुल व्याहहि साजै ॥
वैश्य धर्म हितु वैश्यनि व्याहै ❀ शूद्र सुता वश काम बिवाहै ॥

शूद्र बिवाहै शूद्रनी, तजि कन्या तिहुँ वर्ण।
दुर्गा बरनत शास्त्र अस, सुनो ऋषय अघ हर्ण ॥

विप्र चतुर्वर्णिका बिवाहै ❀ शूद्र न आन वर्ण सुखलाहै ॥
भोगत शूद्रा पतित द्विजेशा ❀ जिमिशौणक भृगुआदिनरेशा ॥
लहत अधोगति द्विजवर सोई ❀ भोगत सुमुखि शूद्रनी जोई ॥
ब्राह्मण पद न तासुकर भाई ❀ भयो शूद्र शूद्रिनि रमताई ॥
शूद्र सुता संतति कर ताता ❀ लेत न पितृ देव जल ख्याता ॥

अष्ट प्रकार बिवाह जहाना ❀ श्रुतिवत कथौ सुनौ व्याख्याना ॥
ब्राह्म्य दैव अरु आर्षु कहावै ❀ प्रजापत्य सो आसुर गावै ॥
अरु गांधर्व आसुँरी ब्याहा ❀ युत पशांच आठ नरनाहा ॥

प्रथम कहे षट करै द्विज, क्षत्री है तजि चारि ।
आसुर राक्षस वैश्य अरु, शूद्रहु करै विचारि ॥

प्रथम चारि अति उत्तम ब्याहा ❀ विप्रहि उचित करै नरनाहा ॥
राक्षस ब्याह करे नर पाला ❀ समय पाय नहिं दोष भुवाला ॥
आसुर वैश्य शूद्र अधिकारा ❀ आसुर पैशाचिक अघभारा ॥
वैदिक सुकुल बोलि वरधामा ❀ करै वेद बिधि पूरणकामा ॥
पुनि कन्या समर्पि पितु देई ❀ ब्राह्म्य बिवाह हृदय गुणिलेई ॥
ऋत्विक जहां करै निज काजा ❀ तहँ कन्या लावै करि साजा ॥
उत्तम बर सँग करै विवाहा ❀ दैव बिवाह विदित नरनाहा ॥
एक गाइ वृष बरते लेई ❀ विधिवत पुनि बिवाह करिदेई ॥

ताकहँ आर्ष बिवाह नृप, भाषत कवि बर जोइ ।
प्राजापत्य बिवाह विधि, सुनु नरेन्द्र जस होइ ॥

बर कन्या बिवाह करि राजा ❀ कहै वचन पितु मध्य समाजा ॥
धर्माचरण करैं दुहुँ साथा ❀ प्राजापत्य ब्याह नर नाथा ॥
दुहिता के पितु मातहि दै धन ❀ होइ बिवाह ताहि आसुरगन ॥
बर कन्या निज रुचि अनुसारा ❀ करैं परस्पर ब्याह बिचारा ॥
तन मन मुदित होहिं हरषाई ❀ सो गांधर्व ब्याह ऋषिराई ॥
ताड़ित दुखित रुदत बरजोरा ❀ हरि लावै कन्या गति चोरा ॥
करै बिवाह लाइ गृह जोई ❀ राक्षस ब्याह कहावत सोई ॥
सोवत मत्त कन्यका पाई ❀ लावै गुप्तहि कोऊ उठाई ॥

वासन करै बिवाह नृप, तासु नाम पैशाच ।

याविधि कहे बिवाह वसु, नृप विरंचिवर बाच ॥
ब्राह्म्य बिवाहित ते सुतहोई ❀ तारत पितृ साखि दश सोई ॥
सुतनाती आदिक दश आगे ❀ ता प्रताप तरि जात सभागे ॥
दैव बिवाहित बालक राजा ❀ सप्तसाखि तारत वर काजा ॥
आर्ष विवाह जनित सुत ताता ❀ तीनि साखि उद्धारक भ्राता ॥
प्राजापत्य विवाहित जायो ❀ तारत एक साखिं श्रुति गायो ॥
शेष चारि उद्वाह नृपाला ❀ तिन करि उपजत क्रूरविशाला ॥
द्वेषी धर्म कर्म बुधि नीचा ❀ दुष्ट निवासत कुकृत नगीचा ॥
विषयाशक्त असत्य विवादी ❀ कुजन प्रमोदक सुजन विषादी ॥
ब्याह अनंदित कीजिये, उपजै शुभ संतान ।
निंदित उपजावत अशुभ, भाषत वेद पुरान ॥
संस्कार उद्वाहिक जोई ❀ होत सवर्णा तिय सँग जोई ॥
लै धन बर ते कन्या देई ❀ विक्रयापत्य दोष शिर लेई ॥
कन्या धन भोगत संसारा ❀ सुतादत्त तन वस्त्रहि धारा ॥
दुहिता वाहन होत अरूढ़ा ❀ जात विशेषि नरक चलि मूढ़ा ॥
आर्ष विवाह मध्य मुनि गायो ❀ एक वृषभ गो ग्रहण बतायो ॥
लेइ न सोउ कन्यका मोला ❀ दोषी विदित होइ पुर टोला ॥
करि विवाह शुभ उत्तम देशा ❀ बसै जाइ द्विज मुदित नरेशा ॥
कह्यो मुनीशन सुनिय विधाता ❀ उत्तम देश बदिय को ख्याता ॥
सुनौ बसत विद्वान जित, करत शास्त्र व्यवहार ।
उत्तम देश बिचारि तहँ, द्विजवर करत बिहार ॥
जो आचरण करत बुध स्वामी ❀ सो भाषियलखिनिजअनुगामी ॥
राग द्वेप बर्जित विद्वाना ❀ करत आचरण सुनिय सुजाना ॥
सो आचरण मुख्य मुनि राई ❀ नतरु व्यर्थ निष्काम लखाई ॥

नहिं सब कर्म कामना योगा ❀ करि संकल्प करत बुध लोगा ॥
वेद पाठ मख ब्रत अरु धर्मा ❀ नियमादिक कामहिते कर्मा ॥
को अस क्रिया जगत मुनि राई ❀ जा महँ काम न देत दिखाई ॥
सदाचार वेद स्मृति ताता ❀ मन प्रसन्नता चारि सुवाता ॥
इन करि निर्णय धर्म करीजै ❀ श्रुतिवत कर्म साधि यशलीजै ॥

मिलत अंत सुरलोक तेहि, करत वेद आचार ।
दुर्गा वरणत वेद अस, मोदक सुखद विचार ॥
धर्ममूल श्रुति शास्त्र मुनि, जो निन्दै करि तर्क ।
बसै न तासु समीप बुध, वरणत बिबुध अतर्क ॥

जन्मकाल ते मरण प्रयंता ❀ संस्कार कृत वेद भनंता ॥
ताकहँ वेद पाठ अधिकारा ❀ अब सुनु भूपति देश बिचारा ॥
दृष द्वतीवर सरिता गंगा ❀ सरस्वती सरि पावनि अंगा ॥
मध्य तिहूँ सरिता जो देशा ❀ पावन परम प्रसिद्ध नरेशा ॥
ब्रह्मावर्त नाम महिपाला ❀ देव रचित वर देश विशाला ॥
करै निवास तहां महिदेवा ❀ करै अखिल नर ताकर सेवा ॥
वर्ण धर्म उपवर्णा चारा ❀ जगत सनातन जासु प्रचारा ॥

कुरुक्षेत्र अरु मत्स्यनृप, सूरसेन पांचाल ।
पावन देश निवास कृत, मुनिवर परम दयाल ॥

उत्तम सबते ब्रह्मावर्ता ❀ देश विभेद कहो महि भर्त्ता ॥
इन देशनके ब्राह्मण जोई ❀ धर्म प्रचारक जानिय सोई ॥
हिम गिरि बिंध्य मध्य जो देशू ❀ कुरुक्षेत्र के पूर्व प्रदेशू ॥
अरु प्रयाग पश्चिम श्रुति गायो ❀ मध्य देश तेहि नाम गनायो ॥
बिंध्योत्तर हिम दक्षिण घाई ❀ पूर्व सिंधु पश्चिम निधिताई ॥

आर्यावर्त नाम शुचि देशा ❀ पावन सुन्दर सुखद प्रदेशा ॥
विरचत जहां कृष्ण मृग भूपा ❀ यज्ञ योग्य सो अवनि अनूपा ॥
यहिते इतर भूमि नृप जोई ❀ म्लेक्ष देश श्रुति गावत सोई ॥

बसै विप्र वर देश लखि, बसुधा त्यागि मलीन।
वेद विहित कर्मनि करै, सो द्विज परम प्रवीन॥

उत्तम देश खोजि पुर नीको ❀ जहां न भय धन जननि जतीको ॥
करै निवास जहाँ भय जानै ❀ तहाँ न बसै बसे दुख सानै ॥
धन नारी त्रिवर्ग कर कारण ❀ रक्षै अवशि दुऔ द्विज तारण ॥
पुरुष धाम आश्रय तिहुँ राजा ❀ चाहिय भल रक्षा के काजा ॥
नर कुलीन नीतिज्ञ सुधर्मा ❀ त्यागी धर्मात्मा सुकर्मा ॥
चतुर दृढ़व्रत सविनय होई ❀ रक्षा योग पुरुष भव सोई ॥
नगर ग्राम शुचि वास बनावै ❀ गुरु पुर सुखिया सम्मति पावै ॥
प्रतिवासी[1] कहँ दंड न देवै ❀ जानि सहायक प्रिय सम सेवै ॥

नगर द्वार चौहद्द जहँ, शाला शिल्पी धाम।
जूपी मदिरा मांस गृह, नृप सेवक विश्राम॥
नट पाखंडिन के निकट, सुरस्थान मगराउ।
नृपतिभवन ढिगभूलिहू, द्विजवर गृह न बनाउ॥

होहिं सुकर्मी जित प्रति बासी ❀ रचै निवास तहाँ बुधि रासी ॥
पूरब वा उत्तर सुख धामा ❀ उच्चस्थान रचै गुण ग्रामा ॥
एक द्वार संपुटित कपाटा ❀ षट्ऋतु सुखद न बाहुल बाटा ॥
पृथक पृथक गृह न्हान रसोई ❀ गोशाला भंडार सु होई ॥
अश्व शाल गृह दासी दासा ❀ शौचस्थान शयन वर वासा ॥
बैठक अग्निहोत्र शुचि शाला ❀ अन्तःपुर सुर धाम नृपाला ॥

१ पड़ोसी ॥

शास्त्र कथित द्विज मध्य निकेता ❀ विरचै प्रथम सदा सुख हेता ॥
संचय सब गृहस्थ उपकरना[1] ❀ सो सुखदानि गृहस्थाचरना ॥

ऐसेहू गृह बास करि, रक्षित राखै नारि।
नारि स्वतंत्र न त्यागिये, बहुगुण दोषविचारि ॥

शंकर सुत स्वैरिणि उपजावै ❀ तेहि जलदान पितृ अघ धावै ॥
भोजन गृह कारजहि विहाई ❀ तियहि समर्पै आन न भाई ॥
तियहि न उचित रहै तजि कामा ❀ करति रहै नित कारज धामा ॥
गृह दारिद्र[2] नारि अतिरूपा ❀ बसै कुसंग[3] स्वतंत्रित[4] भूपा ॥
बैठी रहै भवन बिनु[5] काजा ❀ मेला[6] महँ गमनै करि साजा ॥
भिक्षुकि[7] कुट्टिनि[8] नट्टिनि[9] दाई[10] ❀ बैठे दुष्ट[11] आन तिय पाई ॥
तीरथ यात्रा[12] करै बहूता ❀ सुर दरशन[13] हित भ्रमै कुपूता ॥
पति वियोग[14] बहु कालिक नारी ❀ अथवा पति कामी[15] कुविचारी[16] ॥

जाकर पति अति क्रूर[17] अरु, सौम्य[18] होइ ईर्षालु[19]।
महा कृपण[20] नारी बिवश[21], अथवा परम दयालु[22]॥

नारि विनाश हेतु बाईसा ❀ हौं बरणे मन गुनो मुनीसा ॥
पतिहिउचित तिय अवशिबचावै ❀ वेद शास्त्र उपदेश सुनावै ॥
बिगरत नारि भृत्यगण राई ❀ जवन स्वामि पावत भल भाई ॥
ताड़न लालन जेहि विधि देखै ❀ तिय रक्षै उपाय जस पेखै ॥
जाके धाम होहिं बहु बामा ❀ राखै सम आदर सब कामा ॥
करै न मानामान अकारण ❀ निरत रहै दुख क्रोध निवारण ॥
तिय अरु दास राखु यहि भांती ❀ प्रमुदित रहैं नृपति दिन राती ॥
अर्द्धाङ्गी तिय श्रुति अनुसारा ❀ बिनु बामा न धर्म ब्यापारा ॥

---

१ आवश्यक वस्तु ॥

याते आदर करिय नित, बहुतन में प्रिय एक।
आदर करिय यकांत तेहि बढ़हि न कला विवेक॥

प्रगटित सबकर सम व्यवहारा ❀ खान पान भूषण उपचारा॥
पुष्पवती लखि तजै न काहू ❀ रमै समोद चतुर सुत लाहू॥
प्रति दिन सबकर आदर करई ❀ काहू को न निरादर धरई॥
जो एकान्त एक सन भाषै ❀ गुप्त ताहि दूसर तट राषै॥
जानै सम सबकी सन्ताना ❀ देइ वस्त्र भष एक समाना॥
जो कोउ नारि होइ कटुबादी ❀ ता दुख सुतहि न करै विषादी॥
नारि भेद जानन हित भाई ❀ कहै अनेक कथा सुघराई॥
सीता सकुन्तला सुख ग्रासा ❀ भाषै अरुन्धती इतिहासा॥

जानि आसिप्रिय नारिकर, दुष्टा जानै जाहि।
प्राण बचावै तासु ते, विविधि चरित अवगाहि॥

नृपति विदूरथ की खल रानी ❀ केशनि मधि धरि शस्त्र सयानी॥
मारयौ नृपहि क्रोध उर आनी ❀ भद्रसेनि बध कीन्हेसि रानी॥
काशिराज रैवत नृप जोई ❀ रानिन कर विष पान कराई॥
यहि प्रकार बहु द्विज नर नाहा ❀ नारिन मारे सहित उछाहा॥
सेवक दासी दास अपारा ❀ दुर्मति जाहि लखै संसारा॥
उचित तासु कर त्यागे संगा ❀ नत पछिताय होत तन भंगा॥
सेवक मान भंग जब करई ❀ उचित यहै शीघ्रहि परि हरई॥
रक्षै नारि दुष्टिनी जानी ❀ अरु तजि देइ भोग विषयानी॥

कंत द्वेषिणी नष्ट तिय, तजव भोग बड़ दंड।
सत्कुल धर्माचार सो, लखत न काम प्रचंड॥

कारण तीनि पतिव्रत केरे ❀ सो बरणौं हौं जस श्रुति हेरे॥

प्रथम न आन पुरुष तट जावै ❀ गृह एकान्त द्वितीय सोहावै ॥
तीसर रहै न कारज हीना ❀ होइ पतिव्रत नारि प्रबीना ॥
साम दाम करि उत्तम नारी ❀ निज बश राखै प्रेम बिचारी ॥
मध्यम नारि भेद युत दाना ❀ जो राखै सो परम सुजाना ॥
भेद दंड करि अधमहि राखै ❀ तत्पश्चात् प्रेम वच भाखै ॥
साम दाम करि तेहि समुझाई ❀ निज वश करै यहै चतुराई ॥
पति विदूषिणी अरु व्यभिचारी ❀ विषसम नृपात दुविधिजगनारी॥

करै त्याग लखि दुर्भगा, संग्रह कीन्हे हानि ।
आदर कीजिय नित्यनव, पतिव्रता अनुमानि ॥
सुकुलासाधवि मृदुवचनि, पतिहितकारक बाम ।
शुभग विनीता आदरिय, सदासुखद परिणाम ॥

सुनौ महा मुनि तिय व्यवहारा ❀ हम वरणो निज मति अनुसारा ॥
जो बरतै मम कथित विचारी ❀ सो नर जग त्रिवर्ग[1] अधिकारी ॥
यह वरताव पुरुष कर गायो ❀ तिय बरतावहि चहत बतायो ॥
सो उत्तमा नारि संसारा ❀ करै सविधि गृह काज पसारा ॥
विधि निषेध आगम पढ़ि जानै ❀ तासु नारि अधिकार न मानै ॥
यहि कारण दूसर मुख सुनई ❀ विधि निषेध सानँद चित गुनई ॥
शिक्ष सौभागिनि तिय कन्ता ❀ तासन पूँछै धर्म अनन्ता ॥
जो न रहै भर्त्ता सुखदाई ❀ चलै नारि सुत आयसु पाई ॥

कोउ कोउ नारी शास्त्रविद, चलै तासु अनुसार ।
शिक्षक ताहि न चाहिये, शिक्षक शास्त्र विचार ॥
पिता पितामह जौन मग, गमने चलु मग तौन ।

१ अर्थ धर्म काम ॥

लहै सकल कल्याण जग, पावै हानि कवौन ॥

मूल गृहस्थ धर्मवर नारी ❀ पतिब्रता पति प्राण पियारी ॥
पति सेवा तन मन वच करई ❀ छल प्रपंच पथ पांव न धरई ॥
जानै पति मनकी प्रिय बाता ❀ निजबुधि बल आनंदित गाता ॥
करै भामिनी तेहि अनुकूला ❀ धर्म पतिव्रत कर यह मूला ॥
पतिके मात पिता बड़ भाई ❀ गुरु चाचा मामादिक पाई ॥
पूज्य जानि बड़ आदर करई ❀ पति देवता धर्म अनुसरई ॥
देवर पुत्र मित्र पति जानी ❀ आज्ञा तिनहिं देइ बर बानी ॥
हास्य वचन भाषै न सयानी ❀ व्यर्थ सहै उपहास गलानी ॥

त्यागि एकपति आनसों, नहिं यकांत बतराय ।
अरु न समीपित अपरके, रहै पतिब्रत जाय ॥

गमन स्वतंत्र दुष्ट तिय साथा ❀ करै न पतिब्रता बर गाता ॥
काहू सों न बिहँसि बतराई ❀ अरु न जाय जित पुरुष अथाई ॥
वस्तु आन नर कह निजहाथा ❀ देइ न लेइ सुरुचि गुनि नाथा ॥
भवन द्वार पर होइ न ठाढ़ी ❀ नृप अध्वानं लखै बुधि बाढ़ी ॥
ऊँचे स्वर न भवन मधि बोलै ❀ जानै कौन द्वार को डोलै ॥
अरु न धाम निज हँसै ठठाई ❀ सुनै द्वार जन कान लगाई ॥
दृष्टि वचन चंचलता त्यागै ❀ नहिं दुर्भगा संग अनुरागै ॥
कुत्सित अनुचित बात न कहई ❀ मधुरकथन करि हितचित गहई ॥

कुजन बिलोकै दृष्टि खल, लखै न ताकी ओर ।
यदि देखै पितु समलखै, बन्धु पुत्र वर कोर ॥

सो० शील न नाशै नारि, कुल निन्दा पावै न जग ।
कथोभविष्यनिहारि, धर्म कहतहै नारिकर ॥

---

१ राह ॥

शुनि विधिकहो सुनौ मुनिनायक ❀ नारि साधवी पति सुखदायक ॥
तन मन वचन जानि पति देवा ❀ करत निरंतर प्रमुदित सेवा ॥
पतिहितुहितु अरिअरि करिजानै ❀ आन देव पति तुल्य न मानै ॥
जानि अधर्म अनर्थ विचारी ❀ पतिहि बचावत धार्मिक नारी ॥
देव पितृ कारज रुचिमानी ❀ करत समय पर परम सयानी ॥
अरु अभ्यागत कर सत्कारा ❀ प्रमुदित नित प्रति करतसुवारा ॥
पति कहँ शौच स्नान करावै ❀ सावधान भोजनहि बनावै ॥
पति प्रतिकूल न व्यंजन सजई ❀ जो न भषै पति आपहु तजई ॥

गृह शरीर सम जानि दोउ, भूषित राखै स्वच्छ ।
वस्तु सुगन्धित गृहलसत, कतहुँ प्रसूनित गुच्छ ।

सायं प्रात और मध्याना ❀ स्वच्छ करावै भवन सुजाना ॥
गोबर मँगवावै गोशाला ❀ दासी कर उठवाय नृपाला ॥
तासन मार्जन भवन करावै ❀ दासी दासन सुरुचि जिमावै ॥
निज निज काजन देइ लगाई ❀ व्यर्थ न दिवसहि देइ गमाई ॥
औषधि मूल शाकफल कंदा ❀ लावै समय समय सानंदा ॥
मन प्रसन्न सो धास करावै ❀ अवसर जानि कार्य महँ लावै ॥
काल पाइ सो क्षेत्र बोवावै ❀ उपजे पाकै शुचि मन खावै ॥
भाजन स्वर्ण रजत ताम्रादी ❀ संग्रह करै सदन अविषादी ॥

नीर पात्र बहु संग्रहै, झारी कलश समान ।
तैल दुग्ध घृत पात्रहु, जोरै सदा असान ॥

आन गृहस्थी सकल पदारथ ❀ संग्रह करै निकेत सुखारथ ॥
भोजन वस्तु अखिल गृह जोरै ❀ धर्म गृहस्थ तजै नहिं भोरै ॥
पतिब्रता कहँ चाहिय राई ❀ बसना भूषण धरै बनाई ॥
गुरु अभ्यागत पति सुत केरी ❀ करै सुश्रुषा सुतिय घनेरी ॥

देवादिक भूषण बसनानी ❀ करै न धारण अंग सयानी ॥
देवर ज्येष्ठ आदिक शय्यापर ❀ धरै न चरण भूलि बामावर ॥
बासी अन्न न भोजन योगा ❀ धेनुहि देत प्रात बुध लोगा ॥
रंभा दुग्ध दुहै अस भाई ❀ जेहि न वत्स दुख लहै नृराई ॥

बरषा शरद बसंत महँ, दुहै गाय द्वै बार ।
आन ऋतुन महँ बार यक, दुहै समेत बिचार ॥

कूकुरादि कहँ छाछ पियावै ❀ घृत निकारि निज कारज लावै ॥
गोचारक कहँ देइ अनाजा ❀ दुहै दुग्ध सो शुभ बुधि साजा ॥
प्रसवै जब रम्भा मुनिराई ❀ दुहै न एक मास चलि जाई ॥
एक स्तन कर क्षीर निकारै ❀ मास एक बुध आन बिसारै ॥
ता पीछे द्वै थन कर क्षीरा ❀ लेइ निकारि सुजान अहीरा ॥
जब गत होइ वहुरि यक मासा ❀ दुहै तीनि थन नहिं कछु त्रासा ॥
दुहै न चारो थन बसुधापति ❀ पालै वत्स लहै सुंदर गति ॥
लवण अन्न तृण मृदुल खवावै ❀ निर्मल जल लखि प्यास पियावै ॥

गो वृद्धा अरु गुर्भिणी, क्षीर दानि सम जानि ।
प्रतिपालै वत्सादिकहँ, निज वश मन अनुमानि ॥

तीनि गाय प्रति पालक एका ❀ राखिय नृप करि चित्त विवेका ॥
पंचवत्स हित एक नियारा ❀ गो गल घंट बांधु छबिकारा ॥
दुष्ट जीव धुनि घंटहि डरई ❀ नाहिं पयस्विनि ढिग संचरई ॥
जो कबहूं गो जाइ हिराई ❀ घंटा धुनि सहजै मिलि जाई ॥
जहां न सिंह व्याघ्र कर बासा ❀ जल तृण छाया सर्व सुपासा ॥
तहां गोष्ट बर मुदित बनावै ❀ जा थल पशुगण दंड न पावै ॥
अजा मेष गृह गुप्त स्थाना ❀ जहां न वृक पावै पयसाना ॥
अश्विनि चैत्र ऊर्ण उतरावै ❀ दासन हित बर बस्त्र बनावै ॥

व्यूह अजादि गवादि महँ, राखिय शंड दुचारि ।
अश्वउष्ट्रमहिषीगणनि, राखिय अधिकबिचारि ॥

कृषीकार सेवक समुदाई ❀ करै काम देखै उत जाई ॥
जानै जासु सधर्मिक कामा ❀ बेतन अधिक करै गुण धामा ॥
गेहाश्रम कर मूल सुनारी ❀ मूल गृहस्थ अन्न सुखकारी ॥
अन्न वृथा व्यय करै न ताता ❀ संचय अन्न परम सुखदाता ॥
अन्नहि लघु करि गनै न भाई ❀ संचय यक यक अन्न उठाई ॥
कण कण मधु मच्छिका बयेरै ❀ बहु मधु होत तथा तिय जोरै ॥
कण कण मृतिका लाइ पपीला ❀ देखु बनावत सुन्दर टीला ॥
बहु आँजन नित आँखि लगावै ❀ कबहुँक सब आँजन घटिजावै ॥

इमि संग्रह अरु खरच करु, जानि भेदमहिपाल ।
पुरुष बाम दूनो करैं, रहैं मुदित सब काल ॥

या जग विपुल पुरुष अस ताता ❀ जिन गृह नारि प्रधान लखाता ॥
जेहि गृह नारी सुबुधि सुशीला ❀ ता गृह हानि न पावनि लीला ॥
बाम कुशीला दुर्बुधि जाकी ❀ होवतबिबिधि हानि नृपताकी ॥
प्रथमहिं योग्य अयोग्य बिचारी ❀ करै नारि कारज अधिकारी ॥
कँगुनी पंचम तीसर धाना ❀ जौ गोधूम चौथ अनुमाना ॥
मूँग मांष आदिक चौथ्याई ❀ भूजतहीं नृप जात बिलाई ॥
राँधत द्विगुण होत सब ताता ❀ होत चारि गुण चावल भाता ॥
लाई परमल चणक भुनाये ❀ बाढ़त पंचम भाग पकाये ॥

तेल कैथ अरु नींब फल, सरसौं पंचम भाग ।
इँगुदी तिल महुआ कुसुम, तेल चतुर्थ विभाग ॥

१—मजूरी २ पहाड़ी फल का बीज ॥

कहुँ कहुँ देश काल अनुसारा ❀ हीन उच्च है जात सुवारा ॥
घृत सोलहवां भाग गोक्षीरा ❀ निकरत है सुंदर मति धीरा ॥
होत सवाउ सेर महिषी पय ❀ सोलहसेर मथे घृत संचय ॥
भूमि घास जल भेदहि पाई ❀ घटि बढ़ि जात सुनौ मुनिराई ॥
पट कर्पास मूंज शण कामा ❀ अंध पंगु सन लेइय धामा ॥
क्षुधित बृद्ध बालकन बुलावे ❀ दै भोजन निज काम करावे ॥
जौन नारि पति बसै विदेशा ❀ ताहि सदा गृह काज अँदेशा ॥
करवावै गृह काज सयानी ❀ बोलि आनतिय दुखियाजानी ॥

अलसी और कपास महँ, सूत पांचवाँ भाग ।
धुने भाग तेईसवाँ, घटत कहत बर बाग ॥
नीक सूत बीने घटत, भाग पचास समान ।
तंतुवाय करि छल हरत, माड़ी अधिक सुजान ॥

सुनौ ऋषीश्वर तजि दुचिताई ❀ वरणौ नारि धर्म चतुराई ॥
सबते प्रथम प्रातही जागै ❀ सोवै पीछे युत अनुरागै ॥
बिनु आवश्यक कारज बामा ❀ पग न धरै बाहिर तजि धामा ॥
जो प्रभात उठि परै सुजानी ❀ पति ढिग बैठि बोलि दासानी ॥
तिनहिं बतावै कारज धामा ❀ जागै जब पति तब वर बामा ॥
पति निकेत कर कारज साधी ❀ कारज आन करै गत ब्याधी ॥
सुघर बस्त्र निज धरै उतारी ❀ धारण करै दासि अनुहारी ॥
तब लागै तियकाज निकेता ❀ शोधै सामग्री भष हेता ॥

जो नहिं देखत नैन निज, भोजन बस्तु निहारि ।
दासिनकरजानतशुभग, सोन स्वच्छ मननारि ॥

प्रथमहिं भोजन पात्र मकाना ❀ स्वच्छ करावै नारि सुजाना ॥

भोज्य वस्तु पुनि सकल मँगाई ❀ धरे रसोई थल सुद छाई ॥
भोजन भवन सोहावन होई ❀ धूम्र करीष विवर्जित सोई ॥
भाजन पय दधि खूब मँजावे ❀ बहुरि धूप धरि सुबुधि सुखावे ॥
जेहि न होइ पय दधि सविकारा ❀ पुनि करि आन काज घरबारा ॥
शुचि स्नान करि करै रसोई ❀ निज पति हेत वाम वर सोई ॥
पति मन भावित व्यंजन साजै ❀ रचै कुपथ्य न जानि अकाजै ॥
देश काल अनुकूल पकावै ❀ जो आरोग्य दानि मन आवै ॥

रचि भोजन सब ढाँपि पुनि, बाहिर पोंछि प्रस्वेद ।
करि शृंगार बोलै पतिहि, भोजन हेत अखेद ॥

परसि सु भोजन प्रेम वढ़ाई ❀ बैठे मुदित बिजन कर लाई ॥
पति जेमै प्रिय करै बयारी ❀ हरे हरे शीतल सुख कारी ॥
सकल सपत्नी भगिनी जानै ❀ उनके सुतन पुत्र करि मानै ॥
सौति अनुज भ्राता जो आवै ❀ निज भ्राता समलखि सुखछावै॥
भूषण बसन भोज्य तांबूला ❀ निज सम सब कहँ देइ अमूला ॥
जो गृह रोग बिवश जन होई ❀ करै चिकित्सा सब भ्रम खोई ॥
दुखित सपत्नी सेवक जानी ❀ आपहु दुखित होइ सुनु ज्ञानी ॥
देखि प्रसन्नित आनँद मानै ❀ तासन प्रेम सकल जन ठानै ॥

गृह वृत्तांत निज कंतसन, एकान्तहि कहि देइ ।
सौति दोष भाषै न कछु, सीख मोरि सुनि लेइ ॥

जो होवै व्यभिचार महाना ❀ गुप्त किये उपजै दुख नाना ॥
पति त्यक्ता दुर्भगा अभागी ❀ ताहू को आदरै सभागी ॥
भोजन बसन सदा पहुँचावै ❀ जो विशेष क्षति नहिं उपजावै ॥
जो जानै मम उदर विकारा ❀ होइ न सुत कीन्हे उपचारा ॥
तो निज पतिहि भेद समुझावै ❀ आन बिवाह अवश्य करावै ॥

नई सपत्निहि भगनी जानै ❀ तासु बंधु निज बंधु प्रमानै ॥
जिमिमाता निज सुतहि सिखावै ❀ तस गृह कारज ताहि बतावै ॥
सायंकाल कराय सिंगारा ❀ पहुँचावै पति सेज सुआरा ॥

पतिहि प्रसन्नित राखई, पतिव्रता सो बाम ।
आनदेव तजि मुदित मन, पति पग करै प्रणाम ॥

जिमि चहुँ वर्ण देव द्विजराई ❀ पावक भूसुर देव लखाई ॥
प्रजा देवता मेघ कहावै ❀ तिय देवता कंत श्रुति गावै ॥
प्राप्ति त्रिवर्ग लालसा जाको ❀ युगुल उपाय भणतश्रुति ताको ॥
प्रथमहि तनमन बचन सुबाला ❀ राखै पति प्रसन्न सब काला ॥
दूसर शुद्धा चरण बिशेषी ❀ प्रमुदित कंत होइ सुनि देषी ॥
रूप मनोहर तरुण प्रवीना ❀ पति प्रतिकूला रहत मलीना ॥
नारि कुरूपा गत तरुणाई ❀ पति अनुकूल लहत सुखभाई ॥
ऐसी चालु चलै वर बामा ❀ रहै प्रसन्न कंत बसु यामा ॥

परम सुजानी सुबुधितिय, पति आवनके काल ।
स्वच्छ भवन शय्या रचै, बैठै मुदित सुचाल ॥
पति आवै परदेशते, निज कर धोवै पाद ।
बैठावै शुचि सेजपर, करै पवन अविखाद ॥

दासी कर पति पग न धुवावै ❀ पति देवता धर्म उर लावै ॥
निजभ्राता पति भ्राता पाई ❀ लहि रुख कंत करै सिवकाई ॥
नर कुलीन दुहिता हितु राखै ❀ नहि उपकार आश अभिलाषै ॥
चहत सुताकर निज उपकारा ❀ ताहि अधर्मिक जानु सुवारा ॥
जादिन ते बिवाह करि देवै ❀ फिर कन्या धन बस्तु न लेवै ॥
चर्मकार नट भील किराता ❀ दासादिक कन्या धन खाता ॥

करिय सनेह रहै व्यवहारा ❀ यथा शक्ति दीजिय उपहारा ॥
लीजिय भूलि न कन्या चीजा ❀ अधिक होइ अथवा यक बीजा॥

इमि सद वृत ज्ञाता तिया, शीलवंत पति प्रीय।
तदपि सदा डरपति रहै, जग अपबादहि तीय॥
सीतादिक पति देवता, जगत मातु विख्यात।
दीन्हो जग अपवाद दुख, तिनहिं कौन नरजात॥

पति देवता उत्तमा चरना ❀ भ्रमै स्वतंत्रित बाम सुबरना ॥
अरु कुसंग सेवन करि राजा ❀ व्यर्थ कलंक लहै अपकाजा ॥
यदपि असत्य कलंकहि पाकर ❀ होत कलंकित कुल भवताकर ॥
ताते उचित नारि कह भाई ❀ कुल कलंक ते लेइ बचाई ॥
होत कलंकित कुल महिपाला ❀ जग उपहँस सहत सबकाला ॥
पतिकर अर्थ धर्म अरु कामा ❀ जेहि बिधि होय करै सो बामा ॥
दुराचरण तिय जेहि कुलहोई ❀ नरक निवासत सम्यक सोई ॥
शुभ आचरण नारि कुलतारै ❀ नरक निवासित पितृ उबारै ॥

पति अनुकूलाचार शुभ, तिय भूषण जग होइ।
रत्नादिक तन भार नृप, कहो तोहि श्रुतिजोइ॥
कर कर्म अस साधवी, लगै कलंक न जाहि।
दुर्गा बरनत कीर्ति मरु, स्वर्गभोग सुखताहि॥

सुनौ अखिलमुनि कहतबिधाता ❀ आन कथा तनमन सुखदाता ॥
प्रोषित पतिकाचरण सुनावौं ❀ जस श्रुतिकथत न ताहि दुरावौं ॥
जाकर पति विदेश महँ होई ❀ भूषण बिबिधि न धारै सोई ॥
हेत सोहागन सब परि हरई ❀ धारण कंठ सूत्र नथ करई ॥
करि आरंभ काज पति गयऊ ❀ तासन परि पूरण नहिं भयऊ ॥

बहु उपाय करि पूरण करई ❀ नहिं शृंगार बिबिधि अनुसरई ॥
केश शीश राखै एक बेनी ❀ समुझि करै व्यय नहिं बहुदेनी ॥
सासु आन तिय पूज्य बिचारी ❀ सोवै रैनि तासु तट नारी ॥

करै सुब्रत पति वृद्धि हित, तनमन बच बर नारि।
समाचार पति सर्वदा, पूंछै सखिन हँकारि ॥

नित हेरै पति आगम बाटै ❀ पति कल्याणिक पूजन ठाटै ॥
जाइ न परघर तजि निज धामा ❀ जो जानै अवश्य कोउ कामा ॥
तौ निज आरजादि आज्ञा लहि ❀ जावै शुभगा दासि संग गहि ॥
रहै न बहुत काल गृह आना ❀ करै न भोजन अरु असनाना ॥
जब आवै गृह कंत बिदेशी ❀ बसना भूषण सजै सुदेशी ॥
उपयाचितक[1] देवतन देई ❀ मोदित होइ कंतपद सेई ॥
ज्येष्ठ सपत्निहि जानै माता ❀ तासु पुत्र बूझै निज जाता ॥
जो कौनहु पितु बस्तु पठावै ❀ सौतिहि देइ आप तब खावै ॥

शेष वस्तु रक्षित धरै, पाय समय सुनिराय।
देइ सपत्नी लघुहि तिय, सादर निकट बुलाइ ॥

सो० लघु सपत्निका दत्त, लेइ वस्तु सादर सुमुखि।
तजै न मद अनुरत्त, त्यागि सौतिया दाह बुध ॥

होत सपत्निन महँ मन दोषा ❀ परंपरा ते नहिं संतोषा ॥
बुद्धिमती नारी जग सोई ❀ परम दोष त्यागत नृप जोई ॥
लघु सपत्निका लखि ऋतुकाला ❀ करि असनान मुदित बरबाला ॥
ज्येष्ठ सपत्नि पास चलि जाई ❀ तासन सब शृंगार कराई ॥
पुनि आयसु लहि पति तट जावै ❀ हावभाव रति रैनि बितावै ॥

---

१ मन्नत ॥

उठि प्रभात ज्येष्ठा तट आवै ❀ नित प्रति वा सँग प्रीति बढ़ावै ॥
करै स्ववश पति बुधि बल नारी ❀ सो वामा पति प्राण पियारी ॥
लज्जा सम न नारि आभरणा ❀ पै ऋतुकाल न यह आचरणा ॥

निज वश जानै कन्त तिय, लघुपत्नी वर वीर।
ज्येष्ठा आदर मान्यता, तजै न सो मतिधीर ॥

कहै कंत गृह काज बिसारी ❀ ज्येष्ठायसु विशेषि लै नारी ॥
करै मुदित सम्यक गृह काजा ❀ सो जानै मम आयसु साजा ॥
ज्येष्ठा लखै कंत मन मानी ❀ लघुपत्नी वर बदनि सयानी ॥
कछु न क्षोभ अपने मन आनै ❀ कन्या सम लघु पत्निहि मानै ॥
याते जगत बड़ाई पावै ❀ पति अनुकूल रहै सुख छावै ॥
राखै पति प्रसन्न सब भांती ❀ प्रगट न करै द्वेष उतपाती ॥
सुख सौभाग्य बढ़ै जेहि रीती ❀ तेहि प्रकार बरतै करि प्रीती ॥
पति प्रियतमा नारि जो होई ❀ तासन बैर करै तिय कोई ॥

कन्त बैर तासन करै, तजि आदर की बात।
यहि कारण तिय साध्वी, नहिं विरचत उतपात॥

करै सरुचि गृह कारज नाना ❀ पोषण भरण दान सनमाना ॥
पूजै पूज्यन सुबुधि सनेहा ❀ निज सुशीलता सम वर देहा ॥
वेद शास्त्रवत करै अचारा ❀ जस कछु पतिव्रता अधिकारा ॥
ताकर यश छावै संसारा ❀ पावै अन्त देव आगारा ॥
पति विदेश लखि धाम विहाई ❀ बैठै आन सदन तिय जाई ॥
होत तासु अपलोक जहाना ❀ इमि भाषत मुनिशास्त्र पुराना ॥
अब हम आन कथा मुनि गावैं ❀ नारि दुर्भगा चरित सुनावैं ॥
जाहि विलोकि स्वामि उरजरई ❀ क्रोध युक्त कटु बानि उचरई ॥

ताहि दुर्भगा कहत कवि, आदर करत न कन्त।

तासुयोग्य आचरण अब, भनौं सुनौं गुणवन्त ॥
करै दुर्भगा मत आचारा ❀ क्रिया कर्म धार्मिक व्यवहारा ॥
जादिन गृह विशेषि कृत होई ❀ कारज करै मुदित मन सोई ॥
निज निंदा करि सबहि सुनावै ❀ सौतिन केरि प्रसंशा गावै ॥
पति सन्मुख ईर्षित अनुवादा ❀ करै न मानिनि जानि विषादा ॥
जसहीं तस आदर प्रभु मोरा ❀ दीनानाथ करत नहिं थोरा ॥
तुम उत्तम जन पंडित ज्ञाता ❀ जानत मोहिं परम प्रिय ताता ॥
पूरब कीन्ह सुकृत कोउ भारी ❀ जा फल भइउँ आपु कर नारी ॥
शुचि आभूषण वसननि धारै ❀ पै न उद्धता अंग प्रचारै ॥

राखै स्वच्छ शरीर निज, पदकर दशनसुआर ।
नख़बारि धारण करै, वेत यथा जलधार ॥

जो पादप जल बेगहि पाई ❀ झुकत न सो नाशत समुदाई ॥
है वैतसी वृत्ति यह नामा ❀ नमत प्रथम पै थिर निज धामा ॥
जो प्रियतमा कंत की प्यारी ❀ ता सँग नेह करै अति भारी ॥
करै काज पति रुचि अनुसारा ❀ तत्प्रतिकूल न करै पसारा ॥
खान पान महँ कर न लावै ❀ यावत् पति आयसु नहिं पावै ॥
पति प्यारी के सुतन न्हवावै ❀ भूषण वसन सुरुचि पहिरावै ॥
शुभगा अरु दुर्भगा न जाती ❀ कहुँ शुभगा दुर्भगा लखाती ॥
पति प्रतिकूल आचरण साधे ❀ होत दुर्भगा कुबुधि अराधे ॥

पति अनुकूलित दुर्भगा, शुभगा होत सुजान ।
मन बच सेवै कन्त निज, सौभागिन अनुमान ॥

जाके धाम नारि समुदाई ❀ जेहि पति चहै ताहि लै जाई ॥
मानवती लखि ताहि बुझावै ❀ जेहि विधि बनै कंत ढिगल्यावै ॥
पग दाबै मर्दै तन तेला ❀ पति शिर मलै तजै जग खेला ॥

तीनि भांति कर मर्दन अंगा ❀ मृदु मध्यम अरु गाढ़ प्रसंगा ॥
पृष्ठि भुजा कटि जंघा कांधा ❀ मरदै गाढ़ यथा बल बांधा ॥
मर्मस्थान नाभि उर कंठा ❀ युत कपोल मध्यम उत्कंठा ॥
जागत होइ कंथ जेहि काला ❀ मर्दै गाढ़ अंग बर बाला ॥
सोवत मध्यम सब थल दाबै ❀ अथवा मर्दन त्यागन भावै ॥

मृदु मर्दन सोवत करै, दाबि न देइ जगाइ।
त्यागि तिहूँ विधि सुन्दरी, पौढ़ि रहै अरगाइ ॥

पति एकांत लखै जब नारी ❀ तन मर्दै वा करै बयारी ॥
होइ काम उद्दीपन दाबत ❀ अंग बिशेषि प्रहर्षि दबावत ॥
जंघा मूलादिक भल दाबै ❀ जेहि दाबे रोमांच जनावै ॥
अथवा स्वामि बतावै जोई ❀ दाबै मुदित अंग प्रिय सोई ॥
जो दुर्भगो करै यह रीती ❀ करै बिशेषि कंत तेहि प्रीती ॥
सो त्रिवर्ग सुख लहै अघाई ❀ पति त्यागन सम नहिं अधमाई ॥
सदा प्रसन्नित जेहि पति रहई ❀ ताहि न शोक पाप अघ दहई ॥
पति सेवन सम धर्म न आना ❀ पति देवता नारि संज्ञाना ॥

कहो दुर्भगा हेतहौं, मुनिवर शुभग उपाय।
दुर्गा सुनिले कानदै, आन चरित मनलाय ॥
सकल ऋषिन समुझाय अस, गे विरंचि हिमवास।
मुनिगमने निज आश्रमनि, मोदित सहितहुलास ॥
विषय भोग बन्धन परो, छूटन को न उपाय।
दुर्गा बंदति श्यामपद, सुगम शास्त्र व्यवसाय ॥

सुनो गृहस्थी धर्म नृपाला ❀ बिबुध बिचारि चलै सब काला ॥
बैवाहिक सिखि गृह्यक कर्मा ❀ करै गृहस्थ सदा बर धर्मा ॥

भवन गृहस्थी पंच स्थाना ❋ हिंसाधाम बदत गुणवाना ॥
जिन महँ मरत जीव कुरुराजा ❋ तेहि अघमिलत न देव समाजा ॥
उखँली चाकी चूल्है मार्जनी ❋ उदकुंभी अघ तात बर्जनी ॥
इन पांचो अघ मेटन हेता ❋ पंच यज्ञ कृत नियम समेता ॥
ब्रह्म पितृ मख लेखा भूता ❋ करे अतिथि मख नितप्रति नूता ॥
ब्रह्मयज्ञ कहियत श्रुति पाठा ❋ तर्पण पितृ यज्ञ कर ठाठा ॥

हवन देवमख भूतमख, बलि वैश्वदेव तात ।
अतिथि यज्ञ सत्कार भल, नृपति सनेम लखात ॥

करि प्रण पंच यज्ञ ये करई ❋ दोष पंच सूना निस्तरई ॥
जो न समर्थ करे मख पाँचा ❋ जीवत मृतक भूमितल सांचा ॥
शतानीक कर जोरि बखाना ❋ बिनुमख द्विजजग मृतक समाना ॥
मृतक सदा अपवित्र मुनीशा ❋ यह भाषत श्रुति शास्त्र ऋषीशा ॥
सुर पूजन आदिक अधिकारा ❋ ताहि न प्रभु फिरि यहि संसारा ॥
किमि संतुष्ट पितृ सुर होवैं ❋ पापी सुत लखि निज पुर रोवैं ॥
रहो पितृ ऋण सुत शिर भारी ❋ किमि उद्धार लहै अघ कारी ॥
निज जन जानि उपाय बताइय ❋ कृपा पयोधि न चित्त दुराइय ॥

अग्निहोत्र करिसकै नहिं, सो साधै व्रतदान ।
देव स्तुति पूजन भजन, करै सनियम सुजान ॥
पुनि अंजलि भरि दूर्वा, सर्षप औ बहु फूल ।
बन्दै गिरिजा पद कमल, पढ़ि यह मंत्र अभूल ॥

मंत्र ॥ रूपंदेहि यशोदेहि भगं भवति देहिमे ।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामाश्च देहिमे ॥

४ झाडू ५ जलस्थान ॥

सो० इति पितिआपद अध्याय, भोजनदेवै द्विजनकह ।
उत्तमवसन धनलाय, गुरुहिसमर्पे करि विनय ॥
सो० इमि करि पूजन शंभु तन, पूजै आन महान ।
शैलगुह गणपति पूजि नर, लक्ष्मी लहै महान ॥
पूजा गणपति चौथि व्रत, बरणी मुनी पुरान ।
दुर्गादास चरित्र अरु, मुनीमुदित धरिकान ॥
कहौ मुनीश्वर मम रुची जानी ❀ तिय नर लक्षण सुखद बखानी ॥
जे षण्मुख निज बुधि सम गाये ❀ अरु समुद्र हर कोपि बहाये ॥
पाये पुनि षटमुख मुनिराई ❀ अथवा जल निधि राख छपाई ॥
निज दल जन षटवदन कुमारा ❀ क्रौंच नाम पर्वतहि बिदारा ॥
तन विधि कहो शंभु वरदाना ❀ भयउँ प्रसन्न जानि बलवाना ॥
कार्तिकेय कह सुनु सुख चारी ❀ हौं बरने लक्षण नर नारी ॥
पिता कोपि डारे जल राशी ❀ नहि पाये जग सकल प्रकाशी ॥
भूले मांहिं भये बहु काला ❀ श्रवण करौं तुम भनौ कृपाला ॥
लक्षण कथे समुद्र जिमि, तुमहिं सुनावौं सोइ ।
उत्तम मध्यम अधम जग, त्रै लक्षण सब कोइ ॥
मुखग मुहूर्त प्रथम मध्याना ❀ लक्षण पुरुष लखै गुणवाना ॥
तन प्रमाण छाया गति अंगा ❀ औश्मश्रु कच नख रद संगा ॥
प्रथमै आयु परीक्षा करई ❀ लक्षण वृथा अनायुष परई ॥
निज अंगुलन एक शत आठा ❀ उत्तम नर तन नृप सम ठाठा ॥
शत अंगुल मध्यम नर जानो ❀ नब्बे अंगुल अधम बखानो ॥
स्निग्ध अरुण कोमल पद जासू ❀ स्वेद रहित ऊँचे शुभ तासू ॥

१ दाढ़ी मूँछ ॥

पद नाटिका न एक दिखाई ❀ सो नर करै जगत ठकुराई॥
जाके पद तल अंकुश होई ❀ यहि जग सुखी रहै नर सोई॥

कूर्म पृष्ठि सम ऊँच पद, कोमल कंज समान।
मिलित अंगुली सुंदरी, एड़ी सहित सुजान॥
उष्ण सुख अरु उष्ण नृप, बहै न नेक प्रसेद।
अरुण नखन भूषित चरण, नृप लक्षण बद बेद॥

शूर्पित नख अरु रूक्षित श्वेता ❀ नक्र नाटिका पग छवि देता॥
दूरि दूरि अंगुली सखेदा ❀ दारिद्री लक्षण नहिं भेदा॥
जाके पग तल मृत्तिका पाकी ❀ हिंसा तौन करै हम ताकी॥
पग तल पीत अगम्या नारी ❀ रमै पुरुष हम चित्त विचारी॥
पग तल श्याम पान आशक्ता ❀ पग तल श्वेत अभक्ष्य प्रसक्ता॥
पग अंगुष्ठ मोट जेहि ताता ❀ भाग्य हीन सो मनुज लखाता॥
विकृतांगुष्ठ चलत मग दिनप्रति ❀ चिपटे निंदित वदत नीरपति॥
टेढ़े छोटे अँगुठा फाटे ❀ भोगत क्लेशहि लिखित ललाटे॥

गोल अँगूठा रक्त नख, कोमल लक्षण राज।
अँगूठा ते तर्जनि बड़ी, नारि भोग शिरताज॥

दीर्घ कनिष्ठा हाटक दाता ❀ गावत सामुद्रिक विख्याता॥
टेढ़ी चपटी विरली रूखी ❀ पग अंगुली दुखदानि विदूखी॥
रूखे फटे श्वेत नख जाके ❀ सब दिन रहत दुःख जग ताके॥
कुत्सित नख पग पुरुष कुशीला ❀ काम भोग बिनु कृत जगलीला॥
होइ हरित नख नर द्विज घाती ❀ बंधु वियोग ताहि दिन राती॥
करै दुष्ट निज कुल संहारा ❀ इमि वर्णत सामुद्रिक वारा॥

---

१ पकी मिट्टी के समान॥

इन्द्रगोप¹ नख होंइ नृपाला ❀ जंघ सरोम जानु दुख जाला ॥
जासु जंघ होवै किश्यैंनि² ❀ सो ऐश्वर्य वंत भव प्रानी ॥

अरु कबहूं बंधनपरे, अब सुनु आन बिचार।
मृग समान जंघा लहै, जगत राज्य अधिकार ॥

काक शृगाल जंघ हत भागा ❀ पावै दुख जग जन्मि अभागा ॥
पृथुल लंब जंघा दुखदाई ❀ जंघ मृगेन्द्र धनद विधि गाई ॥
यक यक रोम कूप यक रोमा ❀ भूपति चिह्न न वाक्य विलोमा ॥
द्वैद्वै रोमा पंडित होई ❀ तीनि तीनि दुख रूप भनोई ॥
मांस विहीन जानु लखिपरई ❀ सो विशेषि परदेशहि मरई ॥
विकट जानु दारिद्र स्वरूपा ❀ निम्न जानु नारी जित भूपा ॥
जानु समांस चिह्न नरपाला ❀ शुक वृष हरि गजचालि मराला ॥
होइ महिप अथवा धनवाना ❀ अस सैनप प्रति ब्रह्म बखाना ॥

श्वान उष्ट्र खर महिष गति, शूकर काक उलूक।
दुःख शोकमय जानिये, अरु हत भाग्य अचूक ॥

हे षटमुख समुद्र जस गायो ❀ करि बखान तो कहँ समुझायो ॥
अब सुनु लिंग विचार प्रवीना ❀ जो सुनि उपजै हर्ष नवीना ॥
दक्षिण झुको लिंग जेहि होई ❀ बहुत पुत्र उपजावत सोई ॥
झुको बाम दिशि कन्या जावै ❀ विषम स्थूल दरिद्र जनावै ॥
सीधो वर्तुल सुत दातारा ❀ बैठत पग परसै भूपारा ॥
होइ नारि प्रिय नर नरपाला ❀ जासु लिंग हरिव्याघ्र मिसाला ॥
सामुद्रिक वरणत तेहि भोगी ❀ अश्व लिंगवत भोग प्रयोगी ॥
लिंगी अग्रभाग रतनारो ❀ कांति युक्त नर भूप विचारो ॥

लम्बरूक्ष पांडुर मलिन, होइ लिंग भणि जासु।

---

१ वीरबहूटी २ घोड़ाकैसी ॥

देश अटन सो नर करै, चिह्न बताइय तासु ॥
सम अरु ऊँच स्निग्ध मणिजोई ❀ भोगै धन तिय वल्लभ सोई ॥
जो मणि मध्य नीच दिखराई ❀ ता गृह सुता होहिं अधिकाई ॥
अरु धन हीन ताहि अनुमानौ ❀ लक्षण सूत्र मुनीश बखानौ ॥
एक धार है दक्षिण ओरा ❀ गिरै सूत्र सो नृप बर जोरा ॥
सूत्र स्निग्ध गिरै द्वै धारा ❀ भोगी जानु पुरुष धन बारा ॥
गिरै रुक्ष बहुधा रस शब्दा ❀ सो नर अधम जानु मतिगब्दा ॥
वीर्य बसाइ मच्छिका माना ❀ पुत्रवान सो नर धनवाना ॥
घृत सम गंध वीर्य महँ आवै ❀ जन श्रुतिज्ञ अरु धनी कहावै ॥

मेष कंज सम गंध नृप, लाख मद्य अरु क्षार।
करै गंध जेहि वीर्य नृप, लहै सुता अधिकार ॥

अरु धनहीन होइ रण धीरा ❀ अब सुनु मैथुन चिह्न प्रधीरा ॥
करै शीघ्र मैथुन नर जोई ❀ दीर्घायुष होवै जग सोई ॥
बहुत काल मैथुन महँ लागै ❀ अल्पायुष तेहि मन अनुरागै ॥
अधिक वीर्य बालक उपजावै ❀ अल्प वीर्य दुहिता बहु जावै ॥
कंज पुष्प सम रुधिर लखाई ❀ होत धनी सो नर सुवराई ॥
श्याम अरुण मिश्रित लखि परई ❀ अधम पुरुष सो पापहि करई ॥
पीत अरुणता मिलत नरेशा ❀ मध्यम सुखी दुःख लवलेशा ॥
रुधिर अरुण जस वर्ण प्रबाला ❀ चीकन सात द्वीप नरपाला ॥

वस्ति स्निग्ध समांस अरु, पुष्ट होइ अधभाग।
दुर्गा बरणत सिंधु तेहि, उत्तमसुखद विभाग ॥
विकट रुक्ष निर्मान्स नृप, नाभि[1] न भली नरेश।

---

१ नाभि ॥

उष्ट्रश्वान जाम्बुक महिष, सम नाभी दुख देश ॥
एक वृषण[1] जल तजै शरीरा ❀ लघु बड़ प्रमदा लंपट बीरा ॥
होहिं जासु दुहुँ अंड समाना ❀ सो विशेषि होवै धनवाना ॥
खिंचे उपर कहँ जाकर अंडा ❀ अल्पायुष भोगे बर बंडा ॥
बहु लंबे लटकैं महि ओरा ❀ जियै बर्ष शत अस मनमोरा ॥
मांस पिंड कटि ऊपर थूला ❀ विषम दरिद्र चिह्न प्रदशूला ॥
देत समस्फिक[2] धन सुख साजा ❀ मंडुक सिंह तुल्य प्रदराजा ॥
बनचर उष्ट्र समस्फिक जाके ❀ दुखभागी धन होइ न ताके ॥
उदर जासु मृग सिखि आकारा ❀ जलनिधि उत्तम कीन्ह विचारा ॥

सिंह ब्याघ्र शार्दूर सम, उदर राज्य प्रद जानु ।
दुर्गा बरणत यहि जगत, लक्षण रूप बखानु ॥
पार्श्व गोल सूधे सपल, पुष्ट नृपनके होत ।
ब्याघ्र पृष्ठि सैनप कहिय, यों बरनत गुण पोत ॥

आयत[3] पृष्ठि सिंह सम ताता ❀ बंधनदत्त हमहिं दरशाता ॥
कच्छप पृष्ठि दानि नृपताई ❀ हृदय चिह्न सुनु कानलगाई ॥
चौड़ो पुष्ट सरोम समांसा ❀ होत नरोत्तम उर गत फांसा ॥
शतवार्षिक आयुर्बल पाई ❀ लहि धन भोग करै नरराई ॥
रूखी बिरली अँगुली हाथा ❀ अधन नित्य दुखसहै अनाथा ॥
मत्स्य रेख जाके कर होई ❀ धनी पुत्र संयुत जग सोई ॥
सिद्धि होइ कारज सब तासू ❀ मत्स्यरेख फल दायक आसू ॥
बेदी तुला चिह्न जाके कर ❀ ताहि लाभ ब्यापार दाह वर ॥

सोम बेलि सोहत करहि, होइ धनी मखकार ।

१ अंड २ कटिके ऊपरका मांस पिंड ३ लम्बी ॥

गिरि तरुवर थिर लक्ष्मी, बहु सेवक भर्त्तार ॥

असि धनु तोमर बरछी बाना ❀ हस्त रहत रण उर जयमाना ॥
ध्वजा शंख कर चिह्न सोहावै ❀ बोहित ब्यापारी धन पावै ॥
घट श्रीवत्स बज्र रथ चक्रा ❀ कमल हस्त नरपति सम शक्रा ॥
दक्षिण कर अँगुठा यव होई ❀ बहु विद्या पाठक नर सोई ॥
तर्जनि ते कनिष्ठिका तांई ❀ रेखा एक होइ महि स्वांई ॥
सो जीवै शत बर्ष विशेषी ❀ भाषत बुध सामुद्रिक देषी ॥
सुनु सुर सैनप लक्षण आना ❀ कहौं तोहिं जस सिंधु बखाना ॥
नर सम कुक्षि भोग दातारा ❀ बिषम कुक्षि माया छलवारा ॥

निम्न कुक्षि महिपालकी, उदर सर्प आकार ।
दारिद्री नर नित करै, बहु भोजन आहार ॥

नाभि गोल विस्तीर्ण गँभीरा ❀ होत धनी सुख भोगि अधीरा ॥
नीची छोटी क्लेश प्रदाता ❀ जोवलि मध्य बिषम सुनताता ॥
सो नाभी धन हरनि बखानी ❀ उदधि ज्ञाननिधि मनअनुमानी ॥
नाभि दक्षिणा वर्तिक ताता ❀ उत्तम सुखद भणत निधिज्ञाता ॥
वामावर्त नाभि नहिं नीकी ❀ कार्तिकेय मम बानि न फीकी ॥
नाभि जलज काणका समाना ❀ करत महीपति भूप सुजाना ॥
जाके उदर एक बलि होई ❀ शस्त्र घात त्यागै तन सोई ॥
द्वैबलि उदर होइ तिय भोगी ❀ त्रिबली नृप आचारज योगी ॥

बहुसुतदायकचारिबलि, जलनिधि कहतपुकारि ।
होइ बिषम बलि उदर जेहि, रमै अगम्या नारि ॥
सूधी बलि भोगी उदर, है परन्तु यह दोष ।
पर बामस्पर्शन करै, होइ न उर संतोष ॥

पुष्ट अकम्प हृदय सम ऊंचा ❁ होत महीपति के सुख रूचा ॥
उरसि कठोर रोम बहुनारी ❁ दारिद चिह्न बदत जलधारी ॥
समस्कंध दृढ धनी बतायो ❁ पुष्टस्कंध बीर वर गायो ॥
लघुस्कंध दारिद कर चीन्हा ❁ लघुबड़नर विहीन धन कीन्हा ॥
अरु तन तजै शस्त्र के घाता ❁ सुनु अब जत्रुं[१] चिह्न विख्याता ॥
विषम संधि दारिद्र प्रचारै ❁ सम संधिक भोगी निरधारै ॥
ऊंच जत्रु सुख बिबिधि प्रकारा ❁ अब ग्रीवा कर सुनहु विचारा ॥
चपटी ग्रीवा नर धन हीना ❁ ग्रीवा महिष बीर नर चीना ॥

मेषग्रीव डरपोकनर, गज शुकवक समग्रीव ।
लम्बी सूखी ग्रीवनृप, धन हारक दुख सीव ॥

छोटी ग्रीव धनी संसारा ❁ धूर्त्त रूप बुध करत बिचारा ॥
मध्यम गोल त्रिरेखित होई ❁ नृप पद दायक ग्रीवा सोई ॥
पुष्ट अश्वेद कुगंध विहाई ❁ स्वल्प रोम कक्षा धन दाई ॥
ऊपर खिंची होइ जेहि बाहू ❁ ताहि होइ नृप बंधन दाहू ॥
छोटी भुजा दास नर केरी ❁ तस्कर भुजा असम तृप हेरी ॥
लम्बी भुजा यती गुण खानी ❁ सम भुज लम्बी जानु प्रमानी ॥
करि कर भुज अरोम जेहि देखौ ❁ ताहि विशेषि भूप करि लेखौ ॥
करतल निम्नं[२] जासु दिखराई ❁ ताहि न मिलै पिता धन भाई ॥

निजकर धन पैदा करै, भीरु चित्त नर सोइ ।
करतल ऊँचो सुनु नृपति, नर दाता कर होइ ॥

करतल विषम अयोग्य बखाना ❁ रक्त लाख सम नृप अनुमाना ॥
करतल पीत अगम्या रमई ❁ पातक तासु न नरपति क्षमई ॥
कारी नील होइ कर गादी ❁ करै अपावन पान रसादी ॥

१ कन्धौंकी सन्धि २ गहिरा ॥

रूखे करतल निर्धन जानौ ❀ सुनि कर रेखा गुणनि बखानौ ॥
चिकनी गहरी करकी रेखा ❀ होत धनी कर निज चषदेखा ॥
बिरली कर अंगुली ज कर ❀ ताके कर धन टिकै न नृपवर ॥
गहरी अँगुली छिद्र बिहाई ❀ धन संचय सो करत नृराई ॥
विधु मंडल सम आनन जाको ❀ धरमातमा कहतहौं ताको ॥

विकृत वक्र टूटो लखै, आनन हरि सुखमान।
तस्करता सो नर करै, सामुद्रिक अनुमान ॥
मुख सुंदर पूरण नृपति, कांति युक्त दरशाइ।
ताहि नरेन्द्र विचारिये, निज मन महँ सुखराइ ॥

अजावली मुख सम मुख हेरौ ❀ तौ धनवान होइ बदि टेरौ ॥
दीर्घानन दुर्भाग्य कहावै ❀ लघु मुख कृपणदान नहि भावै ॥
लम्बानन अधनी संसारा ❀ अरु पापी मन करिय बिचारा ॥
चौखूँटा मुख धूर्त्त कहावै ❀ अरु मुख निम्न नारि कसपावै ॥
जानिय ताहि पुत्र ते हीना ❀ उपजि नशै सन्तान प्रवीना ॥
कोमल कमल कपोल सकांती ❀ सुनु नरनायक चिह्न न भ्रान्ती ॥
होहिं कपोल सिंह सुंडाला ❀ सैनापति भोगी नरपाला ॥
रक्तओष्ठ नीचकर जासू ❀ नृपता लक्षण करु बिश्वासू ॥

रूखे नीलित थूल अरु, फटे दरिद्र प्रदत्त।
पापरूप तस्कर भणिय, सदा दुखहि अनुरत्त ॥

दाढ़ी चिकनी फटी न आगे ❀ उत्तम बाल सकल सुख लागे ॥
रूखी अरुण स्वल्प नहि नीकी ❀ बरनी उदधि परीक्षा जीकी ॥
श्रुति अमांस निज पापहि नाशै ❀ चपठे करण रोग तन त्राशै ॥
छोटे श्रुति कर्पण्य बखानो ❀ करण शंकु सम सेनप जानो ॥

बहु नाड़िन युत श्रुति नर क्रूरा ❀ श्रुति सकेश जीवन अरिपूरा ॥
दीर्घ पुष्ट लम्बे दुहु काना ❀ ता कहँ भोगी सिंधु बखाना ॥
सुर महिसुर पूजै मनलाई ❀ होइ धराधिप लहि ठकुराई ॥
नासा जेहि शुक चोंच समाना ❀ सो महितल भोगै सुखनाना ॥

शुष्क नासिका बहु जियै, ऊँची नासा राउ ।
लम्बा भोगी की कथिय, छोटी अधम गनाउ ॥
अंद्धा कर्षित बिकृत पृथु, नर पापी कर नाक ।
गज हरि हय सूची सरस, लाभद बणिजसुवाक ॥

कुन्दकली सम दशन सोहाये ❀ नृप लक्षण सामुद्रिक गाये ॥
वानर भालु दशन सम दन्ता ❀ ताहि क्षुधारत भाषत सन्ता ॥
बिररे फूटे रूक्ष कराला ❀ दारिद्री नरके महिपाला ॥
बत्तिस दंतानन नर भूपा ❀ परै असत्य न कथित अनूपा ॥
चित्रित रसना अथवा कारी ❀ पद दासत्व जगत दातारी ॥
मोटी रूखी पाप करावै ❀ श्वेत शौच आचार जनावै ॥
निम्न स्निग्ध अरुण लघु जीहा ❀ विद्याधर होवत गुण दीहा ॥
पातीर कंज पत्र आकारा ❀ लघु दीरघ न करत महिपारा ॥

श्याम तालु निज कुलबधै, पीत लहै सुख भोग ।
लाल तालु राजा करै, यहवरणत मुनिलोग ॥

स्यंधुर केहरि तालु सरोजा ❀ नृपता प्रद गावत करि खोजा ॥
श्वेत तालु धनवान कहावै ❀ विकृत रुक्ष फाटा दुख जावै ॥
हंसमेघ दुंदुभि गज तूला ❀ स्वर गंभीर नरेश न भूला ॥
रूखा घर्घर फाटस छीना ❀ वा पशु कागशब्द स्वरचीना ॥
फाट शब्द जनु फूटी थारी ❀ अधम रूप जानिय नर नारी ॥

दाड़िम पुष्प नैन नृप केरे ❋ व्याघ्र नेत्र क्रोधी नर हेरे ॥
जासु नैन जस हंस बिलारा ❋ अधम रूप जल राशि बिचारा ॥
नकुल मयूर नेत्र नर नाहा ❋ मध्यम पुरुष न दुःख उछाहा ॥

मधु पिंगल बरणी चखहि, त्यागै धन कबहून ।
गोरोचन हरि तालसम, नर बलवान त्रिजून ॥

चलै निमेष द्विमात्रिक काला ❋ जानु अधम नर ताहि नृपाला ॥
काल त्रिमात्रिक चालि निमेषा ❋ सो नर सुखी सदा हम देखा ॥
जो निमेष गति मात्रा चारी ❋ जाना ताहि भूमि अधिकारी ॥
काल पंच मात्रिका बितावै ❋ तब निमेषकी चालि लखावै ॥
नृपति चक्रवर्ती जग होई ❋ दीर्घायुष धरमज्ञ कथोई ॥
अर्द्धचन्द्र सम जासु ललाटा ❋ जानु नरेश धनेश सुवाटा ॥
दीर्घ ललाट होइ धनवाना ❋ लघु ललाट धरमातम जाना ॥
रेखा पांच माथ जेहि आरी ❋ जियै बर्ष शत बैभव कारी ॥

चारि रेख अस्सी बरष, सत्तर रेखा तीनि ।
साठि बरष बिबिरेखयक, चालिसवर्षहि लीनि ॥

मस्तक जासु न एकौ रेखा ❋ जीवन बर्ष पचीसहि लेखा ॥
लघु रेखा अल्पायुष जाना ❋ लम्बरेख दीर्घायु बखाना ॥
पट्टिश शूल रेख माथे जेहि ❋ नृपतिसकीर्ति प्रतापी कहितेहि ॥
उत्तमांग जेहि छत्र समाना ❋ होइ विशेषि भूप बलवाना ॥
लम्बा शीश दरिद्र दिखावै ❋ विषम दुःखभागी मन आवै ॥
गोल शीश सम आनँद दाता ❋ करि सम शीश भूप दरशाता ॥
केश रोम मोटे अरु फाटे ❋ रूखे कपिल शीश तन छाटे ॥
सो भोगै दुख बिविधि प्रकारा ❋ गहिरे अरु कठोर दुखभारा ॥

बेगर कोमल चीकने, अंजन भ्रमर समान ।

केश मनोहर सुखद अति, आनँद मोदमहान ॥

सैनप कहो सुनो विधि देवा ❀ नृप लक्षण कथु मम मनयेवा ॥
शुभ लक्षण भूपन के जोई ❀ अबहौं भणत सुनौं सुत सोई ॥
जाके तनतें परैं कुमारा ❀ लहे अवश्य महिप अधिकारा ॥
जासु शरीर तीनि गंभीरा ❀ अरु विस्तीर्ण तीनि सुनु बीरा ॥
षट उन्नत श्रुति ह्रस्व लखाहीं ❀ रक्तित सप्त अंग दरशाहीं ॥
पंच दीर्घ अरु सूक्ष्मित पांचा ❀ नृपति चक्रवर्त्ती यह सांचा ॥
करिय बखान सहित विस्तारा ❀ होइ बोध सुनि नाथ हमारा ॥
स्वर[1] अरु नाभि सत्त्व गंभीरा ❀ सुनु विस्तीर्ण तीनि वर बीरा ॥

उर[1] ललाट[2] मुख जानिये, षट उन्नत सुनु तात ।
सामुद्रिक भाषत यथा, सुनि उपजै सुखगात ॥

वक्षस्थल[1] कक्षा[2] नख[3] नासा[4] ❀ मुख[5] कृका[6] टिका करत प्रकासा ॥
लिंग[1] पृष्टि[2] जंघा[3] अरु ग्रीवा[4] ❀ सोहत ह्रस्व कल गुण सीवा ॥
नैन[1] प्रांत कर[2] पद[3] नख[4] तालू[5] ❀ रसना[6] ओष्ठ[7] सप्त रंग लालू ॥
हनु[1] भुज[2] चष[3] अंतर दुहु छाती[4] ❀ अरु नासिका[5] दीर्घ अरिघाती ॥
पर्वांगुली[1] केश[2] त्वच[3] दंता[4] ❀ नख[5] युत पच सूक्ष्म गुण वंता ॥
परैं जासु तन ये सब जोई ❀ सप्त द्वीप पृथिवी पति सोई ॥
अकसर छींक शब्द वर ताको ❀ नर महीप जग सुंदर शाको ॥
दुहरी तिहरी छींक धनेशा ❀ अरुण कमल दल नेत्र नरेशा ॥

पिंगलाक्ष मधुरंग जेहि, नर महातमा जानु ।
मृग चष भीरु सचक्र दृग, गोल चोरु खल मानु ॥

केकर[2] नैन क्रूर नर केरे ❀ नीलित विद्याधर दृग हेरे ॥

---

१ घिदुआ २ ढेढ़ा ॥

श्याम नेत्र नृप शुभग कहाये ❀ नैन बिशाल भोगभद गाये ॥
चषस्थूल नृप मंत्री जानौ ❀ दीन नेत्र दारिद्र प्रमानौ ॥
नेत्रोपरि भ्रू उन्नति ताता ❀ अल्पायुष लक्षण विख्याता ॥
भ्रू प्रलंब दारिद्र निशानी ❀ भृकुटीमिलित अधनअघखानी ॥
मध्यभाग नीची भ्रुव जासू ❀ परतिय गामी लक्षण तासू ॥
चंद्रकला सम वक्र विशाला ❀ भृकुटी नृपति चिह्न महिपाला ॥
उन्नत अमल ललाट लखाई ❀ उत्तम पुरुष जानु सुवराई ॥

नीचो होइ ललाट जेहि, धनसुत हीनित जानु ।
विषम दरिद्री शुक्ति सम, आचारज अनुमानु ॥
स्निग्ध हास्य युत दीनता, अश्रुपात ते हीन ।
असमुख जाकर सैनपति, पुरुष मलीन प्रवीन ॥
अश्रुपात युत दीनता, आनन रुक्ष न नीक ।
धीरहास्य उत्तम पुरुष, हँसतठठाय अलीक ॥

हास्य काल चष मूँदत जोई ❀ पापी पुरुष जानियै सोई ॥
गोल शीश बहु गोधन पावै ❀ चापट शिर पितु मातु सतावै ॥
घटसम शीश चलै नित पंथा ❀ निम्न अनर्थक गावत संथा ॥
ये नर लक्षण तोहि सुनाये ❀ तियलक्षण सुनु जस गुणिपाये ॥
अरुण चपांत होइ गल रेखा ❀ वृद्धि करनि सो बाम विशेखा ॥
जेहि तिय मस्तक रेख त्रिशूला ❀ बहुतिय स्वामिनिबदतअमूला ॥
हंस चालि हरि तन मृगनैनी ❀ श्वेत दंत उत्तमा सुबैनी ॥
मंडुक कुक्षि एक सुत जावै ❀ कार्तिकेय सो नृपति कहावै ॥

स्वर मराल घन वर्ण चष, पिंगल शुचि मधुरंग ।
अष्ट पुत्र जावै तिया, युत धनधान्यअभंग ॥

लम्बे श्रुति अरु सुन्दर नासा ❀ शुभगा तिय भ्रूचाप विकासा ॥
तम्बी मधुर वचन दरदंता ❀ चीकन तन ऐश्वर्यद कंता ॥
जासु जघन विस्तीर्ण भुआरा ❀ मध्य भाग कृश वेद्याकारा ॥
नैन विशाल कन्यका जोई ❀ रानी होत भूप घर सोई ॥
वामस्तन कर श्रुति गलपरतिल ❀ प्रथमै सुत जावै वामाखिल ॥
उन्नत गुल्फ चरण रतनारे ❀ मिलितांगुली पार्श्वे लघु प्यारे ॥
बहु सुख भोग करै वह नारी ❀ लक्षण लिखो समुद्र विचारी ॥
रूखे चरण उँच नख जासू ❀ वक्रांगुली न ब्याहै तासू ॥

कोउ अंग लघु कोउ बड़, नारि गर्दभी तास ।
सुखनलहतयाहिजगततिय, दुखभोगत सबगात ॥

अँगुठा ते तर्जनि बड़ि होई ❀ ब्यभिचारिणी जानु तिय सोई ॥
छुऐ न भूमि मध्यमा जाकी ❀ पतितजिब्यभिचारिणिबुधिताकी ॥
महि अनामिका जासु न परसै ❀ मति ब्यभिचार रूप तियदरसै ॥
सरितरु गिरि नरनाम अनाजा ❀ नीक न जानु ताहि महिराजा ॥
पृष्टि नाभि आवर्त्ता बामा ❀ उपजावै सन्तान ललामा ॥
जियै परंतु सो न बहुकाला ❀ सुनु सैनापति आन हवाला ॥
जाकी पृष्टि होइ आवर्त्ता ❀ वह योषिता हनै निज भर्त्ता ॥
कटि आवर्त्त करै ब्यभिचारा ❀ सती नाभि आवर्त्त चिन्हारा ॥

बिहसतही गड़हा परै, जासु कपोलहि राय ।
लक्षण यह ब्यभिचारको, ताहि कहो समुझाय ॥

बड़े चरण रोमा सब अंगा ❀ छोटे मोटे हस्त कुढंगा ॥
दासी चिह्न यहै सैनेशा ❀ नहिं संशय या महँ लव लेशा ॥
पग कम्पै मुख बिकृत लखाई ❀ ओष्ठोपरि रोमावलि भाई ॥

१ एड़ी ॥

बहुत शीघ्र पति भक्षण करई ❀ करैं बिवाह अवशि सो मरई ॥
रहै पवित्र करै पति सेवा ❀ पूजै गुरुजन ब्राह्मण देवा ॥
सो मानुषी रूप जगनारी ❀ गुप्त कथा हौं कहौं पुकारी ॥
नित्य स्नान सुगंध लगावै ❀ बोलै मधुर अल्प भष खावै ॥
निद्रा स्वल्पित रहै पुनीता ❀ सो देवता नारि वर गीता ॥

निन्दाके भय गुप्त अघ, करै सुकाल विचारि।
कहै मनोरथ प्रगट नहिं, मार्जारि सो नारि ॥
हँसै कतहुँ क्रीड़ा करै, क्रोधितकतहुँप्रसन्य।
बहु पुरुषनि सों जो रमै, नारि गर्दभी धन्य ॥

पति बांधव हितु वचन न मानै ❀ निज इच्छा बिहार सुख जानै ॥
ताहि आसुरी नारि बखानौ ❀ दुबिधाकछुन चित्त निजआनौ ॥
बहु भक्षै बहु सोवै ताता ❀ कहै सक्रोध वचन कटु ख्याता ॥
मारै पतिहि क्रोध मन आनी ❀ नारि राक्षसी बिबुध बखानी ॥
शौचा चार रूप कर हीना ❀ महा भयंकर बस्त्र मलीना ॥
जानिय सो पिशाचिका बामा ❀ कार्तिकेय नहिं संशय यामा ॥
नित न्हावै सुगंध तन लावै ❀ उपवनादि लखि आनँद छावै ॥
मांस मद्य पर प्रीति सदाहीं ❀ तिय यक्षिणी जानु मनमाहीं ॥

चपल नेत्र अति चंचला, इत उत लखै अनेम।
नारि बानरी जानियै, सुनि मम वचन सप्रेम ॥

मुख सित भालु मत्तकरि चाली ❀ रक्तवर्ण कर नख दलपाली ॥
सर्व अंग शुभ लक्षण वारी ❀ विद्याधरी वाम सुखकारी ॥
बीण मृदंगि वंशिध्वनि भावै ❀ रुचि प्रसूनवर गंध लखावै ॥
ताहि जानु गांधर्वा वामा ❀ कहि अज कथा भूप परिणामा ॥

ब्रह्मलोक चलि गये बिधाता ❀ सुनि हर्षित से गृह निजगाता ॥
शतानीक करजोरि बखाना ❀ सुनि नर लक्षण मनहरषाना ॥
गणपति आराधन बिधि गावौ ❀ निज सेवकहि मुदितसमुझावौ ॥
क्षोणिप गणपति पूजन माहीं ❀ तिथिव्रत नियम अहै कछुनाहीं ॥

गणपति चौथिव्रत और प्रयोग विधि अध्याय १३ भविष्यपुराण में ॥

यस्मिन् कस्मिन् तिथि दिवस, पूजै श्री गणपाल ।
देव रमेश्वर सरलचित, जनपर होत दयाल ॥

श्वेत अर्क कर मूल मँगावै ❀ मूरति अँगुठा मात्र बनावै ॥
चारिभुजा चष दंत बिराजै ❀ मोदक कवच परशु श्रक भ्राजै ॥
पद्मा सनित अखिल आभूषण ❀ सर्प यज्ञ उपवीत अदूषण ॥
मस्तकपर मृगांक छबि दाता ❀ नखशिख मूर्ति मनोहर ताता ॥
केसरि चंदन बस्त्रा भरना ❀ अरुण प्रसून सुगंध सुबरना ॥
लड्डू धूप दीप नैवेदा ❀ ताम्बूल आदिक गत खेदा ॥
पूजन करि द्विज पंगुल बावन ❀ बोलि जिमावै सेवक पावन ॥
दै दक्षिणा आशिषा पाई ❀ बिदा करै द्विज मोद बढ़ाई ॥

मंत्र विधानहिं सुनौ नृप, तुम प्रवीन सब काल ।
दुर्गा बर्णत सुखलहो बांछित मोद बिशाल ॥

(ॐगंस्वाहा) इतिमूलमंत्रः(ॐगांहृदयायनमः) (ओं गींशिरसेस्वाहा) (ओंगूंशिखायवषट्) (ओंगैंकवचायहुं) (ओंगौं नेत्रत्रायवौषट्) (ओंगः अस्त्रायफट्) इतिषडांग न्यासषटमंत्राणि (ओंआगच्छोल्का मुखायस्वाहा) इति आवाहनमंत्रः ओंगंधोल्कायनमः इतिचंदनार्पणमंत्रः (पुष्पोल्कायनमः) इतिपुष्पमंत्रः (ओंधूपोल्का

यनमः) इतिधूपमंत्रः (ओंदीपोल्कायनमः) इतिदीप मंत्रः) (ओंगमहोल्कायनमः) इतिनैवेद्यमंत्रः (वलिं निवेदयेत्) पुनःपूर्वं (दुर्जयायस्वाहा) दक्षिणं (महागण पतयेवीरायस्वाहा) पश्चिमं (सदामहोल्कायस्वाहा) उत्तरं (कूष्मांडायस्वाहा) आग्नेयं (एकदंतत्रिपुरांतकाय स्वाहा) नैऋत्यं (श्यामदंतविकटघ्राणायस्वाहा) ईशान्यं पद्मदंत गजाननायस्वाहा)॥

करि पूजन अरु हवननृप, गणपतिसन्मुख जाय।
फट हुं फट भाषि पुनि, ताली देइ बजाय॥

तीनि दिवस महँ आठ हजारा ❀ नृप बश करण प्रयोग कुमारा॥
तिल यव हवन करै जो कोई ❀ सब जग मनुज तासु बशहोई॥
चावल लवण हवन जो साधै ❀ होइ अजित रण लहै न बाधै॥
निम्ब पत्र साकिल्य मिलावै ❀ तौ विद्वेषण भूप जनावै॥

चन्द्रग्रहण के समय जो, जलमधि होवै ठाढ़।
वसु सहस्र जपि मंत्रवर, जीति लहै रण गाढ़॥

जपै मंत्र सुखकरि रवि ओरा ❀ अष्ट सहस्र प्रेम नहिं थोरा॥
तौ प्रसन्न होवैं दिन नायक ❀ देहिं मनोरथ जनसुखदायक॥
शुक्ल चौथि व्रत करि नर बाला ❀ सो पचार पूजै गणपाला॥
तिल चावल कर हवन करावै ❀ भूर्ज पत्र पुनि चतुर मँगावै॥
लिखि बसुगंध मंत्रवर मूला ❀ धारण शीश करै अनुकूला॥
सो सर्वत्र जयति पद लहई ❀ मुनिसुमंत इमि नृप प्रति कहई॥
अपा मार्ग कर काष्ठहिलाई ❀ प्रज्वलित पावक करै नृराई॥
देइ नित्य आहुति इक ईशा ❀ तीनि दिवस अरि मरै महीशा॥

आसानित ह्वै वृक्षतल, कज्जल रचै सुजान ।
अभिमंत्रण करि सप्तधा, आंजै लोचन स्यान ॥

जेहि दिशि हेरै नैन पसारी ❀ सो वश होइ कोउ नर नारी ॥
जो फल पुष्प मूल शुभवारा ❀ अभिमंत्रण करि अष्ट हजारा ॥
देइ जासु कर सो वश होई ❀ या महँ नृप संदेह न कोई ॥
मूल मंत्र कर अमित प्रभावा ❀ सकलकार्यसिधि प्रदमुनि गावा ॥
जपत नवग्रह होत प्रसन्ना ❀ मूल मंत्र सम मंत्र न अन्ना ॥
काहू नगर द्वार पर जाई ❀ जपै सहस्र अष्ट महिराई ॥
बारम्बार विलोकै द्वारा ❀ होइ अखिलपुर ज्वरअधिकारा ॥
जपै बैठि दक्षिण मुख प्रानी ❀ अरि उच्चाटन युक्ति बखानी ॥

सप्त रात्रि मंत्रै जपै, ठाढ़ होइ जल माहिं ।
वृष्टि अकालिक होइ तब, या मधि संशय नाहिं ॥

आकर्षण मारण उच्चाटन ❀ आन स्तंभन मोहन कारन ॥
मूल मंत्र बल करै सयानो ❀ गुप्त मर्म हौं मन अनुमानो ॥
अभिमंत्रण करि मंत्र हजारा ❀ गोरोचन कर धरै सुआरा ॥
शत योजन जावै अरु आवै ❀ श्रमित न होइ महागति पावै ॥
कील खदिर तरु काष्ट बनावै ❀ अभिमंत्रित करि भूमि गड़ावै ॥
जाके नाम मरै क्षण माहीं ❀ जपत मन्त्र कछु दुर्लभ नाहीं ॥
तेजस्वी अपराजित बीरा ❀ मन्त्र जपत यह सुनु रणधीरा ॥
निम्ब काष्ट प्रतिमा बनवावै ❀ मुनि अंगुष्ठ प्रमाण बतावै ॥

गंध धूपयुत पूजि तेहि, धरै आपने शीश ।
सो नर होवै जगतप्रिय, सुनुवर चरित क्षितीश ॥

श्वेत अर्क कर मूलहि लाई ❀ रचि प्रतिमा पूजै सुवराई ॥

धारत वश्य होइ सब वर्णा ❀ आन विधान सुनौ दुख हर्णा ॥
एकांगुष्ठ मूर्त्ति सित चंदन ❀ चौथि अष्टमी सितकर बंदन ॥
पूजि सविधि देवै बलिदाना ❀ हवन मंत्र बसु सहस प्रमाना ॥
नृप बश करनी प्रतिमा ताता ❀ निज शिर धारण करै सुदाता ॥
चन्दन अरुण मूर्त्ति रचि ज्ञानी ❀ करि घृत हवनधरै शिर प्रानी ॥
प्रजा समस्त तासु वश रहई ❀ आज्ञा भंग वचन नहिं कहई ॥
प्रतिमा मूल रक्तकर वीरा ❀ मलयज रक्त पुष्प लै बीरा ॥

करि पूजन बलिदेइ तिल, लवण सरपि कर होम।
शीश धरै दश ग्राम वश, होइ न वचन विलोम ॥

जो यहि विधि रचि प्रतिमा भाई ❀ पूजन करै मोद मन छाई ॥
तेंदुकाष्ठ हवन अरि वश कर ❀ बिल्वकाष्ट प्रतिमा रचि नरवर ॥
पूजि शर्करा मधु घृत होमै ❀ खोवै नृप मंत्री के जोमै ॥
जो शिर धरि जावै नृप द्वारा ❀ लहै प्रतिष्ठा भूप अपारा ॥
खनित दंति रद मृतिका लाई ❀ एकांगुष्ठ मूर्त्ति रचि राई ॥
कृष्ण चतुर्थी शून्या गारा ❀ पूजै नग्न रूप स विचारा ॥
सम्यक नारिन कर प्रिय होई ❀ खनित शृंग वृष मृतिका जोई ॥

लाइ बनावै मूर्त्ति भल, गुग्गुल की दै धूप।
करै घोषवश आपने, गावत सुबुध अनूप ॥

बल्मिक मृतिका मूरति करई ❀ अरु कटु तैल बिलेपन सरई ॥
काष्ट धतूर समिध बुध साधै ❀ आहुति सात सहस अनुराधै ॥
जेहि कन्या सँग चहै बिवाहा ❀ ता सँग होइ सुखद उदबाहा ॥

अथ मंत्र ॥

ओंनमोगणपतये वक्रतुंडाय गुलगुलेति निनादक

१ ग्वालोंका स्वामी ॥

रायचतुर्भुजाय त्रिनेत्राय मुशल वज्रहस्ताय सर्वलोकव
शंकराय सर्वदुष्टोपघातजननायसर्वशत्रु विमर्दनायसर्व
राजसंमोहनायहन २ पच २ वज्रांकुशाफ स्वाहा ॥
यहो मंत्र गणपति कर आही ❁ प्रथम मंत्र विधिसम करुयाही ॥
सुनु गणेश गायत्री राजा ❁ दायकसकल सिद्धि भवकाजा ॥

अथ गायत्री ॥

ओंमहाकर्णाय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि तन्नोदंती
प्रचोदयात् ॥

पद्मं प्रहर्षिणि अंकुश पासौ ❁ परशु पर्टह रदं मालं शुभासा ॥
मुद्रा अष्ट प्रथम दिखरावै ❁ पुनि सब कर्म करै बुधगावै ॥
शिव पूजन मंडली विधाना ❁ पूजन तथा गणप नृप गाना ॥

मंत्र भेद केवल अहै, पूजै गणपति कोय ।
विघ्नारिष्ट नशाइ सब, सिद्धि कार्य जग होय ॥

करि उपबास चतुर्थी पाई ❁ पूजै गणपति प्रेम दृढ़ाई ॥
मन बांछित फल पावै प्रानी ❁ जापर द्रवैं गणप नृपज्ञानी ॥
तापर त्रिपुर प्रसन्नित जानौ ❁ यहिकारण गणपति मनआनौ ॥
केसरि चंदन पुष्प धतूरा ❁ कंजादिक लावै बुधि रूरा ॥
मोदक बिबिधि सहित तांबूला ❁ नैवेद्यादिक आनि अमूला ॥
शास्त्र विहित करि सब उपचारा ❁ पूजै लम्बोदरहि भुआरा ॥
पाइ फलेप्सित चतुर अघावै ❁ केहि कारण प्रति सुरपद ध्यावै ॥
विघ्न विनाशन द्वितियन देवा ❁ आग मोक्त बुध सम्मत येवा ॥

शिवा शान्ता अरु सुखा, तीनि चतुर्थी नाम ।
तिनके लक्षण भणतहौं, सुनु अवनिप गुणधाम ॥

शिवा चतुर्थी भादौं मासा ❀ शुक्लपक्ष कीजिये उपवासा ॥
दान स्नान जपादि सुकर्मा ❀ शत गुणफलद न यामहँ भर्मा ॥
गुड़ घृत लवण दान सुखकारी ❀ गुड़अपूप द्विजभोज्य बिचारी ॥
जो तिय भाद्र चतुर्थी पावै ❀ सासु श्वसुर गुड़ पूप जिमावै ॥
तासु सोहाग गणेश बढ़ावै ❀ सत्य सत्य भ्रम चित्त न लावै ॥
जो कन्या सुंदर बर चहई ❀ सो विशेषि यहि ब्रत कह रहई ॥
शिवाचतुर्थी कथ्यों विधाना ❀ अब शान्ता कर करौं बखाना ॥
माघसि तात चतुर्थी जोई ❀ शान्ता नाम कहावत सोई ॥

न्हान दान आदिकसुकृत, सहस गुणितफलदेत ।
नरनारी संसार के, ब्रत साधत यहि हेत ॥

लवण शाक गुड़ देवै दाना ❀ जौन योषिता परम सुजाना ॥
सासु श्वसुर अरु निजगुरु पाई ❀ भोजन देइ प्रेम उरलाई ॥
यह ब्रत बिघ्न हरण महिपाला ❀ करत अनुग्रह गणप दयाला ॥
सुनु अब भूपति सुखा बिचारा ❀ शुक्ल चौथि होवै कुजवारा ॥
सुखा चतुर्थी सो नरनायक ❀ सुनु इतिहास महा सुखदायक ॥
शिवा महेश्वर मैथुन काला ❀ रुधिर बिंदु यक गिरो भुवाला ॥
धारण भूमि निजानन कीन्हो ❀ ताते जन्म भौम ग्रह लीन्हो ॥
भौम देत सौभाग्य सुअंगा ❀ अंगारक भो नाम प्रसंगा ॥

रक्तित चन्दन पुष्पलै, पूजहिं भौमहि तात ।
ताहि मिलै सौभाग्यधन, रूप मनोहर गात ॥
प्रथम करै संकल्प फिरि, कर मृतिका लै शुद्ध ।
पढ़ै मंत्र यह सदृढ़ मन, अब फल सुनो बिबुद्ध ॥

मंत्र ॥ इहत्वंवंदितापूर्वं कृष्णेनोद्धरिताकिल ।

तस्माद्भेदह पापमानं यन्मयापूर्वसंचितम् ॥

दो० । करिमृतिकारविसन्मुखहिं, पुनिप्रतिअंगलगाय ।
न्हाइ ठाढ़ ह्वै नीर मधि, जपै मन्त्र मन लाय ॥

मंत्र ॥ त्वमापोयोनिसर्वेषां देवदानवराक्षसाम् ।
स्वैदांडजोद्भिदानांच रसानांपतयेनमः ॥

दो० । सब तीरथ सर सरित महँ, हौं कीन्हौं नृपन्हान ।
सहढ़रबिहकरिचित्तनिज, यहिविधिधारैध्यान ॥
बहुरि आइ गृह मंत्र पढ़ि, दूर्वा पीपल पाइ ।
शमी धेनु भेटै चतुर, लहै मोद अधिकाइ ॥

मंत्र ॥ त्वंदूर्वेऽमृतनामासि सर्वदेवैस्तुवंदिता ।
वंदिता हरतत्सर्वं यन्मयादुरितंकृतम् ॥

इति दूर्वा मंत्रम् ॥

पवित्रणांपवित्रात्वं कश्यपिप्रिथिताश्रुतौ ।
शमीशमयमे पापं यन्मयाचिर संचितम् ॥

इति शमी मंत्रम् ॥

नेत्रस्पंदंभुजस्पंदं दुःस्वप्नंदुर्विचिंतनम् ।
शत्रूणांचसमद्योग मश्वत्थशमयस्वमे ॥

इति पिप्पलस्पर्श मंत्रः ॥

सर्वदेवमयीदेवी मुनिभिस्तसुपूजिता ।
तस्मात्स्पृशामिवंदे त्वांवंदितापापहाभव ॥

दो० । प्रथमप्रदक्षिणा धेनुकरि, छुवै मंत्र पढ़ि ताहि ।
महि प्रदक्षिणा फललहै, कहत शास्त्र अवगाहि ॥

परसिसवन पुनि धोइ पग, आसन बैठे आइ।
करिआचमनसमोदबुध, खदिरसमिधमँगवाइ॥
अग्नि प्रकाशै दुग्धघृत, जौ तिल सुमधहिलाइ।
कर हवन पढ़ि मंत्र बुध, यथा शक्ति सुनुराइ॥

मंत्राणि (ओंशर्वायस्वाहा) (ओंशर्वपुत्रायस्वाहा) (ओंक्षोरायुत्संगमवायस्वाहा) (ओंकुजायस्वाहा) (ओं ललितांगायस्वाहा) (ओंग्रहेशायस्वाहा) (ओंअंगारकायस्वाहा)॥

यकसौ साठि आहुती देई ❀ नृप प्रति मंत्र परम फललेई॥
पुनि हाटक वा चंदन रूपा ❀ अथवा देवदारु कर भूपा॥
सुन्दर प्रतिमा भौम बनाई ❀ सुवरण रौप्य पात्र धरवाई॥
अथवा ताम्र मृत्तिका बांसा ❀ पात्र लिखै मूरति अनयासा॥
मलयज अरुण पुष्प नैवेदा ❀ अग्निर्मूर्द्धा मंत्र निवेदा॥
पूजै करि सिगरे उपचारा ❀ द्विजहि समर्पै मूर्त्ति भुवारा॥
घृत पय तंदुल गुड़ गो धूमा ❀ संकल्पै मन करै न शूमा॥
वित्तशाठ्य[1] फल लहत न राजा ❀ धन ब्ययकरै होइ शुभ काजा॥

भौमयुक्त ब्रत चौथि करि, हाटक मूर्त्ति नरेश।
तोले दश वा पाँच करि, अंगारक वर भेश॥
नवपल अथवा पलदिशा, गणपति मूर्त्तिबनाइ।
स्वर्ण रौप्य वा ताम्र के, पात्र धरै भुवराइ॥

बहुरि शिवाशिव मूर्त्ति बनावै ❀ पात्रधारि वर वसन वोढ़ावै॥

---

१ खर्चका संकोच॥

करि पूजन विधिवत नरनाहा ❀ युत दक्षिणा हर्षि मनमाहा ॥
द्विज सत्पात्र जानि संकल्पै ❀ त्यागिविविधिविधिबुद्धिविकल्पै ॥
सम्पूरण व्रत फल मन आशा ❀ आन अखिल तजि देइ दुराशा ॥
यह व्रत चन्द्र कान्ति मन करई ❀ तेजादित्य तुल्य अनुसरई ॥
बल बाढ़ै तन पवन समाना ❀ अंत बसै शिवधाम सुजाना ॥
वर माहात्म्य चौथि जो सुनई ❀ अथवा विबुध चित्तपढ़ि गुनई ॥
द्विज हिंसादि पाप गण नाशै ❀ उत्तम पुर नर नारि विलाशै ॥

रुचिरकथाव्रत चौथिकर, मुनिवरकृत अनुसार ।
दुर्गा वरणत मुदित मन, सुन्दर सुखद विचार ॥

षडानन और ब्राह्मणत्व का वर्णन ।

———:❀:———

देखो अध्याय १५ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ।

फलपावै दुहुँ लोकमल, करत षष्ठि व्रत भूप ।
ताहि नमत सब देवता, जानत पुरुष अनूप ॥

जग जन्मै तजि षटमुख धामा ❀ होइ चक्रवर्ती नृप नामा ॥
सुनै षष्ठि व्रत फल दै काना ❀ देहि ताहि षटमुख सुख नाना ॥
शतानीक नृप बद करजोरी ❀ सुनिय मुनीश्वर बिनती मोरी ॥
षटमुख जन्म अनेक बिधाना ❀ तिनकर अमित प्रभाव बखाना ॥
कह मुनि जस तुम्हार सन्देहा ❀ मुनिन बिधातै पूछ्यो एहा ॥
एक समय ब्रह्मा निज लोका ❀ आस नीक हे गत सब शोका ॥

गयेअखिल मुनिविधिभवन, पूछौ पद शिरनाय ।
हमरे उर संशय बढ़ो, कहौनाथ समुझाय ॥

क्षत्रिय ते ब्राह्मण भये, विश्वामित्र मुनीश।
यह अचरज की वारता, मेटिय भ्रम जगदीश॥
ब्राह्मणत्त्व प्रभु काकर नामा ❋ जाति देह श्रुति पाठ ललामा॥
कर्मकि संस्कार आचारा ❋ भणिय नाथ भ्रम नशै हमारा॥
जीव ब्रह्म यदि कहौ गोसांई ❋ जीव चारिहू खानि भ्रमाई॥
ब्राह्मणत्त्व नहिं रहत हमेशा ❋ शूकर श्वान शूद्र खल भेशा॥
सुनो सकल मुनि कान लगाई ❋ मनु वर्णित बरणत हौं भाई॥
सप्त व्याध वर कथा सुनीजै ❋ जो सुनि सुनि तव संशय छीजै॥
देश दशार्णव सतमुनि व्याधा ❋ तत्पर निज कर्मणि आराधा॥
तन तजि सातौ भे मृग जाई ❋ कालंजर गिरि सुनु ऋषिराई॥
चक्रवाक भे त्यागि तन, शरद्वीप महँ जाइ।
मानसरोवर हंस पुनि, भये जाइ मुनिराइ॥
बहुरि वपुष तजि तीनहीं, कुरुक्षेत्र भे विप्र।
वेद पारगामी सुबुधि, त्यागियसंशय छिप्र॥
यहि कारण न जीव द्विज ताता ❋ कर्म विवश बहु योनि भ्रमाता॥
धेनु गवयं महँ भेद लखाई ❋ गल कंवल चीन्हा मुनिराई॥
ब्राह्मण के न चिह्न अस कोई ❋ जेहिकरि बिदित मनुजगणहोई॥
जाति न विप्र ऋषय यहि कारण ❋ सुनो मुनीश्वर भव उद्धारण॥
हय गज मेष अजा खर गाई ❋ सेवन हित कृत पर सिवकाई॥
वणिक लोह कारक नट आदी ❋ करै नौकरी ब्राह्मण बादी॥
खाइ पलांड लहुन अरु मांसा ❋ पियै मद्य द्विज धर्महि नासा॥
बेचै पय रस लवणहिं लाई ❋ ब्राह्मणत्व जनु दीन्ह बहाई॥
नारि पुंनर्भू शूद्रिणी, दासी संग प्रसंग।

१ नीलगाय २ पियाज ३ जिसका दूसरा विवाह हुआ हो॥

करत विनाशत विप्रता, तेज रहत नहिं अंग ॥
गुरु पितु मातु देवता द्वेषी ❀ मात्सर्य उर धरै विशेषी ॥
श्री मनुराज लिखो यहि भांती ❀ मांस लवण लाक्षापय जाती ॥
बेंचतही विप्रता नशाही ❀ शूद्र समान जानिये ताही ॥
पालि धेनु द्विज करै गुजारा ❀ वा करि कृषी लहै सुखसारा ॥
करे वैश्य नट कर्म जो, पर सेवन धन लेइ ।
विप्र शूद्र समता लहै, ब्राह्मणत्त्व तजि देइ ॥
सो० शूद्र करै शुभकर्म, विप्र तुल्य तेहि जानिये ।
यह गावत वरधर्म्म, दुर्गा वरणत भ्रम नहीं ॥
पुनि विरंचि वद सुनौ मुनीशा ❀ होत न ब्राह्मण श्रुति पाठीशा ॥
रावणादि राक्षस श्रुति ज्ञाता ❀ ब्राह्मणते न विदित खलजाता ॥
चांडाल कैवर्त्त अनेका ❀ करि छल पढ़ो वेद सविवेका ॥
ब्राह्मण भे न किये उपचारा ❀ कीजिय मुनिवर हृदय विचारा ॥
कोउ कोउ शूद्र विदेशहि जाई ❀ ब्राह्मण बनत वेद पढ़ि भाई ॥
द्विज कन्या सँग करत बिवाहा ❀ पंचगौड़ शर द्राविड़ माहा ॥
वास्तव में न विप्र वर सोई ❀ ब्राह्मण वेद पढ़े नहिं होई ॥
बदत शास्त्र विद नर अघकारी ❀ होत न वेद पठन साचारी ॥
पढ़ै वेद वेदांग सब, न रहै नित आचार ।
होत पवित्र न मत गुनिय, रावणादि व्यवहार ॥
विप्राचरण शिल्प श्रुति जानौ ❀ मुख्य धर्म मुनिमन अनुमानौ ॥
करत शूद्र बहु संध्या बंदन ❀ दंड मेखला त्वच मृग चंदन ॥
मष उपवीत आदि तन धारत ❀ कोउ निषेध न चित्त बिचारत ॥
अरु अभिचार आदि बहु कर्मा ❀ करत शूद्र जप तप वर धर्मा ॥

करत अनुग्रह सुर तप देखी ❀ मंत्रसिद्धि फल लहत बिशेखी ॥
तब बल करत अनुग्रह शापा ❀ शूद्र तपस्वी गत सन्तापा ॥
ब्राह्मण शूद्र लहत समताई ❀ होत न ब्राह्मण सुनु मुनिराई ॥

व्यासादिक क केहि करे, संस्कार मुनिराइ।
उत्तम ब्राह्मण चित्त गुणि, सबऋषि बंदत धाइ ॥

ब्राह्मण तन न जानिये ताता ❀ सबके तन समता विख्याता ॥
प्रत्युत म्लेच्छ सनास्तिक देहा ❀ बल अरु पुष्टि अधिक न संदेहा॥
देह आतमा सुख दुख रोगा ❀ वच ऐश्वर्य रसेंद्रिय भोगा ॥
आज्ञा वीर्याकृति व्यापारा ❀ आयु पुष्टता बुद्धि विचारा ॥
चंचलता थिरता बैरागा ❀ दुर्बलत्व अरु धर्म विभागा ॥
औषधि धर्म गर्भ अरु रूपा ❀ अस्थि मांस त्वच रोम स्वरूपा ॥
निर्मलता स्वच्छता विवेका ❀ विप्र शूद्र तन भेद न एका ॥
अरुन श्वेत चंद्रिका समाना ❀ विप्र अंग मुनिराज सुजाना ॥

नहिं क्षत्री किंशुक वरण, वैश्यन पीत शरीर।
शूद्र न श्याम करीषसम, किमिचीन्हिय रणधीर ॥

चलब फिरब बैठब अरु डोलब ❀ सोउब दुख सुख समहीं बोलब ॥
चारि बर्ण के नर संसारा ❀ एक पिता ते जन्म बिचारा ॥
यहि कारण समस्त यक जाती ❀ फिरिकस ब्राह्मण शूद्र बिजाती ॥
ईस्वर एक पिता सबही को ❀ चतुर्वर्ण सन्तान कही को ॥
एक वृक्ष फल स्वाद समाना ❀ यह भाषत विज्ञान निधाना ॥
पादप एक ईश करतारा ❀ भये तासु फल बिबिधिप्रकारा ॥
यह अनुचित सब एकहिस्वादा ❀ नहिं दुबिधाकर करिय विवादा ॥
कौशिक काश्यप गौतम गाये ❀ मांडव्य कौंडिल्य गनाये ॥

गर्ग अंगिरा कौत्स गनु, आत्रेय सवशिष्ठ।

मौद्गल्य भार्गव कहत, कात्यायन धरमिष्ठ ॥

भारद्वाज आदि बहुगोता ❀ आनहु वर्ण गोत्र सुनि होता ॥
यहि हितु गोत्रन ब्राह्मण गायो ❀ यदपि शरीरहि विप्र गनायो ॥
तोको अंग विप्र तन माहीं ❀ जेहि काटे विप्रता बिलाहीं ॥
जो ब्राह्मण सब देहहि मानो ❀ तौ यह संशय मनहिं न आनो ॥
मृतक शरीर दाह जो देई ❀ द्विज हत्या पातक शिर लेई ॥
यहि कारण नहिं विप्र शरीरा ❀ सुनो विवेक आन सुनि धीरा ॥
विप्र सुता सँग करै बिवाहा ❀ सो ब्राह्मण प्रसिद्ध नरनाहा ॥
तौ संशय कन्या क्षत्रानी ❀ ब्याह करे क्षत्री द्विज प्रानी ॥

वैश्यनि शूद्रिनि ब्याह करि, वैश्य शूद्र ह्वै जाइ ।
श्रुति वद कन्या वर्ण चहु, विप्र बिवाहै पाइ ॥
जाति धर्म तन श्रुति पठन, कर्म न ब्राह्मण कोइ ।
विद्या रूपैश्वर्य कुल, वर्ग वृथा तजु सोइ ॥

यह आतमा बनस्पति होई ❀ शंख पपील सरीसृप सोई ॥
नर पक्षी गयंद किंस्याना ❀ बसत जीवतनधरिधरि नाना ॥
जिमि वहुरूपिय रूप बनावै ❀ एक रूप नहिं दृढ़ता लावै ॥
यहिहितु त्यागु जाति अभिमाना ❀ ब्राह्मणत्व नहिं जाति समाना ॥
संस्कार ब्राह्मण नहिं कोई ❀ गर्भाधान सबन गृह होई ॥
करत पुंसवन अरु सीमंता ❀ जातकर्म अन्नासन अंता ॥
मष उपवीत अध्ययन वेदा ❀ समावर्त उद्वाह गनेता ॥
जिनके होत कर्म सब भाई ❀ तेज आयु नहिं अधिक लखाई ॥

संस्कार नहिं होत कोउ, तेन होत अल्पायु ।
भोगत दुखसुख सम हुओ, ताते द्विजन उपायु ॥

संस्कार जिनके भये, दुराचरण करि सोइ ।
बसत नरक अतिपातित है, निस्सन्देह कथोइ ॥

संस्कारही नित जग प्रानी ❀ लहत सुकृत फल सुर रजधानी ॥
पुरुष संस्कृत विवश कुकर्मा ❀ वेश्या संग द्यूत खल कर्मा ॥
हीन संस्कृत रत तप दाना ❀ व्यासादिक प्रसिद्ध भगवाना ॥
विप्र श्रेष्ठ जग पूज्य कहाये ❀ संस्कार नहि विप्र बनाये ॥
विप्र वहै जो ब्राह्मणि जायो ❀ यहौ बचन मम मनहि न आयो ॥
कैवर्ती के सुत मुनि व्यासा ❀ वेश्या सुत बशिष्ठ द्विज खासा ॥
मृगीसूनु शृंगीऋषि नामा ❀ शुकमुनि मातु कीर की वामा ॥
नाम पराशर सुत चांडाली ❀ मांडव्य मंडुक की आली ॥

मंडपाल लाबिका सुत, मातु उलूकि कणाद ।
भये सहस्रन भांतियहि, कहँलगुकरिय बिवाद ॥

संस्कार हीनित खल जाती ❀ तप बल पूजित ब्राह्मण पाती ॥
विद्या संस्कार तप जाके ❀ अति उत्तम ब्राह्मण पद ताके ॥
पातक विवश संस्कृत प्रानी ❀ खोवत ब्राह्मणत्व नर मानी ॥
नहिं विप्रता नियत संसारा ❀ संकेतित बुध करत विचारा ॥
कहो मुनिनसनविहँसि विधाता ❀ पूछो तात पाइ श्रुति ज्ञाता ॥
श्रोणित शुक्र रचित यह काया ❀ विष्टा कीट सरिस मुनिराया ॥
सो किमि शुद्ध होइ सुनुभाई ❀ उर अन्तर दुष्टता समाई ॥
वैदिक संस्कार करि जीवा ❀ होत कुकृत वश अघकर सींवा ॥

क्रूर कर्म रत विप्रहा, गुरुदारा रमणीक ।
गोघ्न चोर मद्यप यथा, परतिय रतनास्तीक ॥

माया विवश विप्रता नाशै ❀ दोष निषिद्ध आचरण भाशै ॥

धूर्त सर्व भक्षी शठ पापी ❀ सर्व विक्रयी परसन्तापी ॥
होइ संस्कृत द्विज तन जोई ❀ अरु श्रुति सांगोपांग पढ़ोई ॥
इष्ट अनिष्टहोत द्विज कहँ जिमि ❀ शूद्र अंग व्यापत जगमें तिमि ॥
अग्निहोत्र श्रुति पाठ सुजाना ❀ मषशाला पशु बधन प्रमाना ॥
नहिं विप्रता हेतु मुनि भूषा ❀ मरण वियोग सबहि समरूपा ॥

धन तृष्णा कफ बात पित, लोभ सबहि सम होत ।
अदयपिशुन खलदंभयुत, कपटी लोभी गोत ॥

हिंसकादि पढ़ि श्रुति धन काजा ❀ जेहितेहिठगतत्यागिजगलाजा ॥
बेंचि वेद निज स्वारथ करई ❀ अधम शूद्र सम नहिं उद्धरई ॥
यहि हित बृथाजाति अभिमाना ❀ निंदनीय मुनिराज बखाना ॥
द्विज सकाय शूद्रिणि रतकारी ❀ गर्भ स्थापत देखु बिचारी ॥
शूद्र ब्राह्मणी करत प्रसंगा ❀ उपजत पुत्र तासुके अंगा ॥
जाति भेद मुनि रहो न काऊ ❀ ब्राह्मणत्व कर द्वितिय प्रभाऊ ॥
गोखरु उष्ट्र बाजि सुंडाला ❀ निजनिज जाति प्रसंगतबाला ॥
होत न आन नारि रत कोई ❀ होइ भूलि रत पुत्र न होई ॥

पशु तिय मानव रत करै, गर्भ न धारै सोय ।
अरुन प्रसन्नित होय चित, निंद्य सब थल होय ॥
मनुज नारि पशु सँग रमै, पावै सुख न प्रसंग ।
गर्भ न धारै सुनहु मुनि, दुख उपजै सब अंग ॥

मनुज नारि नर करै प्रसंगा ❀ लघु बड़वर्ण प्रमोद अभंगा ॥
उपजै अन्त शुभग संताना ❀ याते कल्पित जाति प्रमाना ॥
जाति नियम व्यवहारिक राजा ❀ वास्तव में असत्य केहि काजा ॥
ग्राह्य अग्राह्य तत्त्व पहिंचानै ❀ तजै कुपथ अन्याय न मानै ॥

रहै जितेन्द्रिय है सतिबादी ❀ सद्वृत सदाचार नियमादी ॥
करै समोदित परहित कारी ❀ वेद शास्त्र वेदांग विचारी ॥
समाधिस्थ मत्सर मद हीना ❀ शोक क्रोध वश होइ न दीना ॥
वेद पठन पाठन आशक्ता ❀ बसै पवित्र स्थान विरक्ता ॥

संग त्यागि एकांत बसि, दुख सुख गनै समान।
धर्म निष्ठ पापहि डरै, निरहंकार अमान ॥

ब्रह्मवेत्ता शांति स्वभावा ❀ तपस्वी निर्मम जो श्रुति गावा ॥
ब्राह्मण ताहि जानिये ताता ❀ जग हित हेतु जन्म प्रभुदाता ॥
ब्रह्मभक्त ब्राह्मण मुनि गायो ❀ क्षत रक्षक क्षत्रिय पदपायो ॥
वार्त्ता सेवक वैश्य कहायो ❀ श्रुति द्रुतकारण शूद्र गनायो ॥
सम दम सत्य क्षमा धृति दाना ❀ शौच दया मृदुता अरु ज्ञाना ॥
ऋजुता तप संतोष विचारा ❀ निरहंध्यान धर्म साचारा ॥
ब्रह्मचर्य अरु क्रोध बिहीना ❀ अरु अस्तेय अशठ अमलीना ॥
अनसूयता संतोष बिरागा ❀ अमात्सर्य्य अद्वैष सुवागा ॥

आस्तीक्य गुरु शुश्रुषा, अपै शून्य गत पाप।
जामें ये गुण प्रथम तेहि, ब्राह्मण वद गत ताप ॥

जग रक्षक बलवान निहारी ❀ क्षत्रीनाम धरो जग कारी ॥
जो धन वृत्ति उपार्जक पाये ❀ वैश्य वर्ण ते जगत कहाये ॥
चिंतित अबल पाइ निस्तेजा ❀ पर सेवा रत शूद्र गनेजा ॥
कल्पित वर्ण भये इमि राजा ❀ निजस्वभाव अनुसार समाजा ॥
आर्जव शौच शान्ति तप ज्ञाना ❀ शम दम आस्तिक्य विज्ञाना ॥
ये द्विजके स्वाभाविक कर्मा ❀ सुनु स्वभाव क्षत्रिय वर शर्मा ॥
सौर्य्य तेज धृति दाक्ष्य सधीरा ❀ समर ज्ञेय क्षत्री वर बीरा ॥
दाता ईश्वरत्व इत्यादी ❀ स्वाभाविक गुण क्षत्रिय आदी ॥

शिखा तपोबल सूत्र पुनि, ज्ञान रूप जेहि अंग ।
ब्राह्मण ताहि स्वयंभु मनू, भणत स्वकाव्य प्रसंग ॥
उपजै कौनहु वर्ण अस, ब्राह्मण प- तेहिं दीन ।
पाप कर्म परि हरि करै, शुभ आचरण प्रवीण ॥

शूद्र सशीलित द्विजपद लायक ❀ निराचार द्विज खलकर पायक ॥
निज गृह मद्य न शूद्र बनावै ❀ बेचै हाट न सुकुल कहावै ॥
प्रथम मनुज सब एकहि जाती ❀ भये कर्म बश जाति बिजाती ॥
नारी पुरुष भेद पुनि भयऊ ❀ बालक तरुण वृद्ध गनि लयऊ ॥
जाति भेद करि तर्क बखाने ❀ संकेतित जग वर्ण प्रमाने ॥
यथा दैव पौरुष मिलिजाई ❀ सिद्धि कार्य होवत समुदाई ॥
तिमि सत्कर्म जाति संयोगा ❀ पूरण सिद्धि लहत सब लोगा ॥
जाति धर्म इमि कथो विधाता ❀ तुम नरेश सब विधिवर ज्ञाता ॥

कार्त्तिकेय के जन्म पर, तर्क न कीजिय भूप ।
देव चरित दुर्ज्ञेय जग, गुणिय वेद अनुरूप ॥

उत्तम षष्टि भाद्रपद मासा ❀ षटमुखप्रियतिथि तजिविषवासा॥
दान न्हान कर्मणि जो करई ❀ अक्षय सर्व काल चित धरई ॥
अंत निवास रुद्र पुर पावै ❀ उपल काष्ट अरु ईंट मँगावै ॥
श्रद्धा सहित निकेत कुमारा ❀ बनवावैं जो नर सविचारा ॥
अंत चढ़ै गांगेय विमाना ❀ जाइ लोक षटमुखहि सुजाना ॥
जो मंदिर पर धुजा चढ़ावै ❀ अथवा मार्जन धाम करावै ॥

सो पावै शिव लोक नर, भूपति संशय हीन ।
चंदन अगर कपूर युत, पूजै सुमन प्रवीन

सो नर होइ अश्व करि स्वामी ❀ कृपा करैं पन्नग अरिगामी ॥

भूपहि उचित षड़ानन पूजै ❀ सदा अकंटक भूमिहि भूजै ॥
पूजि स्वामि कार्तिक रण जाई ❀ विजय विशेषि लहै नर राई ॥
तुमहि उचित नृप षटमुख सेवा ❀ सुर सेनापति देवक देवा ॥
तिथि षष्ठी नर तेल न खावै ❀ वासर व्रत पूजन मन लावै ॥
भोजन करै निशा सुख मानी ❀ बसै अंत षटमुख पुर प्रानी ॥

तीनि बार दर्शन करै, षटमुख दक्षिण देश।
पूजन करि शिवपुर लहै, नहिं संशय लवलेश ॥

सो० यथा भविष्यपुराण ता, आशय सम पद्य यह।
कीन्ही मुदित बखान, दुर्गाबरणत हर्षिहिय ॥

नवग्रह पूजा समिध विधान ॥
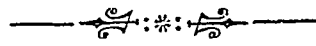
देखो अध्याय १८ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराणमें ॥

त्वंदेवजगतःश्रष्टा त्वष्टाचैवत्वमेवहि।
प्रजापालमहेशान शांतिंकुरुदिवस्पते ॥

जानि दुष्ट थल ग्रहण पुजावै ❀ समिधा हवन सप्रेम करावै ॥
लम्बी समिध एक प्रादेशा ❀ अर्क समिध रवि हेत नरेशा ॥
चन्द्रहवन लगि समिध पलाशा ❀ खदिरसमिध कुज हवन प्रकाशा॥
अपामार्ग समिधा बुध हेता ❀ पिप्पल समिध गुरू फल देता ॥
कवि गूलर शनि शमी बताई ❀ दूर्वा समिध राहु हित गाई ॥
केतु हवन कुश समिध नृपाला ❀ उत्तम धेनु शंख बृष लाला ॥
हाटक वस्त्र श्वेत हय जानौ ❀ कृष्ण धेनु नहिं चित्रित आनौ ॥

१ अँगा ॥

लोह पात्र अरु अजा मँगाई ❀ दान नवग्रह दीजिय राई ॥
गुड़ ओदन घृतखीरि हवि, अन्न खीर दधि भात।
घृत तिल अरु माषान्नपल, पक सहित कुलजात ॥
ओदन चित्रित कांजी साथा ❀ ये भोजन नवग्रह गिरि नाथा ॥
यथा न तनक वचित शर भेदै ❀ शांति किये उपघात न छेदै ॥
पुरुष अहिंसक सनिय न कोई ❀ न्याय सहित धनलावत जोई ॥
रहत जितेन्द्रिय जो नर भूपर ❀ करत अनुग्रह ग्रह तेहि ऊपर ॥
रक्षा हित यश धन सन्ताना ❀ शांति उपद्रव लागि सुजाना ॥
सदा नवग्रह पूजिय भाई ❀ मन बांछित फल लहो नृराई ॥
पुत्र हीन बहु कन्या वारी ❀ मृतबत्सा बंध्या बरनारी ॥
पूजि नवग्रह दोष मिटावै ❀ देव कृपा बालक उपजावै ॥
राज्य भ्रष्ट निज राज्य हित, रोगी रोग बिचारि।
शांति करै ग्रह दान दै, सब दिन रहै सुखारि ॥
ताम्र स्फटिक स्वर्ण वा रूपा ❀ चंदन लोह शीश मय भूपा ॥
प्रथम नवग्रह मूर्त्ति बनावै ❀ अथवा चित्र लेखि मुद छावै ॥
जो जेहि रंग होइ ग्रहराई ❀ तथा पुष्प वलि पुष्प मँगाई ॥
अरपै देवन सहित उछाहा ❀ गुग्गल धूप देइ नर नाहा ॥
आकृष्णे नर जस इत्यादी ❀ पढ़ै मंत्र सुखसहित अविषादी ॥
प्रति ग्रह पूजन करै सयाना ❀ समिधादधि घृत मधुसप्रमाना ॥
आहुति देइ आठ अरु बीसा ❀ भोजन द्विजन कराय महीसा ॥
यथा शक्ति दै दान नृपाला ❀ बिदा करै विप्रन गुण पाला ॥
उदय नाश संपति मनुज, होत नवग्रह द्वार।
यहि कारण ग्रह शांति करि, सुख भोगै संसार ॥
ग्रह अपमान करे दुख होई ❀ मष कारक सतबादी जोई ॥

करै सदा जप तप उपवासा ❁ देत न ताहि नवग्रह त्रासा॥
करि ग्रह शांति चलावै यात्रा ❁ शेष भूमिकरि भ्रमण सुजाना॥
आनि निकेत स्थापित देवा ❁ पूजै सविधि जनावै सेवा॥
प्रतिमा सर्व स्थापित करई ❁ सो नर जन्म जन्म मुद भरई॥
सुनौ अखिल नैवेद्य विधाना ❁ जोजेहि सुरप्रिय करतबखाना॥
खीर यवागू अजहिं पियारी ❁ गुहफल यम मद फल आहारी॥
भोज्य भक्ष्य वा सबहि चढ़ावै ❁ अग्नि हविष्य अन्न सुखछावै॥
उत्तम अन्न विष्णु भगवाना ❁ राक्षस मद्य मांस सुख साना॥
मांस भात रेवन्तहि भावै ❁ प्रेत राज तिल भातहि खावै॥
वर अपूप अश्विनी कुमारा ❁ आठौ वसु पल भात पियारा॥
घृत मधु खीर पितृ सुख मानै ❁ कात्यायनिहि यवागू पानै॥

दधिलछमीसरस्वतिहि प्रिय, जानुत्रिमधुरविभोग।
भात शर्करा इक्षुरस, वरुण देवता योग॥

मरुत तक्र घृत यक्षप खाता ❁ को मातृका दाल पल भाता॥
उहेपिका नाम पक्वान्ना ❁ सर्व भूत हित नृप उत्पन्ना॥
उत्तम मोदक गणपति पावै ❁ नैऋति कहँ शष्कुली चढ़ावै॥
विश्व देव सब भक्ष्य प्रमोदै ❁ ऋषि पय ओदन पाइ विनोदै॥
रवि वाहनी सुरा घृत चहई ❁ विधिघृत रुद्र तिलनिसुख लहई॥
नाग क्षीर पाणहि हरषाई ❁ बहु बलि हर्षत दिनकर राई॥
देवदारु भास्करहि चढ़ावै ❁ इन्द्राह राज वृक्ष भल भावै॥
विष्णुहि सप्त धान्य सुखदाई ❁ वायुहि मत्स्य भात गिरिराई॥

यक्षन अन्न प्रकार बहु, वृक्ष विकंक तमाल।
कर्णिकारयम पुष्पप्रिय, अश्विनि सुत महिपाल॥

रमा कमल चंडिहि श्रीखंडा ❁ सरस्वतिहि नवनीत अखंडा॥

बिनतहि विष अप्सरन चमेली ❀ अग्नि मंथ वरुणहि वदु पेली ॥
अग्नि मंथ फल मूल मँगावै ❀ अर्पि नैऋतहि मोद बढ़ावै ॥
सुखद बिल्व फल यक्ष अधीशा ❀ कंदुक फल प्रिय मरुत महीशा ॥
द्रव्य गंध गंधर्व बिनोदै ❀ बसु कपूर अरपतै प्रमोदै ॥
देवदारु गणपतिहि चढ़ावै ❀ भूत बहेर धूप सुख छावै ॥
पितृ न पिंड मूल यव धेनू ❀ मातृ कान अक्षत सुख देनू ॥
बिघ्नराज कहँ गुग्गुल भावै ❀ ऋषिन पलाश कुसुम बुध गावै ॥

बिश्व देव मोदक चहत, नाग चहत बिष पान ।
पुष्प धूप नैवेद्य सब, चहत सूर्य भगवान ॥

इमि सबको बलि संध्या प्राता ❀ देइ शांति हित नर वर गाता ॥
द्विजन देइ तिल दान सनेहा ❀ अथवा करै हवन तिल गेहा ॥
देवदारु कृत धूप नरेशा ❀ सकल सुरन कह देइ सुदेशा ॥
उपजे तिल कश्यप मुनि देहा ❀ देव पितृ प्रिय कारण एहा ॥
तिल स्नान तिल दानहि करई ❀ भोजन हवन तिलहि संचरई ॥

गर्भवास व यमयातना नरक स्वर्गवास ॥
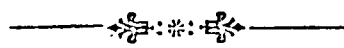
देखो अध्याय ४१ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ॥

पुनि अजात अरि पूंछन लागे ❀ कथिये कृष्ण कृपा रस पागे ॥
कौन कर्म वश श्रीभगवाना ❀ जीव जन्म बहुयोनि बखाना ॥
दारुण संकट गर्भ निवासा ❀ केहिविधिसहत भणियगतत्रासा ॥
गर्भ निवास खात का स्वामी ❀ कौन कर्म होवत धन धामी ॥
पंडितहै तजि बालक जाया ❀ अल्पायुष होवत यदुराया ॥
सुख पूर्वक किमि तजत शरीरा ❀ कर्म शुभाशुभ भोगत बीरा ॥

सुनि नृप प्रश्न कहो बनवारी ❀ प्रश्नोत्तर सुनु दृढ़ व्रत धारी ॥

उत्तम कर्मनि होत सुर, मिश्रित नर अवतार।
अशुभ कर्म वश होत है, तिर्यक योनि दुखार ॥

धर्माधर्म विवेक नरेशा ❀ सुत प्रमाण श्रुतिकर उपदेशा ॥
पापी पापयोनि तनु धारै ❀ पुण्ययोनि धार्मिक अवतारै ॥
शुक्र वायु प्रेरित ऋतुकाला ❀ शोणित साथ मिलत महिपाला ॥
कर्म प्रेरणा वश यह जीवा ❀ योनि प्रविष्टत शुक्र सदीवा ॥
शोणित शुक्र मिलत दिन एका ❀ बनत कलल नृप करिय विवेका ॥
पंचरात्रि महँ कलल नरेशा ❀ बुद् बुद रूप होत बर भेषा ॥
सात रात्रि महँ बुद् बुद सोई ❀ बनत मान्स पेशीवत होई ॥
चौदह दिवस मध्य पलपेशी ❀ रुधिर मान्स होवत दृढ़ भेशी ॥

दिवश पंच विंशति गये, सो अकुरत सुजान।
एकमास गत होत सो पच भाग परमान ॥

चारिमास महँ अंकुर होई ❀ होत अंगुली वेद भणोई ॥
पंचमास गत मुख श्रुति नासा ❀ ताही ते प्रगटत अनयासा ॥
षष्ठममास दंत नख जामत ❀ कर्ण छिद्र प्रगटत श्रुतिके मत ॥
नाभि योनि वा लिंग गुदासा ❀ बनत सर्व नृप सप्तम मासा ॥
होत अंग संकोच पसारा ❀ सुनिय शत्रुजित आन विचारा ॥
अष्टममास होत परिपूरण ❀ अंग समस्त केश अंकूरण ॥
जो कछु खात मातु रस ताकर ❀ नाभिद्वार पहुँचत तेहि जाकर ॥
पोषण भरण होत तेहि केरा ❀ गर्भस्थित महँ जीव घनेरा ॥

बूझन लागत दुःख सुख, मनमहँ करत विचार।
जन्मो केतिक योनि हौं, मृत्यु लही संसार ॥

बहुरि जन्मि बंधन जग परऊं ❀ नहिं दारुण दुख ते उद्धरऊं ॥
मोक्ष उपाय नाहिं दरशाही ❀ गर्भवास अघ नाहिं नशाही ॥
अति चिंतावश गर्भ निवासा ❀ मनो परो गिरि तर अति त्रासा॥
बूड़त सिंधु यथा दुख छावै ❀ तथा गर्भ जल परि घबरावै ॥
तपित अग्नि सूची तन छेदै ❀ तासु अष्टगुण दंड सखेदै ॥
पावत जीव गर्भ बसि भाई ❀ यहि ते अधिक न दंड लखाई ॥

गर्भ वास ते कोटि गुण, क्लेश समय अवतार।
यानि यंत्र पीड़न कठिन, मूर्च्छित होत भुआर ॥

प्रेरित वायु बाहिरहि आवत ❀ जिमि कोल्हू पिष्टिततिलगावत ॥
योनि यंत्र अथवा नृप शूली ❀ पच्यमान होवत सुधि भूली ॥
यहि तन कर मुख अहै दुआरा ❀ दोनौ ओष्ठ कपाट अकारा ॥
इंद्रिय सर्व झरोखा जाली ❀ रद रसना गत बात पिताली ॥
जरा शोक तृष्णा अरु रागा ❀ काम क्रोध द्वैषादि विभागा ॥
ये उपकरण शरीर बखाने ❀ देह अनित्य धाम अनुमाने ॥
तामहँ बसत आतमा भाई ❀ शोणित शुक्र योग तन पाई ॥
विष्ठा मूत्र मिलित नित रहई ❀ असि अपवित्र वेद बुध कहई ॥

विष्ठा घट धोवत नृपति, शुद्ध न परत लखाइ।
तनस्नान आदिकन ते, होत पुनीत न भाइ ॥

रुचिर पदार्थ पंच गव्यानी ❀ होत अशुचि जेहि सगकुथानी ॥
ताते अधिक अशुचि को ताता ❀ उत्तम भोजन पय घृत राता ॥
जेहि संसर्ग होत मल रूपा ❀ ताते आन अशुचि को भूपा ॥
बाहिर धोवत सुरसरि नीरा ❀ पाव न होइ न भूप शरीरा ॥
बहु सुगंधि मर्दत तन भ्राता ❀ वपु मालिन्य न पूत लखाता ॥
एकाश्चर्य्य महीप अतीवा ❀ तन दुर्गंधि सूंघि निज जीवा ॥

निज मल मूत्र न देखि घिनाई ❁ नासादिक मल धाम नृराई ॥
धोवत उपर शरीर हमेशा ❁ बहु सुगंध मर्दत बर भेशा ॥

शुद्धहोत केहि भांति तन, भीतर कफ मल खानि।
होत विरक्त न जीव यह, तनते अस अनुमानि ॥

बहु कुगंध तन लखि न घिनाता ❁ मोह प्रभाव न ग्लानिलखाता ॥
जन्मतही तन लगत बयारी ❁ पूर्ब दंड सब देत बिसारी ॥
होत जगत ब्यवहाराशक्ता ❁ करि दुष्कर्मणि होतअभक्ता ॥
आपहि भूलि ईश बिसरावै ❁ नैन अछत नर अंध कहावै ॥
बुद्धि पाइ नहिं बूझत बाणी ❁ धर्माधर्म भणत नर ज्ञानी ॥
शुद्ध मार्ग पग परत न ताता ❁ महिमामोह कठिन अतिभ्राता ॥
दिव्य चक्षु मुनिवर यह गायो ❁ गर्भ चरित नृप तोहिं सुनायो ॥
सुनि यह कथा न होत बिरागा ❁ उठि कल्याण पंथ नहिं लागा ॥

बाल्यावस्था दुख घनो, कहि न सकत निजबात।
अभिप्राय मनहीं रहत, कीटादिक कृत घात ॥

व्याकुल होत रहत मनमारी ❁ कहुँ रोवत है निपट दुखारी ॥
उभरत दशन अमित दुखपावत ❁ बिपुल रोग आबाल सतावत ॥
क्षुधा तृषा पीड़ित अति रोवत ❁ डारत मुख न शुभाशुभ जोवत ॥
कर्णवेध दुख असह अपारा ❁ विद्यारम्भ कि कारागारा ॥
मात पिता ताड़ना कराला ❁ चञ्चलत्व लखि नृप आबाला ॥
यहि प्रकार बीती लरिकाई ❁ तब लगि आइ गई तरुनाई ॥
उपजी मन ईर्षा अति गाढ़ी ❁ व्यथा मनोभव उर नृप बाढ़ी ॥

ता बश सोवत रैनि नहिं, धन चिंता दिन लागि।
वीर्य गिरावत भोगि तिय, को दुख मन अघपागि ॥

गुप्त स्थल तिय शोणित धामा ❁ सोउ कुगंधमय को सुख तामा ॥

कामव्यथा व्रण पक्क समाना ❀ फूटत कछुक मोद मन आना ॥
विष्ठा मूत्र तजत सुख जैसो ❀ त्यागत काम होत सुख वैसो ॥
क्षणक वितीत कबहुँ रिसतावै ❀ करि विचार यदि ज्ञान दृढ़ावै ॥
अशुचि दोष गृह नारि शरीरा ❀ सुखद न तासु अंग मतिधीरा ॥
वृद्धापन यौवनहि नशायो ❀ कोधौं मोद देह धरि पायो ॥
युवा अवस्था नारि पियारा ❀ वृद्धापन तन कम्प प्रचारा ॥

भयो अंग जर्जर सकल, सब कुटुंबी अलसात ।
दुराचार सुत पौत्र सब, करत अवज्ञा तात ॥

तब दुख हात जीव कहँ जैसो ❀ कथि नहिं सकत कवीश्वर तैसो॥
वृद्ध वहिक्रम होत न कामा ❀ सुकृतकुकृतकोउशिथिलितजामा
यहि कारण सनु पांडु नरेशा ❀ करु हित साधन युवा प्रदेशा ॥
बढ़ि विषमता बात पित केरी ❀ रोग विवर्द्धक व्याधि घनेरी ॥
यहि तन मृत्यु एकसौ एका ❀ तामहँ एक काल सविवेका ॥
शेष आन शत मृत्यु अगन्तुक[1] ❀ टरत तौन मष दास सतंतुक ॥
औषधि होम जाप करि भाई ❀ मृत्यु अकाल विशेषि नशाई ॥

सर्व रोग विष शास्त्र युत, क्रोधादिक महिपाल ।
मृत्यु अगंतुक द्वार सब, बर्णत बुद्धि बिशाल ॥

काल मृत्यु आवत जब भाई ❀ तब धन्वंतरि कीन उपाई ॥
औषधि तंत्र मंत्र जप दाना ❀ रक्षक कोउ न योग विज्ञाना ॥
मृत्यु सरिस दुख अपर न कोई ❀ सुततिय धन बियोग कर सोई ॥
मृत्यु भये बहु वैर नशाहीं ❀ अति प्रियमित्रविविधपछिताहीं॥
नर आयुष शत वर्ष प्रमाना ❀ बहु अंतरही करत पयाना ॥
सत्तर अस्सी साठि बखानी ❀ याहू ते लघु जीवत प्रानी ॥

---

१ अकालमृत्यु ॥

आधी आयु हरत है राती ❋ बाल्य वृद्धता बीसक जाती ॥
यौवन चिंता विविध प्रकारा ❋ अतन विथाहरि भजनबिसारा॥
याते खोउ निरर्थही, बीति गई जग आइ ।
मृत्यु समय आयो निकट, दुख अपारदिखराइ ॥
महाक्लेश उपमा रहित, है माता पितु भ्रात ।
टेरतही तोहि ग्रासियो, कोउ सहाय न तात ॥
जिमि शालूर गहो रिपु बाता ❋ नहिं छूटन उपाय दरशाता ॥
पीड़ित व्याधि खाटपर डारा ❋ पटकत कर पद विथा अपारा ॥
ऊर्ध्वस्वास आगमन निहारी ❋ भूमि सोवायो तुरत उतारी ॥
कबहुँ भूमि ते खाट लिटावै ❋ सो प्रानी कहुँ चैन न पावै ॥
कण्ठ घुरघुरी कफ अधिकारा ❋ मुख सूखो मलमूत्र पसारा ॥
वाणी बंध न कछु कहि आवै ❋ अंतरही चिंताग्नि जरावै ॥
संचित द्रव्य कौन धौं भोगे ❋ हौं करि श्रम कीन्हो संयोगे ॥
को रक्षै मम प्रिय सुत नाती ❋ कार्य्याध्यक्ष न कोउ लखाती ॥
इमि बहु भांतिन यातना, भोगि तजत नरप्रान ।
मरण समयते दुख अधिक, नहिं द्वितिय संज्ञान ॥
त्यागतही तन द्वितिय वपु, पावत कर्माधीन ।
जिमि जीरणपटत्यागिनर, धारण करतनवीन ॥
पुरुष विवेकी जे जग माहीं ❋ तिनहिं याचना सम दुख नाहीं ॥
मंगन सदा यातना ग्रासा ❋ याँचतही नर होवत दासा ॥
बलि महीप ढिग गे भगवाना ❋ याँचक भे वामन जग जाना ॥
फिरि को अपर अहै जग भाई ❋ यांचत जो न लहै लघुताई ॥
आदि मध्य अवसान दुखारी ❋ क्षुधा विवश्य अखिल नर नारी ॥

रोग समस्त परत लखि जाइ ❋ क्षधा समान रोग नहिं कोई ॥
बहुत खाइ तौ होइ दुखारी ❋ लघु भोजन व्याकुलता भारी ॥
क्षुधा व्यवस्था अकथ सुजाना ❋ औषधि अन्न तासु नहिं आना ॥

सुख साधन नहिं अन्नहूं, उठतहि नृपति प्रभात ।
आवश्यकता मूत्र विट, तासु प्रभाव लखात ॥

क्षुधा तृषा पुनि आनि सतावै ❋ भरत उदर कामहि उपजावै ॥
निशा काल निद्रा दुखदाई ❋ दिनमहँ धनहित धावत भाई ॥
जो कदाचि धन भो सम्पादित ❋ तेहिरक्षण हित नित्य विषादित॥
तेहि व्यय कारण अति दुख पावै ❋ याते धन दुखरूप लखावै ॥
तस्कर अग्नि नीर मख राजा ❋ भय धनेश मन काज अकाजा ॥
इमि धनवान पुरुष संसारा ❋ सबथल भक्षण भय उपचारा ॥

धन सम्पादन दुख घनो, पाये मोह अनंत ।
नाश भये संताप बड़, सुखद न धन गुणवंत ॥

शीतकाल महँ शीत सतावै ❋ ग्रीषम दारुण ताप नितावै ॥
वर्षाकाल नीर दुख भारी ❋ कौनहुँ काल न सुख अधिकारी॥
सुख कर हेतु गृहस्थी नाहीं ❋ भूप विचार करिय मनमाहा ॥
प्रथम दुःख कीजिय उद्धारा ❋ विविधि उपायन सों नरनाहा ॥
गर्भवती होवत जब नारी ❋ खोजत यन्त्र मंत्र गुणधारी ॥
प्रसव काल दुख सुकृत मनावै ❋ पति विदेश विरहाग्नि सतावै ॥
सुतके दुखै नेत्र रद काना ❋ मातहि दुख निजमरनसमाना ॥
वृषभ मरो अरु शस्य सुखानी ❋ भृत्य रिसाइ गयो दुखजानी ॥

पाहुन आयो सदन मम, तिया प्रसूती धाम ।
कौनु रसोई खांचिहै, चिंता बस न विराम ॥

यहि प्रकार चिंतमण अपारा ❀ कौनु गृहस्थ धर्म सुख सारा ॥
जिमि अपक्व घट सजल नशाई ❀ तस गेही गुण देह नशाई ॥
विग्रह संधि दुःख नित रहई ❀ बंधु पुत्र भय आनँद दहई ॥
जिमि पल खंड श्वान यक खावै ❀ देखि द्वितीय क्रोध उपजावै ॥
अपभय चहुंदिशि दृष्टि पसारै ❀ छीनि लेन हित करत बिचारै ॥

अस भूपतिको जगत जित, जो अशंक नरनाह ।
ताते दुख कर हेतु भव, नृपता दुखद अथाह ॥
सुनु पांडव नर वपुष धरि, दुखहीदुख सुखनाहिं ।
पुरुष जितेन्द्रिय व्रती नर, जन्मान्तर हरषाहिं ॥
यह शरीर दुख मूलहै, नहिं अचिंत्य सुखदानि ।
दुर्गाभञ्जनहरिचरण, असनिजजिय अनुमानि॥

सूर्यव्रत करि स्वप्न परिच्छा ॥
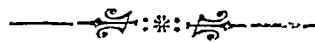
याज्ञवल्क्य विधि कह समुझायो ❀ यथा सांबु प्रति केशव गायो ॥
गायो चहत स्वप्न फल सोई ❀ सर्ब निरंतर मुनि कृत जोई ॥
करि सप्तमी सविधि उपवासा ❀ पूजनादि नैवेद्य हुलासा ॥
कुश शय्या सैनित रवि ध्यावै ❀ स्वप्न विशेषि रैनि दिखरावै ॥
देखै स्वप्न उदय रवि केशा ❀ इंद्रध्वज चन्द्रमा उजेरा ॥
सब समृद्धि पावै जग भाई ❀ वीणा शंख माल दरशाई ॥
श्वेत कमल चामर आदर्शा ❀ पुत्र जन्म अरु रुधिर स्पर्शा ॥
देखि लहै ऐश्वर्य बड़ाई ❀ यामहँ कछु सन्देह न भाई ॥

होइ प्लुत घृत प्रजा पति, दर्शन पावै कोइ ।

दुर्गा बरणत सत्य तेहि, पुत्र लाभ फल होइ ॥

वृक्षारूढ़ स्वप्न महँ होई ❀ निज मुख दुहै धेनु थन जोई ॥
अथवा महिषी सिंहिनि पाई ❀ पय मुख दुहै चित्त हरषाई ॥
ताहि मिलै ऐश्वर्य महाना ❀ स्वप्न प्रभाव विरंचि बखाना ॥
निकरै नाभि धनुष अरु बाना ❀ तेहि करि बधै जीव खलनाना ॥
प्राप्ति संप्रदा ता कह जानौ ❀ कथित स्वप्न फल मनअनुमानौ ॥
पात्र कनक वा रौप्यहि ताता ❀ खावै खीर पंकरुह पाता ॥
सो बल वृद्धि लहै मुनिराई ❀ विजय समर जो देखै भाई ॥
अथवा द्यूत वाद जय पावै ❀ उत्तम स्वप्न मुनीश कहावै ॥

अग्नि भषै जो स्वप्न महँ, वृद्धि होइ जठराग्नि।
अंग जरत नाड़ी छिदै, संपति मिलै सुभागि ॥

शुप्पमाल सित बसन बिलोकै ❀ शुभ खग अन्न स्वप्न के थोकै ॥
लेपै विष्टा स्वप्न शरीरा ❀ बहु शिर भुज देखै वर बीरा ॥
नारि अगम्या सँग रत करई ❀ पढ़ै छंद शुभ कारज सरई ॥
सुर द्विज गुरु तापस बय बूढ़ा ❀ कहै स्वप्न महँ जौन असूढ़ा ॥
जानहु ताहि सत्यही ताता ❀ मृषा न इनकर वाक्य लखाता ॥
सपने शीश कटै वा फूटै ❀ पग बेड़ी नृपता सुख लूटै ॥
रोदन स्वप्न हर्ष दातारा ❀ होइ बाजि गज वृषभ सवारा ॥
मिलै ताहि नृपता पद ताता ❀ लाभद नृप दर्शन जल जाता ॥

उलटै महि पलटै गिरिहि, उडुगण पकरै धाय।
तौ विशेषि नृपता लहै, स्वप्न प्रभाव लखाइ ॥

उदरते निकरि आँत यदि आवै ❀ सपने वृक्ष जाइ लपटावै ॥
करै नदी सागर जल पाना ❀ लंघै गिरि पयोधि सरि नाना ॥
मिलै ताहि ऐश्वर्य बड़ाई ❀ जो शरीर सुन्दरी समाई ॥

आशिष देहि विविधि विधिनारी ❁ वा शरीर कृमि घात दुखारी ॥
स्वप्न ज्ञान स्वप्नेही होई ❁ कहै सुनै नर वार्ता कोई ॥
मोदक वस्तु देखि कर लावै ❁ धन आरोग्य दानि समुझावै ॥
राज्यैश्वर्य दानि जे गाये ❁ करि निर्णय शुभ स्वप्न सुनाये ॥
ते सपना देखै यदि रोगी ❁ रोग नशाइ होइ सुख भोगी ॥

देखि स्वप्न उठि प्रातही, न्हाइ जाइ नृप पास।
द्विज भोजकहि सुनाइ फल, सुनै चतुर अनयास ॥

याज्ञवल्क्य सुनु अपर विचारा ❁ श्रवणत होइ मोद अधिकारा ॥
व्रत दूसर दिन न्हाइ सवारे ❁ करै हवन जप आदिक सारे ॥
भोजक द्विजन देइ भष दाना ❁ अरुण बसन गो शुभग विधाना ॥
निज प्रिय अखिल बस्तु मँगवावै ❁ दै भोजकहि परम सुख पावै ॥
मिलै न भोजक द्विज पौरानी ❁ ताहि देइ सामग्री आनी ॥
पौराणिक न होइ तेहि ठामा ❁ सामिहि देइ बस्तु धन दामा ॥
प्रथम भोजकहि भोज्य जिमावै ❁ तेहि पीछे पौराणिक पावै ॥
श्रुति पाठिन पुनि देइ अहारा ❁ सप्त सप्तमी इमिहि कुमारा ॥

करि व्रत लहै अनंत सुख, दश हय मष फल लेइ।
कोउ न कार्य अस देखियत, जोन सिद्ध फल देइ ॥

कुष्टादिक आमय[1] भय खाई ❁ जिमि द्विजेन्द्रलखिभुजगपलाई ॥
युत तप नियम करै व्रत साता ❁ विद्या पुत्र अनामय दाता ॥
प्राप्ति धर्म धन यह व्रत साधे ❁ अंत अर्क पुर वास अवाधे ॥
श्रोता वक्ता यहि इतिहासा ❁ भषण लीन होइ अनयासा ॥
यह पुराण सुनि सुर मुनि ज्ञानी ❁ ग्रह पति भक्त भये मन बानी ॥
कथो आर्ष आख्यान मुनीशा ❁ रवि निंदकहि न देत कवीशा ॥

१ रोग ॥

रोगी सुनि अरोग पद लहई ❀ रंक रंकता सहजहि दहई ॥
यह पुराण पढ़ि करै पयाना ❀ होइ मार्ग संकट अवसाना ॥

सुनै गर्भिणी सुत जनै, कष्ट रहित महिपाल ।
बंध्या सुख संतान रत, करत दिनेश दयाल ॥

याज्ञवल्क्य यह कथा सोहाई ❀ निजमुख उष्ण रश्मि मुहिं गाई ॥
प्रत्यक्षर सोइ कथा अनूपा ❀ वरणि सुनायों मुनिवर भूपा ॥
जगत जनक खद्योत स्वतंत्रा ❀ पूज्य गुरू सुर असुर सुमंत्रा ॥
करैं कृपा निज सेवक जानी ❀ जन्म मरण दुख मिटै गलानी ॥
जौन नाम सुनि हर्षत पूषण ❀ जिनहिं न कबहुँ विदूष विदूषण॥
ते गावत हौं सुरुचि सुवानी ❀ सुनहु मुनीश्वर आनँद खानी ॥
जिनके जपत नशत अघमूला ❀ होत न हृदय रोग दुख शूला ॥

सूर्यनामानि ॥

नमः सूर्याय नित्याय रवयेऽर्काय भानवे ॥
भास्कराय पतंगाय मार्तंडाय विवस्वते १
आदित्यायादि देवाय नमस्तेरश्मिमालिने ॥
दिवाकराय दीप्ताय अग्नेय मिहिरायच २
प्रभाकराय मित्राय नमस्ते दिति संभवे ॥
नमो गोपतये नित्यं दिशांच पतये नमः ३
नमो धात्रे विधात्रेच अर्यम्णे वरुणायच ॥
पूष्णो भगाय मित्राय पर्जन्यायांशवेनमः ४
नमो हेम द्युते नित्यं धर्माय तपनायच ॥
हराय हरिताश्वाय विश्वस्य पतयेनमः ५

विष्णवे ब्रह्मणे नित्यं त्र्यंबकाय तथानमः ॥
नमस्ते सर्वलोकेश नमस्ते सप्त सप्तये ६
एकस्मैहि नमस्तुभ्य मेकचक्र रथायच ॥
ज्योतिषां पतये नित्यं सर्वप्राण भृते नमः ७
हिताय सर्व भूतानां शिवायार्ति हरायच ॥
नमःपद्म प्रबोधाय नमो द्वादश मूर्त्तये ८
गाधिजाय नमस्तुभ्यं नमस्तरा सुतायच ॥
धिषणायनमोनित्यं नमःकृष्णायनित्यदा ९
भौमजाय नमस्तुभ्यं पावकायच वनमः ॥
नमोस्त्वादिति पुत्रायनमोलक्ष्मायनित्यशः १०

दो०। सृष्टि रचनके समय हम, ये बरने रविनाम ॥
प्रातनिशासुख पढ़ि लहै, ममसमवांछितकाम १
अर्थ धर्म कामादि सुख, विजय राज्य दातार ॥
बंदी मोचन रोगहर, श्रीरवि नाम उदार २
यह रहस्य पापघ्न सुनि, मुनि पायो विश्राम ॥
भजिये दुर्गा नित्यरवि, पावन उत्तम धाम॥३

शुभाशुभ कर्म फल ॥

देखो अध्याय ४२ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ॥

सुनु कौन्तेय कथा मन लाई ❀ अधम कर्म करि नरकहि जाई ॥
उत दारुण यातना सतावै ❀ घोर नरक परि अति दुखपावै ॥

अधम कर्म सम पाप न कोई ❀ चित्त वृत्ति कर जानिय सोई ॥
ताते हौं संक्षेप सुनावौं ❀ दीर्घ पाप तुम कहँ दरशावौं ॥
पर तिय भोग लालसा ताता ❀ परधन हरण चिंतमण गाता ॥
पर अनिष्ट कर करै विचारा ❀ पर अकाज चिंता विकरारा ॥
मानस पाप चारि ये जानौ ❀ वाचिक महापाप श्रुति गानौ ॥

प्रथम असत्य प्रमानिये, द्वितियो अप्रिय तात ।
पर निन्दा तीसर चतुर, बुध पै शून्य लखात ॥
हिंसा[1] भक्ष्य अभक्ष्य[2] पुनि, मिथ्या[3] सेवन काम ।
परधन[4] हरण समेत चहुँ, कायिक पा..क नाम ॥

इन पापन करि नरक निवासा ❀ होत विशेषि भणत हरि दासा ॥
हरि द्वेषी समस्त नर नारी ❀ होहिं अवश्य नरक अधिकारी ॥
द्विज हिंसा अरु मदिरा पाना ❀ जात रूप चोरी गुणवाना ॥
गुरु तिय गमन महा अघचारी ❀ इनका संसर्गी नर नारी ॥
पंचम महापाप मय सोई ❀ इन सब कर थल नरक कथोई ॥
विप्रहिं आशा देवहि जोई ❀ लोभ क्रोध वश द्वेष न कोई ॥
पुनि ता कहँ करि देइ निराशा ❀ द्विज हिंसक सो वेद प्रकाशा ॥
जो विद्या बल द्विज अपमानै ❀ ताहि ब्रह्महा चित्त प्रमानै ॥

करै बड़ाई आपनी, गुण उत्कर्ष दिखाइ ।
गुरु प्रति कूलित ब्रह्महा, यों भाषत मुनिराय ॥

क्षुधा बलित द्विज तृषा सतायो ❀ भोजन भोजत विघ्न जनायो ॥
सोपि पुरुष द्विज हिंसक ताता ❀ अंत अवश्य नरक चलिजाता ॥
धेनु पियासी पीवत नीरा ❀ विघ्न करै द्विजहा सोउ बीरा ॥
मिथ्या आनहि दोष लगावै ❀ क्रोध विवश अघ द्विज बधपावै ॥
हरै वृत्ति गोद्विज सुर जोई ❀ द्विज हिंसक मनुष्य भव सोई

अग्नि होत्र त्यागव नर नाहा ❀ तजब मातुपितु निज सुख लाहा॥
मित्र द्रोह गोपंथ बन, पुर जारै धरि आगि।
सुरापान सम पाप ये, करिय न सोवत जागि॥
तियगज हय सुरभी युत धरणी ❀ रजत रत्न औषध मुनि वरणी॥
चंदन मृगमद अगुर कपूरा ❀ पाट बस्त्र चोरै नर क्रूरा॥
करै न व्याह सुता वर योगा ❀ पुत्र मित्र तिय भगनी भोगा॥
वर्ण द्वितीया खल कुल नारी ❀ करै प्रसंग कुवाम कुमारी॥
ये सब पातक कुरु कुल दीपा ❀ मनौं रम्यौ गुरु वाम समीपा॥
अहंकार अति क्रोध नृप, दंभ कृपणता पाप।
कृतघ्नता आशक्यता, परतिय हरण सताप॥
सत्पुरुषन सँग द्वेष सुजाना ❀ अरु कुमारिका गमन बखाना॥
आश्रमादि पीड़न सुनु भाई ❀ बेचै नारि पुत्र दुख पाई॥
व्रत मष तीरथ फल नर कोई ❀ काटै काल बेचि करि सोई॥
लै धन वाम करै निर्वाहा ❀ छोड़ै तिय स्वतंत्र नरनाहा॥
भोगै मुदित सुरापी नारी ❀ पर ऋण देइ न सो अघकारी॥
निंदित धनहि ग्रहण जो करई ❀ विष दै प्राण काहु के हरई॥
मारण उच्चाटन इत्यादी ❀ बहु अविचार कर्म अनुवादी॥
विद्या दान मूल्य लै देई ❀ अथवा ताहि मूल्य दै लेई॥
सर्व वस्तु भक्षण करै, निन्दै सुर सिखि साधु।
गो द्विज भूपति साधवी, निंदा कारक व्याधु॥
दुःशीलता सनास्तिक धर्मा ❀ धारण उपपातक अपकर्मा॥
रजस्वला अरु पशुकी नारी ❀ नीच स्त्री मैथुन अघकारी॥
मैथुन करै जौन सब काला ❀ तियसुत प्रीति विघ्न प्रतिपाला॥
परतिय दूषक परधन हारी ❀ विप्र चित्त जो करै दुखारी॥

शूद्रहि सेवै विप्रवर करै सुराकर पान।
गोष्ठ नीर रथ्या विटप, छाया करै निदान॥

झूँठ पत्र लेखक सिखि नाशै ❀ साखि असत्य महीप प्रकाशै॥
बेंचै धनुष शस्त्र शय्या जो ❀ वृषभ दमन[1] त्यागै लज्जा जो॥
स्वामी भृत्य गुरू सन द्रोहा ❀ मायावी शठ अकरण कोहा॥
भार्य्यासुत हितु दुर्बल रोगी ❀ भृत्य अतिथि बूढ़ा दुख भोगी॥
बांधवादि लखि क्षुधित दुखारी ❀ देइ न भोजन जो नर नारी॥
स्निग्ध मधुर एकाकी खाई ❀ वृषभ साथ गो जोतहि भाई॥

भूँख प्यास युत पथ थकित, आवै अपने धाम।
यथा शक्ति सत्कार तेहि, करै न जो गुणग्राम॥

बालक वृद्ध बिकल नर दीना ❀ अरु अनाथ रोगी बल हीना॥
देखि न करत दया नर जोई ❀ नरक विशेषि निवासत सोई॥
ब्राह्मण लेत भूप कर दाना ❀ जात नरक ते सुनहु सुजाना॥
परदारा गामी अरु चोरा ❀ जौन पाप भागी मत मोरा॥
तौन पाप पावत भूपाला ❀ जो नहिं करत प्रजा प्रतिपाला॥
सबते अधिक पाप द्विज पावै ❀ भूप पतिग्रह जो कर लावै॥

सुराक्षार दधि मूल फल, काष्ठ इक्षु तृण शाक।
कान्स पात्र जूता शकट, औषध शय्या पाक॥

नरक जाइ हरि वस्तु पराई ❀ सर्षपमाण होइ यदि भाई॥
अस नर जानि दूत यम केरे ❀ बांधि अंत लै चलत घनेरे॥
दंड देत महिषध्वज भारी ❀ बसत नरक पुनि जीव दुखारी॥
गुप्त पाप करि रहत जहाना ❀ तिनहिं दण्ड यम देत महाना॥

---

१ बधिया करना॥

बुद्धिमान को चाहिये, पापहि देखि डराइ।
भूलि करै तौ नाशहित, प्रायश्चित करु भाइ॥
पाप भेद संक्षिप्त बखाने ❀ अपर अनन्त पाप श्रुतिगाने॥
पाप मानसिक कायिक बाची ❀ अमित प्रकारभणत श्रुतिसांची॥
उत्तम कर्म करत जे भाई ❀ भोगत स्वर्ग परम सुखदाई॥
नर शरीर फल यहै नरेशा ❀ करै सुकर्म शुभग उपदेशा॥
सेवहि निज नाथहि बच काया ❀ जेहि निजवश्य जगतजनमाया॥
व्यर्थ न खोइय जन्म नर, मम उपदेश बिचारि।
दुर्गा बरणत ग्रंथ लखि, लीजिय भूल सुधारि॥
सूरज सभा शुभाशुभ कर्मा ❀ चित्र गुप्त याँचत वर धर्मा॥
कर्म तुल्य फल भोगत जीवा ❀ बुध सुकर्म कीजिये सदीवा॥
सुकृत कर्म फल सुनौ नरेशा ❀ वेद विहित हम कृत उपदेशा॥
विप्रहि जूता देइ खड़ाऊँ ❀ भूप तासु फल तुमहिं सुनाऊँ॥
अंत समय विमान आरूढ़ा ❀ जाइ शमनपुर भणत अमूढ़ा॥
विरचै बाग वापिका ताला ❀ कूपादिकनि खनै महिपाला॥
ते विमान चढ़ि जातहैं, शीतल छाया बाट।
मुदित चित्त तनमन वचन, नेक न हृदय उपाट॥
सुर[1] गुरु[2] द्विज[3] पावक[4] पितु[5] माता[6] ❀ सेवत सहित सुश्रुषा ताता॥
अंतकाल ते चढ़त विमाना ❀ दीप दान जो करत सुजाना॥
सो प्रकाश मग करत पयाना ❀ औषध अन्न देत जो दाना॥
ते सुख पूर्वक गमनत भाई ❀ वाहन दान करत हरषाई॥
अन्न दान सम दान न कोई ❀ अन्नहि ते जग जीवन होई॥
वाहन[1] अन्न[2] वस्त्र[3] महि[4] धेनू[5] ❀ शय्या[6] छत्रासन[7] वसु[8] देनू॥
अष्ट वस्तुको दान नृप, सुखदायक परलोक।

दान प्रधान जहान महँ, अन्नदान गत शोक ॥
धार्मिक जात ससुख यम धामा ❀ पापी दुःख सहित गुण ग्रामा ॥
सहस छियासी योजन राहा ❀ चलि पहुँचत यमपुर नर नाहा ॥
धार्मिक कहँ लघु मग दरशाई ❀ पतितहि परत अधिककठिनाई ॥
जेहि पथ पापी करत पयाना ❀ कंटक तीव्र देत दुखनाना ॥
कहुँ कहुँ कंकर दुर्गम रेता ❀ जीवहि महादंड यम देता ॥
कतहुँ पंक कहुँ बेहड़ पंथा ❀ कहुँ असिवत पाथर दुख संथा ॥
कहुँ कहुँ लोह सूचिका डारी ❀ देत दंड यम तितहि निकारी ॥
ज्वलितअग्निकहुँसिंहवृक, अलिअहिमक्षिकजाल ।
तितहि चलावत दूत यम, दै ताड़ना बिशाल ॥
कतहुँ मत्त गज पंथ निकारत ❀ तीव्र शृंग वृष घोर डकारत ॥
कहुँघन विपिनि महिष गणमाहीं ❀ पतितहिं यम पायक लै जाहीं ॥
जिनहिं देखि भय उपजत भारी ❀ व्याकुल होत जीव नर नारी ॥
बसत न तित छाया जल भाई ❀ महा भयानक पंथ नृराई ॥
जीव डराइ चलत नहिं आगे ❀ लोह शृंखलन पीटत भागे ॥
जो सहि मारु न चलत अगारा ❀ बाँधि घसीटत तेहि यमचारा ॥
कहुँ डाकिनी शाकिनी रोगा ❀ राक्षस क्रूररुकीट प्रयोगा ॥
अस दुर्दशा पतित नर केरी ❀ पराधीन नरपति पग बेरी ॥
मित्र बंधु सुत नारि पितु, मातादिक नहिं कोइ ।
जिनहित धायो जन्मभरि, शोचिमरतउतरोइ ॥
क्षुधा तृषा दारुण दुख दाई ❀ शुष्क कंठ नहिं बोलि सकाई ॥
मग भयकार चलत थकि जाई ❀ शमन दूत ताड़त रिसछाई ॥
पगवा शिखा शृंखला बांधी ❀ जात घसीटत ताड़न काँधी ॥
तस्कर सरिस बँधो अति रोवत ❀ महिषध्वज चर घातनि टोवत ॥

काटत कान नाक अरु जीहा ❀ फोरत चक्षु होत दुख दाहा ॥
तीक्ष्ण शस्त्र छोलत तन काहू ❀ रुधिर प्रवाह हृदय दुख दाहू ॥
इमि मग भोगत दंड महाना ❀ शमन सभा पहुँचत अघसाना ॥
धार्मिक सुगम पंथ चलि जाहीं ❀ सौम्यरूप यम ताहि लखाहीं ॥

करि आदर सत्कार यम, कहत सुनो धरमिष्ठ।
चढ़ि विमान गमनो अवशि, लोक देवता इष्ट ॥

करौ बिहार अप्सरन साथा ❀ उत्तम सुख भोगहु बर गाथा ॥
पापिष्ठी जीवन यम सोई ❀ परत कराल भयंकर जोई ॥
ऊर्द्ध केश अरु कूर्च प्रलंबा ❀ नीलांजन गिरि तन अतिलंबा॥
क्रूर रूप अष्टादश बाहू ❀ विविधायुध धारित नर नाहू ॥
फरकत ओष्ठ भृकुटि अति बांकी ❀ रक्त कुसुम माला गलझाकी ॥
यम समीप कालाग्नि समाना ❀ क्रूर कृष्ण रँग मृत्यु सुजाना ॥
महामारि अरु काल कृतांता ❀ काल शक्ति द्वै बिबुध भनंता ॥

विविधि रूप धारण किये, बैठे रोग अपार।
शक्तिशूल अंकुश असनि, लिये विविधिहथियार॥

श्याम भयंकर अति बलवाना ❀ ठाढ़े तहँ सूरज चर नाना ॥
निसित अस्त्र निज करन सम्हारे ❀ देखि परत चहुँ ओर निहारे ॥
इमि पापिन यम देत दिखाई ❀ चित्र गुप्त बैठे ढिग आई ॥
कहत डांटि जीवहि सुनु येरे ❀ किये जन्मि जग कुकृत घनेरे ॥
परधन हरयो लोभ वश जाई ❀ रूप गर्व परवाम भुलाई ॥
यहि प्रकार पातक उपपातक ❀ ते अब आनि बने तव घातक ॥
पावहु गे कुकर्म फल आजू ❀ नहिं रक्षक यमराज समाजू ॥
राजा प्रजा इहां सब एका ❀ चित्र गुप्त करि कहत विवेका ॥

१ दाढ़ी ॥

पाइ राज्य कीन्हे कुकृत, पीड्यो दीन प्रजाहि ।
रहे प्रवृत अन्याय महँ, विषयाशक्त सदाहि ॥

अब कहँ राज्य रानि परिवारा ❀ आइ सहायक होइ तुम्हारा ॥
तुम अकेल आये मम नेरे ❀ कहां पराक्रम बल बहुतेरे ॥
जेहि बल दीन अनाथ सताये ❀ ते बल आजु कहां बिसराये ॥
अस भणि चित्रगुप्त नर नायक ❀ बोलहिं तुरत प्रबल यम पायक ॥
कहो बांधि नरकहि लै जाहू ❀ पावक प्रबल ज्वलित जित दाहू ॥
आज्ञा पाइ चरण गहि लीन्हो ❀ तप्त शिला पट को खल चीन्हो ॥

हनत गदा मस्तकहि कोउ, मूर्च्छि गिरत ततकाल ।
चेततहीं बांधत तुरत, करि नृप दंड बिशाल ॥

डारत तुरत नरक तेहि जाई ❀ महा अधो नहिं बरणि सिराई ॥
नरक कोटि वसु विंश नृपाला ❀ हैं नीचे ते सप्त पताला ॥
छायो जिनहि घोर अँधियारा ❀ पापी जीव निवास भुआरा ॥
ऊँचे विटप तहां बहु भाई ❀ जीवहि बांधि देत लटकाई ॥
अति गरु लोह पगन लटकावैं ❀ जासु बोझ तन कष्ट जनावैं ॥
सुमिरि कुकृत निज रोवत जीवा ❀ भयो विषय हित हौं अघ सीवा ॥
तपत लोह दागत यम दूता ❀ कशा[1] मर्दि बड़ि करत अकूता ॥
क्षतित शरीरहि क्षार लगावत ❀ ज्वलित तेल कहुँ जाइ गिरावत ॥

काढ़ि तासुते ताहि पुनि, डारत विष्ठा कूप ।
काटत कीट अपार तित, महादंड सुनु भूप ॥

रुधिर मेद कुंडनि पुनि डारत ❀ लोह चोंच वायस तन फारत ॥
तीक्षण शूलन कबहुँ पिरोवत ❀ लहि अति दंड जीव बहु रोवत ॥
जेहि जिह्वा अभक्ष्य भष खायो ❀ मिथ्या भाषि जगहि भरमायो ॥

---

१ चाबुक ॥

खैंचि ताहि यम चर बल भारी ❀ क्रोस अर्द्ध लघु लेत निकारी ॥
तापर तीक्षण सीर चलावत ❀ नेकहु दया चित्त नहिं लावत ॥
वचन कठोर कहे पितु मातै ❀ गुरु कह कुवच वदी हरषातै ॥
वज्र जोंक तेहि मुखहि लगावैं ❀ बहुरि जोंक क्षत क्षार भरावैं ॥
औटि तेल डारहिं मुख माहीं ❀ विष्टा मुखहि मेलि मुसकाहीं ॥

परधन हाटक चोर कहँ, कंटक लोह तपाइ।
शाल्मलि वृक्षन बाँधि तेहि, पीटतमुद्गरलाइ ॥

कतहुँक लै अति तीक्षण आरा ❀ चीरि करत यमचर द्वै फारा ॥
ताकर फल तेहि लाइ खवावैं ❀ जब न खाइ तब दंड दिखावैं ॥
अतिथिहि देइ न जल अप भाई ❀ आपु खाइ तेहि सन्मुख आई ॥
ताहि इक्षु सम कोल्हू पेरत ❀ वन असिताल खंड करि गेरत॥
इमि अति क्लेश तजत नहिं प्राना ❀ रौरव नरक देत दुख नाना ॥
डारि महा रौरव कृत दंडा ❀ तप्त लोह दागत पद दंडा ॥
छाती पार्श्व नेत्र भुज नासा ❀ खोंसत मस्तक लोह तपासा ॥
उष्णित रेणु डारि कढ़िलावत ❀ चणक समान भूँजि पुनितावत ॥

जौन रूप की नारि पर, भोग करी तद्रूप।
तप्त लोह तिय विरचि चर, भोग करावत भूप ॥

कुलटा हित तस पुरुष बनाई ❀ भोग करावत यमचर राई ॥
हे दुष्टा तैं परपति भोगा ❀ यहिहित अग्नि पुरुष तव योगा॥
लोह कुंभ मधि पापिन डारी ❀ मूंदि देत तर आगि प्रजारी ॥
कतहुँक धरि ऊखल शिर ताकर ❀ कूटत हनि मूशलन क्षमाधर ॥
अंध कूप कतहुँक लटकावत ❀ क्षारकूप कहुँ डारि सतावत ॥
भ्रमरादिक डंकन तन छेदत ❀ जर्जर होत अंग विष क्लेदत ॥
कतहुँक दोउ पग शीश चढ़ावत ❀ दोउ भुज पृष्ठि बांधि घसिटावत ॥

तीक्षण लोह सिलीमुख साजी ❋ छेदत अंग जानि खल पाजी ॥
अभिमानी क्रोधी नरन, घिसत शिला पर डारि।
जनु चंदन रगरत बिदुष, कोउ न सकत उबारि॥
बहुरि करीष तुषाग्नि प्रचारी ❋ तामहँ दग्ध करत दुख भारी ॥
कतहुँक कीट तीव्र रद लाई ❋ सर्व शरीर देत लपटाई ॥
मंदिर बाग वापिका कूपा ❋ किये नष्ट मठ सुनु कुरुभूपा ॥
तप्तकुंड महँ तिन कहँ डारी ❋ खुले शीश तर आगि प्रजारी ॥
मैथुनादि अघ अपर अपारा ❋ पीड़ित बिबिधि यंत्र के द्वारा ॥
यावच्चंद्र दिनेश प्रकाशा ❋ तावन्नरक अग्नि तन त्रासा ॥
गुरु निन्दा जे सुनत नृपाला ❋ तिनके कर्ण दंड करि शाला ॥
जेहि जेहि इंद्रिय कृत अघ सोई ❋ पावत दंड न संशय कोई ॥
परनारिन जेहि कर छुअत, सूचिन छेदत वाहि।
सम्पूरण तन बेधि कर, देवत क्षार लगाहि॥
देखत स्निग्ध दृष्टि पर नारी ❋ छेदत नैन सूचिका भारी ॥
बिनु पूजन सुर गुरु द्विज आगी ❋ भोजन करत विषय रस पागी ॥
लोह कील तिनके मुख डारत ❋ कहि दुर्बचन बहुत यम मारत ॥
बिनु सुर अर्पित सूँघत फूला ❋ अथवा धरत शीश श्रुति मूलो ॥
लोह शंकु ताड़त तिन नासा ❋ शिरन ठोंकि देवत बड़ि त्रासा ॥
जो निन्दत शिव वा शिव दासन ❋ वा शिव धर्महि नृप खल वासन ॥
तिनके उर गल रसना दंता ❋ लोह शंकु गाड़त बलवंता ॥
तप्त तेल अरु क्षारहि लाई ❋ डारत सकल अंग पर भाई ॥
कतहुँक ताम्र गलाइ कर, छिरकत तन पर भूप।
यहि प्रकार यम यातना, भयकर कथा अनूप॥

१ मस्तक॥

जो पर द्रव्य हरै करि खोरी ❋ शिव उपकरण लेत कोउ चोरी ॥
अथवा करि तस्करी बिचारा ❋ जाइ शिवालय युत उपचारा ॥
लोह घनन मर्दत यम दासू ❋ चूरण करत हस्त पद तासू ॥
क्षार ताम्र तैलाग्नि जरावै ❋ करि बड़ दंड कुवाक्य सुनावै ॥
करत सूत्र विट हर गृह पासा ❋ लिंग वृषण छेदत यमदासा ॥
लोह मुद्गरन चूरण करहीं ❋ तपत दंड गुद भीतर धरही ॥
करत गुदादिक पूरित क्षारा ❋ मन इंद्रिय गण प्रेरण हारा ॥

धनिक करत नहिं दान जो, अरु न आतिथि सत्कार ।
बांधि हस्त पद तासु यम, पीटि भरत मुख क्षार ॥

पग तल ठोंकत लोहित कीला ❋ लटकावत युत भार कुशीला ॥
लोह चोंच पक्षी अरु कीटा ❋ तासु अंग काटत मुख वीटा ॥
तिल प्रमाण पल भोजन देता ❋ वाही के वपु कर कूरु केता ॥
घोर यातना इमि बहु भांती ❋ पाइ नरक भोगत अघ थाती ॥
जो शत वर्ष कथौं नर नाहा ❋ यम यातना केर नहिं थाहा ॥
ऐसहु दुख नहिं त्यागत प्राना ❋ इनते अधिक यातना आना ॥
जो न इहां बरणी क्षिति राई ❋ मृदु चित सुनि मन रहोडराई ॥

जाइ भोगिहैं सर्व उत, पापीजन भ्रम नाहिं ।
सुततियहितुन सहायकर, जिनलगि पापकमाहिं ॥

केवल एकाकी दुख भोगै ❋ प्रलय प्रयंत नरक संयोगै ॥
महापातकी जो नरनायक ❋ बसिंहि नरक यावत् रविभायक॥
याकर अर्द्धकाल समताई ❋ चौदह नरक पातकी जाई ॥
उपपातकी तासु के आधे ❋ रहत नरक बुध वदत अबाधे ॥
जाहि बुद्धि दीन्ही करतारा ❋ करत न पातक यहि संसारा ॥
पाप नरक दायक मनजानी ❋ अपकृत करत न सज्जन प्रानी ॥

बड़ आश्चर्य जानि अस पापा ❀ करत मनुष्य सहत संतापा ॥

होइ कान गति त्यागि तन, शोचत यह न अचेत ।
नरक भोगि पुनि जीव यह, जन्म भूमि तल लेत ॥

थावर तन वृक्षादिक होई ❀ कीट पतंग होत पुनि सोई ॥
पुनि पक्षी पशु तन अवतारै ❀ आन अनंत योनि तन धारै ॥
विविधियोनि भ्रमि सहिदुखनाना ❀ जन्म मनुष्य लहै संज्ञाना ॥
ताहि पाइ नित धर्म बढ़ावै ❀ जो न बढ़ै बुध नाहिं घटावै ॥
जाते नरक न करै निवासा ❀ अरु न कराल सहै यम त्रासा ॥
दुर्लभ नर शरीर संसारा ❀ तामहँ ब्राह्मण पद अधिकारा ॥

सो० करै कर्म इत जोइ, सो भोगत उत जाइ नृप ।
यामहँ भ्रमनहिं कोइ, नृपतियुधिष्ठिरजानिये ॥

स्वस्थ शरीर रहै जब लागी ❀ तावत सुकृत करै भ्रम त्यागी ॥
अंतकाल कोउ कर्म न धर्मा ❀ यह भाषत प्रवीण बुध शर्मा ॥
निघटत आयु नित्य प्रति श्वासा ❀ छीलर जल सम बिनहि प्रयासा ॥
तदपि न निश्चय करत अयाना ❀ एक दिवस अंतकपुर जाना ॥
कोउ न यह जानत जगमाही ❀ काकर मृत्यु कौन दिन आही ॥
वासर एक त्यागि सब काहू ❀ जाब अकेल अकेलि उछाहू ॥
फिरि केहि हेत न सुकृत कमावै ❀ दै सत्पात्र न सुरपुर जावै ॥

जोरि जोरि धन घर भरो, अंत तजत पछितान ।
अंत एक पाथेयं[1] नृप, वेद बखानत दान ॥

---

१ राहका भोजन ॥

जमदर्शी व्रत और दान फल ॥
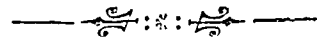
देखो अध्याय ६१ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ॥

दुष्ट प्रकृति तामस विबुध, विप्रहु निंदक रूप।
शीलवंत ज्ञानी सुमति, नीचहु सुखद स्वरूप ॥

अरि अजात वद सुनहु कृपाला ❀ शीतकाल महँ पुरुष दयाला ॥
अग्निष्टिका करै किमिदाना ❀ कथिय दयाकर तासु विधाना ॥
मार्गशीर्ष आरंभ निहारी ❀ शुभ मुहूर्त नृप हृदय विचारी ॥
देवालय मठ गृह तट भाई ❀ अथवा रोचक चौकहि पाई ॥
सन्ध्या प्रात काष्ट मँगवाई ❀ अग्नि प्रचार करै नरराई ॥
दीन अनाथ वस्त्र बिनु जोई ❀ तापै आइ शीत निज खोई ॥
उनमहँ जाहि क्षुधारत पावै ❀ प्रमुदित भोजन ताहि करावै ॥
काहू को न लजाइ दुरावै ❀ सादर सबकहँ अग्नि तपावै ॥

अग्नि दान यहि विधि करै, अंतबसैविधिलोक ॥
षष्टि सहस वर्षानि नृप, सुख भोगै तेहि ओक १
जन्म धरै भूसुर भवन, चतुर्वेद बिद होइ ॥
विरुज धनी तेजस्वी, यज्ञकार वर सोइ २
शिशिर हिमंतहि पाइ जो, देत अँगीठी दान ॥
स्वर्ग जात जग भोगि सुख गावत नर सज्ञान ३

तुम वरने बहु दान विधाना ❀ विविधि प्रकार धेनु महिदाना ॥
महिमा विद्या दान सुनाइय ❀ जो सुनि, परमानंदहि पाइय ॥
उभय वस्त्र पुस्तकै उढ़ाई ❀ रुचिर दक्षिना ताहि धराई ॥

द्विज व्युत्पन्न प्रियंवद जानी ❀ उत्तम वाचक सब गुणखानी ॥
ताहि समर्प प्रेम समेता ❀ अथवा थापै देव निकेता ॥
इच्छापाठ जासु उर होई ❀ देवालय महँ बाचिहि सोई ॥
पुस्तक दान रीति यह गाई ❀ तीरथ यज्ञ पुन्य ते भाई ॥
कोटिगुणित फल होत बिशेषी ❀ कपिला सहस पुन्य सम लेखी ॥

दीन्हे पुस्तक एक इमि, महा पुन्य संसार ।
रामायण भारत दिये, पुन्य असंख्य बिचार ॥

उठि प्रभात गुरु ज्ञान निधाना ❀ जौलु पढ़ावत वेद पुराना ॥
नृत्य गीत वेदांग सुनावत ❀ धन्य मनुज सो भूप कहावत ॥
उपाध्याय कह वेतन देई ❀ सुतन पढ़ावै अति फल लेई ॥
बिद्यार्थिन भोजन बसनानी ❀ पुस्तक देइ पढ़ावत ज्ञानी ॥
ते भव सर्व मनोरथ पावत ❀ बैदिक विप्र मुनीश्वर गावत ॥
बिद्या दान देत सबु दीन्हा ❀ बड़उपकार जगत जनु कीन्हा ॥
कला शास्त्र बिद्या धनुवाना ❀ सीखो चहै जौलु गुणवाना ॥

यथाशक्ति ताकरकरिय, नृपमणि सुरुचिसहाय ।
वाजपेइ मख सहस सम, फल पावै कुरुराय ॥

शिव मंदिर वा भानु निकेता ❀ पुस्तक पढ़वावै चित चेता ॥
गोमंहि वस्त्र कनक शुभ दाना ❀ पावै फल हित वदत पुराना ॥
विद्या हीन पुरुष जग जोई ❀ धर्माधर्म न चीन्हत सोई ॥
यहि कारण करु विद्या दाना ❀ जेहि करिहोय पुरुष गुणवाना ॥
चारिवर्ण अरु आश्रम चारी ❀ विधि सुरादि विद्या अधिकारी ॥
अखिल प्रतिष्ठित विद्या दाना ❀ विद्या दानि मनुज गतमाना ॥
कल्प एक निवसत हरि धामा ❀ जन्मतबहुरि जबहिं गुणग्रामा ॥
होत विरुज दीर्घायुष भोगी ❀ रूपवान सौभाग्य सँयोगी ॥

पुत्र पौत्र युत भूप मणि, धर्मातम गुण खानि॥
भोगिराज्यशतवर्षलहु, त्यागत सकल गलानि १
अधिक न विद्या दान ते, अपरदान संसार॥
गोमहि कंचन अश्व गज, दान सुफल दातार २

नाम प्रियव्रत भो एक राजा ❀ महा प्रतापी धर्म समाजा॥
तीस सहस्र वर्ष नृपताई ❀ कीन्ह महीप नीतिमहि छाई॥
सप्तद्वीप धरनी नर नायक ❀ सात सुतन दीन्ही लखिलायक॥
मन आकर्षि विषय ते राजा ❀ गयउ विपिन तपसाके राजा॥
सुनिनृप गमनविपिन तेहिकाला ❀ आये मुनि तापस श्रुतिपाला॥
पाद्य अर्घ आचमन समेता ❀ पूजो सबहि भूप करिहेता॥
शुक्लासन समस्त बिठलाई ❀ मधुर वचन पूछी कुशलाई॥
तेहिअवसर पुलस्त्य मुनि आये ❀ भानु प्रताप तेज तन छाये॥

नृप समेत सब मुनि उठे, कीन्हो अति सत्कार।
आसन दै पाद्यादि करि, पूजो विविधि प्रकार॥

होन लगी बहु कथा पुरानी ❀ निज२ बुधि समसुनिनबखानी॥
तत्पश्चात जोरि सुख बाहू ❀ पूछो मुनिहि ऋषय वर काहू॥
को व्रतदान नियम संसारा ❀ कथिय नाथ सद्गति दातारा॥
भूप प्रियव्रत मन अभिलाशा ❀ कीजिय मुनिवर वाक्य विलाशा॥
पाप हरन अति उत्तम दाना ❀ सुनौ सकल दै श्रवण सुजाना॥
गो द्विज पितु हंतक नर नारी ❀ गुरु दारागामी अघकारी॥
मृषा साखि आदिक अपकारी ❀ जेहि करि होइ दिव्य तन धारी॥
ब्रह्मलोक इच्छा मन जासू ❀ करै कृच्छ चान्द्रायण आसू॥

काय क्लेश ये कठिन व्रत विधवा हेत बखान।
ब्राह्मणभिक्षुक करहि जग, नहिं गृहस्थधनवान॥

धनी पुरुष धन प्राण समाना ❁ यहिहित धन करि धर्म बखाना ॥
मुख्य देव पावक संताना ❁ पाप हरत हाटक कर दाना ॥
दिव्य देह दायक नृप सोई ❁ तुलादान मुनि राज कथोई ॥
सोविधान मोहिं मुनिन सुनायो ❁ सो कुरुपति चाहत हम गायो ॥
सावधान करु श्रवण नरेशा ❁ करौं सहृढ़ मन हौं उपदेशा ॥
विषुव ग्रहण ग्रह पीड़ा पाई ❁ व्यतीपात दुस्वप्न लखाई ॥
अयन समय कार्तिकी विचारी ❁ माघी पुनिमा पर्व निहारी ॥

तुलादान ॥
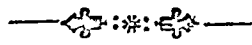
देखो अथोत्तरपर्वस्थ विषयानुक्रमाणिका भविष्यपुराण में अध्याय १७५ ॥

जब धन होवै पास निज, तबै करै यह दान ।
येन केन विधि कीजिये, दान करै कल्याण ॥

धर्म समय यह निज मन लावै ❁ काल केश गहि मोहिं डुलावै ॥
को जानै कब तजौं शरीरा ❁ जो करिलेउँ संग सो बीरा ॥
जब श्रद्धा उपजै उर आई ❁ धर्म दान तत्क्षण करु भाई ॥
श्रद्धाही फल दानि जहाना ❁ सुनु नरेश अब आन बिधाना ॥
निज गृह अजिर कि देवनिकेता ❁ मंडप रचै विधान समेता ॥
षोड़स हस्त तासु लम्बाई ❁ तत्प्रमाण कीजिय चकलाई ॥
सुघर पताका तोरण साजी ❁ करिय अलंकृत नृप मनराजी ॥
तासु मध्य वर्गात्मक हाथा ❁ सात प्रमान वेदिका गाथा ॥

एक हस्त ऊंची विरचि, शुचि चतुरस्र बनाय ।
तासु मध्य थापन करै, विधिवत तुला नृराय ॥

शुल हस्त माहिं देइ गड़ाई ❁ हस्तस्तंभ चारि दिखराई ॥

कौनहु काष्ठ वृक्ष वसु होई ❀ रुचिरस्तंभ कीजिये सोई ॥
चंदन खदिर बिल्व वा शाका ❀ तिंदुक दवदारु वर वाका ॥
काष्ठ इंगुंदी कै श्री पर्णा ❀ वरस्तंभ हित भूपति वर्णा ॥
याज्ञिक पादप काष्ठ मँगाई ❀ सदृढ़ स्तंभ महीप बनाई ॥
वाही काष्ठ केर श्रुति हाथा ❀ तिर्यक् काष्ठ रचै कुरु नाथा ॥
तामहँ लोह पाश लगवावै ❀ अंगुल छनवें विशेषि बनावै ॥
तुला पुरुष तेहि मध्य बनाई ❀ रत्न वस्त्र श्री खंड मँगाई ॥

आभूषित कीजिय तुला, पुनि प्रसून अकवास ।
शुभस्तंभ भूषित करै, प्रमुदित मन अनयास ॥

तीनि मेखला योनि समेता ❀ हस्त प्रमान कुंड छबि देता ॥
बनवावै नरेश शुचि चारी ❀ पुनि ईशान कोन सुखकारी ॥
वेदी हस्त प्रमान बनावै ❀ तापर ग्रह दिगपाल पुजावै ॥
गंध पुष्प अक्षत फलवासा ❀ पूजे शिवहि त्यागि मनत्रासा ॥
क्षीर वृक्ष तोरण रचवावै ❀ पुनि चहुँ द्वारन इमि सजवावै ॥
पुष्पमाल पल्लव रतनानी ❀ शोभित द्वार करै वरवानी ॥
सप्त धान्य पर कुम्भ धरावै ❀ पुनि ऋगादि वैदिकन बुलावै ॥
पूर्वादिक चहुँ दिशि बैठावै ❀ हवनहेत क्रम क्रम मुद छावै ॥

सम्मत है बहु ऋषिन कर, षोड़श ऋत्वक होहिं ।
द्वै द्वै आसन भाजने, ताम्र एक प्रति सोहिं ॥

तिल घृत समिधा विष्टर साथा ❀ कुश श्रुक श्रुवा पुष्प कुरुनाथा ॥
सब सामग्री हवन नृपाला ❀ करि एकत्र बहुरि नरपाला ॥
दिगपति रंग समान पताका ❀ निज २ दिशि बांधिये सुवाका ॥
सबके मध्य महा धुज गारै ❀ पंचरंगमय ताहि सँवारै ॥
यहि प्रकार सामग्री जोरी ❀ भूषण वसन मँगाइ बहोरी ॥

ब्राह्मण अरु बर्द्धका[1] हकारी ❀ कारीगरन देइ रुचिकारी ॥
पुनि यजमान पूर्व दिन न्हावै ❀ उज्ज्वल बसन पहिरि चलिआवै ॥
दिगपालन बलि देइ सनेहा ❀ बाजहिं शंख तूर्य वर गेहा ॥
वेदध्वनि ब्राह्मण करैं, उच्चस्वर हरषाय।
सुनौ मंत्र बलिदान के, हौं बरनौं सुखपाय ॥

मंत्र ॥ एह्येहिसर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतोवज्रधरामरेश ॥
गंधर्वयक्षाप्सरसांगणेनरक्षाध्वरंतो भगवन्नमस्ते १
ओं इन्द्रायनमः ॥

एह्येहिसर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवीरैरभितोभिजुष्ट ॥
तेजोवतांलोकगणेनसार्द्ध ममाध्वरंरक्षकतेनमस्ते २
ओं अग्नयेनमः ॥

एह्येहिवैवस्वतधर्मराज सर्वामरैरर्चित दिव्यमूर्त्ते ॥ शुभा
शुभानांच कृतामधीश शिवायनःपाहिमखंनमस्ते ३
ओं यमायनमः ॥

एह्येहिरक्षोगणनायकत्वं विशालवेताल पिशाचसंघैः ॥
ममाध्वरंपाहि पिशाचनाथ लोकेश्वरस्त्वंभगवन्नमस्ते ४
ओं निऋर्तयेनमः ॥

एह्येहियादोगणवारिधीनां गणेनपर्जन्यसहाप्सरोभिः ॥
विद्याधरेंद्रामरगीयमानपाहिस्त्वमस्मानभगवन्नमस्ते५
ओं वरुणायनमः ॥

एह्येहिवायोममरक्षणाय मृगाधिरूढःसहसिद्धसंघैः ॥

---

1 बढ़ई ॥

प्राणाधिपःकृष्णगतेःसहायो ग्रहाणपूजाभगवन्नमस्ते ६

ओं वायवेनमः॥

एह्येहियक्षाधिपराजराज सुयक्षरक्षोगणपूज्यमान् ॥
धनादिनाथोनरवाहनस्त्वं ग्रहाणपूजांभगवन्नमस्ते ७

ओं कुबेरायनमः॥

एह्येहिगंगाधरभूतनाथ सुरासुरैः पूजितपादपद्म ॥
देवेशदक्षाध्वरनाशकारिन् रक्षाधरंनो भगवन्नमस्ते ८

ओं ईशानायनमः॥

एह्येहिपातालधराहिनाथ नागांगनाकिन्नरगीयमान ॥
रक्षोनरेन्द्रामरलोकनाथ नागेशरक्षाध्वरमस्मदीयम् ९

ओं अनंतायनमः॥

एह्येहिविश्वाधिपतेमुनीन्द्र लोकेनसर्द्धंपितृ देवताभिः॥
विभोभवत्वंसततंशिवायपितामहत्वांसततंनतोऽस्मि १०

ओं ब्रह्मणेनमः॥

त्रैलोक्येयानि भूतानि स्थावराणिचराणिच ॥
ब्रह्मविष्णुशिवैःसार्द्धं रक्षांकुर्वंतुतानिमे ११
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥
ऋषयोमुनयोगावो देवमातरएवच १२
सर्वेममाध्वरेरक्षां प्रकुर्वंतुमुदान्विताः॥

पढ़िये मंत्र देव दिगपाला ❀ पूजिय दै बलिदान नृपाला ॥
कुंडल कटक कंठ आभूषण ❀ अंगुलियक वर वसन अदूषण ॥

निप्रन दीजिय करि सन्माना ❀ पुनि तिनके करिद्विगुन प्रमाना ॥
गुरुपद पूजिय भक्ति दृढ़ाई ❀ दै भूषण शुठि बसन नुराई ॥
द्विजाधार करि आज्य बिभागा ❀ पढ़ि प्रणवादि मंत्र बड़ भागा ॥
अरु स्वाहांत शुभग मंत्रानी ❀ करै हवन द्विज वर विज्ञानी ॥
देवस्थापित ग्रह दिगपाला ❀ ब्रह्म बनस्पति हर सुरकाला ॥
लै लै नाम सबन कर भाई ❀ हवन करैं ब्राह्मण समुदाई ॥

वैदिक शब्द अनेक पुनि, होइँ होम के अन्त ॥
शुक्ल वस्त्र तनधारि तव, चलि आवै यजवन्त १
तुला प्रदाछिना तीनिकरि, पुष्पांजलि लै सोइ ॥
प्रथम मंत्र ये पाठ करि, देवै सब भ्रमखोइ २

मंत्र ॥ नमस्तेसर्वदेवानां शक्तिस्त्वंशक्तिमास्थिता ॥
साक्षीभूताजगद्धात्री निर्मिताविश्वयोनिना १
एकतःसर्वसत्यानि तथानृतशतानिच ॥
धर्माधर्मकृतांमध्ये स्थापितासिजगद्धिते २
त्वंतुलेसर्वभूतानां प्रमाणमिहकीर्त्तिता ॥
मांतोलयन्तींसंसारा दुद्धरस्वनमोस्तुते ३
योसौतत्वाधिपोदेव. पुरुषः पंचविंशकः ॥
सएषोधिष्ठतोदेवो त्वयितस्मान्नमोनमः ४
नमोनमस्तेगोबिन्द तुलापुरुषसंज्ञक ॥
त्वंहरेतारयस्वास्मानस्मात्संसारकर्दमात् ५

दो० ॥ पुन्यकाल परमातमै, करै प्रणाम सुखेन ॥
भूषितकरिभूषणवसन,सायुध रहितकदेन १

चढ़ै तुला दूसरतरफ, अन्नादिक दाम स्वर्ण॥
यहि विधि लादे भूमिते, उठि न सकै वर वर्ण२
क्षणकमात्र बैठै तुला, मंत्र पढ़ै ये भूप॥
उतरि तुलाते दान के, करै द्विभाग अनूप ३
मंत्र॥ नमस्ते सर्वभूतानां साक्षीभूतसनातनि॥
पितामहेनदेवित्वं निर्मितापरमेष्ठिना १
त्वयाधृतंजगत्सर्वं सहस्थावरजंगमम्॥
सर्वभूतात्मभूतस्थे नमस्तेविश्वधारिणि २

अरपै गुरुहि प्रथम यक भागा ❀ सुरुचि समोद भक्तिरस पागा॥
पुनि ऋत्वजन देइ तेहि आधा ❀ शेष भाग तेहि बुद्धि अगाधा॥
दीन अनाथ मनुज द्विजराई ❀ देइ सबहि मन मोद बढ़ाई॥
तुला द्रव्य निज धाम न राखै ❀ नत बहु शोक व्याधि मुनिभाखै॥
यहि विधि तुला रजत कर्पूरा ❀ करै प्रसन्नित भूप प्रसूरा॥
जो सौभाग्य चहै कुल वामा ❀ केसर तुला चढ़ै सुखधामा॥
अथवा लवण तुला गुड़ देई ❀ नृप सौभाग्य मनो गति लेई॥
तुलादान इमि करि नर नारी ❀ अंत बिमान चढ़ै सुखकारी॥

युक्त अप्सरा पुष्पफल, भूषित आसन सेज।
घंट पताका सहित नृप, षटऋतु सुखद सतेज॥

मुक्ता झालरि चहुँदिशि जामें ❀ महा मनोहर चढ़ि नर वामें॥
जाइ भानुपुर करै निवासा ❀ कल्प एक सुख भोग बिलासा॥
तहां ते विष्णुलोक चलिजाई ❀ विश्वदेव पुर महँ सुखपाई॥
इन्द्रलोक पुनि करै बिहारा ❀ धर्मराज पुर लहि सुख सारा॥
बरुण कुबेर लोक सुख पावै ❀ संख्या कल्प कौनु कबि गावै॥

जन्मै बहुरि आइ भुव लोका ❀ धरमातम दानी गत शोका ॥
होइ भूप अरि करै निपाता ❀ तुलादान फल इमि विख्याता ॥
सुनै सभक्ति पाप तिहुँ नाशै ❀ जाइ देवपुर अंत विलाशै ॥

विधिहरिहरसमसुरन कोउ, हयमखसममखनाहिं ॥
सुरसरिसमतीरथअपर, नाहिंन कोउ जग माहिं १
तुलादान सम दान नहिं, मोदक फल दातार ॥
दुर्गा वरणत मुदित मन, लखि पूरण सुखसार २

सदाचार विचार निरूपन ॥
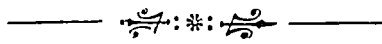
देखो १९५ अध्याय अथोत्तरपर्वस्थविषयानुक्रमणिका भविष्यपुराण में ॥

जो विरंचि सोई भगवाना ❀ जो हरि सो महेश बलवाना ॥
जो शंकर सोई रवि ताता ❀ मार्तंड स्वै अग्नि विभाता ॥
पावक जौन षडानन सोई ❀ षण्मुख गणपति भेद न कोई ॥
उमा जौन सोइ रमा कहावै ❀ सावित्रीन द्वितीय गनावै ॥

सर्व शक्ति तीनों भुवन, एक भेद नहिं लेश ।
पूजिय जाकहँ भेद तजि, सो सब हरत कलेश ॥

काहू सुर कर आश्रय धारी ❀ अरचै भेद बुद्धि करि न्यारी ॥
है शिव भक्ति मयी संसारा ❀ पै भाषत यह विविधि प्रकारा ॥
परमारथ वादी विज्ञानी ❀ मानत ते न भेद चहुँखानी ॥
मन भावित आश्रय लेई ❀ धरै नियम व्रत सब सुख देई ॥
जो नर जग आचार विहीना ❀ ताहि पवित्र न श्रुति करि दीना ॥

श्वान चर्म परिशुद्ध जिमि, वापरि नीरमलीन ।

अथवा सुरसरि उदकपरि, मदिरा करत अपीन ॥
होत अपावन जौन प्रकारा ❀ तिमि आगम बिनु धर्माचारा ॥
करि भल यत्न रक्षु आचरणा ❀ बिनु आचरन धर्म नहिं वरणा ॥
जो आचार हीन नर राई ❀ सो कुल धर्म हीन ह्वै जाई ॥
जो साचार नीच कुलवारा ❀ वह सुकुलन ते अधिक भुआरा ॥
कुलनहिं नाम सुकुल करताता ❀ है आचार सुकुल विख्याता ॥
निराचार दुहुँपुर सुख हीना ❀ यह सुनि पूँछसि भूप प्रवीना ॥
सदाचार साधन करिय, सुनि उपजै सुख अंग ।
सर्व धर्म सग साधिये, सदाचार विधि संग ॥
तन मन वचन सथिर दै काना ❀ सुनु नरेंद्र आचार विधाना ॥
सब धर्मन महँ प्रथम नरेशा ❀ है आचार वदत उपदेशा ॥
जाके तन आचार लखाई ❀ सो सत्पुरुष धरातल भाई ॥
सकला लक्षण नर तन ताता ❀ लखिआचारहिअखिलबिलाता ॥
धर्मनिष्ठ परनिंदा त्यागी ❀ नृप सत्कर्म होत अनुरागी ॥
करि आचमन करै असनाना ❀ बन्दै संध्या प्रात सुजाना ॥
सायं संध्या यहि विधि साधै ❀ इष्टित मंत्र देव आराधै ॥
संध्या प्रात न रविहि विलोकै ❀ दीर्घायुष पावै गतशोकै ॥
दिनमहँ उत्तर मुख सुनु सीखा ❀ त्यागन कीजिय सूत्रपुरीखा ॥
निशिमहँ दक्षिणमुख चहिय,जोनमिलैअसठौर ।
तौमनभावित त्यागिये, प्रथम कीजिये गौर ॥
प्रथम भूमि तृण देइ बिछाई ❀ निज शिर वस्त्र ढाँपि भुवराई ॥
करै पुरीषोत्सर्ग सुनेत्रा ❀ ग्राम आवसथ तीर्थ सुक्षेत्रा ॥
गोष्ठआदि महँ शौचन करई ❀ पुनि यह नियम भूप मन धरई ॥
नीरमध्य की मृतिका आनी ❀ वा आवसथ कि भूष बिलानी ॥

अरु बल्मीक धूरि सन राजा ❀ करै न शौच जानि अपकाजा ॥
शौच शेष मृत्तिका नृप लाई ❀ शौच न करै वदत मुनिराई ॥
देवार्चन भोजन इत्यादी ❀ करु साचमन होइ अविषादी ॥
पुनि पवित्र जल फेन विहीना ❀ गंधर्वन शब्दादिक हीना ॥

पूरब वा उत्तर मुखहि, अचवै भूप सुजान ।
बरणत दुर्गा मुदित मन, भाषत आन विधान ॥

नर विद्वान जौन संसारा ❀ धनहित यत्न करै श्रुतिद्वारा ॥
अरु त्रिवर्ग[1] साधन चितरावै ❀ जेहि करिदुहुँकरसुख नरपावै ॥
पावै यथा द्रव्य गुण भारी ❀ चतुर्थांश तेहि धरै निकारी ॥
कार्य पारलौकिकहि लगावै ❀ संचय चतुर्थांश बुध गावै ॥
अर्द्ध नित्य नैमित्तिक माहीं ❀ नृपव्यय करै सुबुद्धि सराहीं ॥
यहि प्रकार जो चलत नरेशा ❀ सिद्धि होत धर्मादि सुदेशा ॥
केश प्रसाधन धावन दन्ता ❀ पूजन सुरदर्शन बुधिवन्ता ॥
पूर्वाह्ने कीजिये नृपाला ❀ नहिं मध्याह्न न संध्या काला ॥

पावक सेवन दूरिते, गृहते दूरि मुआर ।
मूत्र पुरीषहि त्यागिये, भाषत बिबुध विचार ॥

मर्दन लोष्टे[2] दंत नख काटन ❀ नित उच्छिष्ट रहै चढ़ि खाटन ॥
संकर कारक सुनु नरराई ❀ बहु आयुष भोगत नहि भाई ॥
नग्न परस्त्री लखिय न ताता ❀ निज विष्टा न देखु सुनुबाता ॥
रजस्वला संभाषण त्यागै ❀ दरश परश ढिग भूलि न लागै ॥
जल मधि विष्टा मूत्र न करई ❀ मैथुन नीर मध्य परिहरई ॥
केश भस्म अरु तुष अंगारा ❀ अस्थि धूरि विष्टादि मुआरा ॥
भूलि न इन पर आसन मारै ❀ जा कहँ वृद्धायुष मन धारै ॥

१ अर्थ, धर्म, काम २ ढेला ॥

अभिवादन करि आसन देई ❀ हाथ जोरि सन्मुख उठि लेई ॥

जब उठिके गृह को चलै, तब होवै अनुगामि।
कछुक दूरि पहुँचाइ नृप, पुनि पुनि करैनमामि॥

फूटे पात्र न भोजन खाई ❀ कान्स विशेषि फूट तजु राई ॥
केश खोलि नहिं करै अहारा ❀ नग्न स्नान न उचित सुआरा ॥
निंदित शयन नग्न उच्छिष्टा ❀ यह गावत मुनीश वरसिष्ठा ॥
कर उच्छिष्ट न परसै शीशा ❀ सब प्रण रूप तदाशय दीशा ॥
करै न काहू शीश प्रहारा ❀ शिक्षक होइ न तासु विचारा ॥
दुहुँकर नाहिं शीश खजुआवै ❀ शिर ते नहिं बिनु हेतु नहावै ॥
ग्रहण बिना नहिं रैनि नहाई ❀ अरु न न्हाइ भोजन करि भाई ॥
गहिरे सलिल न करै नहाना ❀ मर्दन तैल न करि असनाना ॥

नहिं भक्षै तिल पृष्ट नृप, आयुष क्षय अनुमानि।
गुरु दुष्कृत न बखानिये, धर्म साधना ठानि॥

पर निन्दा न करै नहिं सुनई ❀ वस्त्र नवीन अंग सुख गुनई ॥
राखै चिक्कन निर्मल केशा ❀ द्रव्य सुगन्धित उत्तम भेशा ॥
उत्तम औषधि श्वेत प्रसूना ❀ धारण करै पाइ भल जूना ॥
हरै न परधन निज बश तूला ❀ त्यागै अप्रिय बचन समूला ॥
है असत्य पै वचन पियारा ❀ कतहुँ कि तासु करियउच्चारा ॥
सदा असत्य त्यागिये बीरा ❀ नहिं खोजिय परछिद्र प्रवीरा ॥
बैर विरुद्ध तजै लखि हानी ❀ जानिय सुबुधि चतुर विज्ञानी ॥
विद्वेषी अरि अरु उन्मत्ता ❀ शंकर पतित क्रोध मय मत्ता ॥

कुलटा व्यभिचारिनि हठी, छुद्रन लायक प्रीति।
करै प्रीति दुखही लहै, अहि पालन सम रीति॥

एकाकी न पन्थ पग धारै ❀ सर अवगाह न चतुर बिसारै ॥
गृह प्रदीप्त नहिं करै प्रवेशा ❀ पर्वत शिखर न चढ़ै नरेशा ॥
पीसै दशन न खोदै नासा ❀ बिनुमुख ढपे न डकरु अत्रासा ॥
हँसै ठठाइ न भरै उसासा ❀ निशि न चतुष्पथ उपबन बासा ॥
तरु छाया परिहरै मशाना ❀ निशाकाल मुनि करत बखाना ॥
करै न संग दुष्ट जन जानी ❀ नतरु अवश्य उठावहि हानी ॥
ग्रीषम वर्षा क्षत्रहि धारै ❀ रैनि गमन बन दंड न डारै ॥
चलै न पंथ बिना पग त्राना ❀ केश अस्थि कंटक जेहि थाना ॥

देखि भस्म तुशवलि सलिल, न्हान गोल महिपाइ ॥
निज पौरुष अनुसार बध, चलिय अवश्य बराइ १
द्विज गो नृप विद्वान तियँ, गर्भिणि बाँहिर अंधं ॥
मूक मत्त उन्मत्त अरु, बोझ धरे निज कन्ध २

आवत पंथ देखिये प्रानी ❀ दीजिय राह साधुता जानी ॥
बसन पुष्पश्रक अरु पग त्राना ❀ पहिरे आनन पहिरु सुजाना ॥
करै न संग भूलि पर बासा ❀ कोउ न आयुहर असतिहुँधामा ॥
निज तिय रक्षिय यत्न विचारी ❀ करै न इरषा कुबुधि निहारी ॥
मूरख व्यसनी मनुज कुरूपा ❀ व्यसनी हीनांगी लखि भूपा ॥
अधिकांगी अरु विद्या हीना ❀ मायावी नर आदि मलीना ॥
इनहि न दान दीजिये राजा ❀ पै जल अन्न देइ तजि लाजा ॥
करै न भोजन आधीराती ❀ ठाढ़ होइ नहिं पढ़ब सोहाती ॥

भूरि हास्य नहिं कीजिये, ऐंचु न आसन पाद ।
ब्राह्मण क्षत्रिय सर्प सन, त्यागिय बैर विषाद ॥

इन तीनौं कहँ सम करि जानत ❀ बिनबदलो लीन्हे नहिं मानत ॥
संध्या प्रात और मध्याना ❀ करिय न भूपति स्वबश पयाना ॥

मनुज अपरिचित मनअनुमानी ❀ उनसँग यात्रा करिय न जानी ॥
परिचितहू आगे नहि चाले ❀ अरुन अरुंतुद बनि अघपाले ॥
क्रूर वचन कर तजै बखाना ❀ नहिनिकृष्ट प्रति करु अध्याना ॥
जो सुनि द्वितिय लहै उद्वेगा ❀ बोलै सो न बचन हित नेगा ॥
धन अपहरणि वानि है सोई ❀ नरक दानि भाषत बुध लोई ॥
जे दुर्वचन वाण आकारा ❀ नहि द्वितीय तन करिय प्रहारा ॥

आयुध क्षत पूरत बिबुध, समय पाय नरनाह।
वचन दुष्ट बीभत्स क्षत, नहिं पूरत उरदाह ॥

नास्तिकत्व निन्दा श्रुति द्वेषा ❀ श्रुति कुत्सन अभिमान कुवेषा ॥
तजि स्तंब क्रूरता विहारै ❀ द्विज निन्दा न कतहुँ अनुसारै ॥
काहुइ नहिं नक्षत्र दिखावै ❀ पक्ष आदि तिथि नाम न गावै ॥
आयु हानिकारक ये दोऊ ❀ आवै छींक यदा सुनु सोऊ ॥
नष्टी वन करि लेइ उवासी ❀ पहिरिवसनअचमन रुचिखासी ॥
जौन प्रान्त नृप शत्रु प्रहारी ❀ धरमातमा प्रजा हितकारी ॥
तौन देश बुध करत निवासा ❀ प्रजा दुष्ट नृप पावत त्रासा ॥
मत्सर रहित जहां के वासी ❀ तत्पर न्याय सुकर्म प्रकासी ॥

करि सम्मति सब परस्पर, जेहिपुर करत बसेर।
तहां बसे सुख होत नृप, यह प्रवीन मत मेर ॥

जहाँ कृषी बल अतिशय भोगी ❀ पूर्ववैर जागत जनु योगी ॥
व्यग्र निरंतर उत्सव लोका ❀ नृपजिगीषु तहँ निवसतशोका ॥
जितन महाजन वैद्य पुरानी ❀ अरुन सजल सरिता मृदुपानी ॥
तहाँ बसे सुख पावकि कोई ❀ बसियन यदपि लाभहू होई ॥
मलिना दर्शन आनन देखै ❀ क्षपादर्पणी वर्जित लेखै ॥

१ किसी के मर्म स्पर्शकारक न होवै ॥

फूट पात्र कूकुर अशुचि, कुक्कुट टूटी खाट।
इनहिं न राखो धाम निज, कंटक तरु अघठाट॥

फूटो पात्र कलह उपजावै ❀ टूटि खाट वाहनै नशावै॥
कुक्कुट श्वान रहै जेहि धामा ❀ पितृ न भोजत तित गुणग्रामा॥
कंटक तरुतर बसत पिशाचा ❀ यह भाषत श्रुति मत बुध साँचा॥
बिनु न्हाये जो भोजन पावै ❀ साक्षात् मलवत नर खावै॥
पंच यज्ञ बिनु भोजन जोई ❀ रुधिर पीबसम जानिय सोई॥
अन्न असंस्कार जो ताता ❀ मूत्र तुल्य सो विदित लखाता॥
बालक बृद्ध रोग आशक्ता ❀ तिय गर्भिणी सुवासिनि भक्ता॥
प्रथमहि भोजन सबहि करावै ❀ तेहि पीछे गृहस्थ भष खावै॥

चितवत भोजन और कोउ, क्षुधित दियेबिनु ताहि।
जेमत केवल पाप भष, सदाचार यह आहि॥

वैश्वदेव आहुति मंत्रः॥

(ब्रह्मणेनमः) (भूतानांपतयेनमः) (गृह्यभ्योनमः)
(कश्यपायनमः) (भूपतयेनमः)

दै आहुति देवै गो ग्रासा ❀ पुनि पूर्वादिक दिशि सहुलासा॥
इन्द्रादिक दिगपति बलि देई ❀ पढ़िये मंत्र परम सुख लेई॥

मंत्र॥ (ब्राह्मणेनमः) (अंतरिक्षायनमः) (सूर्यायनमः)
(विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः) (विश्वभूतेभ्योनमः)

पुनि अपसव्य होइ यजमाना ❀ यमहि देइ बलि कथित विधाना॥
पावक भूपति कारि बहोरी ❀ हंतकार कल्पै गुण धोरी॥
विधिवत विप्रहि देइ अमाना ❀ अतिथि विप्र गुरु आदि सुजाना॥
सब कहँ भोजन दै साचारै ❀ उत्तम गन्धमाल्य तन धारै॥

कर पद आर्द्रित मुखकरि प्राची ❀ अथवा उत्तर मुख मनराची ॥
चित्त प्रसन्नित भोजन करई ❀ पै यह नेम हिये निज धरई ॥
अन्न जुगुप्सित होइ जो, संस्कार ते हीन ।
दुष्ट हस्त ते जूठपर, भषै न जानि प्रवीन ॥
विपुल नरन के मध्य न खाई ❀ नहिं अतिकाल भये कुरुराई ॥
क्रोधाकुल अरु पात्र विहाई ❀ करै न भोजन भूलि नृराई ॥
शुचि आसन थिर चित्त सप्रेमा ❀ पात्रोत्तम धरि खाइ सनेमा ॥
मिष्ट भोज्य भोजै पहलेई ❀ लवन अमिल कटु तिक्त करेई ॥
मृदुभष प्रथमहि खाइ सुआरा ❀ पुनि गरिष्ठ कर करै अहारा ॥
तेहि पीछे कोमल पुनि खाई ❀ भक्ष्य विचार सुनौ कुरुराई ॥
दिन महँ अमिल दरिद्र निवासा ❀ निशिदधि सतुआकरतविनासा॥
कोविदार महँ आठहु यामा ❀ सुनु नृप करत दरिद्र विरामा ॥
भोजन समय न निंदिये, अन्न कौनहूँ होइ ॥
मौनित भक्षिय सथिर चित, पंच कौर करिसोइ १
पूरब उत्तर मुख मुदित, खाइ अचैये जाय ॥
धोइ चरण कर सथिर मन, इष्टदेव पद ध्याय २
मंत्र ॥ प्राणापानसमानानां मुदानव्यानयोस्तथा ॥
अन्नंपुष्टिकरंचास्तु ममास्त्वव्याहतंसुखम् १
अगस्त्यरग्निर्वडवानलश्च सुक्तंमयान्नंजरयंत्वशेषम् ॥
सुखंचतन्मेपरिणामसंभवं गच्छन्त्वरोगंखलुवासुदेव २
पढ़िये मंत्र उदरकर फेरै ❀ सायंकाल अतिथि गृह हेरै ॥
ताहि देइ जल भोजन राजा ❀ उत्तम शय्या शैन समाजा ॥
सुघर तल्प सोवै तव जाई ❀ खटमलादि नहिं जहँ दरशाई ॥

बिछो बिछौना कोमल होई ❀ नहिं ऊंचो नीचो पुनि सोई ॥
प्राची याम्य सिराहन नीको ❀ आन दिशा रुजकारक फीका ॥
विहितकाल अरु चित्त प्रसन्ना ❀ यथा समर्थ हृदय उत्पन्ना ॥
नारि प्रसंग करै कुरुराई ❀ रजस्वला गर्भिणी बराई ॥
क्रोधा रोगिनि अरु अस्नाता ❀ क्षुधित कुरूपा परिहरि ताता ॥

कामरहित पर बाम जो, कीन्हे अधिक अहार ।
करिय प्रसंग न भूलिनृप, करिनिजउरसिविचार ॥

न्हाइ आशु नर भूषण धारी ❀ सानुराग चित मग्न सुखारी ॥
काम विथित नहिं क्षुधित नरेशा ❀ करै प्रसंग बाम वर भेशा ॥
अरु एकांत धाम भल जानी ❀ तिय प्रसंग भाषत मुनिज्ञानी ॥
अष्टमि चौदसि पूरनमासी ❀ आनहु पर्व दिवस उपवासी ॥
करिय न रति तन तैल न लाइय ❀ द्वै प्रसंग ऋतु एक दृढ़ाइय ॥
क्षौर कराय भोगि निज बामा ❀ तैल लगाइ जाइ शव धामा ॥
चाहिय न्हान सचैल महीपा ❀ यह भाषत सम्यक मुनि दीपा ॥
गुरु पतिव्रता तपस्विनि नारी ❀ करिय न निंदा ज्ञान विसारी ॥

अरुनहास्यकीजियकतहुँ, जलसिखिसाथनलाउ ।
सुरगुरु द्विज दिशि जानिबुध, नाहिंचरणफैलाउ ॥

पीवै सलिल न अंजलि द्वारा ❀ आतप सेवन तजिय भुआरा ॥
वायु प्रचंड न गमन सोहायो ❀ पुरुष बंधु सन्मान बतायो ॥
आश्वासन कीजिय भयभीता ❀ सदाचार जो रहै पुनीता ॥
तासु त्रिवर्ग हानि नहिं होई ❀ वृथा मान्स भक्षै जनि कोई ॥
तजि आक्रोश पिशुनता वादा ❀ मान्स कृसर शष्कुली सुखादा ॥
खीरि आदि केवल निज काजा ❀ करै न पाक भनत मुनिराजा ॥
देव पितर हित अवशि बनावै ❀ रक्त माल निज कंठ न लावै ॥

पहिरै स्वेत कुसुमकी माला ❀ कुवलयकमल न दोष विशाला॥

शयनदेव पूजन समय, अरु नृप भोजन काल।
आन आन पहिरिय वसन, ध्याय गुरू गणपाल॥

पिप्पल पनस लकुच फल त्यागै ❀ वट गूलर फल निकट न लागै॥
ये फल पंच खात जो कोई ❀ संतति वृद्धि तासु नहिं होई॥
तजै पतित पुरुषन कर संगा ❀ सुनु क्षितीश अब आन प्रसंगा॥
दीन यती प्रिय वृद्ध विचारी ❀ निज गृह वास देइ श्रम हारी॥
इन चारिहु के वास प्रभावा ❀ सदन वृद्धि होवत श्रुतिगावा॥
पारावत शुकसारिक पालै ❀ चमगादर छच्छुंदर टालै॥
बोक वृषभ चंदन घृत नीरा ❀ वीणा दर्पण मधुवर वीरा॥
पावक सहित वस्तु नव आई ❀ राखु सदैव निकेत नृराई॥

उत्तम वाहन तुरँग गज, रथपर होइ सवार।
उचित भूपकहँ सुमन नृप, पालै प्रजा सप्यार॥

प्रजापाल नृप भूतल जोई ❀ पाप लिप्त नहिं होवत सोई॥
मष आगम गन्धर्व पुराना ❀ शब्द शास्त्र इतिहास सुजाना॥
ज्ञाता होइ सबनि कर प्रानी ❀ पुनि बोले यादवपति ज्ञानी॥
सदाचार लक्षण हौं गायो ❀ संक्षेपित नृप तोहिं सुनायो॥
इच्छा अधिक सिखन की जाही ❀ वृद्धन ते सीखै चितचाही॥
कीर्त्ति आयु ऐश्वर्य सुआरा ❀ वृद्धि लहत आचार दुआरा॥

दो० चतुर पुरुषपरि हरतनहिं, मोदकशुभआचार।
भाषत दुर्गामुनिकथित, नहिंनियोक्तव्यवहार॥

—❀—

मृत्युसमय ईश्वर का ध्यान करना ॥

देखो अध्याय ७४ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ॥

सुनु भगवान दास हितकारी ❀ एक प्रश्न कहुनाथ हमारी ॥
धर्म गृहस्थ लिये नर जोई ❀ त्यागै देह कौन विधि सोई ॥
जब जानै मम मृत्यु समीपा ❀ तब अस करै सुनहु कुरुदीपा ॥
गरुड़ध्वज केशव जनपाला ❀ ध्यावै सुमन त्यागि विषजाला ॥
शुचिस्नान करि युत उपचारा ❀ पूजन करै त्रिपुर भर्त्तारा ॥
पुण्य स्तोत्र पाठ अनुराधै ❀ शक्ति समान दान आराधै ॥
धेनु भूमि पट कंचन धामा ❀ दान करै सानन्द सुठामा ॥
पुत्र कलत्र बंधु धन गेहा ❀ करै न इनकर नेकु सनेहा ॥

मित्र शत्रु सम हिय गुनै, तजै विषय दुर्भाव ।
पढ़ै मन्त्र ये शुद्ध चित, उर छल छिद्र न काव ॥

मत्राणि ॥

परित्यजाम्यहंभोगां स्त्यजामिनिखिलांजनान् ॥
धनादिकंमयोत्सृष्ट मुत्सृष्टंचानुलेपनम् १
सुश्रूषणादिकंचैव दानमानादिकंतथा ॥
होमादय:कृतायेये सदानित्यक्रियामम २
नैमित्तिकास्तथाकाम्या: श्राद्धधर्मामयेप्सिता: ॥
त्यक्तश्चाश्रमिणांधर्मो वर्णधर्मस्तथामया ३
अभ्यांकराभ्यांविहनन् कुर्वन्कर्मसुदु:सहम् ॥

नपापंकस्यचित्कुर्यां प्राणिनःसंतुनिर्भयाः ४
नभसिप्राणिनोयेच येजलेयेचभूतले ॥
क्षितेर्विवरगायेच येचपाषाणसंपुटे ५
येधान्यादिषुवस्त्रेषु शयनश्चासनेषुच ॥
तेतिष्ठंतुसुखंनित्यं दत्तंतेभ्योऽभयंमया ६
नमेसुवांधवःकश्चिद्विष्णु मुक्ताजगद्गुरुम् ॥
मित्रपक्षेचविष्णुर्मेवं चोर्ध्वंचतथादिशि ७
पार्श्वतोमूर्द्धहृदये सायव्यांवाचिचक्षुषि ॥
श्रोत्रादिषुसर्वेषु समेविष्णुःप्रतिष्ठितः ८

दो०॥ दक्षिणाग्र कुशडासिपुनि शिरकरिपूर्वदिसाहि ॥
अथवा उत्तर ओर करि, शयन करै हरषाहि १
करौचिंतमनविष्णुकर, यहिविधि विषयविसारि ॥
यथामन्त्रभाषतविबुध, तनमनवच सुखकारि २

मंत्राणि ॥

विष्णुंकृष्णंहृषीकेशं केशवंमधुसूदनम् ॥
नारायणंनरंसौरिं वासुदेवंजनार्दनम् १
वाराहंयज्ञपुरुषं पुण्डरीकाक्षमच्युतम् ॥
वामनंश्रीधरंकृष्णं सुरेन्द्रमपराजितम् २
पद्मनाभंहरिंश्रीदं दामोदरमधोक्षजम् ॥
सर्वेश्वरेश्वरंशुद्धं प्रद्युम्नमनमीश्वरम् ३
चक्रिणंगदिनंशांतं शंखिनंगरुडध्वजम् ॥

किरीटकौस्तुभधरं प्रणमाम्यहमव्ययम् ४

अहमस्मिजगन्नाथे मयिचास्तुजनार्दन ।

अनयोरन्तरंमास्तु अग्नियुक्ताशमीइवा ५

अयंविष्णुरयंशौरि रयंकृष्णःपुरोमम ।

नीलोत्पलदलश्यामः पद्मपत्रायतेक्षणः ६

एषउष्यतमोविष्णुं पश्याम्यहमधोक्षजम् ७

इति प्रणाममंत्राणि ॥

अर्थसर्वदाजपमंत्रः (ओंनमोभगवतेवासुदेवाय)

दो० जपै निरन्तर मंत्रयह, ध्यावै श्री भगवान ।

शंख चक्र पद्मादि धर, सुख प्रसन्न वरध्यान ॥

पीतांबर केयूर युत, कुण्डल कटक धराहिं ।

उर श्रीवत्स जलोद नव, वपु ध्यावै मनमाहिं ॥

अथवा जौन रूप मनभावै ❀ ताहीकर शुठि ध्यान लगावै ॥
यहि प्रकार जो तजै शरीरा ❀ पाप रहित सो पांडव वीरा ॥
विष्णु लीन होवै भ्रम नाहीं ❀ धरै बहोरि न तन जग माहीं ॥
जो बिधान प्रभु मोहिं सुनायो ❀ सुनि प्रभु परमानंदहि पायो ॥
स्वस्थ चित्त जो रहै जहाना ❀ यहि विधि सो तन तजै सुजाना॥
तरुणारोग्य पुरुष जग कोऊ ❀ मरण काल दृढ़ रहत न सोऊ ॥
चित्त वृत्ति होवत वश मोहा ❀ यह चरित्र निज नैनन जोहा ॥
फिर जे वृद्ध रोग वश प्रानी ❀ तिनकी वृत्ति न जात बखानी ॥

रोग ग्रस्त पुनि वृद्ध तन, कुश आसन पर तात ।

बैठि ध्यान धरि हरि भजै, यह अचरज की बात ॥

आन उपाय वदिय प्रभु कोई ❀ जो अति सुगम सबनकहँ होई ॥
निष्फल मरण न होवै स्वामी ❀ रमा रमण पद कमल नमामी ॥
मुख्य उपाय सुनौ नर नायक ❀ जो विधि चारि मुक्ति पददायक ॥
चित्त वृत्ति रोकै संसारी ❀ भजै सुमन गोविंद बिहारी ॥
सुमिरत हरिहि तजै निज देहा ❀ बसै विष्णु तन गत संदेहा ॥
अंतकाल आशा मन जोई ❀ पावत अवशि जीव यह सोई ॥
यहि कारण परिहरि सब आशा ❀ वासुदेव ध्यावै वर दासा ॥
ध्यान विविधि विधि के संसारा ❀ सुनहु सहित विस्तार अुआरा ॥

राज भोग भोजन वसन, वाहन भूषण नारि ।
सुत वितादि इच्छा रहै, आर्ति ध्यान दुखकारि ॥

दहन हनन ताड़न सम्प्रहारा ❀ दया रहित जे आन विकारा ॥
मन इंद्रिय वश रहै न ताता ❀ रौद्र ध्यान तेहि नाम कहाता ॥
श्रुति सूत्रार्थ महा व्रत चिंता ❀ इंद्रिय उपशम मोक्ष निमिंता ॥
शम दम गंगादिक कर ध्याना ❀ धर्म ध्यान तेहि नाम बखाना ॥
सर्वेन्द्रिय तजि विषय बिहारैं ❀ इष्ट अनीष्ट दुभाव बिसारैं ॥
होइ यथा थित आत्म शरीरा ❀ एक चित्त ध्यावै रघुबीरा ॥
शुक्ल ध्यान यह भूप कहायो ❀ अधिकारी गुणि तोहिं बतायो ॥
आर्ति रौद्र दोउ ध्यान नरेशा ❀ देत असद्गति तुच्छ निवेशा ॥

धर्म ध्यान सुरधाम प्रद, शुक्ल मोक्ष दातार ॥
तातें करिय उपाय अस, होय शुक्ल विस्तार १
जल महँ तन त्यागत मिलै, सुरपुर ध्यान समेत ॥
दिव्य बर्ष मुनि सहस यह, वदत प्रवीन सचेत २

सो०॥ अग्नि तज बपु कोइ, स्वर्ग बर्ष षोड़स सहस ।

गोशाला नर जोइ, साठि सहस वर्षा निबद ॥

दो० ॥ समर सहद्रतन परिहरै, असी सहस्र पुकार ।
मोक्ष लहै अनशयन व्रत, उत्तम यह उपचार ॥

वापी कूपतड़ाग आदि निरमान करना और बेदी बनाना ॥
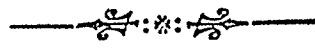
देखो अध्याय १२७ अथोत्तरपर्वस्थविषयानुक्रमणिका भविष्यपुराण में ॥

बहुरि पांडु सुत वद कर जोरी ❋ कृपा पयोधि विनय सुनि मोरी ॥
वापी कूपादिक सतड़ागा ❋ नाम जलाशय विविधि विभागा ॥
किमि उत्सर्ग करिय केहि काला ❋ कथिय रमाधव दीन दयाला ॥
पद्म तड़ाग सहित सो पाना ❋ बनवाइय सुनु भूप सुजाना ॥
अति सुंदर दृढ़ चारौ पारी ❋ चहुँ दिशि पादप शुठि फुलवारी ॥
कार्तिक मास नीर भरि जाई ❋ तब अस करै ऋक्ष थिर पाई ॥
तरु अश्वत्थ उदुंबर लक्षा ❋ बट के दंड लाइ नृप दक्षा ॥
दिग्पालन के रंग पताका ❋ बांधि तिनहिं थापिय वर वाका ॥

सकल दिशिन महँ थापिये, मध्य ध्वजा पचरंग ।
चारि हाथ यजमानके, वेदी रचिय सुढंग ॥

तरु कदम्ब अश्वत्थ पलाशा ❋ औ रवि कंकतकाष्ठ सुभाशा ॥
चारि वर्ण कर यूप नियारा ❋ श्रवण करो आगम अनुसारा ॥
द्विजवट विल्व क्षत्रि खदि राही ❋ वैश्य उदुंबर काष्ठ मराही ॥
महुआ काष्ठ शूद्र अधिकारा ❋ अथवा शाक उदुम्बर वारा ॥

काष्ठ विभीतक शाल्मलि आना ❀ विरचै शूद्र परम हित जानी ॥
प्रतिमा अष्ट दिगीशन केरी ❀ लिखे रंगसों निज हित हेरी ॥
विधि सावित्री हरि निधि जाता ❀ शंभु उमा लिखिये नृप भ्राता ॥
पूजिय सबहि सहित उपचारा ❀ हस्त प्रमाण कुंड चहुँ वारा ॥

तीनि मेखला युक्त करि, उत्तम वस्त्र निधान।
कंचन भूषण पुष्प स्रक, चंदनादि शुभ कारि ॥

अस होता षोड़स वा आठा ❀ ज्ञाता निपुण विप्र श्रुति पाठा ॥
श्रुति वेदांग विदुष इतिहासा ❀ शान्त चित्त आचार्य सुवासा ॥
मृत्तिका ताम्रपात्र हित होमा ❀ तिल साकिल्य अपेक्षित सोमा ॥
करि एकत्र वस्तु समुदाई ❀ ग्रहस्थापिये मष विधि राई ॥
देवस्थापित नामनि राजा ❀ वारुणिमंत्रनि होमहि साजा ॥
इन्द्रादिक दिशि पालनि हेता ❀ निज २ दिशि बलिदेइसचेता ॥
मंडप द्वारनि कलश धरावै ❀ जातरूप पल्लव युत भावै ॥
बंदनवारी पिप्पल पाता ❀ कनक कूर्मविरचै सुनु भ्राता ॥

ताम्र मकर रचि रजत कर, मत्स्य बनावै भूप।
शंग मंडुकी शीश कृत, डुंडुभ विधि अनुरूप ॥

हंसादिक सित खेचर जोई ❀ रजतमयी निर्मानियं सोई ॥
चक्रवाक आदिक जे पीता ❀ हाटक मय बनवाइ पुनीता ॥
रजत जलौका बहुरि बनावै ❀ ताम्रपात्र महँ सर्व धरावै ॥
करै प्रतिष्ठा सब कर भाई ❀ नाम मंत्र करि प्रेम बढ़ाई ॥
मकर पूजन करि रुचि मानी ❀ परिहरि अखिल भावविषयानी ॥
देक मंत्रनि यूप प्रतिष्ठा ❀ कुंकुम चंदनादि धरमिष्ठा ॥
लिप्त करि पुष्प सदीपा ❀ धूपादिक करि पूजि महीपा ॥
ने व्याहृति करि हवन करावै ❀ गीतावाद्य बहु भांति सुनावै ॥

आवाहन करि वरुण कर, पात्र नीर मधिलाय ॥
करै निवेदन वरुण नृप, रत्न अनेक मँगाय १
बीजविविधि छोड़िय जलहि, वरुणदेव हितराय ॥
पुनि दम्पति यजमान गहि, पुच्छधेनुयकलाय २

जल अवगाहन करै सनेमा ❀ बाहिर नीर आययुत प्रेमा ॥
यथा शक्ति दक्षिणा समेता ❀ द्विजहि समप धेनु सहेता ॥
पुनि पूजै आयुध कुद्दाला ❀ कर्मकार सत्कार विशाला ॥
पढ़ि यह मंत्र कछुक जल लाई ❀ डारै नृप तड़ाग महँ जाई ॥
यथा शक्ति पुनि धेनु पुजावै ❀ यह तड़ाग उत्सर्ग कहावै ॥

मंत्र ॥ सामान्यंसर्वभूतभ्यो मयादत्तमिदंजलम् ॥
तेनमेभगवन्नित्यं वरुणःप्रीयतांमुदा १

वापी कूप प्रतिष्ठा रीती ❀ सुनहु नराधिप करि दृढ़ प्रीती ॥
मंडप कुंड वेदिका यूपा ❀ भूषणादि पूरब विधि भूपा ॥
बापी चारि कोण घट चारी ❀ तीरथ जल परिपूरण धारी ॥

भूषित चंदन वसन सित, बहु प्रसून युत राय ।
पूर्व कथित विधिहोम पढ़ि, व्याहृति करै सुभाय ॥

पुनि ग्रह हवन करावै भाई ❀ कथित रीति निजमनहिं दृढ़ाई ॥
पाठ वरुण सूक्तन कर करई ❀ वेदी मध्य बहुरि शुभ धरई ॥
मत्स्य कूर्म मंडूक खगानी ❀ प्रथम भणित विरचै नर ज्ञानी ॥
अधिवासन करि उर मुद छावै ❀ पुनि यह मंत्र पढ़ै शुचि भावै ॥
वरुण विसर्जन करै नरेशा ❀ त्यागिअमितविधिलोकअँदेशा ॥
अर्चा रंभ करै जब ताता ❀ तब यह मंत्र पढ़ै विख्याता ॥

अथ विसर्जनमंत्रः ॥

मित्रमित्रोसिभूतानां शरण्यःशरणार्थिनाम् ॥
वैद्योऽव्याधासिभूतानां शरण्यःशरणार्थिनाम् १

अथ प्रारम्भमंत्रः ॥

नमस्तेविश्वगुप्ताय नमोविष्णोअपांपते ॥
सान्निध्यंकुरुदेवेश समुद्रेयद्धदत्रवै २

दो०॥ बिप्रन देवै दक्षिणा, गो उत्तम द्विज एक ।
सरकूपादिक कार्यमहँ, करि निज चित्त विवेक॥

अनि वारित करु भोजल दाना ❀ कूप तड़ाग प्रतिष्ठा थाना ॥
वित्त शाठ्य के निकट न जावै ❀ बिनु उत्सर्ग अशुचि सर गावै ॥
मंत्र कुशाग्र विना जलराशी ❀ छुअत न पंडित जन बुधिनाशी॥
श्रावणमास शतभिषा पाई ❀ लै अक्षत फल मूल नृराई ॥
प्रथम अर्घ्य अम्बोधिहि देई ❀ तब समुद्र महँ न्हान करेई ॥
सहस जन्म पातक नशि जाई ❀ बदत वेद विद बुध मुनिराई ॥
बिधिवत कर्म करत कर्त्तारा ❀ कारयिता सह स्वर्ग बिहारा ॥

कर्म करै बिधि रहित जो, परत नरक महँ जाइ ।
जो न करत उत्सर्ग सर, ताकर वृथा उपाइ ॥

जो बनवावत कूप तड़ागा ❀ जात स्वर्ग चढ़ि यान सभागा ।
यहि बिधि करि उत्सर्ग नृराई ❀ उत्सव अष्ट दिवस करु भाई ।।
कर्म कार शिल्पी वर काया ❀ सूत्रधार संस्थापि गनाया ॥
जौन जलाशय रचत सुजाना ❀ जात स्वर्ग आरूढ़ बिमाना ॥
खनत जलाशय मरत जो जीवा ❀ प्राप्ति सुगति ते होत सदीवा ॥
धेनु रोम संख्या वर्षानी ❀ स्वर्ग निवास करत वर प्रानी ॥

जौन बनावत बापी कूपा ❀ या महँ कछु चिंतमण न भूपा ॥
अरु तड़ाग निर्मानत जोई ❀ स्वर्ग बसत संख्या युग खोई ॥

तासु पितृ सुरपुर लहत, करत महा आनन्द ।
सुकृती हमरे कुल भयो, काटो दुखको फन्द ॥

विरचै गाड़ छोटहू भाई ❀ एक धेनु जल पान अघाई ॥
सोपि असंख्य पुण्य अधिकारी ❀ देखु धराधिप चित्त विचारी ॥
जगत पदार्थ धाम धन जाया ❀ सुहृद पुत्र नश्वर घन छाया ॥
वांपा सेर सुरै गृह तरु चारी ❀ यहि संसार जीव सुखकारी ॥
यहि कारण सर्बसु तजि भाई ❀ रचिय जलाशय विपुल उपाई ॥
जिमि लखि पुत्र मातु सुधि आवै ❀ कारक सुधि जलपान करावै ॥
न्याय सहित धन जग उपजाई ❀ रची जलाशय निज बशपाई ॥
आतप ज्वलित पन्थ बिकलानो ❀ शीतलजल करि पान अघानो ॥

सर तट पादप छाहँ महँ, बैठत श्रमित शरीर ।
सरकारक के उभय कुल, जात स्वर्ग सुनु बीर ॥

इष्टा पर्त्तकार नर जोई ❀ भवकृत कृत्य कहावत सोई ॥
जन्म सफल ताको संसारा ❀ जो सर कूप वापि कर्तारा ॥
रहत सरादिक जबलगि नामा ❀ करत बिलाश पुरुष शिवधामा ॥
ते जग धन्य सुनो नरनाहा ❀ जिन विरचे सरादि सो छाहा ॥
कुबलय कमल हंस युत जोवत ❀ नारपान करि जनदुख खोवत ॥
घट अंजली मुखादिक द्वारा ❀ पियत नीर सर जीव अपारा ॥
उत्तम सर रचि ता तट भाई ❀ देवालय विशेषि सुखदाई ॥
तासु असंख्य सुकृत अनुमाना ❀ भाषत मुनि जन संत पुराना ॥

देवालय कर ईंट सब, यावत् रहत महीश ॥
कारक निवसत देवपुर, होत पाप सब खीस ।

कूप खनहिं ऐसे थलहि, पियें जीव बहुनीर ॥
जलस्वादिष्टित लेहिंजेहि, तारत मुनि कुलधीर २
जाने कीन्हो कूप जेहि, नीर पियहिं सब लोग ॥
जनु कीन्ही तेहि पुन्य सब, पावै गो सुर भोग ३
जेहि सरवर रचि तासु तट, तरुघन दीन्हलगाइ ॥
सुर मंदिर तामहँ रचो, कीर्त्ति रहत जगछाइ ४
दिव्य भोग कहँ भोगिसो, होत महा महिपाल ॥
जिन निर्माने कूपसर, बोलत वचन रशाल ५
अन्नदान जे करत नित, यम सुनि नाम डरात ॥
धन्य सो दुरगा जगतमहँ, जिन त्यागो उत्पात ६

बाग बगीचा लगाने का फल ॥
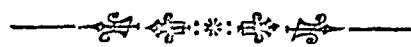
देखो अथोत्तरपर्वस्थ विषयानुक्रमणिका अध्याय १२८ भविष्यपुराण में ॥

वृक्ष लगावन कर फल गावो ❀ पुनि उद्यापन तासु बतावो ॥
सुनि नृप प्रश्न कृष्ण भगवाना ❀ कह तुम पूछेउ नीक विधाना ॥
पंच वृक्ष जो मनुज लगावै ❀ अति उत्तम सो जगत कहावै ॥
दश पुत्रनि ते उत्तम सोई ❀ करि विवेक चष देखहु जोई ॥
धन्य वृक्ष दायक फल पाता ❀ पुष्प मूल वल्कल के दाता ॥
छाया काष्ठ देत सब काहू ❀ पाइ लोक मन होत उछाहू ॥
पुत्र वर्ष महँ एकहि बारा ❀ श्राद्ध करावत सुनहु सुआरा ॥
अर्थी काष्ठ न जात निराशा ❀ नित्य श्राद्धकारक सुजसाशा ॥

वृक्ष फूल फल काष्ठ त्वच, देत रहत नित दान ।
बिटपारोपण सर्व विधि, करत जीव कल्यान ॥

सफला सत्छाया तरु जाही ❀ अरु वाटिका सपुष्पा आही ॥
सो कुलवती योषिता तूला ❀ निज पतिसुखद द्विपुरगतशूला॥
यह वाटिका किवार बधूटी ❀ सबहि देत उप भोग सुबूटी ॥
अस वाटिका लगावत जोई ❀ उत्तम लोक प्राप्ति नृप होई ॥
नित गायत्री जप फल ताही ❀ नित्यदान नित मख समआही ॥
वट पिप्पल अरु निंव गनावै ❀ एक एक तरु सुजन लगावै ॥
कैथा बिल्व आमलक जोई ❀ तीनि तीनि लगवावै सोई ॥

इमिली के दश वृक्ष अरु, पाँच आम्र मधुरार ।
जौन लगावै भूमितल, जाइ न नरक दुवार ॥

जेहि न जलाशय जगत बनायो ❀ अरु न फलित तरु भूमिलगायो॥
नर शरीर फल मिलो न वाको ❀ भ्रमत रहो विषयी रस छाको ॥
आतप सहत आपु निज शीशा ❀ आनहिं छाह देत धरणीशा ॥
फल पुष्पादि देत सब काहू ❀ बिनु स्वारथ मन परम उछाहू ॥
श्री गिरिजा गिरि मन्दर जाई ❀ हारक शोक अशोक मँगाई ॥

पुत्र कल्पना चित्त करि, दीन्हो तहां लगाय ।
जातकर्म आदिक किये, अमित प्रमोदहि पाय॥

कीर्त्ति विवर्द्धन नाशक पापा ❀ वृक्षोद्यापन सुनहु अपापा ॥
कंटकीय तरु कूबर काया ❀ कोटरयुक्त कीट लपटाया ॥
आरोपित उत्तम तरु पाई ❀ आल बाल चहुँओर बनाई ॥
शुठि चौतरा चहूँदिशि बांधी ❀ शुभ मुहूर्त्त ज्योतिष मत कांधी ॥
वासर प्रथम वृक्ष तट जाई ❀ विविधि पताका देइ बँधाई ॥

अरुण बसन वासित करि ताही ❀ रक्तसूत्र बेष्टित दरशाही ॥
अधिवासन ताको करै, चहुँदिशि कलश धराइ।
आच्छादित सित बसनकरि, शरपल्लवसँवराइ ॥
चंदन कुसुम माल पहिराई ❀ रत्न युक्त चहुँ कलश कराई ॥
अपर विटप जो तासु समीपा ❀ रक्तसूत्र वेष्टित नृप दीपा ॥
सबके शिरनि पताक विराजै ❀ मूल मूल प्रात कलशनि साजै ॥
सर्व वीज मय ते सब आनी ❀ ताम्रपात्र धारै नर ज्ञानी ॥
वाद्य घोषयुत सकल दिशानी ❀ दिगपालन बलि देइ अमानी ॥
दिवस द्वितीय प्रातही काला ❀ विरचै कुण्ड मेखला वाला ॥
ग्रह यज्ञादि विधान सों, शान्ति कर्म प्रारंभि।
चारि विप्र वा अष्ट जन, बोलिय परिहरि दंभि ॥
पूजि बसन हाटक करि सोई ❀ घृत तिल हवन करै द्विज ओई ॥
जात कर्म आदिक गोदाना ❀ सब सत्कार करै सविधाना ॥
प्रथम अंबु सुठि बृक्ष न्हवावै ❀ जात कर्म पुनि तासु करावै ॥
अन्न पराशन पुनि करवाई ❀ हेम सूचिका कर्ण छिदाई ॥
चूड़ाकरण कराय बहोरी ❀ मुंज मेषला दै रण धोरी ॥
वसन बहोरि ताहि पहिराई ❀ पुनि गोदान कराइय भाई ॥
वदत कोउ आचार्य इमि, लता माधवी साथ।
किधौं मालती सल्लकी, तरु ब्याहै कुरुनाथ ॥
विटप प्रतिष्ठा कीजिये, यहि प्रकार क्षिति ईश।
पुष्पांजलि यजमान करि, ब्राह्मण पढ़ै असीश ॥
मंत्र ॥ येशाखिनःशिखरिणांशिरसोविभूषा
येनन्दनादिषुवनेषुकृतप्रतिष्ठाः।

येकामदाःसुरनरोरगकिन्नराणां
तेमेनतस्यदुरितार्तिहराभवन्तु १
एतैर्हिजोविविधदत्तहुतैर्हुताशः
पश्यत्यसावहिमदीधितिरम्बरस्थः ।
त्वंवृक्षपुत्रपरिकल्पनयाकृतोसि
कार्यंसदैवभवताममपुत्रकार्यम् ॥ २ ॥

दो० ॥ दैपुष्पांजलिमंत्रयहि, निजमुखघृर्तहिनिहारि ।
तरु लालनकरिपुत्रसम, पढैमन्त्रसुखकारि ॥

मंत्र ॥ अंगादंगात्संभवति हृदयाच्चाभिजायते ॥
आत्मावैपुत्रनामासि त्वंजीवशरदांशतम् १

पुनि ब्रह्मणनि दक्षिणा देई ❀ गो आचार्यहि दै सुख लेई ॥
करै महोत्सव तेहि थल राजा ❀ दीननि भोजन देइ सुसाजा ॥
आननि आसवादि युत देई ❀ परमानन्द ततस्थल लेई ॥
कर्मकार अरु सेवक दासा ❀ यथा शक्ति सत्कार सुपासा ॥
करिके नृप मणि सायंकाला ❀ भोजन करै सबंधु सवाला ॥
वृक्षोत्सव इमि करै प्रवीना ❀ सोनर होत न दुहुँदिशि दीना ॥
होत न शुभगति बिनु सुत काहू ❀ जो कुपूत उपजै दुख दाहू ॥
यहि कारण नर बिटप लगावै ❀ शास्त्र रीति आपत्य बनावै ॥

सुख वांछित पावै घनो, उभय लोक नर सोइ ।
वरणत दुर्गा शुभ चरित, जेहिजगकर हितहोइ ॥

आन कथा सुनु पांडु कुमारा ❀ बनवावै नर सुर आगारा ॥
जो शरीर तेहि जाइ नशाई ❀ रहै सुकीर्त्ति देह जग छाई ॥
शुभ्र वर्ण अति उच्च पताका ❀ देवालय विरचै वर शाका ॥

सो जग भोग करै बहुभाँती ❀ अन्त देव धामहिं, चलि जाती ॥
अति उत्तम रचि देव निकेता ❀ कंचन रौप्य ताम्र कुरुकेता ॥
मूर्त्तिस्थापन करै सुकाजी ❀ वापाषाण लोहमय साजी ॥
होइ चक्रवर्ती नर नायक ❀ सूप अपार द्वार तेहि प्रायक ॥
रचत मेरु नामक प्रासादा ❀ ततस्थापि प्रतिमा अविषादा ॥

तेहि पंचामृत सों विबुध, शुचिस्नान करवाइ ।
दिव्यकल्प सुरपुरबसै, नित आनँद सरसाइ ॥
वासकरै आनन्दमय, बहुरि जन्म जग पाइ ।
होइ चक्रवर्त्ती नृपति, नहिं संशय नरराइ ॥

दो० स्वर्ण दंड चामर करैं, सुर ललना तेहि शीश ।
दीपजलावै सुरभवन, तत्फल सुनु धरणीश ॥

सुर मंदिरन करै जागरणा ❀ नृत्य गीत संयुत आभरणा ॥
तेहि गंधर्व अप्सरा आई ❀ करत प्रसन्न विविधि विधि राई ॥
सुर निकेत लेपन फल ताता ❀ स्वर्ग लहत गृह रत्न विभाता ॥
घण्टा चामर छत्र विताना ❀ देवागार चढ़ाव अमाना ॥
उत्तम रत्न स्वामि नर होई ❀ नृपति चक्रवर्त्ती पुनि सोई ॥
पूजे देव सु अस्तुति साजी ❀ करैं प्रणाम मनोतन राजी ॥

नृपति युधिष्ठिर जोरि कर, मधुरबचन सुखपाइ ।
कीन्हप्रश्न पुनि श्यामप्रति, सुनिये श्रीयदुराइ ॥

को तप नियम दान व्रत भाई ❀ यत्फल वर प्रताप प्रभुताई ॥
तेजोमय शरीर जग पावै ❀ आमय रहित न व्याधि सतावै ॥
सुनु नरेन्द्र सुंदर इतिहासा ❀ एक समय पिंगल गत त्रासा ॥
धनहित सर्व बिपति संसारा ❀ सहत लोक उपहास अपारा ॥

नृप उपभोग दानते ताता ❀ सम्पति नाशन मोहिं लखाता ॥
पाछिल पुण्य क्षीण जब होई ❀ द्रव्य विनाश जानिये सोई ॥
धन संपदा आदि संसारा ❀ तन त्यागे न स्वत्व अधिकारा ॥
यहि कारण अपने कर राई ❀ धन विनियोग करै सुखपाई ॥
जन्म विटप फल यह यहि लोका ❀ तप मख दान भक्ति हर शोका ॥
नाथ कौन अस दान जहाना ❀ जेहि करिद्रवहिविष्णु भगवाना ॥
दुहुँदिशि सिद्ध प्रदायक जोई ❀ विधि विधानयुत भाषिय सोई ॥

गोदान विचार ॥
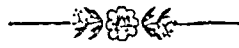
देखो ८४ अध्याय ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ॥

बाल्मीकिमुनि व्यासमुनि, कथित दान सुनुराउ ।
सरस्वती महि धेनु तिहुँ, उत्तम दान गनाउ ॥

मुख्यदान तिहुँ सुखकी खानी ❀ कृत उद्धार सप्तकुल प्रानी ॥
गोद्विज लक्षण सुनहु नरेशा ❀ तापीछे विधि दान सुदेशा ॥
तरुणरूप युत धेनु सुशीला ❀ पयद सवत्सा नाहिं कुचीला ॥
न्यायार्जित दीजिय गोदाना ❀ श्रुतिज्ञाता विप्रहि शुचि थाना ॥
होइ न मृतवत्सा युत रोगा ❀ वृद्धाहीनांगी नहिं योगा ॥
दुश्शीला निर्दुग्ध न होई ❀ करिय न दान धेनु अस जोई ॥
अधन कुटुम्बी द्विज श्रुति ज्ञाता ❀ आहि ताग्नि ज्ञानी वर ज्ञाता ॥
अतिथि पाल लखि दीजिय दाना ❀ धेनु दान कारक कल्याना ॥

दो० ॥ मुग्धपिशुनलोभी अकुल, हव्यकव्यबिनुजोइ ॥
सुरभी दान न देहु तेहिअस भाषतमुनिलोइ १

दिवस पवित्र स्नान करि, तर्पण पितृ सनेम ॥
घृतपयहरिहरशिरतिलक, करै मुदित हितक्षेम २
स्वर्णशृंग खुर रौप्य मढ़ि, कांस्य दोहनी साथ ॥
पुष्पादिक गो अर्चिकर, दान समंत्र सुगाथ ३

मंत्र ॥ गावोमेग्रतः संतु गावोमेसंतुपृष्ठतः ॥
गावोमेहृदयेसंतु गवांमध्येवसाम्यहम् १

गो प्रदक्षिणा करै बहोरी ❀ लै द्विज चलै यदा रण धोरी ॥
जाइ अष्टपग तासु पछारी ❀ सबविधि निज कल्याण विचारी॥
यहि प्रकार दीजिय गोदाना ❀ सर्वाभीष्ट फलद अनुमाना ॥
अंत अमरपुर वासहि पावै ❀ सप्त जन्म अघ दूरि बहावै ॥
पग पग फल गो शत हय मेधा ❀ करत सोइ जेहि शिर लिपिबेधा॥
हरि यह दान दक्ष प्रति गायो ❀ तोहिं आज़ुहौं सोइ बतायो ॥
चौदह इन्द्र आयु सम भाई ❀ स्वर्ग वास गो दत्त लखाई ॥
अखिल अघौघ शमन यह दाना ❀ यहि सम प्रायश्चित नहिं आना ॥

चारि वर्ण गोदान करि, उत्तम लोकहि जात ।
शुचिज्ञाता मुनिवर बदत, मुख्यदान यह तात ॥
दुर्गा गावत सो चरित, परम मोद प्रदजानि ।
अग्र कथा बर्णन करौं, श्रीगुरुपद उरआनि ॥

आन विधान सुनहु नर नायक ❀ अघनाशक सबसौख्यप्रदायक ॥
जो अति पावन दान प्रभाऊ ❀ सर्वदान फल प्रद नर राऊ ॥
एकसीर युत वृषभ सुचारी ❀ ताहि कहत हल ऋषयविचारी ॥
यहि प्रकार दश हल बनवावै ❀ एक पंक्ति जेहि नाम कहावै ॥
प्रथम काष्ठ दृढ़ हल निर्मानै ❀ हाटक पट्ट रत्न पचिठानै ॥

उन्नत बली तरुण बृषलाई ❀ वस्त्राभरण शुभग पहिराई ॥
सुन्दर वपु उत्तम अनुमानी ❀ जोतै हलनि प्रेम मन आनी ॥
उत्तम कृषी युक्त बड़ ग्रामा ❀ वा लघुपुर नरेश गुण धामा ॥

अथवा करिये एकशत, भूमि वर्तन हितदान।
नियत करै महिदान हित, भाषत यथा पुरान ॥

जो न समर्थ होइ अस भाई ❀ तौ विशेषि इमि करै उपाई ॥
देइ निवर्तन शुभग पचासा ❀ तत्पश्चाद्भूप अनयासा ॥
श्रुति विद सदाचार सह वामा ❀ सर्व अंग आभूषित जामा ॥
दश ब्राह्मणन निमंत्रि बुलावै ❀ पुनि मंडप दश हस्त बनावै ॥
ता महँ कुंड हस्त परमाना ❀ निर्मित करै शुभग गुनवाना ॥
ते ब्राह्मण लै समिध पलासा ❀ पायस घृत तिल कृष्ण सुभासा ॥
रुद्र मंत्र व्याहृति के द्वारा ❀ वापर्जन्य सूक्त अनुसारा ॥
हवन करै संतोषित राई ❀ पर्व काल यजमान नहाई ॥

शुक्लवस्त्रधारण करै, सप्तधान्य परतात ॥
थापन करि हलपंक्ति तेहि, जोतै वृषअवदात १
तत्षण बाजैं वाद्यबहु, वेदध्वनि भलहोइ ॥
पुष्पांजलि यजमानलै, पढ़ै मंत्र यह सोइ २

मंत्र ॥ यस्माद्देवगणाःसर्वे हलेतिष्ठंतिसर्वदा ॥
वृषस्कन्धेसुनिहितास्तस्माद्भक्तिःशिवेस्तुमे १
यस्माच्चभूमिदानस्य कलांनार्हंतिषोडशीम् ॥
दानान्यन्यान्यतभक्तिर्ममैवास्तुसदादृढा २

पुनि ते हल द्विज स्वकर चलावै ❀ अरु यजमान रत्न गणलावै ॥

हाटक रौप्य वीर्य द्विज हाथ। ❀ करवावै निर्वपनं सुगाथा ॥
तत्पश्चात् भूमि युत सीर। ❀ अर्पन करै द्विजन मतिधीरा ॥
इमि हल पंक्ति दान जो करई ❀ इक्कइस कुल समेत सो तरई ॥
सप्त जन्म दारिद्रय सव्याधी ❀ होत न दौर्भाग्य आवाधी ॥
प्राप्त यूथ पति पदवी होई ❀ जो यह दान लखै चष कोई ॥
नाशै एक जन्म पापानी ❀ जिनजिनकीन्हसुनियनामानी ॥
नृप दिलीप शिव भरत अयाती ❀ अवलगि स्वर्ग बसत हर्षाती ॥

यहिकारण सबको उचित, करै अवशियहदान ॥
मोदक कारज लहिघने, भुक्तिमुक्ति कल्यान १
जो न शक्ति हलपंक्ति करु, दान एक है सीर ॥
रेणुजितिक हलते उठहिं, वा वृष रोम शरीर २
तितिक सहस वर्षनबसै, शिवपुर आनँद पाइ ॥
होइधनेश्वर भूमितल, बहुरि भूमि पति आइ ३

श्री विश्वकर्मा पूजा व्रतफल ॥
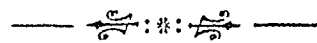
देखो अथोत्तरपर्वस्थविषयानुक्रमणिका भविष्यपुराण अध्याय १६७ में ॥

कह नृप सुनु त्रिलोक आधारा ❀ कोउ असदान कथिय यहिबारा ॥
जेहि फल बहु धन बहु सुत पावै ❀ मनुज भाग्यशाली सुख छावै ॥
महाराज सुनु वर इतिहासा ❀ कीजिय श्रवन त्यागि भवत्रासा ॥
भरत वंश महँ प्रथम नरेशा ❀ भयो वसुवाहन शुचि भेशा ॥
अरि जित प्रबलारोग्य शरीरा ❀ महा प्रतापी नृप रन धीरा ॥

१ बुवावै ॥

मंत्री पै न कोउ अस ताके ❀ नृपता भार तजै शिर जाके ॥
अरु न पुत्र नहिं सुहृद सयानो ❀ बंधु न कोउ सुखद अनुमानो ॥
रहत व्यग्र चित नृप यहि हेतू ❀ यथा विकलजग निकरत केतू ॥

दैवयोग आये तहां, पिप्पलाद ऋषिराज।
नाम शुभावति भूपतिय, गुण निधि पूरनकाज ॥

आर्घ्यपाद्य दै पूजन कीन्हा ❀ वर आसन बैठारि प्रवीना ॥
दोउ कर जोरि पूछि इमि रानी ❀ महाराज सुनु अकथ कहानी ॥
राज्य अकंटक दीन्ह विधाता ❀ मंत्री मित्र पुत्र बिनु ताता ॥
याकर कारण बूझि न पायो ❀ तब वृत्तांत यह तुमहिं सुनायो ॥
कह मुनि सुनु रानी हरि माया ❀ कर्म प्रधान जगत उपजाया ॥
कर्म भूमि है याकर नामा ❀ निज कर्तब फल दुख परिनामा ॥
जौन पदार्थ मनुज तन पाई ❀ नहिं संपादन कीन्ह नृराई ॥
तौन बस्तु मंत्री अरि प्रेमी ❀ दै नहिं सकत बदत बुधनेमी ॥

प्रथमजन्म अर्चन कियो, राज्य लहो पुनिआय।
बिनु संपादन शचिव हित, पुत्रमिलै किमिमाय ॥

सुनि मुनिगिरा कहोपुनि रानी ❀ गतिगतबहुरिमिलतनहिंआनी॥
अब कोऊ व्रत मंत्र सुदाना ❀ सिद्धियोग उपबास पुराना ॥
भाषिय कृपा सिंधु मुनि चेरी ❀ बहु सुत भृत्य मित्र प्रद हेरी ॥
तब मुनिभाष्यो दान अपाका ❀ जो करि बढ़्यो भूमि नृप शाका ॥
सुनि उपदेश तदा अनुसारा ❀ कीन्हो दान सहित उपचारा ॥
नृपति बभ्रुबाहन गृह भूपा ❀ उपजे बहु सुत अतन स्वरूपा ॥
मंत्री मित्र भृत्य अधिकाई ❀ भई भूप नहिं जात गनाई ॥
तौन दान सुन्दर परिपाटी ❀ कीजिय श्रवन बृद्धि उदघाटी ॥

सर्व कामप्रद दानविधि, सुनि कीजिय महिपाल ॥

वर मुहूर्त चंदन अगर, धूप पुष्प पट जाल १
भूषनानि नैवेद्य युत, करिय शुक्र अरचारि ॥
पढ़ि यह मंत्र अपाकमय, बहुपदार्थ अवगाहि २
सो०॥ पात्र एकहज्जार, थपिय अपाक पदार्थ सह ॥
संध्याबिधिअनुसार, होमकरिय जागियनिशा १
अथमंत्र ॥ त्वंभांडानिचित्रानि गुरूणिचलघूनिच ॥
माणिक्यादीनिशुभ्राणि हरांश्चसुमनोहरान् १
संपादयमहाभाग विश्वकर्मात्वमेवहि ॥
भार्गवत्वंप्रसन्नेन मनसापाहिमांसदा २
गीत वाद्य संयुक्त सनेहा ❀ रैनि ब्यतीत करै विधि एहा ॥
उठि प्रभात यजमान नहाई ❀ श्वेत वस्त्र बपु धरै बनाई ॥
उन भांडन पर शक्ति समाना ❀ षोड़श भांड धरै यजमाना ॥
कनक रचित बरु रजताकारा ❀ ताम्र कि लोह मयी महिपारा ॥
सबहि अरुण वासांसि उढ़ावै ❀ कुसुम माल अर्चन मन लावै ॥
स्वस्ति द्विजन सन भूप पढ़ाई ❀ पूजहि शुक्रहि मोद बढ़ाई ॥
पुनि सम्यक सुभगा पद पूजै ❀ परिहरि बिषय बासना दूजै ॥
करै प्रदछिना तजि कदराई ❀ सब भांडन कर प्रमुदित राई ॥
पढ़ि यह मंत्र समोद सब, भांड देइ बटवाय ।
अथवा देइ लुटाय नर, रुचि सम लेइ उठाय ॥
मंत्र ॥ भांडरूपाणियान्यत्र कल्पितानिमयाकिल ॥
भूत्वासत्पात्ररूपाणि उपतिष्ठंतुतानिमे १
दो०॥ यहि विधान नर नारिसब, दान करै गतशूल ॥

विशुकर्मा तोषित रहै, जन्म तीनि सुखमूल १
सुत हितु सेवक आदि घर, मिलैं पदार्थ अपार ॥
दानअपाकहि नारि करि, अवियोगित संसार २
लहै सुतादि पदार्थ सब, सौख्य जगत के तात ॥
अंतसमय निजकंतसह, स्वर्गलोक चलिजात ३
जिमिशुसंत भाषोतथा, कहि दुर्गा अति चोपि॥
उक्तियुक्तिकरिकेशोवन,वरनिदियोजनुओपि४
विश्वकर्मा द्विजराजको, पूजन विविधि प्रकार ।
वेद शास्त्र वरणनकियो, कहौं सो मैं निरधार ॥

जेहि प्रकार विश कर्मा केरा ❀ पूजनकरत बिबिधि विधि चेरा ॥
सो सब बरणौ सहित सनेहू ❀ जेहि विधि पूजि सकलसुनिलेहू॥
करि अस्नान सुभग जलमाहीं ❀ विशकर्मा ढिग पूजन जाहीं ॥
सुरभि सुमन लै बैठि बहोरी ❀ ध्यावै नित दुर्गा करजोरी ॥
लै आचमन गंग जल केरा ❀ दुर्गादास विनय बहु बेरा ॥
ता पाछे अस्नान करावै ❀ अंग पोंछि आशन बैठावै ॥

दो० पति वर्ण उपवीत लै, अमितबार कर जोरि ।
अर्पै विशकर्म्मा प्रभुहि, सहित सनेह बहोरि ॥

चन्दन अमित सुगन्ध मिलाई ❀ अगर तगर कर्पूर बसाई ॥
अर्पै जो यहि भांति सराही ❀ लहत चारि फल सो जगमाही ॥
नाना गन्ध सुमन के माला ❀ मेलै विशकर्म्मा के भाला ॥
और पुष्प के अभरण नाना ❀ अंग अंग बिरचै सब बाना ॥
धूप करै सब गन्ध मिलाई ❀ विश्वकर्मंहि अप मन लाई ॥

बारै दीप गऊ घृत जोई ❀ करि आरती धरै कर धोई ॥
भोजन सामग्री सब भांती ❀ अर्पै सब रथकार द्विजाती ॥
चना दालि और मूँग मिठाई ❀ बिबिधि भोज्य सब लेइ मिलाई॥

दो० गोघृत दुग्ध दही अरु, शक्कर मधुहि मिलाइ।
पञ्चामृत निर्माण करि, प्रभुहि चढ़ावै जाइ॥

अमित भांति नैवेद्य लगाई ❀ तापीछे आचमन कराई ॥
बहुप्रकार ताम्बूल लगाई ❀ विशकर्म्महि सो देइ चढ़ाई ॥
पूँगी फल तापीछे देई ❀ यहि बिधि पूजि चारि फललेई ॥
यथाशक्ति दक्षिणा चढ़ावै ❀ सो आपन मन बांछित पावै ॥
पाछे पांच प्रदक्षिण करई ❀ सो रथकार सकल सुख लहई ॥
नीराञ्जन तब करै बहोरी ❀ लै कपूर आरती निहोरी ॥
यहि विधि जो नर पूजन करई ❀ ऋद्धि सिद्धि ताकर घर भरई ॥
प्रीति पात्र विशकर्म्मा केरे ❀ भजत निरन्तर मनुज घनेरे ॥

यहि विधि सबनर पूजिकै, विनयकरहिंकरजोरि।
पुष्पाञ्जलि निजमाथ धरि, अस्तुति करैं बहोरि॥

मंत्रहीन अरु क्रिया विहीना ❀ भक्ति हीन मैं पामर दीना ॥
पूजेहुँ नाथ तुमहिं प्रभुजानी ❀ पूरन करहु दास निजमानी ॥
रूपदेहु अरु यश मोहिं देहू ❀ भक्ति देहु दारिद हरि लेहू ॥
पुत्र देहु अरु धन मोहिं देहू ❀ शत्रुमोर पहिले हरि लेहू ॥
विजय देहु विद्या सब देहू ❀ माया मोह सकल हरि लेहू ॥
मन कामना मोरि सब देहू ❀ अवगुण सकल मोर हरिलेहू ॥
पशु प्राणी सब विधि मोहि देहू ❀ आलस रोग शोक हरि लेहूँ ॥
पूजन करि बिनवै यहि भाँती ❀ लहत निरन्तर सुख दिन राती॥

पूजा करि बिनवै सदा, यहि बिधि जो रथकार ।
शिल्पशास्त्र की सबकला, बिनुश्रम लहै अपार ॥

अर्थी जो पूजे मन लाई ❀ धन सो लहै अमित सुखदाई ॥
कामी भार्या लहै स्वरूपा ❀ विशकर्मा पद पूजि अनूपा ॥
धर्म हेत पूजै जो कोई ❀ बढ़ै धर्म जासो सुख होई ॥
मोक्ष हेत जो ध्यावै प्रानी ❀ पावै मोक्ष कहत बुध ज्ञानी ॥
कारागार बीच जो होई ❀ छूटै सो पूजै जो कोई ॥
जो काहू से भय मनराखै ❀ सो पूजै दुर्गा अस भाखै ॥
पूजतही शङ्का मिटि जाई ❀ विशकर्म्मा जग बिच यशगाई ॥
रोगी पूजै भक्ति दृढ़ाई ❀ राज रोग ताको छुटि जाई ॥
शिल्प हेत पूजै रथ कारा ❀ शिल्प क्रिया सो लहै अपारा ॥

दो० साधारण पूजन कहेउ, शास्त्र बिहित यहि भांति ।
कन्या की संक्राति का, कछु विशेक दर्शाति ॥

सो सब तुमहिं सुनावौं भाई ❀ पूजन करहु सकल मनलाई ॥
कन्या राशि सूर्य्य जब आवैं ❀ तादिन पूजि मनोरथ पावैं ॥
सावन भादौं उत्तम मासू ❀ वर्षा ऋतु संज्ञा है जासू ॥
शिल्पकार कर है अधिकारा ❀ अग्नि हवन कर करैं प्रचारा ॥
कर्क राशि रवि सावन भोगै ❀ भादवँ सिंह राशि को जोगै ॥
क्वारमास कन्या कर होई ❀ कातिक मास तुलपर सोई ॥
यहि बिधि चारि राशि परजाई ❀ चारि मास भोगै रवि भाई ॥
पूजन अग्नि हवन उपवीता ❀ चारि मास विच अहै पुनीता ॥
द्विज बंशी रथकारन केरा ❀ और जाति को समय घनेरा ॥

श्रावण भादौं अन्तमें, कार्तिक क्वारके आदि ।
दोनों ऋतुके बीचमें, सूर्य्य होत कन्यादि ॥

दोनों ऋतु में है अधिकारा ❀ पूजन कर बहुभांति प्रकारा ॥
दोनों ऋतु के मध्य सदाही ❀ कन्याराशि प्रथम रवि जाही ॥
याही ते पहिला दिन भाई ❀ जब कन्या पर रबि चलिजाई ॥
तादिन शिल्पकार की जाती ❀ बिश्वकर्म्मा पूजैं बहु भांती ॥
बिश्वकर्म्मा गुण कीर्त्तन करहीं ❀ नृत्यगीत बहु विधि अनुसरहीं ॥
मंगल गावत ढोल बजाई ❀ करैं वृष्टि सब सुमन लुगाई ॥
ब्राह्मण भोजन निवति जिमावैं ❀ पाछे बहु दक्षिणा लुटावैं ॥
यहि बिधि पूजि सहित परिवारा ❀ मन बांछित फल पावैं सारा ॥

करैं जागरण रात्रि बिच, गावैं भजन विशेषि।
बिश्वकर्म्मा के गुण चरित, गावैंतजि अविवेक ॥

जो यहि विधि पूजै मनलाई ❀ पूजि चारिफल लहै मनाई ॥
कन्या राशि केर सब भेदा ❀ दुर्गा कह्यो निरखि सब बेदा ॥
विश्वकर्म्मा पूजित यहि भांती ❀ आरति करैं कोकाशि सुजाती ॥
सो सब आगे कहिहौं जाई ❀ बिश्वकर्म्मा आरती बनाई ॥
आजहु सूत्रधार की पूजा ❀ जेहि विधि होत कहौं सो दूजा ॥
शिल्पी के पूजन बिनु कोई ❀ फल न लहत नर नारि निगोई ॥
सो यहि भांति सुनावों सबहीं ❀ सुख पैहैं प्रेमी जो अहहीं ॥

मन्दिर गृह अरु द्वार दुर्ग, देवालय बहु भाँति।
उभय लोक सुखहेतुनर, निर्मित करत द्विजाति ॥

पहिले करि शिल्पी की पूजा ❀ पूजन करत बास्तु कर दूजा ॥
जेहि विधि इन कर पूजन होई ❀ दुर्गा सबहि सुनावै सोई ॥
शिल्पी के प्रसन्न के हेता ❀ वस्त्र देय बहु द्रव्य समेता ॥
छेनी करनी सुबरण केरा ❀ यथा शक्ति चांदीकी हेरा ॥
आभूषण बहु विधि तेहि देई ❀ महिषी गऊ सबत्सा सेई ॥

अमित रत्न स्थपति को देवै ❋ मन कामना सुफल करि लेवै ॥
भोजन षटरस ताहि जिमावै ❋ यहि विधि शिल्पी पूजित आवै ॥
जे यहि भांति करत सेवकाई ❋ फल ततकालहि लहत सो भाई ॥
यहिविधि पूजन शास्त्र पुकारै ❋ दुर्गादास कहत अनुसारै ।

भुजकी पूंजा होतहै, थवई की सब काल ।
भुज पूजी नलनीलकी, रामचन्द्र बहु काल ॥

सूत्रधार पूजित यहि भांती ❋ गृह निर्माण करै दिन राती ॥
मन्दिर रचै अनेक प्रकारा ❋ पाथर काष्ठ मृत्तिका क्यारा ॥
जब तैयार करै सब भांती ❋ पूजित है कुशिकास कि जाती ॥
गृह स्वामी प्रवेश जब करई ❋ अभिमत वेतन तेहि अनुसरई ॥
है प्रसन्न स्थपति तब कहई ❋ स्वामी नाम तोर जग रहई ॥
जो यहि विधि गृहरचै द्विजाती ❋ सो सुखलहै सदा बहु भांती ॥
पूजन सबकर कहेउ निहोरी ❋ वरणौं अब आरती बहोरी ॥

आरति श्री विश्वकर्मा जीकी ॥

आरति शिल्पदेवकी कीजे ❋ तनमन से सब पूजन कीजे ॥
चौमुख दीपना कपूर की बाती ❋ आरतिकरिकुशिकाशिकीजाती॥
चौभुज मूरति हंस सवारी ❋ नल अरु नील है आज्ञाकारी ॥
गज गुनिया परकाल बिराजे ❋ शिल्पवेद की पुस्तक राजे ॥
शीश मुकुट त्रयनेत्र बिशाला ❋ रूप मोहिनी अति छबिआला ॥
बसन अंग बहुरंग उपरणा ❋ जगमग जगमग होत सुपर्णा ॥
बिश्वकर्मा शिल्पी महराजा ❋ पूरण करत बिश्वके काजा ॥
भक्त बछल प्रभु हैं महराजा ❋ सेवक के करैं पूरण काजा ॥

दूसरी आरती।

आरति श्रीबिश्वकर्मंहि कीजे ❀ सुफल मनोरथ आपन लीजे ॥
पहली आरति देवकी कीजे ❀ दुसरी नल अरु नीलकि कीजे ॥
तीसरि आरति मनु मय त्वष्टा ❀ चौथी शिल्पी दैवज्ञ कीजे ॥
पंचम आरति गौरी शंकर ❀ छठये हनुमति अंगद कीजे ॥
सप्तम आरति लक्ष्मी भैरों ❀ दुर्गादास पर फिर चित दीजे ॥

वंदना श्रीविश्वकर्मादेव की ॥

देवमय महिमा की बलिहार ❀ श्री बिश्वकर्मा प्रभु कर्तार ॥
अमित बार आदी सृष्टी के उपजायो संसार ॥
शिल्प कलाकी पूरण महिमा लिखी बेद बिच झार ॥ १ ॥
सतयुग त्रेता द्वापर कलयुग बिश्वकर्मा कर्तार ॥
बेद पुराण पुकारि कहै वै देवन के शिल्पकार ॥ २ ॥
त्रेतायुगमें सेत अपार बांधि दियो नलनील सवार ॥
रामादल को दिया उतार बानर करते जै जै कार ॥ ३ ॥
पुरी द्वारिका को बनवा कर कृष्ण दियो जेउनार ॥
शिल्प कलाकी महिमा गाकर विधिवत करि सँस्कार ॥ ४ ॥
रचि पुहुप विमान सुधार मणि माणिक बंदनवार ॥
यदुकुल को कियो सवार द्वारावत में दियो उतार ॥ ५ ॥
सान चढ़ाय शुद्धसुख करिके सूरज दियो सवार ॥
आज्ञा पाकर बिश्वकर्मा की भार्या मतिअनुसार ॥ ६ ॥
महभारथ युद्ध अपार कुल यादव का परिवार ॥
देव मय बिश्वकर्मा कर्तार अद्भुत रच्यो कोट दरबार ॥ ७ ॥
बत्तिस पुतली सिंगासन में बिक्रम के दरबार ॥
काठ कि पुतली समय २ पर बोलैं जैजैकार ॥ ८ ॥

भोजराज में काठका घोड़ा वार्धिक होत सवार ॥
ग्यारह कोस की चाल चलै एक घड़ी मात्र में पार ॥ ९ ॥
देव कि महिमा कहांलग बरणौं है वह अपरम्पार ॥
जिनके कुलके भयो द्विजाती अग्रवर्ण रथकार ॥ १० ॥
गुरु बिश्वकर्मा दिये बिसार बिद्यागई पताल में झार ॥
बिरलै रहिगये याचन हार शिल्प शासतरके आकार ॥ ११ ॥
जागो अब प्यारे शिल्पकार भारथ खंड भयो उजियार ॥
पंचम जारज भे रखवार दुर्गा कहै शास्त्र अनुसार ॥ १२ ॥

इति श्रीप्रथमकाण्ड समाप्तम् ॥

विश्वकर्मा शिल्पसागर

दुर्गादास कृत.

द्वितीय काण्ड ॥

सूर्यनारायण और सूर्यवंश उत्पत्ति ।

संग्रहीत भविष्य पुराण से ॥

श्री विश्वकर्मा से श्री सूर्य्यभगवान का अङ्ग सुधरना ।

देखो भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व ५१ अध्याय में ।

जिमि पपील जलनिधि तरब, दुस्तरपरत लखाय ।
दुर्गाबरणत रवि चरित, जेहि बुधि कथत सकाय ॥

पुनि सुमन्त इमि बचन उचारा ❀ नारद चरण सांबु तन धारा ॥
तव मुख सुनिः महिमा दिनराई ❀ भानु भक्ति उपजी उर आई ॥
अब राज्ञी निक्षुभा प्रभाऊ ❀ दंडी पिंगल कथु मुनिराऊ ॥
सुनहु शांबु रविके विवि बामा ❀ राज्ञी अरु निक्षुभा ललामा ॥
राज्ञी नाम जानु आकाशा ❀ नाम निक्षुभा धरा प्रकाशा ॥
श्रावण कृष्ण सप्तमी पाई ❀ राज्ञी रवि संयोग लखाई ॥
माघकृष्ण सप्तमी कहावै ❀ भानु निक्षुभा योग दृढ़ावै ॥
धारण करत गर्भ दोउ नारी ❀ राज्ञी गर्भ होत सुत वारी ॥

भूमि गर्भ ते होत है, प्रकट शस्य बहु रूप ।
ताते जीवत जगत सब, लहि कल्याण अनूप ॥

सस्य देखि द्विज हवनहि साजे ❀ स्वाहा स्वधाकार सुख भ्राजे ॥
पुनि सुमंत मुनि नृपहिं सुनायो ❀ कल्प सप्तमी सुभग सोहायो ॥
तिथि सप्तमी सूर्य भगवाना ❀ जन्म लीन्ह नृप ज्ञान निधाना ॥
अंड समेत जन्म नृप भयऊ ❀ अंडहि महँ निवास तिनलयऊ ॥
कीन्हो बहुदिन अंड निवासा ❀ मार्तंड जग नाम प्रकाशा ॥
पितृ तृप्त होवत मष काजा ❀ भूमि गर्भ सब सस्य समाजा ॥
दुहु वामन के जनक बखानौं ❀ अरु सन्तान कथा वर गानौं ॥
विधि सुतभे मरीचि वर काया ❀ तिन निजतन कश्यप उपजाया ॥

हिरण्यकशिपु तासुत बलवाना ❀ तासु सुवन प्रहलाद सुजाना ॥
नाम विरोचन तासु कुमारा ❀ ता भगिनी गुणशील उदारा ॥
गई विश्वकर्मा सँग ब्याही ❀ तेहि दुहिता संज्ञा भ्रम नाहीं ॥
सुता मरीचि सुरूपा नामा ❀ मुनि अंगिरा केरि वर वामा ॥

भयो बृहस्पति तासु सुत, सुरगुरु सब गुणधाम।
ब्रह्म वादिनी भगनि तेहि, वसुप्रभास वर वाम ॥

तासुत शिल्पज्ञेय गुणखानी ❀ नाम विश्वकर्मा नृप ज्ञानी ॥
ताकर दूसर त्वष्टा नामा ❀ तासु सुता संज्ञा गुणधामा ॥
कोउ राज्ञी कोउ कहत सुरेनू ❀ ता छाया निष्प्रभा सुखेनू ॥
संज्ञा जाया रवि भगवाना ❀ रूपवती साध्वी सुजाना ॥
तासु समीप मनुज तन धारी ❀ जात न कबहुं नाथ पै विचारी ॥
तेज प्रचंड रूप नहिं सोहर ❀ सदा जात आकर द्युति लोहर ॥
संज्ञहि सो स्वरूप नहिं भावै ❀ धर्म पतिव्रत मन बिचलावै ॥
ताते भईं तीनि सन्ताना ❀ जब रवितेज जीव अकुलाना ॥

जाइ पिता गृह सो रही, संज्ञा वर्ष हजार।
जाहु कंतगृह पितु कह्यो, सुनि उद्विग्नित वार ॥

उत्तर कुरु प्रदेश चलि आई ❀ अश्विनि तन तृण चरत नृराई ॥
कालक्षेप करन सो लागी ❀ छाया रवि तट रहत सभागी ॥
संज्ञा तेहि जानत भगवाना ❀ नहिं प्रपंच कछु मन अनुमाना ॥
ताके भये युगुल बल धामा ❀ श्रुतश्रवा श्रुतकर्मा नामा ॥
तीसर कन्या तपती गाई ❀ रूप शील गुण युत चतुराई ॥
श्रुतश्रवा मनु सो सावर्णी ❀ श्रुतकर्मा शनि आपनि कर्णी ॥
छाया सुतन राखि निज गेहा ❀ नहिं संज्ञावत कीन्ह सनेहा ॥
संज्ञासुत मन विलगु न माना ❀ सहि नहिंसको शमन अपमाना ॥

छाया प्रतिपालत सुतन, निज उपजाये जौन ।
संज्ञा सुतन कलेश नित, देवत सौख्य कबौन ॥

लखि निज दशा क्लेश सम्पन्ना ❀ यम उर भयो क्रोध उत्पन्ना ॥
छायहि कटु दुर्वचन सुनायो ❀ मारन हित निज चरण उठायो ॥
तब छाया दीन्हो तेहि शापा ❀ गिरैं चरण तव खल यहि पापा ॥
सुनत शाप ब्याकुल यम भयऊ ❀ महिषध्वज पितु तट चलिगयऊ ॥
समाचार पद बंदि सुनायो ❀ सुनि दिनेश यमकहँ समुझायो ॥
सर्व शाप कर है उद्धारा ❀ मातु शाप नहिं बृथा कुमारा ॥
तदपि उपाय करब निज नेहा ❀ अनुचित तदपि जन्म मम देहा ॥
कृमि पग मांस धरा लै जाहीं ❀ जननी शाप बृथा सुत नाहीं ॥

तुम बिचरौ सानंद सुत मम आशिषा प्रताप ।
आश्वासन[1] करि पुत्र कर गे छाया तट आप ॥

करत सनेह न सम केहि हेतू ❀ जननिहि सम सुत अगुण गुणेतू ॥
भानु वचन सुनि उतर न दयऊ ❀ दिनकरहृदय क्रोध अति छयऊ ॥
क्रोधबलित दिनमणिहिविलोकी ❀ छाया अपभय भूप सशोकी ॥
कहिसि कथा सब भाकर आगे ❀ सुनिदिनेश अतिअचरज पागे ॥
विधि वश तदा काल तेहि ठामा ❀ गये विश्वकर्मा गुण धामा ॥
देखि श्वश्वर बड़ आदर कीन्हा ❀ शुभ्रासन दिनेश उठि दीन्हा ॥
सहस्रांशु तव तेज प्रचंडा ❀ मम दुहिता पायो अति दंडा ॥
त्यागि तुम्हैं बन दुरी कृपाला ❀ करत तहां तप कठिन कराला ॥

तुम पावौ वर रूप रवि, सो तप कठिन बिचारि ।
हमैं स्वयंभु पठाव इत, तव वपु देइँ सवाँरि ॥

---

[1] समाधान ॥

जो तुम्हारि रुचि होइ तमारी ❀ करौं श्रेष्ठ तव देह सुधारी[1]।
श्वशुरायसु किय अंगीकारा ❀ शाकद्वीप विदित संसारा ॥
भ्रंमि चढ़ाय छीलो रवि तेजा ❀ भयो विथित्त तमारि कलेशा ॥
देखि रूप निज काम लजावन ❀ निजमनकियविचार अघदावन ॥
अश्विनि तन बिचरत मम प्यारी ❀ ताहि मिलौं गमने तमहारी ॥
उत्तर कुरु सम्रय तन धारा ❀ अश्विनि तट मैथुनहि बिचारा ॥
संज्ञा जानिसि पुरुष विजाती ❀ अब विशेषि मम धर्म सिराती ॥
वीर्य्यस्खलित धरो निज नासा ❀ उपजे देव भिषज बर बासा ॥

नाम धरो नासत्य अरु दस्र भूमि भर्त्तार ।
सोइ अश्विनीकुमार नृप, भे प्रसिद्ध संसार ॥

धरो वास्तविक रूप दिनेशा ❀ संज्ञहि भो लखि सौख्य सुदेशा ॥
रति मंजन करि कीन्ह प्रसंगा ❀ भेरेवन्त पुत्र दुख भंगा ॥
चढ़ो धाइ रवि अष्टम बाजी ❀ चला कुदावत साजहि साजी ॥
पिंगल दंड नाय कहि बोली ❀ कही प्रभाकर कथा अमोली ॥
करि उपाय काम्बोजहि लावहु ❀ सुतहिनानिजबलत्रासदिखावहु ॥
पाइ छिद्र हरि आनहु ताता ❀ सुनि रवि वचन गये हरषाता ॥
तटरेवन्त बसे बहुकाला ❀ मिलो न छिद्र धर्म प्रतिपाला ॥
करैं विचार अश्व हरि लावैं ❀ सावधान रेवन्तहि पावैं ॥

मनु यम यमुना तापती, शनि अश्विनी कुमार ।
सावर्णिक रेवन्त युत, रवि सन्तान सुआर ॥

संज्ञा राज्ञी नाम कहायो ❀ छाया को निक्षुभा गनायो ॥
विश्व तीनि दश यहि संसारा ❀ सबमहँ अधिकतेज रविन्यारा ॥
यहि कारण दिनेश बड़राजा ❀ राज्ञा नाम योषिता साजा ॥

१ खराद ॥

देखि जगत पीड़ित यम ताता ❀ कीन्हो अनुरंजन वरगाता ॥
धर्मराज सो ताकर नामा ❀ निज शुभ कर्म प्रभाव सकामा ॥
लोकप भयो पितृ गण स्वामी ❀ महिषध्वज प्रसिद्ध अधिनामी ॥
वर्तमान मनु इनके वंशा ❀ हरि उपजे बुध करत प्रसंशा ॥
यम भगिनी यमुना सरिसोहै ❀ अष्टम मनु सावर्णि लिखोहै ॥

बड़ भ्राता यम के लखिय, करत राज्य मनु सोइ।
मेरु पृष्ठि सावर्णि नृप, तप साधत दुख खोइ ॥

शनि सावर्णि बंधु ग्रह भयऊ ❀ भगिनी तपति सरितबनिगयऊ॥
विंध्याचल अवतारहि धारा ❀ पश्चिम उदधि प्रवेश विचारा ॥
जो नर न्हात तापती जाई ❀ पुण्य अमित तेहि होत नृराई ॥
संगम सौम्या तपती कीन्हा ❀ यमुना गंग संगमहि लीन्हा ॥
देव वैद्य अश्विनी कुमारा ❀ जासु वैद्य क्रिया अधिकारा ॥
वैद्य भूमि तल करत अपारा ❀ निज निर्वाह भूमि भर्त्तारा ॥
पुनि आदित्य बोलि रेवन्ता ❀ निज हयपति कीन्होबुधिवन्ता॥
जो रेवन्तहि मगाशिर पूजै ❀ सो न क्लेश नृप भूतल भूजै ॥

सूर्यवंश और मगद्विजउत्पत्ति।

देखो भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व १३९ अध्याय में।

रचे विश्वकर्मा बहुरि, भोजक ज्ञान निधान।
भूषण आज्ञा सम भयो, पूजक रवि भगवान ॥
सुनै प्रेम संयुक्त नर, उतपति रवि सन्तान।
पाप नाशि बसि मित्रपुर, होय नरेश सुजान ॥

पुनि सांबू पग वंदि बखाना ❀ को फल पूजन रवि भगवाना ॥
को फल दान भानु हित दीन्हे ❀ काफल सुनिप्रणाम रवि कीन्हे ॥

१ प्रसन्न ॥

व्रत विधान समझो मुनि राई ❁ द्विज भष वस्तु न तात बताई ॥
श्रवण करौ नृप वर इतिहासा ❁ कहौं सप्रेम जानि रविदासा ॥
अरुण प्रबोध प्रभाकर कीन्हो ❁ तन मन वचनभक्त निज चीन्हो ॥
उदयाचल पर कौनहु काला ❁ पूछो रविहि अरुण यह हाला ॥

महाराज नैवेद्य को, पुष्पादिक प्रिय तोहिं।
केहिविधि पूजिय विप्रकहँ, नाथ बताइय मोहिं ॥

चन्दन रक्त पुष्प करवीरा ❁ गुग्गुल घृत कर धूप प्रधीरा ॥
मोदक वर नैवेद्य पियारी ❁ भोजक पूजन अघगण हारी ॥
प्रीति अर्थ मम देवै दाना ❁ पौराणिकहि सहित सन्माना ॥
पूजै ताहि यथा विधि जोई ❁ करौं अनुग्रह संशय खोई ॥
गीत वाद्य अस तृप्ति न पावौं ❁ जस पुराण सुनि मोद बढ़ावौं ॥
यहि कारण नित सुनै पुराना ❁ सो मम सेवक ज्ञान निधाना ॥
भोजक कर पूजन करवावै ❁ सुन्दर भोजन द्विजहि जिमावै ॥
काशि वंश भोजक भगवाना ❁ उत्तम कर्म कौनु उन ठाना ॥

जेहिप्रभावप्रिय तुमहिअति, त्यागिविप्रकुलनाथ।
जानो चाहत यह चरित, दास जानि बहुगाथ ॥

विप्रादिक चहुँवर्ण अथाई ❁ पूजत हमहिं भवन निज माई ॥
जो मम मंदिर सेवन करई ❁ देवल नाम तासु बुध धरई ॥
उपजायउँ भोजक निज तेजा ❁ निज पूजन हित भूतल भेजा ॥
करै सर्व थल पूजन मोरा ❁ करिय सदा सत्कार न थोरा ॥
पूर्व्वकाल सुनु शाकद्वीपा ❁ भयो प्रियव्रत प्रबल महीपा ॥
तासु तनय विज्ञान निधाना ❁ रचिसि धाम मम यथा विमाना ॥
जात रूप प्रतिमा बनवाई ❁ सब लक्षण सम्पन्न सोहाई ॥
चिंतत लखि प्रतिमा वर धामा ❁ रही प्रतिष्ठा सो बड़ कामा ॥

योग्य पुरुष अस कौनु जग, करवावै यह काज ।
शोचि विमग्नित शरणमम, आयोतजिसबसाज॥

चिंता ग्रस्त दास अनुमानी ❀ प्रगट दरश दीन्हो सुनु ज्ञानी ॥
पूछ विकल कस को अस तोही ❀ जानि प्रसन्न आशु किन मोही ॥
दुष्कर कार्य सिद्धि प्रद होई ❀ उर चिंतमण रहै नहिं कोई ॥
विरच्यौ हौं तव विशद निकेतू ❀ निर्मान्यो प्रतिमा करि हेतू ॥
तीनिवर्ण निवसत यहि द्वीपा ❀ त्यागि विप्रकुल त्रिभुवन दीपा ॥
कौनु प्रतिष्ठा सुदित करावै ❀ जो राउर उर प्रेम बढ़ावै ॥
यद्यपि तीनिवर्ण इत वासू ❀ नहिं अधिकार प्रतिष्ठा कासू ॥
यह कहि हौं मन कीन्ह विचारा ❀ काहि देउँ यह बड़ अधिकारा ॥

अस विचार करतहि अरुण, उपजे आठ कुमार ।
श्वेत वर्ण सुंदर वपुष, सुनहु जन्म विस्तार ॥

उपजे युगुल विचित्र ललाटा ❀ जन्म उभय बक्षस्थल वाटा ॥
विवितन धरो करावलि ओरा ❀ द्वै सुत चरण अंग बरजोरा ॥
वस्त्र कषाय कंजकर धारे ❀ अरु करंड सब हस्त सँवारे ॥
जोरि हाथ मम सन्मुख आये ❀ विनय पूर्वक वचन सुनाये ॥
हे पितु हम तव आज्ञाकारी ❀ भणिय कार्य हम योग्य विचारी ॥
करौ सकल मिलि भूपति काजा ❀ ये मम तनय सुनिय भुवराजा ॥
मूर्त्ति प्रतिष्ठा सुरुचि करावैं ❀ मोरि भक्ति तव हृदय दृढ़ावैं ॥
मम मंदिर अरपौ इनहींका ❀ करिहैं मम सेवन सुठि नीका ॥

भूमि धाम धन ग्राम पुर, नगरादिक आराम ।
मम निमित्त जो दीजिये, भूपति धिषणा धाम ॥

इनहि समस्त नृपति दै दीजिय ❀ अर्पित वस्तु न भूपति लीजिय ॥

ये भोजक मम तन अवतारा ❋ पितु धन ग्रहण पुत्र अधिकारा ॥
विप्रादिक न कोउ अधिकारी ❋ ये मम तनय धर्म व्रतधारी ॥
मम आज्ञावत प्रतिमा थापी ❋ दीन्ह भोजकन्ह सू धन वापी ॥
जो मम प्रीति चहै अधिकाई ❋ सो भोजक पूजै मन लाई ॥
हरै न भोजक धन विधि काहू ❋ धनप संपदा यद्यपि लाहू ॥
द्वैष प्रमाद लोभ वश भाई ❋ भोजक सम्पति हरै नृराई ॥
अंध तमिस्र नरक तेहि वासा ❋ धन भोजक तजु त्यागि दुरासा ॥

मम अर्पित धन ग्रहण हित, भोजक जन्मे तात।
फल प्रद नाहिं द्वितीय कह, सुनहु अरुण वरगात ॥

भोजक लक्षण सुनु मन लाई ❋ पढ़ै वेद प्रथमै सुख पाई ॥
ता पीछे विवाह श्रुति रीती ❋ शुचि स्नान तिहुँकाल सप्रीती ॥
अनुदिन रात्रि सविधि शरवारा ❋ पूजन प्रमुदित करै हमारा ॥
निंदा वेद विप्र सुर त्यागै ❋ मम नैवेदित भष अनुरागै ॥
मम सन्मुख वर शंख बजावै ❋ षट मासिक पुराण फल पावै ॥
कतहुँ अभक्ष्य न खाइ प्रवीना ❋ भोजक नाम जासु आधीना ॥

धारण करै अव्यंग नित, ता बिनु भोजक नाहि।
बिनु अव्यंग नैवेद्य कृत, संतति नाशक आहि ॥

बिनु अव्यंग द्रवत नहिं ताता ❋ शिर मुंडित भोजक शुचिगाता ॥
दाढ़ी पै न मुड़ावै भाई ❋ करै नक्त व्रत षष्ठिहि पाई ॥
सप्तमि तिथि उपवासहि धारै ❋ अरु संक्रांति सव्रत संचारै ॥
गायत्री जप तीनहु काला ❋ मम सन्मुख नितकरै खुशाला ॥
पूजन काल वस्त्र मुख बांधै ❋ मौनित पूजै वाक्य न साधै ॥
क्रोध रहित अर्चन सुख दानी ❋ मम निर्माल्य लेइ नर ज्ञानी ॥

बिनु अर्पे मोहिं पुष्प जो, आन पुरुष कहँ देत ।
शत्रु मोर तेहि जानिये, अथवा नर तन प्रेत ॥
जो भोजक मम अर्पित खाई ❀ पंच गव्य सम जानिय भाई ॥
मम आर्पित भूषण पट वासा ❀ विक्रय करै न धरि धन आसा ॥
वेश्यादिक नीचहि नहिं देवै ❀ भोजक सदा सविधि मोहिसेवै ॥
जल स्नान निर्माल्य न लंघै ❀ नतरु सुकृत हति धर्म उलंघै ॥
घृत पय नीर सयुक्ति न्हवावै ❀ लंघै नर न श्वान जुठरावै ॥
भोजन भोजक एकाहारा ❀ क्रोध अमङ्गल वचन बिसारा ॥
अशुभ कर्म त्यागे जग रहई ❀ अस भोजक हमार प्रिय अहई ॥
कीजिय तासु सदा सत्कारा ❀ परम धर्म यह भूप तुम्हारा ॥
भोजक वृत्तिहि जो हरै, तासु करौं कुलनास ।
पौराणिकमोहिपरमप्रिय, जिमितुमअरुणसुदास ॥
मंदिर मार्जन लेपनकारी ❀ कृपापात्र मम पुरुष सुखारी ॥
कहि यह कथा परावसु ज्ञानी ❀ विमलवानिवद सुनुनृप ध्यानी ॥
अरुण प्रबोधि भानु भगवाना ❀ कीन्ह भ्रमण विज्ञान निधाना ॥
हे नरेन्द्र पौराणिक भूसुर ❀ अतिप्रियदिनकरके निवसतउर ॥
यहिहित सदा दान तेहि दीजिय ❀ अमितपुण्यनिजकरतलकीजिय॥
हर्षित सो शत्राजित राजा ❀ रानी प्रसुदी सहित समाजा ॥
महि मंडल जहँ जहँ रविधामा ❀ खोजि खोजि भूपति गुणग्रामा ॥
मार्जन उपलेपन करवावा ❀ सब थल मुदित पुराण पढ़ावा ॥
मुदित किये दै दान सब, पौराणिक महिपाल ।
ते पूजत नित भानु पद, सोपचार तिहुँकाल ॥
आराधत नित दिवसपति, रानी भूप समेत ।
बरणै दुर्गा रवि सुयश, सकल जगत सुख हेत ॥

श्रीसूर्य भगवान् के आयुध के नाम॥

देखो भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व १६० अध्याय में॥

कह सुमंत सुनु अवनिप ज्ञानी ❀ चरित मनोहर कहौं बखानी॥
लक्षण मुख्यायुध भगवाना ❀ व्योमादिक वरणौं संज्ञाना॥
सर्वदेव मय व्योम कहायो ❀ हाटक चारि शृंग युत गायो॥
पाश वरुण जिमि विधि हुंकारा ❀ विष्णु चक्र हर शूलाकारा॥
वासव वज्र विदित संसारा ❀ तथा व्योम रवि अस्त्र सुआरा॥
तौन व्योम मधि ग्यारह शंकर ❀ अरु द्वादशआदित्य तिमिरहर॥
विश्वदेव त्रैदश कृत वासा ❀ अश्विनिसुत वसु अष्ट निवासा॥
ग्यारह रुद्र कौन मुनि गावौ ❀ आनहु करि विस्तार सुनावौ॥

शर्व[1] शंभु[2] हर[3] वृषाकपि[4], त्र्यंबक[5] रैवत[6] नाम।
अजैकपाद[7] कर्पर्दि[8] गनु, अपराजित[9] गुणधाम॥

अहिर्बुध्न्य[10] अरु भर्ग[11] कहाये ❀ ये एकादश रुद्र गनाये॥
क्रतु[1] सदक्ष[2] स्रव[3] सह्यरु[4] काल[5] ❀ कामरु[6] धृति[7] कुरु[8] शक्र[9] नृपाला॥
मात्रि[10] और अवमान[11] कहाये ❀ ऋभु[12] असह[13] नृप विश्व गनाये॥
है नासत्य[1] दस्र[2] गुण धारी ❀ दोउ अश्विनिसुत भणत विचारी॥
ध्रुव[1] धर[2] सोम[3] अनल[4] नल[5] ताता ❀ आप[6] और त्यूह[8] लखाता॥

अष्टम वसुकर नाम प्रभासा ❀ राउर रुचिवत कीन्ह प्रकासा ॥
साध्य तुषित मरुतादिक देवा ❀ सुनु नरेन्द्र उतपति कर भेवा ॥
कश्यप सुत आदित्य मरुत युत ❀ विश्वदेव वसु साध्य धर्म सुत ॥

धर्म सुवन वसु तीसरो, सोम नाम विख्यात ।
ज्येष्ठ देव सुत धर्म गनु, यामहँ भ्रम न लखात ॥
स्वायंभुवं स्वारोचिषरु, उत्तमं तामसं नाम ।
रैवतं चाक्षुषं षष्ठ मनु, ये व्यतीत गुण धाम ॥

वर्तमान बैवस्वतँ भाई ❀ सप्त भविष्य सुनहु नर राई ॥
अर्क सावर्णि को अष्टम गायो ❀ नवम ब्रह्म सावर्णि कहायो ॥
दशम रुद्र सावर्णि नृपाला ❀ धर्म सावर्णि गत जजाला ॥
दक्ष सावर्णि रौच्यँ सुनामा ❀ भौत्यँ जानु नृपमणि गुणधामा ॥
संज्ञा चौदह वासव सुनहू ❀ प्रथक् प्रथक् नामनि नृप गुनहू ॥
प्रथमावश्वं भुक विपँति सुजाना ❀ विभुँ प्रभुँ सिखी पुराण बखाना ॥
षष्ठम इन्द्रं मनोजव गायो ❀ इनकर राज्य वितीत गनायो ॥
वर्त्तमान ओजँस्वी ताता ❀ सुनु भविष्य नामनि विख्याता ॥

वलिअद्भुतंअरुत्रिदिवँन्ह५,नामसुशांतिसुकित्ति ।
ऋतधाँमा अरु दिवस्पँति, ह्वैहैं सुरमसि मित्ति ॥
कश्यपं गौतमं अत्रिं गनु, विश्वामित्रं वशिष्ठं ।
भरद्वाजं यमदग्नि युत, सप्त ऋषय धर सिष्ठ ॥
मरुत प्रवह आवहँ नृपति, उदहँ संवहँ ख्यात ।
विवँह और परिवहँ भणत, सहित परावहँ सात ॥

और्व अग्नि शुचि नाम कहावै ❀ वैद्युत संज्ञा पावक गावै ॥
अरणि अंग उपजत जो आगी ❀ नाम तासु पवमान सुभागी ॥

तीनि अग्नि ये विदित जहाना ❁ भाषत मुनि श्रुति सर्व पुराना ॥
हैं उनचास अग्नि सुतनाती ❁ अरु उनचास मरुत वर ज्ञाती ॥
संवत्सर शुनि पाँच कहाये ❁ सुनहु नाम जे मुनिवर गाये ॥
संवत्सर[१] परिवत्सर[२] नामा ❁ इद्वत्सर[३] तीसर गुण धामा ॥
और अर्थवत्सर[४] गुण खानी ❁ औ वत्सर[५] वर्णत मुनि ज्ञानी ॥
ये पाँचौ विरंचिके बालक ❁ सुनहु ध्यानयुत रिपुरणघालक ॥

रविविधु कुजबुध गुरुसकवि, शनिअरुराहुसकेतु।
विदित नवग्रह भूमि तल, सुख दुखदायकहेतु ॥

सूर्यादिक ताराग्रह गाये ❁ राहु केतु छाया ग्रह पाये ॥
कश्यप तनय सूर्य भगवाना ❁ सोम धर्म सुत भणत पुराना ॥
महादेव सुत भौम कहाये ❁ बुधशित भानु तनुज गुण छाये ॥
गुरु कवि सुवन प्रजापति केरे ❁ शनि सूर्यात्मज ज्ञान घनेरे ॥
राहु सिंहिका जात प्रवीना ❁ ब्रह्मा तनय केतु कहि दीना ॥
भ्रमत नवग्रह अधहि दिनेशा ❁ तदुपरि भ्रमण मयंक नरेशा ॥
तारा मंडल विधु के ऊपर ❁ तारामंडल पर बुध नृपवर ॥
बुधपर शुक्र महा द्युतिकारी ❁ कविपर भौम प्रकाशित भारी ॥

कुज ऊपर गुरु जानिये, गुरु पर शनि प्रति भास।
मन्दोपरि घूमत सदा, सप्त ऋषय गत त्रास ॥

करत राहु रवि मंडल बासा ❁ कतहुँक शशिमंडलहि निवासा ॥
केतु चन्द्रमंडल नित रहई ❁ ज्योतिष ज्ञाता मुनि अस कहई ॥
नव सहस्र योजन वर व्यासा ❁ रविमंडल कर गणक प्रकाशा ॥
त्रिगुणित परिधि प्रवीण गनाई ❁ द्विगुण व्यास शशिमंडल भाई ॥
शशिमंडल ते द्विगुणित व्यासा ❁ तारामण्डल परम विलासा ॥
चतुर्थांश बिनु मण्डल तारा ❁ व्यास बृहस्पति कीन्ह विचारा ॥

गुरु मण्डलही नित चौथ्याई ❀ शुक्र भौम मंडल गणिताई ॥
इनते न्यून भाग चौथ्याई ❀ बुध मण्डल प्रमाण दरशाई ॥

बुध सम लघु नक्षत्र बहु, रविमंडल सम राहु ।
केतुमाणनहि नियतगति, गणित न वदकविनाहु ॥

पृथिवी की संज्ञा भूलोका ❀ अंतरिक्ष भणु भुवः विशोका ॥
त्रिदिव नाम स्वर्लोक बतायो ❀ भूमिलोक पति पावक गायो ॥
भुवर्लोक कर स्वामि समीरा ❀ रवि स्वर्लोक स्वामि रणधीरा ॥
गुह्यक राक्षस अरु गंधर्वा ❀ सह अप्सरा बसत भू सर्वा ॥
भुवर्लोक मधि मरुत विहारा ❀ वसु सुरगण अश्विनी कुमारा ॥
रुद्रादित्य बसत स्वर्लोका ❀ चौथो महर्लोक गत शोका ॥
बसत कल्पवासी स प्रजापति ❀ पंचम है जनलोक शुभग गति ॥
ऋभु आदिक तहँ सनत्कुमारा ❀ भू दानी ऋषि वास विचारा ॥

षष्ठम है तपलोक जहँ, मुनिगण करत निवास ।
सत्यलोक सप्तम बसत, मुक्ति पाइ वर दास ॥

सो० वक्ता पुण्य पुराण, श्रोता तन मन विषय गत ।
सत्यलोक शुभथान, तिनसबकर कोविद वदत ॥

महिते योजन लक्ष उँचाई ❀ रविमंडल पुराण श्रुतिगाई ॥
सप्त कोटि योजन ध्रुवदूरी ❀ अवनि ते वर्णत बुधि भूरी ॥
ध्रुवते द्विगुणित है प्रति लोका ❀ चारिलोक परमाण विशोका ॥
योजन तेइस लक्ष उँचाई ❀ तीनिहु लोकन की बुध गाई ॥
देवा[१] सुर[२] गंधर्व[३] स यक्षा[४] ❀ राक्षस[५] नाग[६] भूत[७] गण कक्षा ॥
विद्याधर[८] युत अष्ट प्रकारा ❀ देवयोनि जानिय स विचारा ॥
सातलोक व्योमस्थित राजा ❀ मरुत पित्रिघन अनल समाजा ॥
ग्रह समेत सुर आठहु योनी ❀ मूर्त्त अमूर्त्त देवपति क्षोनी ॥

व्योमस्थित सबलखिपरत, यहिकारण महिपाल ।
व्योम प्रभुत्त्व महानअति, भाषतबुध सबकाल ॥

सूर्य धाम तेहि वास बखाना ❀ पूजिय व्योम अर्थ कल्याना ॥
व्योमा[१] काश[२] गगन[३] नभ[४] अंबर[५] ❀ खवियत[६] अंतरिक्ष[७] तम[८] पुष्कर[९] ॥
न्य[१०] मेरु[११] अरु विपुल[१२] स आपा[१३] ❀ छिद्रादिक[१४] नभ नाम प्रलापा ॥
लवण[१] क्षीर[२] दधि[३] घृत[४] निधि गायो ❀ मद्य[५] इक्षुरस[६] उदधि लखायो ॥
मिष्ट[७] नीर सागर क्षितिपाला ❀ सप्तसिंधु महि वेष्टित जाला ॥
हिम[१]गिरि हेम[२] निषद[३] अरु नीला[४] ❀ श्वेत[५] शृंग[६] षट अचल सुशीला ॥
इनके मध्य सुमेरु बिरामा ❀ तापर अष्ट दिशापति धामा ॥
है पृथिवी मह लोका लोका ❀ अरु ब्रह्मांड मध्य सब लोका ॥

बाहिर यहि ब्रह्मांड के, चहुंदिशि वेष्टित नीर ।
सलिलहिवेष्टित सिखिकिय, पावकग्रसित समीर ॥

वायुहि वेष्टित किये अकाशा ❀ नभ वेष्टित भूतादि विलाशा ॥
महत्तत्त्व वेष्टित सब भूता ❀ महत्तत्त्व कह प्रकृति बिनूता ॥
वेष्टित प्रकृति पुरुष करि भाई ❀ पुरुष ब्रह्म वेष्टित दरशाई ॥
जगदावरण किये प्रभु सोई ❀ प्रगट शरीर दिवाकर जोई ॥
भू[१]र्भुव[२]: स्व[३]: मह[४]: जना[५]दी ❀ तप[६] औ सत्य[७] लोक सुरगादी ॥
तल अरु सुतल[२] सहित पाताला[३] ❀ जानु तलातल[४] अतल[५] नृपाला ॥
वितल[६] रसातल[७] सप्त गनाये ❀ पृथिवी नीचे लोक सुहाये ॥
सब आवृत ईश्वर करि भाई ❀ पूर्वोक्त विधिवत नर राई ॥

गिरि सुमेरु भू मध्य वर, सब चतुरस्र सुवर्ण ।
बसत सिद्धि गंधर्व सुर, आदिक उत्तम वर्ण ॥

तासु शृंग श्रुति परम सोहाये ❀ को वरणै कवि तेतर गाये ॥

योजन उच्च सहस चौरासी ❀ तदुपरिसुरगण अखिल निवासी ॥
योजन षोड़स सहस प्रमाना ❀ गड़ो भूमि सो अचल महाना ॥
यहि प्रकार योजन यकलाखा ❀ मेरु उच्च मुनि जन गुणि राखा ॥
विस्तृत योजन सहस अठाइस ❀ योजन छप्पन सहस लँबाइस ॥
नाम सौमनस पाहिल शृंगा ❀ जात रूप विरचित अघ भंगा ॥
द्वितिय नाम ज्योतिष्व बतायो ❀ पद्मराग मणि रचित लखायो ॥
तीसर चित्त शृंग वर सोहा ❀ सर्वधातु मय सुर मन मोहा ॥

चन्द्रो यश चौथो कहिय, रजत रचित सब सोइ ।
सुनहु वास बहु शृंगसुर, जाकर जेहि थल होइ ॥

प्रथम सौमनस नामक शृंगा ❀ तापर उदय करत तम भंगा ॥
नशत तिमिरि प्रगटत उजियारी ❀ उदयाचल सोइ सुनु ब्रतधारी ॥
उत्तर अयण सौमनस भाशा ❀ दक्षिण में ज्योतिष्व प्रकाशा ॥
तुला मेष संक्रांति निवासा ❀ शेष उभय वर्णत इतिहासा ॥
तेहि गिरि इन्द्रकोण ईशाना ❀ अग्निकोणनिवसतद्विजयाना ॥
नैऋत पितृ निवास नरेशा ❀ मरुत वसत वायव्य प्रदेशा ॥
साक्षात ब्रह्मा मधि वासा ❀ व्योम यहैनाहिं द्वितिय विभासा ॥
करतजहाँदिनमणि नित क्रीड़ा ❀ सुमिरतमिटतअखिलअघपीड़ा ॥

सर्वलोक सब देव मय, व्योम रूप सुर भूप ।
सूर्य हेलि धन नाथ विधु, चहुँ शृंगानि अनूप ॥

विधि हरि हर तेहि मध्य विराजैं ❀ रूप मनोहर शोभनि साजैं ॥
विधु[1] क्षय[2] गोपति[3] यम[4] जल पालो[5] ❀ बिरूपाक्ष[6] दशबल महिपाला ॥
सह शांडली तनय सुरगादी ❀ शृंगन बसत सदा अविषादी ॥
अधोभाग थित मुदित अनंता ❀ नाम मेरु ता व्योम भणंता ॥

१ विष्णु ॥

सर्व देव मय चारौ भृंगा ❀ अर्थ धर्म कामादिक संगा ॥
अथवा श्रुति ऋगादि वर चारी ❀ भृंग न होइ धरे महि धारी ॥
किमि सांबू पूजे दिन नाथा ❀ भयो अरोग भनौ मुनिगाथा ॥
भल चरित्र पूछ्यो यहि बारा ❀ सुनहु धराधिप सुत विस्तारा ॥

सुनि शिक्षा देवर्षि कर, माहात्म्य तमहारि।
गहे चरण निज तात के, सुनु जगपोषणकारि ॥

कृपासिंधु प्रभु यदुकुल केतू ❀ हौं अति विकल रोगदुख देतू ॥
कीन्हो बहु औषधि अभ्यासा ❀ शांत न भयो विपुलतन त्रासा ॥
जो पितु तव अनुशासन पाऊं ❀ घन अटवी दिनकर पदध्याऊं ॥
दारुण दंड रोग नशि जाई ❀ आज्ञा विहँसि दीन्ह यदुराई ॥
सरित चन्द्रभागा तट आयो ❀ मित्र विपिनि रविक्षेत्र कहायो ॥
लाग करन तप युत उपवासा ❀ अस्थिमात्र तन चलत बतासा ॥
मंत्र स्तोत्र जाप अरु पाठा ❀ अस्तुतियुत वंदतविधि आठा ॥
महा फलद उत्सव दातारा ❀ श्रवण स्तुति सो करिय भुआरा ॥

श्लोक ॥

यदेतन्मंडलंशुक्लं दिव्यंचाजरमव्ययम् ॥
युक्तंमनोजवैरश्वैर्हरितैर्ब्रह्मवादिभिः १
आदिरेषहिभूतानामादित्यइतिसंज्ञितः ॥
त्रैलोक्यचक्षुरेषोत्र परमात्माप्रजापतिः २
यएषमंडलेह्यस्मिन् पुरुषोदीप्यते महान् ॥
एषविष्णुरचिंत्यात्मा ब्रह्माचैवपितामहः ३
रुद्रोमहेन्द्रोवरुण आकाशपृथिवीजलम् ॥

वायुःशशांकपर्जन्यो धनाध्यक्षोविभावसुः ४
यएषमंडलेह्यस्मिन् पुरुषोवैप्रकाशते ॥
सहस्ररश्मिः सूर्योयं द्वादशात्मादिवाकरः ५
यएषमंडलेह्यस्मिन् पुरुषोदीप्यतेमहान् ॥
एषसाक्षान्महादेवो वृत्तकुंभनिभःशुभः ६
कालोह्येषमहायोगी निरोधोत्पत्तिलक्षणः ॥
यएषमंडलेह्यस्मिन् तेजोभिः पूरयन्महीम् ७
भासतेह्यव्यवच्छिन्नो धाताह्यमृतलक्षणः ॥
नातः परतरंकिंचित्तेजसाविद्यतेक्वचित् ८
पुष्णातिसर्वभूतानि एषएववसुधामृतैः ॥
अंत्यजान्म्लेच्छजातीयान् तिर्यग्योनिगतानपि ९
कारुण्यात्सर्वभूतानि पासिदेवविभावसो ॥
श्वित्रकुष्ठ्यंधवधिरान् जडान्पंगुलकांस्तथा १०
प्रपन्नवत्सलोदेवो नीरुजःकुरुषेभवान् ॥
दद्रुमंडलमग्नांश्च निर्धनान्पुरुषांस्तथा ११
प्रत्यक्षदर्शीत्वंदेव समुद्धरसिलीलया ॥
कामेशक्तिस्तवस्तोतु मार्तोहंरोगपीडितः १२
स्तूयतेत्वंसदादेव ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥
महेन्द्रसिद्धिगंधर्वै रप्सरोभिःसगुह्यकैः १३
स्तुतिभिःकिंपवित्राभिरन्याभिर्वामहेश्वरा ॥
यस्यतेऋग्यजुःसाम्नांत्रितयंमंडलेस्थितम् १४

ध्यानिनांत्वंपरंध्यानं मोक्षद्वारंचमोक्षिणाम् ॥
अनंततेजसाक्षोभ्य अचिंत्याव्यक्तनिष्कल १५
यन्मयाव्याहृतंकिंचित्स्तोत्रेऽस्मिन्जगतःपते ॥
आर्त्तिभक्तिचविज्ञाय तत्सर्वंक्षंतुमर्हसि १६

दो० सांबु स्तुति सुनिसहस कर, भे प्रसन्न उरवीस।
साक्षात् दर्शन दयो, वर मांगिय यदुवीस ॥

हे सुत तव तप देखि अपारा ❀ मम उर बही कृपा सरि धारा ॥
प्रथम यहै वर दीजिय सांई ❀ निज पद भक्ति प्रीति दृढ़ताई ॥
यह वर बिनु यांचेइ हौं दीन्हा ❀ आनमाँगु जेहिहित तपकीन्हा ॥
होइ कलेवर मम अकलंका ❀ देव धरौं शिर तव पद पंका ॥
एवमस्तु भणतहि क्षिति नायक ❀ दिव्य रूप भो रति सुख दायक ॥
जो सुत तुम यांचो सो पायो ❀ लेहु आन वर मम मन भायो ॥
यह थल विदित होइ तव नामा ❀ अक्षय कीर्त्ति बढ़ै भव धामा ॥
दर्शन स्वप्न नित्य मम पावो ❀ यहि कारण प्रतिमा मम लावो ॥

शुचि स्थापना कीजिये, विधु भागा सरिकूल।
अस भणि अंतर्धान भे, सर्व जगत अनुकूल ॥
साम्बस्तोत्रहि जो पढ़ै, लहै राज्य धन धाम।
प्रीति पात्र सो भानु कर, तन निरोग द्युतिकाम ॥
सांबु चरित रोचक समुझि, व्योमाख्यान समेत।
दुर्गा बरनत चित्त गुणि, सम्यक आनँद हेत ॥

सांबु का तपकरि सूर्य भगवान की प्रतिमा का प्राप्त होना और काठ की प्रतिमा बनाकर स्थापन करना॥

देखो भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व १२८ से १३७ अध्याय में॥

जपत सहस्र नाम रवि केरा ❀ सांबु तपस्या काल सुवेरा॥
कहो स्वप्न महँ तब खगनाथा ❀ सुनु पावनि मम नामनि गाथा॥
शुभ पवित्र अति गुह्य बताऊं ❀ जिनकर पाठ सुनत हरषाऊं॥
ते वर नाम एक अरु बीस। ❀ जपत द्रवत हौं वच वागीसा॥

श्लोक॥

ओंविकर्त्तनीविवस्वांश्च मार्तंडोभास्करोरविः॥
लोकप्रकाशकःश्रीमान् लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः १
लोकसाक्षीत्रिलोकेशः कर्त्ताहर्त्तातमिस्रहा॥
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः २
गभस्तिहस्तोब्रह्माच सर्वदेवनमस्कृतः॥

विदित स्तोत्र त्रिपुर यह ताता ❀ पाठ करै नित संध्या प्राता॥
मोचि सर्व अघ धन सुत पावै ❀ नाहिं जीवन भरि रोग सतावै॥

आन पदार्थ लहै मन चीते ❀ पाठ स्तोत्र करै मनहीते ॥
करि उपदेश धाम मग आये ❀ सांबु पाठ करि मन फलपाये ॥

मनसा वाचा कर्मणा, पाठ करै जो कोइ।
रहै निरामय काल सब, जीवन भरि नर सोइ ॥

एक दिवस कर रुचिर कहानी ❀ कहौं क्षमापति तोहिं बखानी ॥
सांबु तपिन संग सुत अनुरागा ❀ गयो नहान सरित विधु भागा ॥
न्हाइ विरचि मंडल मुदमानी ❀ पूज्यौ रविहि प्रीति उर आनी ॥
करन विचार बहुरि अस लागा ❀ मूर्ति स्थापौं करि बड़ यागा ॥
पै प्रतिमा आकृति कस होई ❀ पूँछहुँ काहि न जानत कोई ॥
चिंता मग्न सांबु मन भारी ❀ शशि भागादिशि दीख निहारी॥
सुधर प्रकाशित प्रतिमा एका ❀ आवत बहत चली तेहि छेका ॥
स्रोतस्वती वहितल आनी ❀ दीन्ह सहसकर निज जनजानी॥

सविधि स्थापित कीन्हि नृप, सांबु मित्रवत सोइ।
नर निर्माणित नाहिनै, नशत पाप गण जोइ ॥

साम्बू हृदय परम सन्देहा ❀ कासु रचित प्रतिमा वर एहा ॥
हारो पूछि सबन संसारा ❀ काहु न तेहि संशय निरवारा ॥
गयो सांबु प्रतिमा शिर नाई ❀ बंदि चरण निज विथा सुनाई ॥
कह प्रतिमा जनि संशय करहू ❀ कहौं कथा निज उर पुर धरहू ॥
पूर्वकाल मम तेज प्रचंडा ❀ जेहितपविकल अवनि नवखंडा ॥
सुर पुर देवन उर संतापा ❀ सहिन सकत मम रश्मिक दापा ॥
आइ सुरन बन्दे मम पादा ❀ निजविस्मय कीन्हो अनुवादा ॥
सौम्य कलेवर धरिय कृपाला ❀ नत जग भस्म होइँ नर बाला ॥

गीर्वान गण विनय सुनि, कीन्ही अंगीकार।
बसन विश्व कर्मा गयो, शाकद्वीप कुमार ॥

तहां जाइ निज तेज छिलायो ❀ सुर नर नाग परम सुख पायो ॥
तबहिं विश्वकर्मा गुण खानी ❀ पादप कल्प काष्ठ शुचि आनी ॥
तदाकार प्रतिमा रचि राखी ❀ शाकद्वीप देव करि साखी ॥
तव इच्छा मम शासन पाई ❀ विधु भागासरि आनि बहाई ॥
यह मम क्षेत्र इष्ट फल दाता ❀ अब तव नाम होइ विख्याता ॥
मध्याह्ने ते परम सुजाना ❀ शुभ मुंडार क्षेत्र मम थाना ॥
मध्य दिवस कालप्रिय वासा ❀ तदु परि यहि थल मोर निवासा ॥
विधि हरिहर क्रमक्रम तिहु जूना ❀ पूजत प्रमुदित सहित प्रसूना ॥

प्रतिमा सुख यह कथा सुनि, भयो सांबु सानंद ।
दुर्गा बरनत रवि चरित, त्यागि बारता मंद ॥

शतानीक कर जोरि बखाना ❀ कहौ मुनीश्वर कृपा निधाना ॥
सांबु प्रतिष्ठा केहिविधि कीन्ही ❀ कस प्रसाद दै शुभ गति लीन्ही ॥
प्रतिमा पाइ सांबु हरषाना ❀ कीन्ह सप्रेम देव मुनि ध्याना ॥
सुमिरतही नारदमुनि आये ❀ बंदि चरण आसन बैठाये ॥
कहौ नाथ मुनिवर विज्ञानी ❀ भानु प्रतिष्ठा सविधि बखानी ॥
प्रथम रचिय उत्तम प्रासादा ❀ तदस्थापि दिनमणि अविषादा ॥
लक्षण मुनि प्रासाद बताइय ❀ केहि प्रकार मुनि नाथ बनाइय ॥
होइ भूमि कस जहँ रवि थापिय ❀ कृपा उदधि सो वेगि अलापिय ॥

सुघर जलाशय प्रथम रचि, ता तट सुन्दर बाग ।
बाग मध्य प्रासाद रचि, रवि स्थापु बड़ भाग ॥

वा उत्तम जन नगरहि पावै ❀ तिन मधि वर प्रासाद बनावै ॥
कूप तड़ाग कर्म फल चाहै ❀ देवस्थापन विबुध सराहै ॥
सुन्दर सघन विटप युत धरणी ❀ महि रमणीय सजल बुधवरणी ॥
करत अवश्य देव तहँ वासा ❀ सरसिजआच्छादितसरखासा ॥

चक्रवाक कारंडव हंसा ❀ क्रौंच आदि खग वास प्रशंसा ॥
शोभित तट जलचर खगजाती ❀ छाया शीतल सघन सोहाती ॥
वृक्षारोपित सर वर वासा ❀ करत देव गण त्यागि दुरासा ॥
गिरि निर्झर सरिता वर कूला ❀ बसत देव पावन मुद मूला ॥

विप्र भवन हित भूमि जो, शास्त्र बखानत तात ।
तौन धरासुर भवन रचि, फल उत्तम यदु जात ॥

चतुष्षष्ठि पद वास्तु बनावै ❀ यथा भवन लगि ज्योतिष गावै ॥
राखै द्वार मध्य महँ भाई ❀ अरु विस्तार ते द्विगुण उँचाई ॥
कटि प्रासाद तृतीय उँचाई ❀ सांबहि नारद वरणि सुनाई ॥
मंदिर गर्भ अर्द्ध विस्तारा ❀ भीति अर्द्ध विस्तार सुआरा ॥
गर्भ चतुर्थ भाग चकलाई ❀ तासु द्विगुण गृह द्वार उँचाई ॥
भाग चतुर्थ यथा विस्तारा ❀ शाखाद्वार प्रवीण विचारा ॥
शाखा अधोभाग श्रुति अंशा ❀ प्रतीहार प्रतिमा यदुवंशा ॥
शाखा शेष विचित्र सचित्रा ❀ बनवावै वर बेलि पवित्रा ॥

अष्टमांश शाखा यथा, रचै पिंडिका राय ।
एक भाग महँ पिंडिका, द्वै महँ प्रतिमा भाय ॥

प्रथम मेरु मंदर[2] कैलासा[3] ❀ अरु विमान[4] नंदन[5] रविदासा ॥
जानु समुद्र पद्म[8] द्विजनाथा[1] ❀ नंदी वर्द्धन[9] कुंजर[10] गाथा ॥
पुनि ग्रहराज[11] कथिय वृष[12] हंसा[13] ❀ आन सर्वतोभद्र[14] प्रशंसा ॥
गनुघट[15] सिंह[16] वृत्त चौकोना[1] ❀ युतषडस्र[19] अष्टास्र सुलोना ॥
लक्षण सव्रन केर सुनु ताता ❀ तोहिं बुझाइ कहौं यदुजाता ॥
अष्ट षष्ट गुण अश्रय जासू ❀ द्वादश खंड द्वार श्रुति तासू ॥
तीस हस्त विस्तार नरेशा ❀ नाम मेरु प्रासाद सुदेशा ॥

---

१ चौकी ❀ गरुड़ ॥

तीस हस्त विस्तार बखाना ❀ दश भूमिका सो मंदर जाना ॥

हस्त अष्ट अरु विंश जेहि, होइ भूप विस्तार।
अष्ट खंड युत सोभिजै, सो कैलास उदार ॥

मंदिर शुभग झरोखा जाली ❀ सप्त भूमिका खचित शुकाली ॥
हस्त एक विंशति विस्तारा ❀ सो विमान प्रासाद भुआरा ॥
षट भूमिका हस्त बत्तीसा ❀ तेहि विस्तार सो नंदन दीसा ॥
जो प्रासाद वर्तुलाकारा ❀ तत्संज्ञा समुद्र निरधारा ॥
अष्ट हस्त विस्तार सोहायो ❀ पद्माकार बिशद कवि गायो ॥
एकहि शृंग भूमिका एका ❀ करिय पद्म प्रासाद विवेका ॥
गरुड़ाकार गरुड़ प्रासादा ❀ सुनु नंदीवर्द्धन अनुवादा ॥
षष्टि हस्त विस्तार प्रयोगा ❀ सप्त भूमिका सुंदर योगा ॥

विंशाश्रय संयुक्त नृप, नंदी वर्द्धन नाम।
उन्नत षोड़स हस्त जो, आनँद वर्द्धक धाम ॥

कुंजर पृष्ठि तथा आकारा ❀ सो कुंजर प्रासाद भुआरा ॥
षोड़स हस्त नृपति विस्तारा ❀ तीनि चन्द्र शाला युत वारा ॥
नाम राज गृह शुभ प्रासादा ❀ निगमागम पुराण वर वादा ॥
द्वादश हस्त होइ विस्तारा ❀ चहुँ दिशि भवन वतुर्लाकारा ॥
एक भूमि का एकहि शृंगा ❀ बृष प्रासाद नाम अघ भंगा ॥
हंसाकार हंस प्रासादा ❀ अष्ट हस्त विस्तार विवादा ॥
चारि द्वार जेहि शिखर अनंता ❀ चन्द्रशाल बाहुल्य भनंता ॥
अरु विस्तार हस्त षट बीसा ❀ पंच भूमिका शुभग कवीसा ॥

विदित सर्वतोभद्र तेहि, संज्ञा भवतल ख्यात।
अति पुनीत प्रासाद यह, दर्शत पाप विलात ॥

---

१ खंड ॥

सिंहाक्रांत सिंह आकारा ❀ शेष नामवत करिय विचारा
भणत मयासुर मम मत माहीं ❀ रचिय भूमिका लंब सदाहीं ॥
यकशत अष्टांगुलित प्रमाना ❀ कीन्ह विश्वकर्मा अनुमाना ॥
साढ़ेतीनि हाथ लम्बाई ❀ होत भूमिका सुघर सोहाई ॥
आलस्थपतिन कर मत एहा ❀ शत अंगुल भूमिका सुगेहा ॥
कोउ भूमिका न्यून रहिजाई ❀ शिल्पकार[1] तापर हर्षाई ॥
रचै कपोत पालिका नीकी ❀ पूरित होत भूमिका फीकी ॥
सुनि प्रासाद बीस तुम गाये ❀ सुनि विवरण मम बुद्धि समाये ॥

सहस्रांशु प्रिय कौन सुनि, विरचौं मंदिर तौन।
नगर मध्य कहि दिशि वदिय, बनवावों वरभौन ॥

सुनि देवर्षि कहो सुनु भाई ❀ मध्य नगर रचना सुखदाई ॥
अथवा प्राची मन्दिर साजै ❀ भूमि परीक्षा प्रथम सुकाजै ॥
सुन्दर वर्ण गंध रस संयुत ❀ स्निग्ध भूमि उत्तम फल प्रद्दुत ॥
जेहि महि कंकर अरु तुष केशा ❀ निकरैं अंगारास्थि नरेशा ॥
तौन धरा प्रासाद न शोभा ❀ सुर प्रासादिक धरणि अक्षोभा ॥
महि ताड़त निकरै घन नादा ❀ अथवा होइ दुंदुभी बादा ॥
सर्ववीर्य जामैं क्षिति बोई ❀ है प्रासाद योग महि सोई ॥
शुक्ल रक्त क्षिति पीतरु श्यामा ❀ क्रमसों चारि वर्ण सुख धामा ॥

यहि प्रकार महि शोधि नृप, मिलै योग प्रासाद।
रचि चौका चतुरस्र तहँ, हरषित त्यागि विषाद ॥

चारिहाथ चौका लम्बाई ❀ तत्समान रचिये चकलाई ॥
चौका मध्य कुंड बनवावै ❀ एक हस्त वर्गात्मक गावै ॥
दश अंगुल गहिरी महि खोदै ❀ समता देखि लेइ चहुँकोदै ॥

१ कारीगर ॥

पुनि मृतिका जो खोदि निकारी ❀ तेहि करि कुंड भरै दृढ़ धारी ॥
भरै कुंड मृतिका रहिजाई ❀ उत्तम भूमि जानु यदुराई ॥
बढ़ै न मृतिका घाटि न होई ❀ मध्यम भूमि जानु नृप सोई ॥
न्यून परै नहिं उत्तम धरणी ❀ यह महि कथा भूप मणि वरणी ॥
होइ पूर्व अभिमुख रवि धामा ❀ हरि करिय पश्चिम मुख तामा ॥

आलय होवै पूर्व मुख, तव दक्षिण की ओर ।
विरंचिय धामस्नानरवि, सुनुअरिगण अहिमोर ॥

उत्तर दिशि कीजिय निरमाना ❀ अग्निहोत्र शाला गुणवाना ॥
श्रीशिव अरु मातृका निकेता ❀ उत्तर मुख विरचै करि चेता ॥
विधिहि वारुणी ओर पधारै ❀ प्रतिमा हरि उत्तरदिशि धारै
दहिन निक्षुभा राज्ञी वामे ❀ थापि लहै सुख पूरण जामे
पिंगल दक्षिण भाग निवासा ❀ वामे नामक दंड विलासा ॥
श्रीस महाश्वेता सन्मुखही ❀ कृत स्थापन नाशत दुखही ॥
वाह्य निकेत अश्विनी जाये ❀ रवि प्रसन्नता हेत गनाये ॥
श्रीषराज रचु दूसरि कक्षा ❀ देव प्रवीण करै नित रक्षा ॥

तीसरि में कल्माष युत, पक्षी दीजिय थापि ।
दक्षिण माठर उत्तरहि, धनपति थापु अपापि ॥

धनदोत्तर रेवन्त विनायक ❀ दुहुँ देवता दास सुखदायक ॥
दक्षिण वाम उभय वर मंडल ❀ अर्घहेत रचु शुभ आमंडल ॥
मंडल दक्षिण सायंकाला ❀ देइ अर्घ सुनु चतुर नृपाला ॥
प्रात वाम मंडल सुखदाई ❀ भानु अर्घ विधि तोहिं बताई ॥
गृह स्नान जो चक्राकारा ❀ चारिकलश भरि आनि सुआरा ॥
शुचि स्नान प्रतिमाहिं करावै ❀ शंख आदि बहु वाद्य बजावै ॥
तीसर मंडल पूजन करई ❀ सब उपचार कथित अनुसरई ॥

दिंडि स्थापन भानु अगारी ❀ व्योम बनावै निकट विचारी ॥

देइ अर्घ मध्याह्न रवि, व्योमस्थान नरेश।
जासु कथा हम प्रथमही, बरणी तोहिं नृदेश ॥

वा मध्याह्न अर्घ हित भूपा ❀ विरचै मंडल तृतिय अनूपा ॥
चक्रनाम तहँ प्रथम न्हवावै ❀ पीछे अर्घ देइ मुद छावै ॥
भानु समीप स्थान पुराना ❀ निर्माणै नृप चतुर सुजाना ॥
नृप सर्वतोभद्र ग्रहराजै ❀ रवि प्रिय विधि प्रासाद समाजा ॥
सुनहु महिपमणि सुठि उपदेशा ❀ युगुल सदन सब भाँति सुदेशा ॥
जो भावै बनवाइय सोई ❀ तदस्थापिये प्रभु भ्रम खोई ॥
पुनि नारद वद सुनु क्षितिनाथा ❀ प्रतिमावर विधान शुभ नाथा ॥
प्रतिमा अखिल देव जगमाहीं ❀ सप्त प्रकार महिप दरशाहीं ॥

कणक रजत अरु ताम्र कृत, चौथ रचित पाषान।
मृतिकाकाष्ठरु चित्रगनु, सुनुअब काष्ठ विधान ॥

पूँछि मुहूर्त ज्योतिषी पाई ❀ उत्सव सहित विपिन चलिजाई ॥
प्रतिमा योग्य खोजि तरु नाना ❀ ग्रहण करै निज धर्म समाना ॥
तजै काष्ठ जो तोहिं गनावौं ❀ प्रतिमा योग्य न हौं मनलावौं ॥
दुग्ध बृक्ष दुर्बल तरु त्यागै ❀ विटप चतुष्पथ काष्ठ न रागै ॥
देवस्थान चैत्य आश्रम तरु ❀ भुजश्मशान न काटु सीखधरु ॥
तजिये बृक्ष लाग वल्मीका ❀ प्रतिमा हित न काष्ठ तेहिनीका ॥
वायुरग्नि विद्युत गज दूखो ❀ शस्त्र हनित तजु पादप सूखो ॥
अपर दोष युत पादप काठा ❀ नहिं प्रतिमा हित वद श्रुतिपाठा ॥

जामधि शाखा एक है, शुष्क अग्र तरु जोइ।
आनदोष युत त्यागिये, प्रतिमा योग्य न सोइ ॥

महुआ[1] देवदारु[2] तरु राजा[3] ❀ चन्दन[4] बिल्व[5] खदिर[6] शुभसाजा ॥
अंवाड़ा[7] अंजन[8] श्रीपर्णी[9] ❀ निंबा[10] पनस[11] अर्जुन[12] अघहर्णा ॥
सरल[13] रक्त चंदन[14] वर दारू ❀ प्रतिमा योग्य पुराण विचारू ॥
देवदारु महुआ सुकाष्ठ वर ❀ चारि वर्ण हित भणत श्रेष्ठतर ॥
निंब सरल अर्जुन श्रीपरना ❀ चंदन रक्त पनस साधरना ॥
देवदारु महुआ तरु जोई ❀ चंदन शमी बिप्र प्रिय सोई ॥
खदिर बिल्व पिप्पल अरु निंबा ❀ क्षत्रिय अर्थ अपर नाहिं किम्बा ॥
अर्जुन खदिर अरुण श्रीखंडा ❀ स्यंदन वैश्य हेत बलवंडा ॥

आम्रशाल अंजन सरज, तेंदू केसरि नाग।
रचै शूद्र प्रतिमा सुघर, निज पूजन बड़ भाग ॥

कथित वृक्ष वर काष्ठहि लावै ❀ प्रतिमा अथवा लिंग बनावै ॥
शुचि एकान्त भूमि सम केशा ❀ कंटक रहित अँगार नरेशा ॥
ताहि थापि पूजे आठौ विधि ❀ प्राप्त होहिं वाको आठौ सिधि ॥
प्राची वा उत्तर झुकि तरसा ❀ उपजो फली होइ वर दरसा ॥
पुष्प पत्र फल युक्त सुशाखा ❀ व्रण विहीन सूधी गुण राखा ॥
अस पादप प्रतिमा रवियोगा ❀ सुनहु आन वर्णत बुध लोगा ॥
आपहि आप टूटि महि परई ❀ सूखि जाइ नीरस संचरई ॥
मधु मक्षिका निवासित भूरुह ❀ प्रतिमायोग न भणतसहसमुह ॥

कार्तिक आदिक मास वसु, शुभ मुहूर्त नर नाह।
पूछि ज्योतिषी ग्रहणकरु, तरुविशेषि सुखलाह ॥
प्रथम देइ चौका चतुर, तरुवर चारिहु ओर।
न्हाइ श्वेत वसनानि धरै, परि हरि बचन कठोर ॥
गंध पुष्प बलि धूप श्रक, आदिक पूजि सुजात।

मंत्र ओं भूर्भुवःस्वः, हवन करै श्रुति ख्यात ॥
यहै मंत्र पूजन समय, पाठ करै रविदास।
सान्त्वन पादप पुनि करै, पढ़िश्लोक गत त्रास ॥
मंत्र० वृक्षलोकस्यशान्त्यर्थं गच्छदेवालयं शुभम् ॥
देवत्वपास्यतेतत्र छेददाहविवर्जितः १
कालेधूपप्रदानेन सपुष्पैर्बलि कर्मभिः ॥
लोकस्त्वांपूजयिष्यंति ततोयास्यसिनिर्वृतिम् २
पाठ श्लोक सहित महि नाथा ❁ पूजै धूप माल्य फल गाथा ॥
पूजि कुठार धरै तरु पासा ❁ शीश कुठार पूर्व दिशि भासा ॥
मोदक खीर भात दधि मांसा ❁ भांति भांतिके पुष्प सुवासा ॥
धूप दीप इत्यादि समेता ❁ पूजन करै पूजि सुर प्रेता ॥
असुर पितृ राक्षस अरु नागा ❁ देइ निशा सब कहँ बलिभागा ॥
पूजि विटप भेटै रुचि मानी ❁ शुभग श्लोक पढ़ै वर वानी ॥

श्लोक ॥

अर्चार्थममुकस्यत्वं देवस्यपरिकीर्त्तितः ॥
नमस्तेवृक्षपूजेयं विधिवत्प्रतिगृह्यताम् १
यानीहभूतानिवसंतितानि बलिंगृहीत्वाविधिवत्प्रयुक्तम् ॥
अन्यत्रवासंपरिकल्पयंतु कल्पादाःसंतुनमोस्तुतेभ्यः २
इमि करि बिनती सोवै जाई ❁ उठि प्रभात करि शौच नहाई ॥
पूजन विटप विप्र वर करई ❁ भोजक पूजि सुदक्षिणा धरई ॥
कटवावै तब जो गिरै, उत्तर अरु ईशान।
उत्तम प्राची कन्यका, वर्णत सब गुणवान ॥

मध्यम परिचिम वायव गाई ❀ आन दिशा नृप अशुभ गनाई ॥
प्रथम वृक्ष शाखा कटवावै ❀ पुनि सयुक्ति काटै शुचिभावै ॥
जाते गिरै पूर्वही आई ❀ जो महि गिरत खंड ह्वै जाई ॥
अथवा श्रवै रुधिर घृत तेला ❀ वा मधु आदि प्रवाह सुवेला ॥
तासु ग्रहण नहिं भूलिहु कीजिय ❀ प्रतिमा योग न वृक्ष लखीजिय ॥
करत पहार कुठार नृराई ❀ पीत वर्ण मंडल परिजाई ॥
पादप तौन निवासत गोधा ❀ मंडल श्याम सर्प आरोधा ॥
पुंड्र वर्ण महँ है पाषाना ❀ कपिल वर्ण पल्वी अस्थाना ॥

शुक्ल वर्ण मंडल बसत, सलिल सदा नरनाह।
अरुणमजीठ समानयदि, कृमिथल नृपपरिनाह ॥

दोष कथित यदि परै लखाई ❀ प्रतिमा योग्य न तजु यदुराई ॥
काटि विटप ढांपै लै पाता ❀ तब प्रतिमा विरचै सुखदाता ॥
एक हस्त प्रतिमा कहि दीनी ❀ वा गुण हस्त कि साढ़ेतीनी ॥
अथवा होइ द्वार अनुसारा ❀ वा प्रासाद मान विस्तारा ॥
सौम्य एक हस्तिक यदुजाता ❀ युगुल हस्त धन धान्य प्रदाता ॥
तीनि हस्तकर प्रतिमा जोई ❀ सर्व सिद्धि कामदवत सोई ॥
साढ़े तीनि हाथ लम्बाई ❀ क्षेम सुभिक्ष दानि रुजघाई ॥
मूल मध्ययुत अग्र समाना ❀ गांधर्वी मूरति अनुमाना ॥

देत सदा धन धन्यनृप, अबसुनु आन बिचार।
अष्ट मांस प्रतिमा रचिय, यथा सुमंदिर द्वार ॥

एक भाग पिंडिका बरावै ❀ युगुल भाग वर मूर्त्ति बनावै ॥
प्रतिमा निज अंगुल चौरासी ❀ उत्तम मूर्त्ति युक्ति यह खासी ॥
मुख तृतियांश ठुड्ढिका कीजिय ❀ शेष ललाट नासिका लीजिय ॥
नाकतुल्य श्रुति उन्नत ताता ❀ नेत्र उभय अंगुल विख्याता ॥

नैन तृतीय भाग तेहि तारा ❀ तासु तृतीय दृष्टि आकारा ॥
उन्नति मस्तक और ललाटा ❀ सदा समान दुहुन कर ठाटा ॥
मस्तक बत्तिस अंगुल माना ❀ ग्रीव होइ नासिका समाना ॥
मुख समान हृदयांतर होई ❀ अस्य नाभि समता वर सोई ॥

नाभि अनंतर शिश्न कृत, उरू उपर कटि भाग।
बाहु प्रबाहु तथा उरू, जंघा सम अनुराग॥

गुल्फ अधो शुभ चरण बनावै ❀ उन्नत अंगुल चारि लखावै ॥
षट अंगुल पदकी चकलाई ❀ गुण अंगुल अंगुष्ट लखाई ॥
पदांगुष्ट तर्जनी समाना ❀ क्रम क्रम त्रै अंगुलि लघुमाना ॥
नख रचना क्रम क्रम शुभ छोटी ❀ विरचै चतुर त्यागि बुधि मोटी ॥
चौदह अंगुल पद लम्बाई ❀ यह प्रतिमा रचना समुझाई ॥
होइ यथा विधि मूर्त्ति अनूपा ❀ पूजन योग्य तौन सुनु भूपा ॥
उभय स्कंध उरू भ्रू छीता ❀ वाक कपोल ललाट सुभाती ॥
होहिं अवश्य उच्च वर शोभा ❀ दरशत आसु दास मन लोभा ॥

चष विशाल सरसिज यथा, मुखद्युति रक्ताकार।
ओष्ठरत्नवतजटितशिर, मुकुट किरिण विस्तार॥
मणि कुंडल अंगद कटक, भूषित हार अनंत।
कमलकणक माला लिये, शोभित रवि भगवंत॥

अस प्रतिमा दायक कल्याना ❀ अधिकअंग नृपभय अनुमाना ॥
न्यून अंग जग रोग प्रचारै ❀ लम्बोदर भव क्षुधा विहारै ॥
कृश प्रतिमा दारिद उपजावै ❀ क्षत युत अस्त्र शस्त्र भय जावै ॥
फूटी मृत्यु दानि अनुमानी ❀ दक्षिण झुकी आयु कर हानी ॥
वाम झुकी योषिता वियोगा ❀ यहि कारण वरणत बुध लोगा ॥

प्रतिमा सुंदर सूधी होई ❀ दूषै जेहि न विदूषक कोई ॥
ऊर्द्ध दृष्टि प्रतिमा आकारा ❀ होत निरक्ष थापना कारा ॥
अधो दृष्टि चिन्ता उपजावै ❀ प्रतिमा लक्षण विबुध लखावै ॥

कहौ शुभाशुभफल नृपति, प्रतिमनकरमतितूल ।
आन श्रवण करु चरितवर, जासहँ परै न भूल ॥

शुभग कमंडल धारण कीने ❀ कमलासन सुख चारि प्रवीने ॥
विधि प्रतिमा विरचै गुण खानी ❀ तन मन वचन हर्ष नृप आनी ॥
कार्तिकेय प्रतिमा जो रचई ❀ रूप कुमार सूर्ति बुध खचई ॥
कर बरछी सादृश्य महाना ❀ ध्वजा मयूर चिह्न संज्ञाना ॥
सुनु सुरेश प्रतिमा आकारा ❀ शुक्लवर्ण रद चारि सुवारा ॥
गजारूढ़ कर वज्र विराजै ❀ सर्वाभरण सहित बुध राजै ॥
सर्व सुलक्षणयुत अति सुन्दर ❀ प्रतिमा शुभग विचित्र पुरंदर ॥
प्रतिमा स्थापन विधि गाई ❀ वेद विहित महिपाल सुनाई ॥

प्रतिमास्थापन विधान ॥

देखो भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व १३६ अध्याय में ॥

यहिविधि प्रतिमा विरचिय ताता ❀ पुनि ईशानकोण हरषाता ॥
तोरण चारि सपल्लव माला ❀ ध्वजा पताकादिक नरपाला ॥
करै अलंकृत वर अधिवासन ❀ प्रतिमा काष्ठ दानि धन दासन ॥
आयु विवर्द्धक मुनिवर गावत ❀ पूजक प्रतिमा सबसुख पावत ॥
मृत्तिका प्रतिमा जग हितकारी ❀ वदत पुराण साधु श्रमहारी ॥
मणिमय प्रतिमा दायक क्षेमा ❀ अरु सुभिक्ष कारक युत नेमा ॥
जातरूप तन पुष्टि बढ़ावै ❀ रचत सुकीर्त्ति सर्व जग छावै ॥
प्रतिमा दानि ताम्र संताना ❀ भूमिदत्त प्रतिमा पाषाना ॥

प्रतिमा उपहत शकुन नृप, नाशत पुरुष प्रधान ।
यहिकारणशुभशकुनलखि, करुप्रतिमानिर्मान ॥

सर्वदेव मय दिनकर जानी ❀ लखिशुभशकुन थापुगुणखानी ॥
सुनि सांबू कर जोरि बखाना ❀ कथिय देवऋषि सर्व विधाना ॥
सर्वदेव मय यथा पतंगा ❀ तथा सुनाइय अखिल प्रसंगा ॥
रविचख उभय बसत बुध भूसुत ❀ शिर ललाटविधि शंकरसंयुत ॥
कंठ विष्णु रद ग्रहसन छत्रा ❀ धर्माधर्म ओष्ठ बस यत्रा ॥
रसना सरस्वती कर बासा ❀ दिशिविदिशा दुहुकर्णनिवासा ॥
आखंडल कृत तालु विहारा ❀ भुव द्वादश आदित्य सुवारा ॥
मुनि गण बास रोम वर कूपा ❀ उदर समुद्र निवास अनूपा ॥

किन्नर यक्ष पिशाच अरु, दानवादि गंधर्व ।
राक्षस आदिक भूप मणि, हृदय विहारत सर्व ॥

सरिता बाहु नाग नृप कक्षा ❀ पृष्टि सुमेरु बसत नरदक्षा ॥
धर्मराज कृत नाभि प्रकाशा ❀ क्षोणी कटि थल शुभ्र विलाशा ॥
लिंग सृष्टि वर बास बखाना ❀ अश्विनि सुतदुहुजानुसुजाना ॥
उरु मधि गिरि गण सात पताला ❀ सोहत अलक मांझ महिपाला ॥
बन समुद्र भूमंडल सारा ❀ भानुचरण थिति करियविचारा ॥
काल अग्नि शिवदंत बसेरी ❀ रवि मूरति हम यहिविधि हेरी ॥
जगत व्याप्त प्रभु देव दिनेशा ❀ यथा वायु प्रति अंग प्रवेशा ॥
वायु निवास सदा रवि काया ❀ परम ज्ञान सांबू हम गाया ॥

विधिप्रतिमास्थापनसुनौ, जिमिविधिकीन्हबखान ।
लहौ परम सुख सुनतहीं, भक्ति मुक्ति कल्यान ॥

तिथि प्रतिपदा द्वितीया ताता ❀ चौथि पंचमी दशमी ख्याता ॥

त्रयोदशी पूर्णिमा अरुराई ❀ सूर्य प्रतिष्ठा हेत गनाई ॥
वार सोम कवि बुध गुरु जोई ❀ जानहु भूप महा शुभ सोई ॥
तीनि उत्तरा रेवति राजा ❀ अश्विनि रोहिणि हस्तसुकाजा ॥
पुष्य पुनर्वसु श्रवण सुजाना ❀ भरणी संयुत ऋक्ष प्रमाना ॥
प्रतिमास्थापन नक्षत गनाये ❀ वर दैवज्ञ शोचि समुझाये ॥
पुनि तुप केश अस्थि पाषाना ❀ अंगारादि शोधि तजि माना ॥
दश वरगात्मक हस्त मनोहर ❀ विरचै मंडप सब विधि सोहर ॥

चारि हस्त वेदी रचै, सरि संगम लै रेत।
चतुर बिछावै तासु तल, लीपै गोबर सेत॥

प्राचीदिशि चतुरस्र बनावै ❀ दक्षिण अर्द्धचंद्र छवि छावै ॥
पश्चिम वर्तुल कुंड खनावै ❀ उत्तर पद्माकार सोहावै ॥
वर पिप्पल गूलर सपलाशा ❀ बिल्व शमी चंदन शुभ आसा ॥
तोरणपंच हस्त नृप साजै ❀ तिनपर शुक्ल बसन भल भ्राजै ॥
कुश प्रसून स्रक भूषित करई ❀ मंत्र अग्नि मेलै उच्चरई ॥
प्राची तोरण कीजिय ठाढ़ा ❀ मंत्र अग्नि आयाहि सु गाढ़ा ॥
पढ़ि तोरण दक्षिण थित करई ❀ इषेत्वोर्जेत्वा उच्चरई ॥
दिशा प्रतीची तोरण बांधै ❀ शन्नोदेवि मंत्र अनुसाधै ॥

मंडप उत्तर तोरणहि, थापि परम यश लेइ।
बहुरि कलश आजिघ्र पढ़ि, तहँ थापन करि देइ॥

सुन्दर चित्र वर्ण पट आनी ❀ वेष्ठित थंभ करै सुद मानी ॥
कलश उपर जव अथवा शाली ❀ शरवा मृतिका भरिये खुशाली ॥
ध्वज पताक चामर सु विताना ❀ करै अलंकृत मंडप थाना ॥
भेरि शंख घंटादि बजावै ❀ वेदध्वनि जय शब्द सुनावै ॥
करै महोत्सव मंडप जाई ❀ वेदी पर कुश पुष्प बिछाई ॥

शुचि प्रसून प्रतिमा ढपि धरई ❀ अष्ट पताक अष्टदिशि करई ॥
पीतरक्त द्युति नील सोहाई ❀ कृष्ण श्वेत पुनि कृष्ण बनाई ॥
हरित चित्र वर्णी भलि राजै ❀ दिग्पालन प्रसन्न हित साजै ॥

करै अलंकृत वेदिका पंच रंग क्षिति नाह।
उत्तराग्र पूर्वाग्र कुश, डासै सहित उछाह ॥

तकिया उभय सेज वर साजै ❀ बहु भोजन मंडप तल राजै ॥
उत्तम छत्र एक तहँ सोहै ❀ दीपमालिका मुनि मन मोहै ॥
रवि स्नान कर सुनौ विधाना ❀ वेदागम पाठक संज्ञाना ॥
होइ निष्ठ द्विज शौचाचारा ❀ मन वच रवि पद जासु अधारा॥
अस ब्राह्मण वा भोजक होई ❀ तरणि स्नान करावै सोई ॥
एक हस्त वर्गात्मक त्याई ❀ गृहस्नान पीढ़ा धरु भाई ॥
पुनि प्रतिमा गज रथहि चढ़ाई ❀ मंदिर ते लावहि तेहि ठांई ॥
पीढ़ापर आसनित कराई ❀ करै पंथ वेदध्वनि भाई ॥

बाजन बाजैं विविधि विधि, मारग अति आनंद।
लाइ सिंधु सुरसरि सलिल, यमुना सुखमा कंद ॥

सिन्धु चन्द्र भागासरि नीरा ❀ पुष्करादि तीर्थन करवीरा ॥
भोजक अष्ट अष्ट द्विज ज्ञाता ❀ अष्टकलश जलकरि सुनुभ्राता ॥
अन्हवावै दिनकरहि सुभाई ❀ होहिं परन्तु कनक घटभाई ॥
रत्न सुवर्ण गंध जल मेली ❀ सर्व बीज सर्वौषधि वेली ॥
ब्राह्मी मोथा और शतावरि ❀ सुवर्चला दूर्वा तामहँ धरि ॥
विष्णुक्रांता रजनी डारी ❀ शंख पुष्पि प्रियंगु खलहारी ॥
कलश मुखन धरु पत्र सोहाये ❀ कोमल आम्र सिरीष बताये ॥
वर पिप्पल के नम्रित पाता ❀ गायत्री अभिमंत्रित ताता ॥

षोड़श कलश न्हवावई, जोन मिलै घट स्वर्ण ।
रजत ताम्र मृतिकाहिके, लावै शुचि अघ हर्ण ॥
पक्व इष्ट वेदी उपर, कुश बिछाइ महिपाल ।
मूर्त्तिथापि अभिषेक करु, पढ़ि यह मंत्र रशाल ॥

॥ मंत्र० ॥

देवस्त्वामभिषचन्तु ब्रह्म विष्णु शिवादयः ॥
व्योमगङ्गाम्बुपूर्णेन कलशेनसुरोत्तम १
मरुतश्चाभिषिंचन्तु भक्तिमन्तोदिवस्पते ॥
मेघतोयाभिपूर्णेन द्वितीयकलशेनतु २
सारस्वतेनपूर्णेन कलशेनसुरोत्तम ॥
विद्याधराभिषिंचन्तु तृतीयकलशेनतु ३
शक्राद्याश्चाभिषिंचन्तु लोकपालाः सुरोत्तम ॥
सागरोदकपूर्णेन चतुर्थकलशेनतु ४
वारिणापरिपूर्णेन पद्मरेणुसुगंधिना ॥
पंचमेनाभिषिंचन्तु नागस्त्वांकलशेनतु ५
हिमवद्धेमकूटाद्या अभिषिंचन्तुचाचलाः ॥
नैऋतोदकपूर्णेन षष्टेनकलशेनतु ६
सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेन पद्मरेणुसुगंधिना ॥
सप्तमेनाभिषंचन्तु ऋषयःसप्तखेचगः ७
वसवश्चाभिषंचन्तु कलशेनाष्टमेनवै ॥
अष्टमंगलयुक्तेन देवदेवनमोस्तुते ८

पढ़ि ये मंत्र पढ़ै श्रुति मंत्रा ❀ तौन प्रवीण जान मत तंत्रा ॥
विबुध समुद्रंगच्छ बखानै ❀ इनमें गंगे पुनि सुख आनै ॥
फिरि समुद्र ज्योतिः इत्यादी ❀ मंत्र पढ़ै सानँद अविषादी ॥
मंत्र सिनीवाली करि ताता ❀ वल्मिक मृतिका लाइ सुगाता ॥
शमी उदुम्बर बेर स पलाशा ❀ पिप्पल कर कषाय लै दासा ॥
पढ़िय ज्ञाय ज्ञेति चढ़ावै ❀ पंचगव्य पुनि चतुर बनावै ॥
धेनुसूत्र गोबर अरु गंधा ❀ गायत्री द्वारा करु धंधा ॥
आप्यायस्व दुग्ध दधि लावै ❀ पाठ क्राव्ण करि दही मँगावै ॥

पढ़ि (तेजोसि) सुमंत्रवर, घृत लावै सानन्द।
(देवस्यत्वा) नीर कुश, प्राप्त करै सुखकन्द ॥

ताम्र पात्र महँ सर्व मिलवै ❀ पंचगव्य रवि न्हान करावै ॥
(या औषधी) औषधी ग्राहै ❀ अन्हवावै प्रभु सहित उछाहै ॥
(द्विपद) मंत्र उबटन वपु सारै ❀ (मानस्तोक) मंत्र उच्चारै ॥
(शिरः) वादिवर न्हान करावै ❀ (विष्णोरराट) युक्त जलनावै ॥
(जातवेदसे) मंत्र सुजाना ❀ शुद्ध करै पंडित गुणवाना ॥
छानि नीर सरिता वर ताही ❀ रवि स्नान करवाउ उमाही ॥
आवाहन बुध करै बहोरी ❀ पढ़ि यह मंत्र सुनहु रण धोरी ॥
पावन मंत्र सिद्धि प्रद गायो ❀ यथा पुराण मध्य लखि पायो ॥

मंत्र ॥ एह्येहिभगवन्भानो लोकानुग्रहकारक ॥
यज्ञभागंप्रगृह्णत्व मर्कदेवनमोस्तुते १
(इदंविष्णुर्विचक्रमे) इत्यार्घ्यमंत्रः ॥

दो०। मृतिकाघटजलप्रथमही, रविअभिषेकबखानु।
ताम्रकलशघटस्वर्णजल, पुनिअभिषेकप्रमानु ॥

सर्व तीर्थ जल औषधि सर्वा ❀ भरै कम्बु परि हरि अघ गर्वा ॥
पुनि पतंग मस्तकहि घुमावै ❀ तेहिकरि दिनमणि न्हानकरावै ॥
बहुरि पुष्प अरु धूपहि साजै ❀ जल पय घृत मधु लै रस राजै ॥
क्रम क्रम न्हान कराय प्रवीना ❀ लहै परम फल अघ दुख हीना ॥
अग्निष्टोम यज्ञ गोमेधा ❀ ज्योतिष्टोम यज्ञ वद वेधा ॥
वाजपेय अरु राज सयागा ❀ अश्वमेध फल लहै सभागा ॥
दर्शन करै न्हात भगवाना ❀ प्राप्त अर्द्धफल होइ सुजाना ॥
गृह एकांत भानु बुध न्हावै ❀ न्हान नीर कोउ लंघि न जावै ॥

न्हान दुग्ध पय आदिको, खाइ न कूकर काग ।
भषै न निंदित जीव कोउ, धन्य दुर्गके भाग ॥

इमि स्नान करवाय बहोरी ❀ (आचमस्व) पदकहिकरजोरी ॥
पात्र वर्धनी नामक द्वारा ❀ देइ भगाग्र नीर त्रै धारा ॥
पोछै प्रतिमा पढ़ि वे दोषी ❀ कोमल अमल बसन सों कोसी ॥
बृहस्पतो पढ़ि मंत्र पिन्हावै ❀ युगुल वस्त्र प्रतिमा छबि छावै ॥
पुनि (युंजान) लाइ गोरोचन ❀ चरचै मलयज अरुण सरोचन ॥
(येनश्रियं) माल पहिरावै ❀ (धूरसि) धूप देइ सुख पावै ॥
(दीर्घायुष्ट्राय) आरती साजै ❀ (समिद्धांजनं) अंजन काजै ॥
रविस्नान करवावै जोई ❀ सुनु नृप द्विज लक्षण जस होई ॥

सर्व अंग पूरण लसैं, न्यूनाधिक नहिं कोइ ।
शास्त्रज्ञ सुन्दर सुकुल, श्रद्धावान कथोइ ॥

आर्यावर्त्त जन्म जेहि धारो ❀ गुरु सेवक जित इन्द्रिय वारो ॥
तत्त्व वेत्ता सौर सुजाना ❀ ब्राह्मण योग्य पतंगस्नाना ॥
हीन अंग अधिकांगन वामन ❀ कृष्ण गौर अति होइ न जातन ॥

१ ऊखका रस ॥

चार्वाक दुर्मुख वाचाला ❀ शूद्र शिष्य रोगी दुख शाला ॥
शूद्र अन्न भक्षक शुचिहीना ❀ बालक वृद्ध कुष्ठयुत दीना ॥
योगी दुर्बुद्धी अरु काना ❀ पंगु ज्ञाति संकीर्ण बखाना ॥
नर खल्वाट अंध अविनीता ❀ कर्ण नासिका रहित सभीता ॥
विकलेन्द्रिय दुरात्मा प्रानी ❀ अरु नक्षत्र सूचि अज्ञानी ॥

वेद पढ़ावै अर्थ हित, इन दोषन युत जानि।
मूर्त्ति स्नान कदापि नहिं, करवाइय बलखानि ॥
प्रथम परीक्षा कीजिये, पुनि आचारज मानु।
दुर्गावरणत चतुर जन, वैदिक मोद महानु ॥

सुनहु सांबु अधिवासन रीती ❀ भूमि पवित्र लीपि सह प्रीती ॥
मंडल रचै विमल पचरंगा ❀ तोरण ध्वज पताक दुख भंगा ॥
छत्र पुष्प स्रक भूषित करई ❀ कुश बिछाइ प्रतिमा लै धरई ॥
अर्घ पाद्य आचमन अनूपा ❀ करि मधुपर्क देइ वर धूपा ॥
दीपदान अभ्यंग पिन्हावै ❀ आन सुरार्पण समहि करावै ॥
करै वर्ष प्रति श्रावण मासा ❀ नव अभ्यंग समर्पण स्वासा ॥
नव अभ्यंग समर्पण काला ❀ विप्रनि भोजन देहि नृपाला ॥
वस्तु सुगंधि लेप तन सारै ❀ प्रतिमा कंठ पुष्प स्रक डारै ॥

(शंभवाय) वर मंत्र पढ़ि, शय्या शयन कराउ।
(विश्वतश्चक्षुः) पढ़ै, सकली करण बनाउ ॥

अंगन्यास निज तन सम जानै ❀ सकली करण नाम बुध गानै ॥
(ओं हं खं खखोल्काय स्वाहा) ❀ मूल मंत्र यह सुनु नर नाहा ॥
या महँ अक्षर मेलि अनूपा ❀ साक्षात् श्री सूर्य स्वरूपा ॥
द्वादश अक्षर मंत्र सुजाना ❀ सहज बनत सुनु नृप बलवाना ॥
नव अक्षर वर मंत्र सोहाये ❀ न्यास हेत नव अंग गनाये ॥

मस्तक[1] अरु नासिका[2] ललाटा[3] ❁ उदर[4] कंठ[5] अरु हृदय[6] सुवाटा ॥
दक्षिण[7] वाम[8] भुजा करु न्यासा ❁ ऋषि नवम वरणो मुनि व्यासा ॥
(ह्रां ह्रीं सः) अक्षर तीनी ❁ द्वादश अक्षर विधि कहि दीनी ॥

द्वादश अक्षर रंग सुनु, क्रम समेत गुणवान ।
अग्नि[1] शुभ्र[2] अंजन वरण, तरुणादित्य[3] समान ॥

कनक[4] श्वेत[5] सरसिज[6] रँग गायो ❁ चम्पक[7] पुष्प तुल्य दरशायो ॥
हिमाकार[8] वा कुंद प्रसूना ❁ अस्त[9] सविद्युत[10] वर्ण त्रिजूना ॥
पीतवर्ण[11] अरु क्षीर[12] समाना ❁ द्वादश रंग धरिय उर ध्याना ॥
प्रतिमहि शय्या शयन कराई ❁ हवन करै मन मोद बढ़ाई ॥
सूर्यकान्त मणि अथवा अरणी ❁ पावक उपजावै वर करणी ॥
सो सिखि पावन परम अनूपा ❁ कुंडन थापि अपर सुनु भूपा ॥
प्राची आदि दिशा वसु भाई ❁ करै हवन तिन महँ नर राई ॥
पूरब (वहवृच) दक्षिण पाई ❁ होम करै (माध्यंदिन) आई ॥

उत्तर कुंडहि होम हित, (आश्वलाय) नहिं जानु ।
(कठशाखा ध्यायी) विबुध, पश्चिम कुंड बखानु ॥

सबन मध्य जो कुंड सोहायो ❁ होम हेत भोजक मन आयो ॥
शमी पलाश उदुंबर ताता ❁ अपामार्ग करु समिध सुगाता ॥
(अग्निमूर्द्धा) पढ़ि सुखपाई ❁ प्रोक्षण आदि कुण्ड करु भाई ॥
संस्कार सिखि गर्भाधाना ❁ करि आहुति दै सहस प्रमाना ॥
पुनि सीमन्त पुंसवन गायो ❁ यथा वेद आगम मुनि पायो ॥
पढ़ि (प्राणाय स्वाहा) सुदमानी ❁ कीजिय जातकर्म संज्ञानी ॥
बहुरि (नमःस्वाहेति) बखानी ❁ नामकर्ण कीजिय सुखमानी ॥
(ब्रह्मयज्ञ) निष्क्रमण बखाना ❁ प्राशन अन्न मन्त्र भषमाना ॥

मंत्र (ज्येष्ठ मग्ने) पढ़िय, चूड़ा कर्महि पाइ ।

व्रत बंधे व्रत मंत्र करि, रीति सनातन राइ॥
(आकृष्णेन) मंत्र वर बानी ❀ करिय समावर्तन नृपज्ञानी॥
(पत्नी पंच) मंत्र वर पाई ❀ प्रतिमा व्याह करौ हरषाई॥
पढ़ि व्याहति आहुति वर साजै ❀ संस्कार प्रति सुमन विराजै॥
हवन अंत देवै बलिदाना ❀ पांच दिवस इमि करै सयाना॥
जो न सधै दिन तीनिहि करई ❀ अथवा एक दिवस संचरई॥
देवागार कोण ईशाना ❀ डासै कुश शय्या वर थाना॥
दहिन निक्षुभा राज्ञी वामें ❀ नायक दण्ड चरण तट तामें॥
मंत्र महा श्वेता पढ़ि भाई ❀ पिंगलस्थ करु प्रेम बढ़ाई॥
करै जागरण रैनि भरि, श्री तमारि तट तात।
चारण बन्दी सूत नट, गीत वाद्य युत भ्रात॥

तोमरछन्द॥

उठिके प्रभात सुजान। प्रतिमा सुबोध न ठान॥
द्विज भोजकानबुलाइ। भोजन हविष्य जिमाइ १
दै दक्षिणा वितमान। कीजिय प्रसन्न अमान॥
गृह गर्भ मंदिर माहिं। जित पिंडिका दरशाहिं २
रथस्वर्णयुत मुनिवाजि। ता पर थपै भल साजि॥
दै अर्घ उत्तम लग्न। थिर चित्त बुद्धि प्रमग्न ३
उत्तम मुहूर्त्त विचारि। प्रतिमा स्थापन कारि॥
मुख अध न ऊरध होइ। सम रूप थापिय सोइ ४
पुनि मूर्त्ति दक्षिण वाम। राज्ञी निक्षुभा धाम॥
पायस समोदक आनि। सो लपिका मुद मानि ५

शष्कुली आदि मँगाइ । दश दिशिप पूजिप भाइ ॥
पढ़ि मंत्र दै बलिदान । सुनु मंत्र शास्त्र प्रमान ६

अथ बलिमंत्राणि ॥

श्लोक इन्द्रायदेवपतये बलिनेवत्रधारिणे ॥
शतयज्ञाधिपेतस्मै पूर्वेइन्द्रायवैनमः १
अग्नयेरक्तनेत्राय ज्वालामालार्चितायच ॥
शक्तिहस्तायतीव्राय नमोवैकृष्णवर्त्मन २
दंडहस्तायकृष्णाय महिषध्वजवाहिने ॥
सूर्यपुत्रायदेवाय धर्मराजायवैनमः ३
नैऋत्यांखड्गहस्ताय नीललोहितकायच ॥
सर्वरक्षोधिपायेह विरूपायनमोनमः ४
वारुण्यांपाशहस्ताय झखारूढसितायच ॥
निम्नगापतयेवीर वरुणायचवैनमः ५
प्राणात्मकायधूम्राय शशगायानिलायच ॥
ध्वजहस्तायभीमाय नमोगंधवहायच ६
गदाहस्तायसोमाय शुष्मिणेनृगतायच ॥
गारुत्मतप्रभायाथ सोमराजायवैनमः ७
गणाधिपतयेदेव नीलकंठायशूलिने ॥
विरूपाक्षायरुद्राय त्रैलोक्यपतयेनमः ८
सर्वनागाधिराजाय श्वेतवर्णायभोगिने ॥
सहस्त्रशिरसेन्नित्यम नंतायनमोनमः ९

चतुर्मुखायदेवाय पद्मासनगतायच ॥
कृष्णाजिननिषंगाय नमोलंबोदरायच १०

मंत्र शुभग बलिदान दिगीशा ❀ दैकरु पुनि सुनु यथा क्षितीशा ॥
पूजि सहस कर विप्र जिमावै ❀ अरु भोजकन सुभक्ष खवावै ॥
बिनु दक्षिणा सफल नहिं यागा ❀ ताते देइ सहित अनुरागा ॥
प्रतिमा स्थापन यहि विधि होई ❀ देश वृद्धि कारक नृप सोई ॥
सान्निध्य नित रहत दिवाकर ❀ कृतस्थापना जौन प्रभाकर ॥
भवास्सिन्धु सहजै तरिजाई ❀ मुक्त होइ पुनि जन्म न भाई ॥
करै सभक्ति सूर्य अधि वासन ❀ सातजन्म आरोग्य कुवासन ॥
त्रै वासर उत्सव मह रहई ❀ गंध पुष्प अर्घ्य भ्रम दहई ॥

भानु लोक वासहि लहै, संशय रहित नरेश।
लखै प्रतिष्ठा तम हरण, तासु वास गो देश ॥
सूर्यस्थापन देत फल, दशवाजी मष जौन।
वाजपेय शत तुल्य वा, भ्रम सन्देह कबौन ॥

मंत्र० ॥ ध्रुवाद्यौश्च ध्रुवाभूमि ध्रुवंविश्वमिदंजगत्।
श्रेयस्ययजमानस्य तथात्वंध्रुवतांव्रज ॥

मंत्र सुखद मुनिनाथ बखाना ❀ प्रतिमा स्थापन सविधि प्रमाना ॥
शताधिक्य यज्ञन जो करई ❀ रवि पूजन सम फल नहिं सरई ॥
जन्म समस्त पाप मग खोयो ❀ अंत अवस्था रवि पद जोयो ॥
पूजन भजन दिनेशहि लागो ❀ बहुरि न विषय वासना पागो ॥
अंत भानुपुर पाव निवासा ❀ उड़ो पाप जिमि तूल बतासा ॥
मंदिर ईंट रहै जब तांई ❀ स्वर्ग भोग नर करै नृराई ॥
नवमंदिर फलते अधिकाई ❀ पुण्य तासु भाषत मुनि राई ॥

उत्तम सदन बनाय नृप, थापै प्रतिमा लाय ।
यहिपुरभोगै विविध सुख, उपमा कथी न जाय ॥
अंत बसै गोलोक नृप, कल्प एक शत तात ।
दुर्गा बरणत भानु यश, मुक्तिदानि विख्यात ॥
पुनि देवर्षि साम्बु प्रति गायो ❀ जेहि नर सुर प्रसाद बनायो ॥
लहत परम फलते परलोका ❀ इत सुकीर्ति सर्वत्र विशोका ॥
कथो प्रतिष्ठा सुरुचि विधाना ❀ अब सुनु साधारण आख्याना ॥
सर्वदेव कर सुनो प्रतिष्ठा ❀ हो तुम साम्बु महा धर्मिष्ठा ॥
प्रथमै प्रतिमहि न्हान करावै ❀ उत्तम चैल अंग पहिरावै ॥
गंध पुष्प युत पूजि सुधीया ❀ शयन करावै शुचि सैनीया ॥
गीत नृत्य सम्यक निशि सारै ❀ करि जागरण बुद्धि विस्तारै ॥
दिवस द्वितीय अर्चि सुर साधू ❀ भवन प्रदक्षिणा करै अवाधू ॥
शोधि लग्न प्रतिमाहिं पुनि, थपै पिंडिका भूप ।
देवन को बलिदान दै, विप्रन भक्ष अनूप ॥
पुनि आचार्य ज्योतिषी शिल्पी ❀ वस्त्राभरण देइ वर कल्पी ॥
करि संतुष्ट सुवचन प्रबोधै ❀ सुर स्थापि इमि निज मन बोधै ॥
सुर स्थापना कारक जोई ❀ सुखी रहत दूनौ पुर सोई ॥
जासु प्रतिष्ठा ताकर दासा ❀ करवावै तजि विषय बतासा ॥
विष्णु स्थापन हित नर नायक ❀ पुरुष भागवत बुद्धि विनायक ॥
भानु हेत भोजक वर ज्ञाता ❀ धार्मिकसुजनचहियशुचिगाता ॥
शिवहित भस्म धारि नर ज्ञानी ❀ अरु रुद्राक्षी चतुर अमानी ॥
अब वरणतहौं आन पुजारी ❀ करै थापना वेद विचारी ॥
मातृका स्थापनहि लगि, मातृ शासनिक ज्ञेय ।
विधि स्थापना हेतु सुनु, वैदिक द्विज कृष्णेय ॥

जौन देव कर करै प्रतिष्ठा ❀ तासु भक्त चाहिय बुधि निष्ठा ॥
यह सामान्य प्रतिष्ठा गाई ❀ देखै सुनै चित्त हरषाई ॥
सो वाँछित फल लहै सुजाना ❀ अंत ब्रह्म पुर वास बखाना ॥
रवि स्थापि पौराणिक बोली ❀ बँचवावै पुराण बुधि भोली ॥
भूषण वसन समर्प ताता ❀ पौराणिकहि देइ वर गाता ॥
आचारजहि प्रसन्नित करही ❀ वस्त्राभरण अर्पि मन भरही ॥
सुर मंदिरन पुराण सुनावै ❀ पाइ मनेप्सित बुद्धि दृढ़ावै ॥
होत मुदित सुर सुनत पुराना ❀ या सम सुर हितकर्म न आना ॥

ध्वजा आरोपन विधि।

देखो अध्याय १३८ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में।

कह नारद पुनि सांबु सुनु, ध्वज आरोपन रीति।
यथा बखानो पद्म तन, शुभ चरित्र वर गीति ॥

एक समय सुर असुर कठोरा ❀ कीन्ह घोर संग्राम न थोरा ॥
देवन चिह्न रचे निज याना ❀ नाम ध्वजा कोउ केतु बखाना ॥
अब लक्षण सुनु लक्ष्य[1] प्रवीना ❀ भवन व्यास सम लंब न हीना ॥
सूध रहित व्रण वेणु मँगावै ❀ हस्त चारि दश आदि नपावै ॥
माप हस्त सम संख्या गाई ❀ विंश हस्त ते नहिं अधिकाई ॥
विषम हस्त ध्वज रचिय न भाई ❀ अंगुल चारिकु होइ सुटाई ॥
अति स्थल पातर ध्वज दंडा ❀ होइ न भूपति पुनि बहु खंडा ॥
दृढ़ता रहित न दंड बनावै ❀ जाहि झकोरि वायु महि लावै ॥

वक्रध्वजा संतति हरत, धन नाशत धनयुक्त।
विषमहस्त रुजदानिन्रप, हानि प्रमाण अनुक्त ॥

---

१ ध्वजा ॥

युगुल हस्त ध्वज दंड प्रमाना ❀ तासु नाम जय भणत पुराना ॥
चारि हस्त कर नाम जयंता ❀ जैत्र हस्त षट विबुध भणंता ॥
अष्ट हस्त रिपुहन्ता नामा ❀ जया हस्त दश नाम ललामा ॥
द्वादश हस्त नंद कहि गाई ❀ अरु उपनन्द चारि दश भाई ॥
षोड़श हस्त इन्द्र तेहि नामा ❀ नाम उपेन्द्र अष्ट दश जामा ॥
विंशति हस्त नाम आनंदा ❀ ये दश भेद वेणु सुख कंदा ॥
लटकै दंड शिरीष पताका ❀ सो दश भांति भेद सुनु वाका ॥
अंगुर[१] पल्लव[२] अन्य स्कंधा[३] ❀ शाखा[४] पताका[५] कदली[६] बंधा ॥

केतु[७] सलक्ष्मी[८] जय[९] ध्वजा[१०], इनकी सुनहु प्रमान ।
विधि अंगुल विरचै ध्वजा, अंगुर नाम बखान ॥

चतुरांगुल कर पल्लव नामा ❀ अंगुल षट स्कंध गुण धामा ॥
अष्टांगुल शाखा मन आनौ ❀ नाम पताक दशांगुल जानौ ॥
द्वादश अंगुल कदली गाई ❀ केतु चारिदश अंगुल भाई ॥
षोड़श अंगुल लक्ष्मी सोहर ❀ अष्टादश जय नाम मनोहर ॥
विंशति अंगुल ध्वजा प्रमाना ❀ ये दश भेद पताक पुराना ॥
मार्जन करै कलश लगु जोई ❀ नाम अंगुरा भाषिय सोई ॥
पहुँचै जौन कलश लगु भाई ❀ पल्लव ताहि भणत मुनिराई ॥
भवन तृतीय भागु लगु जावै ❀ नाम स्कंध तासु बुध गावै ॥

गज[१] समेष[२] अरु महिष[३] सुनु, है कबंध[४] वृष[५] नाम ।
हरणि[६] और वृक[७] नर्गसहित, ध्वजछोड़नके धाम ॥

पूर्वादिक दिशि ध्वजा बनावै ❀ शुक्ल वसन चित्रित मन भावै ॥
सुर सूचक चिह्नित ध्वज होवै ❀ खचित रजत कंचन वर जोवै ॥
विष्णु ध्वजा पर गरुड़ निशाना ❀ शिव ध्वज पर वर वृषभ प्रमाना ॥
ध्वजा विरंचि ताम रस राजै ❀ वासव ध्वज पर हस्ति विराजै ॥

श्री दुर्गा कर ध्वजा सोहाई ❀ रचिय मृगेन्द्र तासु पर आई ॥
महादेव ध्वज कीजिय गोधा ❀ ध्वज रेवन्तं वाजि वर बोधा ॥
वरुण ध्वजा कच्छप रचि दीजै ❀ वातप वायु ध्वजा पर कीजै ॥
मेष चिह्न पावक ध्रुज सोहै ❀ गणपति पर कक्षा मन मोहै ॥

वाहन जो जिस देव कर, सोई चिह्न बनाउ ।
सुनु अब आन विधान नृप, जो सुनि हर्ष बढ़ाउ॥

विष्णु ध्वजा रचु हाटक दंडा ❀ पीत पताका नृपवर बंडा ॥
शिव ध्वज दंड रजत वर शाका ❀ बृष समीप शित वर्ण पताका ॥
ताम्र दंड विधि ध्वजा करीजै ❀ पद्म पताक कमल तट कीजै ॥
दंड ध्वजा रवि स्वर्ण बनावै ❀ व्योम तरे पचरंग सोहावै ॥
किंकिणि सहित पताका नीकी ❀ महा मनोहर भावित जीकी ॥
स्वर्ण दंड वासव ध्वज सोहै ❀ गज समीप बहु वर्ण विमोहै ॥
यम ध्वज दंड लोह मय गायो ❀ महिष समीप कृष्ण रँग आयो ॥
नभोधिपति चांदी ध्रुज दंडा ❀ हंस निकट शित वर्ण अखंडा ॥

धनपति मणिमय दंड रचि, मनुज चरणके पास ।
अरुण पताका बुध बदत, सुखदहरत जनत्रास ॥

रजत दंड ध्वज हलधर केरा ❀ ताल तले शित वर्णित घेरा ॥
दंड त्रिलोह ध्वजा झषकेतू ❀ अरुण पताक मकर तट केतू ॥
षटमुख दंड त्रिलोह बनावै ❀ चित्रित निकट मयूर सोहावै ॥
गणपति दंड ताम्र तट कक्षा ❀ गजरद निकट श्वेत नृप दक्षा ॥
पीतरि दंड मातृका गायो ❀ बहु वर्णी पताक छवि छायो ॥
ध्वजा दंड पीतरि रेवन्ता ❀ अश्व समीप अरुण बुधिवंता ॥
लोह दंड चामुंडा कीजै ❀ मुंडमाल ढिग नील भनीजै ॥
दंड ताम्र गौरी ध्वज सोहै ❀ इन्द्रगोप सम अरुण विमोहै ॥

अनल दंड ध्वज स्वर्णरचि, मेषनिकट बहुवर्ण।
रचै पताका बुद्धि निधि, मुदित चित्त ध्वजकर्ण॥

तोमर॥

करु वायुलोहक दंड मृग निकट नील अखंड॥
धुजदंड भगवति जोइ वह धातुमय रचु सोइ १
हरितट पताक त्रिरंग इमि ध्वजा रचि वर अंग॥
अधिवासनै करु आपु वेदीहि कलशहि थापु २
जल सर्व औषधिलाइ ध्वज न्हान पुनि करवाइ॥
मध्यस्थ वेदीसार तेहि पूजु युत उपचार ३
पुनि पुष्प माल पिन्हाइ बलिदै दिगीश न्रपाइ॥
करिएकनिशिअधिवास दिनद्वितियतजिविषवास ४
बहु द्विजनभोज्यजिमायअरुशुभमुहूर्त्तहिपाय॥
करि स्वस्तिवाचन तात बहुकर्म पावन ख्यात ५

दो०। धुजा चढ़ावै भवन पर, बहु बाजने बजाइ।
बेद ध्वनि ब्राह्मण करै, नित संपति अधिकाइ॥

जौन भवन नहिं होइ पताका ❀ असुर निवास योगगनुताका॥
यहि कारण धुज हीन न राखै ❀ वेद पुराण संत अस भाखै॥
ध्वजा प्रतिष्ठा समय नरेशा ❀ पढ़ै मंत्र यह सुमन सुदेशा॥

मंत्र॥ ओं एह्येहि भगवन्देव देवेश खग वाहन।
श्रीकर श्रीनिवासेश जैत्र जैत्रोपशोभित १
व्यौम रूप महारूप धर्मात्मस्त्वं चतुर्गते।
सान्निध्यं कुरु दंडेस्मिन्साक्षी वधुवतांव्रज २

कुरु वृद्धिं सदाकर्तुःप्रसादस्यार्क वल्लभ।
ॐ एह्यहि भगवन् ईश्वर विनिर्मितउपरि
चरवायुमार्गानुसारिन् श्रीनिवासरिपुध्वंसक
पक्षिनिलयसर्वदेवप्रियसर्वदाशान्तिस्वस्त्ययनं
कुरुसर्व विघ्नान्यप हर सानिध्यं कुरुनमः॥

छिद्र प्रवेश करै पढ़ि एही ❀ महापुण्य होवै जग तेही॥
पूर्वाभिमुख पताका बांधै ❀ जेहिदिशिझुकैताहि अनुसाधै॥
तेहि दिशि पतिके लोक बिहारा ❀ लहै अवशि ध्वज रोपन हारा॥
ध्वज आरोपण सब सुख दाता ❀ अंत भानुपुर सुनु यदुजाता॥
तुम ध्वज मंदिर रचौ विशेषी ❀ अति महिमा पुराण हम देखी॥

इमि समुझाया सांबुकहँ, श्री नारद ऋषि राइ।
दुर्गावरणत सो चरित. निजमन मोद बढ़ाइ॥

मगाद्विज उत्पत्ति पूजन विधि॥

तुम्हरी कृपा देव ऋषिनाथा ❀ दयो दरश रवि जानिअनाथा॥
अरुज भयउँ तन व्यथा नशानी ❀ पायउँ रुचिर रूप सुनु ज्ञानी॥
चिंता एक चित्त मम छाई ❀ श्रवण लगाइ सुनो ऋषिराई॥
प्रतिमा पूजन रक्षण हेता ❀ योग्य कौनु बदु कृपा निकेता॥
तब सुर मुनि बोले मुसक्याई ❀ सुनहु सांबु यामहँ कठिनाई॥
करिहि न ब्राह्मण अंगीकारा ❀ महा दोष निगमादि बिचारा॥
सुर अर्पित धन लैकर जोई ❀ निज निर्वाह करै द्विज कोई॥
देवल ताहि बदत बुध ज्ञाता ❀ वाह्यपंक्ति जिमि शूद्र लखाता॥

क्रियान ब्राह्मी होत कोउ, पाइ देव धन वीर।

द्विजधन सुरधन निंद्य दोउ, ग्रहण न करत सुधीर॥
अंत नरक तेहि मिलत बसेरा ❀ गृध्रोच्छिष्ट कुभक्ष्य कुबेरा॥
यहि कारण द्विज ग्रहण न करई ❀ जीवत कौन नरक महँ परई॥
पूछहु तात भानु सन जाई ❀ सो विशेषि कोउ कहै उपाई॥
अथवा उग्रसेन कुलगुरुसन ❀ पूँछहु जाइ साम्बु हर्षित मन॥
आयो साम्बु गौरमुख पासा ❀ करिबिचार इमि बचन प्रकासा॥
दाया उदन्वान द्विजराई ❀ सुनिय प्रश्नमम श्रवण लगाई॥
हौं मंदिर वर भानु बनायों ❀ प्रतिमा रवि सवाम पधरायों॥
अरु निजनाम नगर तहँ कीन्हा ❀ परम धरम श्रुतिमारग चीन्हा॥
तासु समर्पण हौं करौं, लेहु मोद मय तात।
सांबु बचन सुनि गौरमुख, इमिभाषा मुसकात॥
हम ब्राह्मण न देव धन ग्राहैं ❀ तुम महीप कस धर्म निबाहैं॥
लेत प्रतिग्रह तुम सन एहा ❀ नष्ट होइ विप्रत्व संदेहा॥
होहुँ देवलक शूद्र समाना ❀ राक्षस जन्म धरौं जग नाना॥
तुम कहँ पातक होइ अपारा ❀ यहि कारण तजु चित्त विचारा॥
देवल जौन पंक्ति मुत खाई ❀ होइ अशुद्ध पंक्ति सुखदाई॥
बिनु चांद्रायण शुद्ध न होई ❀ देवल विप्र होइ जगजोई॥
संस्कार कोउ तौ न करावै ❀ पितृ अधोगति वासहि पावै॥
ग्रहण प्रतिग्रह सर्व बखानिय ❀ देव प्रतिग्रह ग्राह्य न जानिय॥
जो न लेइ द्विज दान यह, तौ केहि दीजिय तात।
को पूजन रवि कर करै, बहु उपाय बरगात॥
दीजिय दान मगहि यह ताता ❀ न्याय विप्र अधिकार लखाता॥
को मग बसत कौनपुर स्वामी ❀ का आचरण कासु सुत नामी॥
भानु तनय मग सुनु यदुराई ❀ उतपति तासु कहौं अब गाई॥

भयउ निक्षुभहि शाप कराला ❀ ऋषि ऋजि है गृह भई सुबाला॥
पूजै सिखि पितु आज्ञा पाई ❀ रूपवती छवि अकथ लोनाई॥
अद्भुत कथा एक दिन केरी ❀ करत प्रदक्षिना ताकहँ हेरी॥
मोहि दिनेश प्रवेशे आगी ❀ देखि वाम निज भे अनुरागी॥
प्रगट रूप धरि गहि तेहि हाथा ❀ बोले वचन क्षुधित दिन नाथा॥

कीन्हो उल्लंघन प्रिया, मम न वेद विधि आहि।
उपजाउब हम अवशि सुत, यहि हित गुणि मन माहि॥

अस भणि रवि कीन्हो मन भायो ❀ जल गण्डक बालक उपजायो॥
अग्नि जाति के मग यहि हेतू ❀ अरु द्विजाति विधु जाति भणेतू॥
हैं आदित्य जाति के भोजक ❀ मगवर मिहिर गोत्र गुण ओजक॥
ब्रह्म भ्रत कहि कोउ पुकारै ❀ रवि अन्तरित भये तेहि वारै॥
सुता अवस्था मुनिवर जानी ❀ बोले सरुट चंचला मानी॥
चंचलत्व करि कुकृत कमायो ❀ कहा कहौं जग मोहिं लजायो॥
यह बालक अपूज्य जग होई ❀ सुनि पितु वचन कन्यका रोई॥
पावक रूप भानुवर ध्याना ❀ प्रगटे विश्वरूप भगवाना॥

भयो अपूजित पुत्र तव, मम पितु दीन्हो शाप।
करिय अनुग्रह नाथ अस, मिटै अखिल संताप॥

सुनि बोले प्रभु वाणि गँभीरा ❀ तव पितु बड़ तपसी मति धीरा॥
तासु शाप अन्यथा न होई ❀ पै वर देत तोरि रुचि जोई॥
तव सुत वंश होइ गुण खानी ❀ वेदागम पाठक मम ध्यानी॥
महापुरुष मग संज्ञा पावै ❀ वेद तत्त्व ज्ञाता सुख छावै॥
दाढ़ी रहित न शोभा कामिनि ❀ गति अप्यंग सदा द्युति दामिनि॥
विधि अरु मंत्र रहित मगनारी ❀ श्रद्धा बिनु अविनय नाचारी॥
पूजहि हमहिं बसै मम धामा ❀ योग्य पुरुष मम वंश ललामा॥

बोधि तियहि भे अन्तर्द्धाना ❀ दया राशि दिनकर भगवाना ॥

लहो निक्षुभा परम सुख, मग उतपति असगात ।
ग्रहण प्रतिग्रहते करहिं, निज पितु धन हरषात ॥

बसत कौन थल मग मुनिराई ❀ जानत यह नहिं कहो बुझाई ॥
जानत भानु बसत जेहि द्वीपा ❀ साम्बु गये तब भानु समीपा ॥
सविधि वंदि प्रतिमा प्रतिभाषा ❀ पूरिय नाथ मोरि अभिलाषा ॥
निज पूजन हित मनुज बताइय ❀ तव थल राखि परम सुख पाइय॥
जम्बू द्वीप मध्य नहिं कोई ❀ पूजै मोहिं सविधि जन जोई ॥
शाकद्वीप तात चलि जाहू ❀ है विशेषि तुम कहँ श्रम बाहू ।
लाइ मगहि राखहु मम धामा ❀ ताहि समर्पो धन जन ग्रामा ॥
चारि वर्ण उत सेवक मेरे ❀ कृपापात्र मम बुद्धि घनेरे ।

मर्ग[१] अरु मगर्स[२] प्रवीन सुठु, मानस[३] मंद्ग[४] जाति ।
ब्राह्मण मग क्षत्रिय मगस, मानस वैश्यि तिख्याति॥

मंदग शूद्र तुल्य मन आनिय ❀ सर्व अशंकर वर्ण बखानिय ॥
सुख पूर्वक उत करत निवासा ❀ रचित बिश्वकर्मा मम दासा ॥
सह रहस्य हम वेद पढ़ाये ❀ वेद विधान विविध समुझाये ॥
वेदोक्तित विधान मोहिं सेवत ❀ नित अभ्यंग धरे सुख लेवत ॥
शाकद्वीप सिद्ध गन्धर्वा ❀ आइ करत क्रीड़ा गत गर्वा ॥
जम्बुद्वीप मम पूजन जोई ❀ विष्णुरूप धरि जानिय सोई ॥
शाल्मलि द्वीप शक्रतन पूजा ❀ क्रौंच द्वीप मग रूप न दूजा ॥
प्लक्षभानु तन पूजन मेरो ❀ शाकद्वीप दिवाकर चेरो ॥

पूजत पुष्कर द्वीपजन, ब्रह्मातन मोहिं सत्य ।
रूप सु दुर्गा काशि कुश, पूजत नशत विपत्य ॥

द्विजपति पृष्ठि होइ असवारा ❀ शाकद्वीपहि जाहु कुमारा ॥

मम अर्चन हित मग लै आवहु ❀ परिपूरण फल मंदिर पावहु ॥
तुरत सांबु द्वारावति आयो ❀ सब चरित्र निजपितहिसुनायो ॥
कृष्णायस गा गरुड़ा रूढ़ा ❀ शाकद्वीपहि सांबु अरूढ़ा ॥
तेज रूप मग अखिल निहारे ❀ रवि आराधन तत्पर सारे ॥
करि प्रणाम दहिनावृत लाई ❀ कुशल प्रश्न कीन्ही हरषाई ॥
तुम सब धन्य रूप संसारा ❀ तुमहिं निरंतर रवि आधारा ॥
मैं सुत श्रीयदुपति भगवाना ❀ सांबु नाम मम जगत बखाना ॥

सरित चन्द्रभागा तटे, विरच्यौं रवि प्रासाद।
प्रतिमा प्रभु थापन करी, करिके मन अहलाद ॥

जब पूजन हित मिल्यो न कोई ❀ पूंछेउँ रविहि बांधि कर दोई ॥
तब अर्चन को पुरुष प्रधाना ❀ मगइति बचन कहो भगवाना ॥
यहि कारण तव पासहि आयो ❀ आपु दिवाकर मोहिं पठायो ॥
जम्बूद्वीपहि चलिय गोसांई ❀ रवि अर्चन कीजिय हरषाई ॥
कहो मगन सुनु कृष्णकुमारा ❀ जानत हम यह है होनिहारा ॥
प्रथमहिं दिनकर हमहिं बखाना ❀ पै यक बचन करिय परमाना ॥
बसत अष्टदश कुल यहि देशा ❀ मग ब्राह्मण सुन्दर शुचि भेशा ॥
खगपति सबहि चढ़ाइय ताता ❀ हरषो साम्बु सुनत यह बाता ॥

अखिल चढ़ाये नभगपति, हरषितचलोउड़ाय ॥
जाइ उतारे मित्र बन, विधु भागा तट राय १
मग समूह वैदिक लखत, निज सेवन वित्पन्न ॥
ध्यावत दुर्गा रवि करिय, पूजन चित्त प्रसन्न २
मग आये जम्बू धरणि, भाषो करि विस्तार ॥
बसे अठारह कुल तहां, सांबु नगर सुखसार ३

प्रवृत्त सुश्रूषा सब भये, करिके सांबु प्रणाम ॥
अहिरष्टि आरूढ़ पुनि, गयउ द्वारिका धाम ४
यांचि भोजवंशीन पुनि, सुता अष्टदश लाव ॥
ब्याह हेत सब मगन के, करि निज मनमें चाव ५
सालंकारित रवि भवन, राखी मग सुख काज ॥
पूँछ पतंगहि सांबु पुनि, मग चरित्र वर राज ६

भानु कहो सुनु सांबु कुमारा ❀ पूँछि नारदहि सर्ब बिचारा ॥
नारद भणो सुनहु यदुराई ❀ विदित मोहि मगज्ञान न भाई ॥
त्रिकालज्ञ श्री मुनिवर व्यासा ❀ पूंछहु तात जाइ तिन पासा ॥
साम्बु व्यास आश्रम चलि गयऊ ❀ करि प्रणाम पूंछत अस भयऊ ॥
शाक द्वीप जाइ मुनिराई ❀ अष्टादश कुमार मग लाई ॥
दीन्ह मित्रवन तिनहिं निवासा ❀ श्रीदिनकर अर्चन वर आसा ॥
मम उर संशय यह मुनि नाथा ❀ रवि पूजक ये कस वर गाथा ॥
केहि कारण रविके मन भाये ❀ चारि वेद ज्ञाता बुध गाये ॥

मग भोजक महँ भेद कह, ज्ञान कहा मग लेत ।
धरे मौनब्रत कौन हित, वर्चारच केहि हेत ॥

अरु अव्यंग वस्तु का स्वामी ❀ जेहि धारत मग भे अधिनामी ॥
पढ़त वेद कस मष विधि कैसी ❀ भाषिय पच वेला मुनि जैसी ॥
पूछेउ अति दुर्ज्ञेय कहानी ❀ भानु अनुग्रह मन अनुमानी ॥
सुनहु साम्बु तोहिं कहौं बुझाई ❀ मग सम्यक ज्ञानी यदुराई ॥
प्रवृत सर्वदा कर्म योग गुनु ❀ विपर्यस्त श्रुति पाठ करत सुनु ॥
यहि कारण मग नामहि पायो ❀ विधि समीर मुनि गणतप छायो ॥

राखत कूँच सकल मुद पाई ❀ मग कूर्चित देखिय समुदाई ॥
भोजन मौन करत मुनि राजा ❀ लिये मौनव्रत मग यहि काजा ॥

वर्चनाम दिननाथ कर, अर्चन मन तन लाइ।
वर्चारचभे विदित जग, यहि कारण यदुराइ ॥

भोजसुता तनते अवतरिहैं ❀ भोजक संज्ञा नर उच्चरिहैं ॥
ऋग्यजु साम अथर्वण चारी ❀ विप्रन हित विधि रचे विचारी ॥
ये चारो श्रुति करि विपरीता ❀ मगहित वरणे विबुध विनीता ॥
वदस विश्व वद वविदसु नामा ❀ और अंगिरस नृप गुण धामा ॥
ये चारो पढ़ि मग हरषाये ❀ वेदवेत्ता जगत कहाये ॥
शेष नाम अहिपति गुणधामा ❀ सर्वलोक सुख अर्थ अकामा ॥
रवि रथ बैठि करावलि साथा ❀ वर्षावत निर्मोके सुगाथा ॥
सो निर्मोक करत रवि धारण ❀ नाम अमाहक तासु उचारण ॥

कोउ कहत अव्यंग तेहि, तेहि धारत मग सर्व।
धारण करत जनेउ जिमि, द्विजवर खर्वा खर्व ॥

विप्रन हित गायत्री रूपा ❀ सव्याहृति रवि मंत्र अनूपा ॥
मगन हेत तस करिय विचारा ❀ बिना अमाहक मग कुलवारा ॥
भोजन करै न कौनहु काला ❀ छुऐ न सूतक रजोवति बाला ॥
जेहि प्रकार वेदोक्ति विधाना ❀ सौत्रामणि मष करि संज्ञाना ॥
सुरापाण कृत सब द्विजराई ❀ मंत्र संस्कृत मग तिमि भाई ॥
मद्य मानि हविकारक पाना ❀ करत मषादि द्विजेन्द्र समाना ॥
विधि निषेध जिमि द्विजहितगाये ❀ तदाकार मग हेत गनाये ॥
पूजहि दंड नायकहि धाई ❀ युगुल वार नित हर्ष बढ़ाई ॥

तिहुँ संध्या पूजन करैं, हर्षित रवि भगवान।

१ दाढ़ी २ कैंचुलि ॥

धूप देइ सानंदही, पंच धूप परमान ॥
बहुरिसाम्बु वद सुनु मुनिव्यासा ❀ मग कुमार बोले हौं पासा ॥
पूछ्यौ कथा कहौ निजगाई ❀ बोल एक सुत हर्ष बढ़ाई ॥
अष्टादश लाये तुम बालक ❀ मगनसकल सुनु ममप्रतिपालक॥
दशमग सुत मंदग हैं शेषा ❀ तबहौं चित्त मध्य गुणि देखा ॥
भोज सुता दश मगन बिवाहीं ❀ वसुकुमारिका शक गहि बाहीं ॥
कीन्ह समर्पण मंदग जानी ❀ दीन्ह निवास सुथल रुचिमानी ॥
भोजक भोज सुतासुत भयऊ ❀ विप्र समान प्रतिष्ठा दयऊ ॥
शक दुहितान जौन उपजाये ❀ ते समस्त मंदगहि कहाये ॥
रवि परिचारक तेउ मुनि, धारण कृत अव्यंग ।
कहौं कथा अव्यंगकर, मुनि तव ज्ञान अभंग ॥
सुनु लक्षण अव्यंग सुजाना ❀ सुर मुनि नाग असुरगणनाना ॥
ऋतु अप्सर गंधर्व सयक्षा ❀ क्रम क्रम करत भानु रथ रक्षा ॥
बँधो भानु रथ वासुकि नागा ❀ एक समय कंचुक तिन त्यागा ॥
अति सुंदर कंचुक रवि देखी ❀ धाइ धरी तेहि स्वकर विशेषी ॥
कणक रत्न शोभित करि ताही ❀ बांध्यौ मध्य भाग निज बांही ॥
निज सेवकनि दीन्ह अनुशासन ❀ अस अव्यंग धरौ शुचिवासन ॥
ता दिनते रवि पूजक प्रानी ❀ तत अनुकरण रचत मुदमानी ॥
धारण करत सर्व जन ताहीं ❀ ता बिनु भोजक पावन नाहीं ॥
रवि पूजन अधिकार नहिं, भोजक कह संसार ।
नरक बसत अव्यंग बिनु, पूजत रवि कर्तार ॥
अहिनिर्मोक समानाकारा ❀ लै कर्पास सूत्र सविचारा ॥
अंतर पोल सुखेन बनावै ❀ तासु प्रमाण सुनौ मुनि गावै ॥
अंगुल यकसौ अरु बत्तीसा ❀ सो उत्तम अव्यंग महीसा ॥

मध्यम अंगुल यकसौ बीसा ❀ अधम एकशत अष्टक दीसा ॥
याते लघु अव्यंग न सोहै ❀ अष्टम वर्ष पुत्र जब जोहै ॥
तब अव्यंग दीजिये नीको ❀ मष उपवीत यथा क्रमहीको ॥
धारतही अव्यंग सुजाना ❀ क्रिया धिकारी भोजक माना ॥
नाम अयाहकं अरु पठितगां ❀ सारनाम गावत अव्यंगां ॥

सर्व देवमय वेदमय, सर्व लोक मय सार ।
बसत मूल विधि मध्य हरि, शंभु अग्र आगार ॥

मूल मध्य अरु भाग अगारी ❀ ऋग्यजु साम बसत सुखकारी ॥
वेद अथर्वण ग्रंथ निवासा ❀ महि जल पावक वायु अकासा ॥
सूसत लोक बसत अव्यंगा ❀ धारण भोजक करै अभंगा ॥
मैथुन सूतक समय न धारै ❀ विधि निषेध कीन्हो निरधारै ॥
व्यास वाक्य कर किधौं दिनेशा ❀ सांब तिमिर भ्रम रहो न लेशा ॥
करि प्रणाम नारद पहँ आयउ ❀ सब वृत्तांत मुनिवरहि सुनायउ ॥
कीन्ह प्रश्न नारद मुनिपाहीं ❀ संशय एक रहो मन माहीं ॥
अर्घ स्नान आचमन धूपा ❀ कहि विधि भोजक करै अनूपा ॥

तीनिबार तन लेप करि, मृत्तिका सरित नहाय ।
गायत्री पढ़ि बसन शुचि, धारण करै सुभाय ॥

बैठि पूर्व मुख उत्तर ओरा ❀ करै तीनि आचमन किशोरा ॥
पावन निर्मल नीर मँगाई ❀ मार्जन अभ्युक्षण त्रिविधाई ॥
बिनु आचमन क्रिया जो करई ❀ फलित न तौन वेद उच्चरई ॥
देव पितृ शुचि ग्राहक भ्राता ❀ करि आचमन देव गृह जाता ॥
आसन बैठत करै प्रणामा ❀ पुष्पादिक अर्पे गुण धामा ॥
गुग्गुल धूप देइ पुनि ज्ञानी ❀ पढ़ि यह मंत्र सांबु विज्ञानी ॥

मंत्र ॥ ओंव्रतेन नित्यंव्रतिनो वर्द्धयन्तु देवामनुष्याः ।
पितरश्च सर्वे तस्यादित्यस्य शरणमहं प्रपद्ये ॥
यस्तेजसाप्रथममाविभाति ॥ १ ॥

प्रतिमा शिर पुष्पांजलि देई ❋ वेला धूप पंच गणि लेई ॥
बहु प्रभात उडु देहि दिखाई ❋ धूप दंड नायक बुध गाई ॥
राज्ञी धूप प्रदोष लिखि, तिहुँ संध्या रवि धूप ।
अर्द्धोदित मध्यस्थ नभ, अरु अर्द्धस्त अनूप ॥

तोमर ॥

पूर्वाह्न अर्घ सुजान । देमिहिर कह गुणवान ॥
मध्याह्न अर्थ प्रवीन । मुनिज्वलनहितरचिदीन १
मध्याह्न ऊपर जोइ । सो वरुण अर्घ कथोइ ॥
पंकज अरुण पाटीर । कुंकुम कुसुम करवीर २
जलमेलि भाजन तास । दे अर्घ रवि गुण धाम ॥
कर पात्र तात उठाय । दुहु जानु बैठे राय ३
यह मंत्र पढ़ि नरराय । रवि अर्घ देइ सुभाय॥
तेहि जानु जग बड़भागि । श्रीभानुपदअनुरागि ४

मंत्र ॥ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशि जगत्पते ।
अनुकम्पाहि मे कृत्वा अर्घगृह्णदिवाकर ॥

दो० ॥ पाठादित्य हृदय करु, ता पीछे सुख पाइ ।
मंत्र जपै पश्चात यह, लहै मनेप्सितलाइ ॥

मंत्र ॥

ओंनमोभगवते आदित्याय वरिष्ठाय वरेण्याय

ब्रह्मणेलोककर्त्रे ईशानाय पुराणाय पुराणपुरुषाय सामाय ऋग्यजुरथर्वाय ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यं ब्रह्मणे आदित्यायनमः ॥

अथ त्रिकालिक धूप मंत्रम् ॥

ओंत्वमेकोरुद्राणां वसूनांचपुरातनो
देवानांगीर्भिर भिष्टुतःशाश्वतोदिविः
इति पूर्वाह्न धूप मंत्रः ॥

अथ मध्याह्न धूप मंत्रम् ॥

ओं नमोभगवतेज्वाला मालाकुलायतद्विष्णोः
परमंपदंसदापश्यंतिसूरयःदिवीवचक्षुराततम् ॥
इति मध्याह्न मंत्रः ॥

अथ सायंकाल धूप मंत्रम् ॥

ओंनमोवरुणाय आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमृत्यंच हिरण्मयेनसवितारथेन देवो यातिभुवनानिपश्यन् ॥

अथ गर्भगृह धूप मंत्रम् ॥

ओंमिहिरायनमःतत्पश्चात् निक्षुभायैनमःराज्ञैनमः दंडनायकायनमः पिंगलायनमः राज्ञायनमः श्रोषाय नमः कल्माषायनमः गरुत्मतेनमः दिंडिनेनमः रेवन्तायनमः ईश्वरायनमः व्योमायनमः विश्वेभ्योदेवोभ्यो

नमः रुद्रेभ्योनमः पितृभ्योनमः ऋषिभ्योनमः साध्य भ्योनमः ओंब्रह्मणेंडपतये आदित्याय पुरुषेश्वररूपा यनमोनमः ओं अनेकांताय अंतेरूपायनमः वासुकित क्षक कर्कोटक शंख कुलिकपद्मभ्यो नागराजेभ्योनमः तल सुतल पाताल रसातल विशालादिभ्योनमः दैत्य दानव पिशाचभ्योनमः मातृभ्योनमः ग्रहेभ्योनमः मुंड कायनमः माठरायनमः विनाकायनमः ॥

अथ विनय मंत्रम् ॥

अचिंतस्त्वं यथाशक्त्या मयाभक्त्या विभावसो।
एहिकामुष्मिर्कीनाथ कार्यं सिद्धिंददस्वमे ॥

दो०॥ तीनिकाल करि न्हान जो, पूजे दे वर धूप।
वाजी मषफलसो लहै, धन सुत रविपुर भूप ॥

विधि पूर्वक पूजन अरु सेवा ❀ सर्व सिद्धि दायक सब देवा ॥
बिधि उल्लंघन होन न पावै ❀ जितन कुसुम तित पत्र चढ़ावै ॥
पत्र न मिलैं धूपही देवै ❀ धूप न होइ नीर रवि सेवै ॥
नीरहु देत परै कठिनाई ❀ करै प्रणाम जोरि कर भाई ॥
होहि न शक्ति प्रणामहु केरी ❀ वदत मानसी पूजन टेरी ॥
द्रव्य अभाव विधान बखाना ❀ द्रव्य अछत विधि वर्णित नाना ॥
मंत्रोच्चारण युत करि धूपा ❀ लहै परम फल भक्त अनूपा ॥
पूजै रविहि वसन मुख बाँधी ❀ सुनु कारण नरेश रण काँधी ॥

श्वास वायु प्रतिमहिं लगै, अति अनिष्ट महिपाल।
पूजन रवि देखै मुदित, सो फल लहै विशाल ॥

जनु कीन्हो वाजी मष ताहू ❀ अंत तरणिपुरविनु श्रम लाहू ॥
एक दिवस कर वर इतिहासा ❀ गये द्वारिकहि मुनिवर व्यासा ॥
यदुनायक दर्शन मन चाहा ❀ सादर मिले कृष्ण नर नाहा ॥
पाद्यारघ आचमन करायो ❀ शुक्लासन निजकर बैठायो ॥
करि प्रणाम पूछी कुशलाता ❀ पुनि हरि विहँसि कही यह बाता ॥
शाकद्वीप सांबु चलि जाई ❀ लायो भोजक मन हरषाई ॥
अति उत्तम मग वैदिक ज्ञानी ❀ रवि आराधन रत सब प्रानी ॥

भयो मोहिं आनंद अति, तिनहिं देखि मुनिराय ।
भानु अनुग्रह बिनु जगत, दुर्लभ मोक्ष लखाय ॥

बिनु भोजक आराधन सोई ❀ भानु अनुग्रह प्राप्त न होई ॥
यह हमार निश्चय मुनिनाथा ❀ जस चिंत्यो वरणिय तस गाथा ॥
कह मुनीश तव कथन कृपाला ❀ सत्य धन्य भोजक सब काला ॥
भक्त अनन्य दिवाकर केरे ❀ ज्ञानी कर्मनिष्ट हम हेरे ॥
सदा पुष्प फल औषधि नाजू ❀ अर्पत रविहि जानि भल काजू ॥
भानु प्रीति हित कृत घृत होमा ❀ अन्त लीन ह्वैहैं रवि सोमा ॥
प्रथम कलस्थित पावक भानू ❀ जेहि करि सर्व कर्म अनुधानू ॥
कला द्वितीय प्रकाशित जोई ❀ गगनस्थित जानिय प्रभु सोई ॥

तीसरि रवि मंडल बसत, मंडल त्रिश्रुति स्वरूप ।
तेहि मंडल के मध्य थित, सद परमात्म अनूप ॥

सोई क्षर अक्षर विख्याता ❀ सूक्ष्म स्थूल रूप दुहुँ ताता ॥
निष्कल सकल भेद द्वै वाके ❀ यदुनायक सुनु लक्षण ताके ॥
सकल तत्त्व मय तत्त्व विलाशी ❀ थितअरुअथितकथा विविभाशी ॥
तत्त्व रहित निष्कल अनुमाना ❀ जानत कोउ ऋषय संज्ञाना ॥

१ किरण ॥

गुल्मलता तरु तृण समुदाई ❀ हरि गज वृक मृगादि बहुताई ॥
खग सुर सिद्ध असुर नर काया ❀ सम जल जंतु शरीर समाया ॥
प्रथम कला परमातम नामा ❀ अति दैदीप्त काय गुण धामा ॥
कला द्वितीय नीर बरसावै ❀ कालातमा ताकहँ मुनि गावै ॥

होत कलास्थित तेजसी, जानिय तीसरि वीर ।
निज भक्तन पद मोक्ष प्रद, मोक्ष प्राप्त मतिधीर ॥

सो प्रभु बसत सदा ओंकारा ❀ साढ़े त्रै मात्रा विस्तारा ॥
सानुस्वार अउम् करि गायो ❀ ध्यानोत्तम मकार समुझायो ॥
जो मकार कर धारत ध्याना ❀ सद सदात्मिक तिनकर ज्ञाना ॥
तत्त्व पंच विंशस्थित जोई ❀ है मकार रवि रूपक सोई ॥
करत मकार ध्यान मग भयऊ ❀ निजबुधि तुल्य तात कहिदयऊ ॥
पूजि भानु लै वस्तु अपारा ❀ रविहि जिमावत यथा प्रकारा ॥
यहि प्रकार भोजक भा नामा ❀ हैं समस्त उत्तम गुण धामा ॥
मग भोजक संज्ञा इमि पाई ❀ शाकद्वीप बसत यदुराई ॥

मगभोजक निर्णयकथो, दुर्गा दास बिगोइ ।
पढ़त सुनत आनँद लहत, वक्ता श्रोता कोइ ॥

पुनि वद बासुदेव भगवाना ❀ कथिय महामुनि ज्ञान निधाना ॥
यथा ज्ञान उपलब्धि कृपाला ❀ होइ भोजकन तथा दयाला ॥
हे यदुनाथ लोकपुर स्वामी ❀ अग्रगम्य तुम सब अनुगामी ॥
कृपाकटाक्ष तुम्हारि निहारी ❀ वरणौं भोजक ज्ञान मुरारी ॥
यह शरीर मंदिर आकारा ❀ अस्थि थूणिका दृढ़ आधारा ॥
चर्मस्नायु[1] बंधो वर बंधन ❀ रुधिर मान्स लीपो पद कंधन ॥
विष्ठा मूत्र भरो दुर्गन्धा ❀ जरा शोक रोगादिक धंधा ॥

१ नसैं ॥

मेधा धाम चतुर वर प्रानी ❀ नहिं आशक्त होत तन ज्ञाना ॥

रहत विरक्तित वृक्षतल, एकाकी मुनिराज ।
शुभग वसन धारत नहीं, जानत सर्व अकाज ॥

पत्र कपाल सुभाजन साजी ❀ भोजन करत पात्र गण त्याजी ॥
देखत सर्व जीव सम रूपा ❀ शुचि आतमा स्वछंद स्वरूपा ॥
जिमि तिल तेल दुग्धघृत वासा ❀ काष्ठ मध्य जस अग्नि विभासा॥
तदाकार सब महँ परमातम ❀ जानत विबुध यथा निज आतम॥
चंचल चित्त करै वश भाई ❀ रोकै बुधि इन्द्रिय समुदाई ॥
जिमि पक्षी पिंजरा महँ रोकै ❀ त्यागि समस्त विषय गण थोकै॥
कमठेन्द्रिय सम स्ववश निरोधै ❀ आकर्षै पसारि नहिं क्रोधै ॥
इन्द्रिय गण निरोध सुख ऐसो ❀ सुधापान सुख होवत जैसो ॥

नाशत प्राणायाम सब, दोष धारणा पाप ।
प्रत्याहार विनाश कर, अघ संसर्गिक ताप ॥

ध्यान अनीश्वर गुणहिं निवारै ❀ मनहुँ धातु दोषन सिखि जारै ॥
दोष समस्त शरीर नशाहीं ❀ प्राणायाम तथा भ्रम नाहीं ॥
चित्त शुद्ध हित प्रथम उपाई ❀ करिय विशेषि सुनहु यदुराई ॥
शुद्ध चित्त होतै सुनु ताता ❀ कर्म शुभाशुभ ज्ञान प्रजाता ॥
कर्म शुभाशुभ नाशत भाई ❀ होत बुद्धि निर्द्वन्द गोसांई ॥
निर्मम निरहंकार स्वरूपा ❀ लहि अपरिग्रह परम अनूपा ॥
होत मुक्त तजि विषय व्यकारा ❀ परम धर्म यह योग विचारा ॥
प्रात अरुण ऋग्वेद स्वरूपा ❀ होत दिवाकर राजस भूपा ॥

शुक्ल वर्ण मध्याह्न यजु, सात्विक रवि भगवान ।
सायं तामस श्याम श्रुति, साम स्वरूप बखान ॥

इन तीनिहुँ ते भिन्न सुजाना ❀ ज्योति स्वरूप चतुर्थ प्रमाना ॥

सूक्ष्म निरंजन जानिय सोई ❀ प्रति पादत श्रुति ज्ञाता जोई ॥
पद्मासन आरूढ़ित होवै ❀ करि थिर चित्त सुषुमणा जोवै ॥
पूरक प्रणव द्वार बुध करई ❀ कुंभक रेचक ध्यानहिं धरई ॥
पदाङ्गुष्ठ ते मस्तक लागी ❀ करै ध्यान है दृढ़ अनुरागी ॥
नाभि अग्नि उरनिशिकर ध्याना ❀ मस्तक अग्नि सिखा अनुमाना ॥
इन सब के ऊपर यदुराया ❀ रवि मंडल वर ध्यान गनाया ॥
मोक्षार्थी नर जो संसारा ❀ सो विशेषि यह कर्म पसारा ॥

विविधि ऋषयकरि कर्म यह बसे तुरीय स्थान ।
मुक्त भये रवितन मिले, जन्म मरण विलगान ॥

सम्यक मग तुरीय थल ध्यानी ❀ होत मुक्त भागी गुण खानी ॥
ज्ञान प्रयुक्त चरित मग गायो ❀ तुमहिं सुनाइ परम सुख पायो ॥
जो प्रवीन यहि ज्ञानहि जानै ❀ उत्तम गति भागी चित आनै ॥
श्रद्धावान होइ जन दीजिय ❀ जड़हि न यह उपदेश करीजिय ॥
नाधिकार नास्तिक यहि ज्ञाना ❀ हृषीकेश सर्वज्ञ सुजाना ॥
कहि मग कथा व्यास मुनिराई ❀ निज आश्रमहि गये सुदछाई ॥
गंगा तट बदरी के पासा ❀ व्यासाश्रम प्रसिद्ध तिहुँ वासा ॥
शतानीक कर बांधि बखाना ❀ रहो एक संशय मन आना ॥

उपस्थान कैसे करिय, उदय होतही भानु ।
जानिदास निजकरि कृपा, मुनिवर करिय बखानु ॥

जस तुम प्रश्न करी नर नाहा ❀ तस भारत महँ सहित उछाहा ॥
पूंछ धनुर्द्धर यादव राई ❀ शास्त्र गुप्त बहु कथा सुनाई ॥
अब प्रभु भानु स्तुति वर न्यासा ❀ श्रीमुखकथियजानिनिजदासा ॥
भल रहस्य पूछो तुम भाई ❀ राखो गुप्त पूँछ सुरराई ॥
तम मम परम भक्त विज्ञानी ❀ कहिहा तुमहिं अवश्य बखानी ॥

सब सुख दानि अघौघ विनाशक ❋ राग व्यूह संहार प्रकाशक ॥
धन पुत्रादि विजय दातारा ❋ है आदित्य हृदय सुखसारा ॥

भुक्ति मुक्ति प्रद भूप सुनु, प्रातस्मरण सनोमि।
विघ्नहरण आनँदकरण, नितप्रतिहोइ न ओमि ॥
पाठक भानुस्तोत्र कर, रहत अरोगित गात।
दारिद दंड न देत तेहि, सुनु अर्जुन कुरुजात ॥

अथ आदित्यहृदयारंभः ॥

ओं अस्यश्री आदित्यस्तोत्र मंत्रस्य श्रीकृष्णऋषि रनुष्टुपछन्दः सूर्योदेवताहरितहयरथंदिवाकरंघृणिरिति बीजम् ओंनमोभगवतेजितवैश्वानरजात वेदइतिशक्तिः ओंनमोभगवते आदित्यायइतिकीलकम् श्रीसूर्यनाराय ण प्रीत्यर्थेजपेविनियोगः ॥ ओंह्रांअंगुष्ठाभ्यांनमः ओंह्रीं तर्जनीभ्यांनमः ओंह्रूंमध्यमाभ्यांनमः ओंह्रैंअनामिका भ्यांनमः ओंह्रौंकनिष्ठिकाभ्यांनमः ओंह्रःकरतलकर पृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यासः एवंहृदयादिन्यासः ॥

अथ ध्यानम् ॥

भास्वद्रत्नाढ्यमौलिः स्फुरदधररुचारंजितंचारुकेशो भास्वान्योदिव्यतेजाः करकमलयुतःस्वर्णवर्णःप्रभाभिः विश्वाकाशावकाशोग्रहगण सहितो भातियश्चोदयाद्रौ सर्वानंदप्रदाता हरिहरनमितः पातुमांविश्वचक्षुः १

पूर्वमष्टदलंपद्मं प्रणवादिप्रतिष्ठितं ॥
मायाबीजंदलाष्टाग्रे यंत्रमुद्धारयेदिति २

आदित्यंभास्करं भानुं रविंसूर्यंदिवाकरम् ॥
मार्तंडंतपनंचेति दलेष्वष्टसु योजयेत् ३

अश्वनीकुमार को यज्ञ भाग मिलना ॥

देखो अध्याय १९ ब्रह्मपर्व भविष्यपुराण में ॥

पुनि महिपाल जोरि कर भाषा ❁ कथिये द्वितिया चरित अमाषा ॥
सुनौ द्वितीया केर बिधाना ❁ अति उत्तम व्रत परम प्रधाना ॥
द्वितिया के दिन च्यवन मुनीशा ❁ सुनासीर सन्मुख धरणीशा ॥
निज तपबल अश्विनीकुमारहि ❁ यज्ञभाग दीन्हो सविचारहि ॥
च्यवन कथा प्रथमै मुनि गावौ ❁ ता पीछे माहात्म्य सुनावौ ॥
तप बलिष्ठ अस च्यवन कृपाला ❁ जेहि सन्मुख न इन्द्र वश चाला ॥
पाछिल सतयुग सन्ध्या काला ❁ गंगातीर च्यवन महिपाला ॥
करहिं तपस्या लाइ समाधी ❁ बहुत काल बीते गत व्याधी ॥
एक समय शर्याति नृप, रानी सन समेत।
जात भयो तत्थल नृपति, न्हान चाह्नवी हेत ॥
गंग न्हाइ करि तर्पण दाना ❁ प्रमुदित भयो महीप सुजाना ॥
तदा काल नर नारि सहाई ❁ ब्याकुल अखिल भये नर राई ॥
काहु न कछु अविवेक बखाना ❁ हरि इच्छा महीप घबराना ॥
तस्मिन् काल सुकन्या नामा ❁ नृप पुत्री बोली गुण ग्रामा ॥
मैं सहचरिन सहित बन गयऊं ❁ एकाश्चर्य बिलोकत भयऊं ॥
शब्द भयो यक दूसरि ओरा ❁ इतै आउ मोहिं जा॰ न थोरा ॥
सखिन संग दिशिशब्दके, जाइ दीख बल्मीक[१]।
ताके भीतर छिद्र महँ, दीप शिखा द्वैठीक ॥

---

१ बांबी ॥

अग्रभाग कुश ता महँ डारा ❀ मिट्यो प्रकाश भयो अँधियारा॥
यह सुनि भूपति व्याकुल भयऊ ❀ सुता समेत तहां चलि गयऊ॥
जहां च्यवन मुनि बांधि समाधी ❀ ध्यावत हरिहि प्रछिन्न उपाधी॥
युगुल नेत्र चमकत तिन केरे ❀ फोरे सुता ज्ञान दृग हेरे॥
तब नृप विनय कीन्ह मुनि केरी ❀ क्षमिय दोष कन्या दिशि हेरी॥
कह मुनि क्षमा कर्यौं अपराधा ❀ होहु महीपति सदल अबाधा॥

जेहि कन्या फोरे चषन, करुता सँग मम ब्याह।
जो चाहत कल्याण निज, सुनि हरषो नरनाह॥

बच सुनि भूप परम सुख पायो ❀ विधिवत सुता बिवाह करायो॥
करि प्रसन्न मुनि भवन सिधारा ❀ शोभित भयो राज्य अगारा॥
कन्या भूषण बसन उतारे ❀ मृगछाला बल्कल तन धारे॥
कछुक काल गत आव बसंता ❀ फूले बिविधि वृक्ष गुणवंता॥
कोकिल शब्द करत बनमाहीं ❀ बिपुल सिली मुख गुंज कराहीं॥
लागी बहन सुगंध बयारी ❀ पावक अतन बढ़ावन हारी॥
च्यवन हृदय उपजो कछु क्षोभा ❀ कहो बामसन निज मनलोभा॥
देखु करत खग बिपिनि बिहारा ❀ हमतुम करहिं केलि उपचारा॥

उपजैं बालक ज्ञान निधि, दुहुकुल आनँद दानि।
जोरि हाथ बामा कहो, करत बिहार गलानि॥

आज्ञा लंघन धर्म न नाथा ❀ जस तुम कहौ करौं मुनिनाथा॥
उत्तम शय्या होइ कृपाला ❀ तुम सुंदर तन धरौ दयाला॥
वर आभूषण बसन बनावौं ❀ शुचि सुगंध निज अंग हिलावौं॥
तुम तन सजौ बसन आभरना ❀ जो सबभांति नारि मनहरना॥
तब बसंत ऋतु केर बिहारा ❀ नत केहि कारण सहिय बिकारा॥

सुनि:तिय वच मुनि भयो उदासा ❀ कहिसि असंभव तव मनआसा ॥
प्रथम नहीं सुंदर तन पावौं ❀ बसनाभूषण कहा बनावौं ॥
जस देखी तुम पिता निकेता ❀ तस शय्या न विपिनि करु चेता॥

मेरे धन नहिं धामप्रिय, किमि सबरचौं विचार।
तपबल प्रभु सामर्थ्य तुम, रचिये करिय विहार॥

कह मुनीश सुनु राज कुमारी ❀ तप खोवौं हित विषय बयारी ॥
ताते हौं बिहार तिय त्यागा ❀ असभणि ऋषय करन तपलागा॥
करत सुकन्या मुनि सिवकाई ❀ तजि छलकाम बयारि बहाई ॥
एक समय अश्विनीकुमारा ❀ देव योग तहँ गये भुआरा ॥
देखि सुकन्या रूप लोभाने ❀ प्रेमबोरि वर वचन बखाने ॥
हे भद्रे तू यहि वन घोरा ❀ अकसर रहत काजु कह तोरा ॥
हौं शर्याति सुता सुर सुनहू ❀ च्यवन वाम निज मनमह गुनहू॥
करत तपस्या इत मम स्वामी ❀ तिन सेवन हित वन विश्रामी ॥

तुम को पूँछत हेत केहि, कहौ आपनो हाल।
देव वैद्य अश्विनि तनय, हम सुनु बचन रसाल ॥

बहुकालीन विप्र धन हीना ❀ वाल्मीकि निर्बल अति दीना ॥
याके संग कौनु सुख तोकौं ❀ हौं देवता बरे किन मोकौं ॥
कस तुम अनुचित भाषत देवा ❀ हौं पतिव्रता करत पति सेवा ॥
लाउ बोलि निज पति कह नारी ❀ सुन्दर रूप देहिं सुख कारी ॥
फिरि हम तीनौं प्रविशैं गंगा ❀ बाहिर निकरैं द्वितिय अनंगा ॥
निज रुचि सम तिहुँ रूपविलोकी ❀ वरि एकहि मन करयो अशोकी ॥
पति आयसुलै आतुर आवौं ❀ ठाढ़रह्यो एही थल पावौं ॥
मुनि ढिग जाइ वृतान्त सुनायो ❀ कहो मुनीश मोहिं तिय भायो ॥

देव वैद्य ढिग च्यवन, कहँ लाई साथ सुनारि।

त्रिदशभिषजप्रतिमुनिवचो, तबसम्मतसुखकारि॥

गहि मुनि कर प्रविशे सरि देवा ❀ कछुक काल करि औषधिसेवा ॥
निज सम सुंदर काय बनाई ❀ निकरे तीनहु नीर विहाई ॥
कीन्ह सुकन्या मनहिं विचारा ❀ रूप आयु सम तिहु यहि बारा ॥
तिहु तन भूषण वसन समाना ❀ को मम कंत चित्त अनुमाना ॥
गहौं आन मम व्रत वर नाशै ❀ पति वंचक अघ भूमि प्रकाशै ॥
चीन्हि न सकी विकल मननारी ❀ देव भिषज की विनय उचारी ॥
महाराज तुम देव शरीरा ❀ मैं नारी न छलौ मति धीरा ॥

वृद्ध कुरूपित कन्त मम, तब न तज्यों भगवान ।
अब त्यागौं सुन्दरवपुष, अधमको मोहिंसमान ॥

राखिय मोर धर्म यहि काला ❀ देव वैद्य तुम दीन दयाला ॥
परतिय दिशि हेरत व्यभिचारी ❀ नाहिं देवता कुकृत अधिकारी ॥
सुनि तिय वचन मुदित भे दोऊ ❀ पति देवता छलत खल ओऊ ॥
देव चिह्न तब धारण कीन्हे ❀ लखि ते चिह्न नारि सुर चीन्हे ॥
युगुल पुरुष नहिं चलत निमेषी ❀ महि परसत पग परत न देखी ॥
जानि मनुज तब राज दुलारी ❀ धाइ गहो कर कंत विचारी ॥
तब तापर प्रसून बहु बरषे ❀ बजी दुंदुभी नभ सुर हरषे ॥

उत्तम तनलहिच्यवन मुनि, कही सुरन सनबात ।
तुम कीन्हो उपकार बड़, प्रत्युपकार अजात ॥

तदपि कहौं निज रुचिअनुसारा ❀ करिहै हम तव प्रत्युपकारा ॥
प्रत्युपकार न जो मन लावै ❀ एक विंश नरकनि चलि जावै ॥
मिलत न हमहिं यज्ञ महँ भागा ❀ तात दिवाइय यदि अनुरागा ॥
कीन्ह वचन मुनि अंगीकारा ❀ तिनहिं बिदाकरि गयो अगारा ॥

सुनि यह कथा नृपति शर्याती ❀ गासनारि मुनि गृह हरषाती ॥
देखि च्यवन बड़ आदर कीन्हा ❀ पितुसम जानि सुआसनदीन्हा ॥
मिली सुकन्या मातहि धाई ❀ लखि यामात हर्ष क्षिति राई ॥

कह्योच्यवन भूपाल प्रति, मष कीजिय नर नाथ ।
सामग्री संग्रह करौ, हुहुँपुर होइ सनाथ ।

सुनि आयसु सुनि गा रजधानी ❀ मष सामग्री कीन्ह प्रमानी ॥
ऋत्विक हवन प्रवृत्त लखाने ❀ भाग हेत सुर सब नियराने ॥
च्यवनायसु अश्विनीकुमारा ❀ यज्ञस्थल आये तेहि बारा ॥
देखि तिन्हैं सुरराज बखाना ❀ सुनौ च्यवन मम वाक्य अमाना ॥
ये सुर वैद्य न मष थल भागी ❀ आपु पक्ष कीजिय केहि लागी ॥
कहो च्यवन सुनु देव प्रधाना ❀ ये दोनहुँ देवता महाना ॥
इन कीन्हो मम बड़ उपकारा ❀ आये मष निबंध अनुसारा ॥

इनकहँ भाग विशेषि हम, देव देव शिर ताज ।
जोनलहै मष भाग अब मोहिं लजावै लाज ॥

च्यवन वचन सुनि वासव कोपा ❀ गहि कर वज्र भूप प्रणरोपा ॥
जो न च्यवन मानौ मम बाता ❀ तव शिर हरौं वज्र आघाता ॥
सुनि कठोर सुरपति कर बानी ❀ कर्यौ न क्रोध मुनीश्वर ज्ञानी ॥
दीन्ह भाग अश्विनीकुमारहि ❀ लैकर वज्र सुरेश पुकारहि ॥
अब न दोष मोहिं मुनिवर धाता ❀ कीन्हच्यवन बड़िअनुचितबाता ॥
कोपि इन्द्र तब वज्र उठायो ❀ च्यवन शीशतकि चहतचलायो ॥
इन्द्रस्तम्भन तप बल कीन्हो ❀ सुरपति क्रोधवलित मुनिचीन्हो ॥
रह्यो यथा विधि हाथ उठाये ❀ चलो न आयुध तासु चलाये ॥

निज कहनी पूरण करी, दीन्ह तिनहि मष भाग ।
मष समाप्त कीन्हो तुरत, तब बोले विधि वाग ॥

इन्द्रस्तम्भन काढ मुनीशा ❀ विनती करत कोटि तेंतीसा ॥
सुनासीर कह सुनु मुनिराई ❀ तव आज्ञा शिर धरि सबठाई ॥
देव सदा मम माग अयाँचा ❀ मृषा न तात वचन मम सांचा ॥
रोक्यों तुमहिं न करि जड़ताई ❀ यहि मिष तव कीरति जग छाई ॥
तव प्रभाव जग सुनै जो गावै ❀ धन यौवन विशेषि जन पावै ॥
निज वासा समेत थल आये ❀ तहँ देखे सुर सदन बनाये ॥
तिन महँ उपवन बापी कूपा ❀ जहँ तहँ शय्या नृप अनुरूपा ॥

रत्न जटित भूषण बसन, भोजन चारि प्रकार ।
पुंज पुंज अति कुंजथल, सब सुख योग बिहार ॥
सामग्री सुख भोगकी, लखि हर्षे मुनि राय ।
करत प्रसंशा इन्द्रकर, आनँद मय गृह पाय ॥

कुशिकबंश पिप्पलादऋषि उत्पत्ति और शनिश्चर और भद्रा की कथा ॥

सुनु कुरुनाथ प्रथमही काला ❀ त्रेतायुग दुर्भिक्ष कराला ॥
अनावृष्टि कारण जग छायो ❀ कौशिकमुनि तजि धामपलायो ॥
लीन्हे संग पुत्र अरु नारी ❀ चलो विदेश क्षुधा दुख भारी ॥
विधिवश ऋषय दुरध्वा गयऊ ❀ सुतनारी प्रतिपालन भयऊ ॥
कठिन हृदयकरि मुनि सुत एका ❀ तज्यो पंथ महँ करि अविवेका ॥
क्षुधावलित बालक बिललावै ❀ मात पिता कहुँ दृष्टि न आवै ॥
अति व्याकुल घन कानन गयऊ ❀ पिप्पल वृक्ष विलोकत भयऊ ॥
दीख जलाशय तासु समीपा ❀ धीरज धरो कछुक कुरुदीपा ॥

पिप्पल फल भक्षे तबहिं, बीनि बीनि भूमीश ।

पुनि कीन्हो जलपान मन, सुस्थभयो दुखनाश ॥

पर्णकुटी तहँ रहो बनाई ❋ कालक्षेप करै फल खाई ॥
लागो करन बाल तप सोई ❋ तीनि ईर्षना मनते खोई ॥
दैवयोग नारद तहँ आये ❋ करि प्रणाम आशन बैठाये ॥
देखि अवस्था विनय विचारी ❋ उपजी दया ऋषय उर भारी ॥
ज्ञान दृष्टि करि मन अनुमाना ❋ यह बालक कौशिक संताना ॥
मौंजी बंधन आदि सुआरा ❋ संस्कार कीन्हे दुखटारा ॥
पदक्रमः रहस्य युत वेदा ❋ ताहि पढ़ायो त्यागि दुभेदा ॥
द्वादश अक्षर मंत्र बतायो ❋ जपन लाग बालक सुख छायो ॥

जपहदृतालखिद्विजप चढ़ि, आये तहां सुरारि।
ताहि बतायो देव ऋषि, पहिंचाने असुरारि ॥

माँगिसि हरि विचारि वरदाना ❋ भक्ति दीजिये कृपानिधाना ॥
एवमस्तु कहि प्रभु सुर भेशा ❋ ज्ञानयोग कीन्हो उपदेशा ॥
अंतर्धान भये जन पाला ❋ बालक ज्ञानी भयो सुआला ॥
एकदिवस द्विज मद अनुमानी ❋ नारदसन पूछी वर बानी ॥
कारण कौन पिता परित्यागा ❋ महा दंड सहि फिरेउँ अभागा ॥
कौन कुकृत फल कहौ बखानी ❋ तब बोले नारद मुनि ज्ञानी ॥
तुमहिं शनिश्चर दंड दिखायो ❋ मात पिता बिनु विपिनि भ्रमायो॥
महा दुष्ट ग्रह जगहि सतायो ❋ आपु स्वर्ग बसि मोद बढ़ायो ॥

प्रज्वलित देखहु गगन महँ, सुनि प्रजरो बपुबाल।
आकर्ष्यो निज तप सबल, पर्‍यो भूमि तत्काल ॥

परयो एक भूधर पर मन्दा ❋ टूटो पग भो पंगु अमन्दा ॥
नारद देखि दशा शनि केरी ❋ भे प्रमुदित कह देवन टेरी ॥

देखहु आइ कुगति रविपूता ❀ मन्द कर्म फल विकल बहूता ॥
तापस सुतहि विरंचि हँकारा ❀ कहो वचन करि बड़ सत्कारा ॥
पिप्पल फल ऋषि तपस कमायो ❀ पिप्पलाद तव नाम कहायो ॥
जो शनिवार इहां चलि आवै ❀ तव पूजन करि हर्ष बढ़ावै ॥
सुमिरै पिप्पलाद तव नामा ❀ सम जन्म शनि परै सुधामा ॥
शनि पीड़ा न होइ दुख ताहीं ❀ सत्य सत्य सुत संशय नाहीं ॥

निरपराध लखि सूरसुत, निज दुष्कृत दुखदानि ।
समआयसुवतगगनमहँ, शनिहि बसावहुजानि ॥

ग्रह पीड़ा निवृत्त हित ताता ❀ शांति होम बलि वंदन ख्याता ॥
यहिविधि कीजिय नाहिं अनादर ❀ शनिहिउठावहु यहिहितसादर ॥
तैलाभ्यंग करै शनिवारा ❀ शनि पीड़ा होवै निरुवारा ॥
विप्रहि देइ तेल शनिवासर ❀ तन अभ्यंग करै अरि आसर ॥
प्रतिमा शनि बनवावै लोहा ❀ तैल पात्र महँ धरै अद्रोहा ॥
एक वर्ष शनिवासर पाई ❀ पूजन करै यथाविधि गाई ॥
कृष्ण कुसुम द्वै वस्त्रहु नीला ❀ कृसरभात तिलआदि सुशीला ॥
अर्चन करि गोकंबल श्यामा ❀ तिल सतेल दक्षिणा ललामा ॥

शन्नो देवी आदि नृप, पढ़ि श्रुति मंत्र सप्रेम ।
द्विजहिं समर्पै आनतजि, शनि मोदै यहि नेम ॥

मंत्र ॥ क्रूरावलोकनवशाद्भुवनंयोनाशयति
तुष्टोधनकनकसुखानि ददात्यसौशनैश्चरःपातु

दो०॥राजा नल कहँ स्वप्नमहँ, देव शनिश्चर आनि ।
यहै मंत्र उपदेश किय, भई क्लेशकी हानि ॥

मंत्र॥खंडंनीलांजनप्रख्यं नीलवर्णसमप्रभम्

छायामार्तंडसंभूत नमस्यामिशनैश्चरम् १

पढ़ि यह मंत्र विदा द्विज करई ❀ शनि पीड़ा सहजे निरवरई ॥
प्रति शनिवार करै व्रत जोई ❀ एक वर्ष नियमित नर कोई ॥
करै सविधि उद्यापन राजा ❀ तासु मंद नहिं करत अकाजा ॥
कहि अस सर्व देव सँग लाई ❀ विधि निज लोक गये सुखपाई ॥
पिप्पलाद ब्रह्मायसु माना ❀ पठयो मंदहि पूर्व स्थाना ॥
यह बृत्तान्त सुनै दै काना ❀ भक्ति समेत ज्ञान अज्ञाना ॥
ताहि शनिश्चर नाहिं सतावै ❀ कबहुँकि सादसाति नियरावै ॥
लोहमयी प्रतिमा बनवावै ❀ तेल पूर्ण घट ताहि धरावै ॥

सहित दक्षिणा विप्र कहँ देइ हरै शनि पीर ।
बरननदुर्गा जिमि सुनोरवि सुतचरित प्रधीर ॥
संक्रांतिस्थंडिल विरचि पद्म अरुण श्रीखंड ।
रक्त कुसुम करवीरलै पूजै रवि द्युति चंड ॥

मंत्र॥नमस्तेविश्वरूपाय विश्वधाम्नेस्वयंभुवे
नमोनमस्तेवरद ऋक्सामयजुषांपते १

अर्घ्य देइ यहि मंत्रहि जापी ❀ अवशि होइ नर जपत अपापी ॥
जल घट घृत भाजन पुनि लावै ❀ पद्म एक गांगेय बनावै ॥
द्विजहि समर्पै तत्क्षण सोई ❀ करै नक्तव्रत आनँद भोई ॥
एकवर्ष इमि करि प्रतिमासा ❀ अरचै मार्तंड शुचि वासा ॥
वर्षांते घृत पायस लाई ❀ हवन करावै हर्ष बढ़ाई ॥
द्वादश धेनु बहुरि मँगवावै ❀ असमर्थी गो एक पुजावै ॥
सस्ययुक्त महि स्वर्ण स्वरूपा ❀ रजत ताम्र चूरण कृत भूपा ॥
जातरूप प्रतिमा दिन नाथा ❀ विप्रहि देवै जानि अनाथा ॥

वित्तशाठ्य त्यागन करै व्रत संक्रांतिहि पाइ।
सुरपुर निवसै प्रलय लगु जन्मान्तर भुवराइ॥
चक्रवर्ति भूपति बनै सुत नारी वर पाय।
व्रत विधान सिखवै लिखै सुनै स्वर्ग चलिजाय॥

भद्राविष्टि नाम विख्याता ❀ कोसिकासु कन्या यदुजाता॥
पूजन तासु करिय केहि रीती ❀ भाषिय नाथ मानि मम प्रीती॥
विष्टि अर्यमा सुता नरेशा ❀ छाया तन उपजी वर भेषा॥
शनि सोदरा कृष्ण वपु सोहै ❀ ऊर्द्ध केश दीरघ रद जोहै॥
महा भयंकर उपजत काला ❀ जगत ग्रसन धाई महिपाला॥
यज्ञ विघ्न उत्सवन नशावै ❀ सकल जगत कहँ त्रास दिखावै॥
तब दिनेश मन कीन्ह बिचारा ❀ करिय विवाह सुता सुख सारा॥
कन्या तरुण पिता गृह रहई ❀ अनुचित ताहि वेद बुधकहई॥

करि विचार सँग काहुके ठहरायो तेहि व्याह।
क्षणकमात्रमहँविष्टि तब भक्षिलियोनिजनाह॥

मंडपादि फेंके चहुँ ओरा ❀ लागी जग पीड़न करि जोरा॥
बहुरि भास्कर मन अनुमाना ❀ यहि दुष्टा कौतुक कस ठाना॥
निज इच्छावश वर्त्तनहारी ❀ क्रूरा रूप भंग अघकारी॥
सुता कुलक्षनि मम गृहजाई ❀ करौं कासु सँग यासु सगाई॥
करत विचार मनहिं तनहारी ❀ तेहि अवसर आये सुखचारी॥
प्रजादंड सबु रविहि बखाना ❀ सुनि बोले दिनेश भगवाना॥
तुम कर्ता हर्ता संसारा ❀ हरै क्लेश भव करु उपचारा॥
विष्टिहि बोलि कहा कर्तारा ❀ सुनु भद्रे वर वाक्य हमारा॥

बव बालव कौलव करण, आदिक अन्तनिवासु।

खेती व्यापारादि कर, तव बिच करै प्रकासु ॥
भञ्जु ताहि मम आज्ञा पाई ❀ आनहि अवन सताइय जाई ॥
तीनि दिवस बाधा तजु बाला ❀ दिवसचतुर्थ करियनिजख्याला ॥
वादिन सब सुर असुर समाजा ❀ तव पूजन करिहैं शुभ साजा ॥
जो न तोहिं मानै जग प्रानी ❀ करु विध्वंस कार्य तेहि जानी ॥
अस उपदेश गये विधि लोका ❀ विष्टि भ्रांत चित तीनिहुँओका ॥
देवं नरादिक दंड दिखावै ❀ विधि आयसु इव सबहिं सतावै ॥
यह भद्रा उत्पत्ति बखानी ❀ आत दुष्टा भूपति अनुमानी ॥
अवशि त्यागिये त्यागन योगा ❀ विष्टि रूप सुनु वद मुनिलोगा ॥
महाकृष्ण नासा बड़ा, दीर्घ दंष्ट्र पग मोट ।
उन्नत जंघा जानिये, फटे कपोल खसोट ॥
मलिन वसन मुख उगिलत ज्वाला ❀ लोक नाश हित रूपक काला ॥
पांच दण्ड मुख द्वै तेहिं ग्रीवा ❀ ग्यारह दंड हृदय बुधि सीवा ॥
चारि नाभि कटि पांच बखानी ❀ तीनि पुच्छ तिवसत सुनु ज्ञानी ॥
आनन वास कार्य कह नाशै ❀ कंठे भद्रा धनहिं विनाशै ॥
प्राण हानि उरवास प्रदायक ❀ नाभी देश कलह उपजायक ॥
अर्थ भंग कटिवास बखाना ❀ दायक विजय पुच्छ अनुमाना ॥
भद्रा पुच्छस्थान विचारी ❀ शुभ अरु अशुभकार्य जगकारी ॥
द्वादश भद्रा नाम बताये ❀ सुनहु यथा पौराणिक गाये ॥
धन्योदधिमुख जानिये, भद्रा तीसरि जानु ।
महामारि खरानना, कालरात्रि पहिंचानु ॥
महारौद्रासुरविष्टि गनु, कुल पुच्छिका प्रमान ।
भैरवि महकाली बदत, असुर क्षयंकरी जान ॥

श्लो०॥धन्यादधिमुखीभद्रा महामारी खरानना ।
भैरवीचमहाकाली असुराणांक्षयंकरी १॥

उठि प्रभात ये द्वादश नामा ❀ पाठ करै जो पुरुष सुठामा ॥
ताहि न होइ व्याधि भय भाई ❀ रहै प्रसन्नित गृह सुख पाई ॥
युद्ध द्यूत नृप कुल जय पावै ❀ विष्टि प्रताप कलेश नसावै ॥
विधिवत विष्टिहि पूजै जोई ❀ सिद्धि कार्य ताको सब होई ॥
भद्रा व्रत जो धारण करई ❀ सो न पिशाच भूत वश परई ॥
प्रेत ग्रहादिक करै न पीड़ा ❀ प्रिय वियोग लहि सहै न व्रीड़ा ॥
अंत भानुपुर करै बिहारा ❀ सत्य सत्य नहिं मृषाविचारा ॥
रवितनया शनि भगिनी क्रूरा ❀ निज भक्तन दायक सुख पूरा ॥

भद्रा व्रत विधि सुनिय नृप, रैनिहि भद्रा पाय ।
द्वै वासर तब कीजिये, सदृढ़ नक्त व्रतराय ॥

एक प्रहर पहिले नहिं होई ❀ भद्रा तीनि प्रहर दिन जोई ॥
तौ उपवास करै नरपाला ❀ नतरु नक्तव्रत शुभग विशाला ॥
व्रत वासर अवला नर भाई ❀ तन आमलक सुगंध लगाई ॥
सर्वौषधि जल करै नहाना ❀ अथवा सर सरिता असनाना ॥
तर्पण देव पितृ कर ताता ❀ कुश भद्रा विरचै शुचि गाता ॥
पुष्पादिक सामग्री लाई ❀ पूजन करै सविधि हरषाई ॥
भद्रा नामहिं हवन करावै ❀ अष्टोत्तर शत आहुति लावै ॥
तिल पायस ब्राह्मणै जिमावै ❀ पूजन अंत मंत्र पढ़ि ध्यावै ॥

मंत्र॥छायासूर्यसुतेदेवि विष्टेइष्टार्थदायिनि ।
पूजितासियथाभक्त्या भद्रेभद्रप्रदाभव १

दो०॥ सत्रह भद्रा व्रत करै, यहि प्रकार कुरुराज ॥

अन्त लोह के पीठपर, धरि प्रतिमा वरसाज १
कृष्णवसन गंधादि करि, अर्चि लाइ कुसराहि ॥
शुचि नैवेद्य लगाइ करि, लोह तैल तिलमाहि २
धेनुसवत्सा श्याम रँग, कंबल असित समेत ॥
देइ द्विजहि दक्षिणा सहित, उद्यापन के हेत ३
यहि विधि भद्रा व्रत करै, होइ न कारज हानि ॥
दुर्गा बरणत मुदितमन, इप्सित प्रद अनुमानि ४

सुनु पंचमी कल्प क्षितिपाला ❀ नाग सुखद तिथि सुनौ हवाला ॥
तिथि पंचमी लोक अहि राजा ❀ होत महा उत्सव भल साजा ॥
यहि तिथिपय अहिन्हान करावै ❀ अभय दान नागन ते पावै ॥
वासुकि तक्षक संयुत काली ❀ ऐरावत मणिभद्र कराली ॥
कर्कोटक धृतराष्ट्र धनंजय ❀ अष्टकुरी अहि द्रवत रणंजय ॥
जो पंचमी दुग्ध अहि प्यावै ❀ तेहि कुल कबहुं न सर्प सतावै ॥
मातु शापवश जरत अहीसा ❀ गोपयन्हात होत दुखखीसा ॥
दीन्हशाप माता केहि हेतू ❀ सो चरित्र कथु मुनिकुल केतू ॥

मथो देवतन सिंधु जब, अतिबल करि सुनरूप ।
श्वेतवर्ण उच्चैश्रवा, निकरो सुन्दर रूप ॥

कद्रू बनितहि कही बुझाई ❀ श्वेतवर्ण सब तन हयभाई ॥
है परन्तु यहि श्यामल केशा ❀ सर्व श्वेत बणिता उपदेशा ॥
यह सुनि कद्रू कहो बहोरी ❀ भगिनी भई दृष्टि की भोरी ॥
कृष्ण रोम तव दृष्टि न आवै ❀ नैन दोष सित सर्व जनावै ॥
जो हौं श्याम केश दिखरावौं ❀ आपनि दासी तोहिं बनावौं ॥
श्वेत होइ तौ हौं तव दासी ❀ वणिता कहो बात यह खासी ॥

करि प्रण निज निज धाम सिधाई ❀ कद्रू बोली सुत कटकाई ॥
कहो केशवत धारि शरीरा ❀ चपटौ हय तन तुम सब वीरा ॥
कहो भूधरन जननि सुनु, हम छल करब न काउ।
को अधर्म निज शिर धरे, रहै जाइ तव दाउ ॥
सुनि सुतगिरा कोप युत बोली ❀ आज्ञा भंग कस्यो लखि भोली॥
जन्मेजय नृप पांडव वंशा ❀ करिहै मष अहि नृप अवतंशा ॥
ह्वैहौ दग्ध सकल तुम जाई ❀ सकै न वणिता धर्म बचाई ॥
मातु शाप सुनि सुत घबरायो ❀ अज थल सर्बस बासुकि आये ॥
समाचार निज विधिहि सुनायो ❀ सुनत पितामह सबहि दृढ़ायो ॥
पाया वर सुवंश महँ ताता ❀ जरत्कारु नामक द्विज ज्ञाता ॥
उपजै महातपी अहि नाहा ❀ ताकर निजकुल करिय बिवाहा॥
जरत्कारु तव भगिनी जोई ❀ तापस नारि अवशि अहि होई ॥
उपजै ताके उदरते, आस्तीक गुण खानि।
रोकै जन्मेजय मषहि, तुमहिं बचावै आनि ॥
सुनि विरंचि वाणी हरषाने ❀ करि प्रणाम गमने सुखसाने।
वहै यज्ञ तव पितुवर कीन्हा ❀ धर्मराज प्रति हरि कहिदीन्हा।
गत शतवर्ष सर्प मष ह्वै है ❀ विषधर अष्ट कुरी दुख पैहै।
जरत अखिल अहिराज विचारी ❀ रक्षिहि आस्तीक तपकारी ॥
पंचमि विधि बोधे पवनारी ❀ यहि कारण तिथि नाग पियारी ॥
आस्तीक रक्षे तिथि पांचा ❀ अहि प्यारी पंचमि तिथि सांचा ॥
पूजै अहि पंचमि तिथि पाई ❀ युत प्रार्थना सुनो सुवराई ॥
त्रिपुर निवासी जे अहिराजा ❀ लेहु प्रणाम मोर ससमाजा ॥
होहु प्रसन्नित जानि जन, करै विसर्जन नाग।
करि द्विज भोज्य कुटुम्बकह, भोजनदेइ सभाग ॥

प्रथमै भोजन मिष्ठ जिमावै ❀ ता पीछे रुचि सरिस खवावै ॥
जेमै आपु कुटुँबगण साथा ❀ पूजै यहि विधि अहिवर गाथा ॥
अंत नागपुर लहै विहारा ❀ संग अप्सरा विविधि प्रकारा ॥
जन्म पांच पुनि भूतल पावै ❀ यशी प्रतापी भूप कहावै ॥
कह राजा सुनु कृपा निकेता ❀ डसे सर्प तन तजै सचेता ॥
का गति होत तासु कर स्वामी ❀ किमि उद्धार लहै दुख धामी ॥
सर्प डसे तन त्यागत जोई ❀ निर्विष सर्प होत है सोई ॥
जो सद्गति चाहै तेहि केरी ❀ करै सो यत्न सीख सुनि मेरी ॥

भाद्र शुक्लपंचमी व्रत, करि शरसुख रचिनाग ।
हाटक अथवा रौप्यकर, पूजै युत अनुराग ॥

पुष्प कंज कर बीर चमेली ❀ धूप दीप नैवेद्य सकेली ॥
पूजि खीर घृत लड्डू लाई ❀ विप्रन भोजन देइ नृराई ॥
पुनि अनंत वासुकि महिपाला ❀ शंख पद्म कंबल अहिमाला ॥
कर्कोटरु अश्वतर नामा ❀ युत धृतराष्ट्र सुनौ गुण ग्रामा ॥
शंखपाल कालिय तक्षकवर ❀ पिंगल द्वादश नाम शुभगतर ॥
पूजै एक एक प्रति मासा ❀ एकाहार चौथिवर वासा ॥
सवृत पंचमी पूजै नागा ❀ करै निशा भोजन वर बागा ॥
स्वर्ण सर्प पुनि अंत बनावै ❀ एक धेनु सँग ताहि पुजावै ॥

यह उद्यापन विधि कही, करै जीव उद्धार ।
तवपितु निजपितु तरनहित, कीन्हो व्रतसविचार ॥

जात रूप महिधर बनवाई ❀ बहु रंभा सवत्स मँगवाई ॥
संकल्पी विसारि सब शोचा ❀ नृपति परीक्षित पायो मोचा ॥
पितु ऋणते छूटो यहि भांती ❀ जीव चराचर नाना जाती ॥
जो यह कथा सुनै मन लाई ❀ पढ़ै सुखेन मोद मन छाई ॥

ताके कुल न सर्प भय होई ❋ कथन मोर अन्यथा न कोई॥
उत्तम लोक पंचमी दाता ❋ मोहिं न भ्रम नरनाह लखाता॥
पुनि करजोरि महीप बखाना ❋ सुनिय महामुनि ज्ञान निधाना॥
सर्परूप रँग लक्षण गावौ ❋ जाति वर्ण पुनि मोहिं सुनावौ॥

सुनु नरेश हिमवानगिरि, एक समय अविषाद।
ऋषि कश्यप गौतम सुमुनि कीन्हसुरुचि संवाद॥

सो सम्वाद परम सुख दाई ❋ सुनि तव प्रश्न कहौं अब गाई॥
अग्निहोत्र करि कश्यप भूपा ❋ बैठे हिमि गिरि सुथल अनूपा॥
सविनय गौतम पूछिनि आई ❋ अहि लक्षण बरणौ मुनि राई॥
उत्पति वर्ण स्वभाव सुजाती ❋ किमिविष अवतनाडिविषमाती॥
सर्प दंष्ट्र सार्पिणि औधाना ❋ होत कौनविधि करिय बखाना॥
नारि पुरुष अरुक्लीव बतावौ ❋ जानि दास सबविधि समुझावौ॥
गत के मास सर्प सुत जावै ❋ डसत कौन विधि विष उपजावै॥
आन समस्त कथौ उपचारा ❋ अहि विषते किमि होइ उबारा॥

कश्यप बोले प्रश्न सुनि, सुनु मुनीश चितलाय।
सर्प चरित वर्णन करौं, तव सन्देह नशाय॥

मास शुक्र शुचि अहि मद छावै ❋ सानँद मैथुन में चित लावै॥
चारिमास बर्षा ऋतु पाई ❋ अहिनी गर्भ धरै मुनिराई॥
नभ श्रुति युगुल अंड पुनि देही ❋ कार्तिक मास पाइ गतिएही॥
आपहि खात अंड अहिनारी ❋ त्यागत कछुक अंत कुविचारी॥
पुरट रंग अंडा मुनि जोई ❋ अहि नर प्रगटत विषधरसोई॥
हरित वर्ण जेहि लांबी रेखा ❋ ताते अहिनी जन्महि देखा॥
जौन सिरीष पुष्प रँग जानौ ❋ सर्प नपुंसक जन्म बखानौ॥
सेवत अंड नारि षटमासा ❋ तब उपजत भूधर अनयासा॥

उपजतही दिन सात महँ, कृष्ण वर्ण ह्वै जात।
वर्ष एकसो बीस की, आयु सर्प विख्यात॥

सर्पमृत्यु जग आठ प्रकारा ❀ जो उबरै सो जिये भुवारा॥
मानव सिखि चकोर मंजारा ❀ अलि शूकर अरु नकुल विचारा॥
पशु पद तल दबि मरत अनेका ❀ आठ भांति मुनिकरिय विवेका॥
जमत दंत दिन सप्तम पाई ❀ एकविंश दिन बिष सरसाई॥
दंशकाल विष देत गिराई ❀ विष संकलन होत पुनि भाई॥
वाल सर्प माता सँग डोलै ❀ दिवस पचीस आयु विष झोलै॥
गत षटमास केंचुली त्यागै ❀ द्विशत विंश पग अहितनजागै॥
गो रोमा सम सूक्ष्मित पादा ❀ देखि न परत अपाद विवादा॥

गमन काल निकरत चरण, थिरत प्रवेशत अंग।
होत पाँगुली अंगमहँ, द्वै सौ बीस अभंग॥

संधि होत तन द्वैसौ बीसा ❀ जन्मत कुसमय जौन अहीसा॥
तिनके होत न्यून बिष ताता ❀ जीवन सत्तर वर्ष लखाता॥
अरुण पीत नीले रद जाके ❀ अल्पायुष विष मंदहि ताके॥
अरु,अति भीरु सर्प मुनि सोई ❀ अहि मुख एक जीभ युग होई॥
बत्तिस दंत सर्प मुख माहीं ❀ विषधर चारि दाढ़ मुनि आहीं॥
चारिनाम मकरी सकराली ❀ कालरात्रि यमदूत विषाली॥
चारौ दंतन के सुरचारी ❀ अज हरि हर यम भणतपुकारी॥
सबते लघु यमदूती नामा ❀ अति विषधर मुनिवर गुणधामा॥

यमदूती करि जेहि डसै, तत्क्षण त्यागै प्रान।
मंत्र यंत्र अरु औषधी, तथा सर्व अनुमान॥

मकरी दाढ़ शस्त्र आकारा ❀ दाढ़ कराल काग पदतारा॥

कालरात्रि धौं अंक टकारा ❀ यमदूतिका रूप आकारा ॥
उपजत सक्रम एकहि एका ❀ मास मास प्रति करिय विवेका ॥
बात पित्त कफ अरु सनिपाता ❀ होत सक्रम इन महँ वरगाता ॥
गुड़ घृत भात कषाय अनाजा ❀ कटुहित वस्तु भक्ष वर काजा ॥
श्वेतरु अरुण पीत अरु श्यामा ❀ चहुँ दाढ़न के रंग ललामा ॥
द्विज क्षत्री स वैश्य अरु सूद्रा ❀ वर्ण चारि चहुँ दाढ़ प्रभूदा ॥
सर्प दंत विष बसत न राई ❀ दक्षिण नेत्र निकट बसराई ॥

क्रोध वलित हेरत जबै, विष उतरत तब दंत।
काटत कारण अष्ट करि, इमि गुणवंत भनंत ॥
दर्वनें पूरवें बैरतें, भयें मदें क्षुधां व्यकारं।
बिषविर्वद्धि सन्तान पित, काल प्रेरणा द्वार ॥

डसत काल उलटै जो नागा ❀ वक्र दंत ... दबो अभागा ॥
जाके डसे होइ क्षत भारी ❀ बैरी ... जन्म तनधारी॥
घाउ एक रद परै न देखी ❀ काटो भय वश सर्प विशेषी ॥
रेखा सहस दाढ़ लगिजाई ❀ मद करि डसो सर्प मुनिराई ॥
द्वै रद क्षत लघु परै लखाई ❀ क्षुधा वलित काटो अहिधाई ॥
घाव दुदंत रुधिर भरि पूरा ❀ तौ विष वेग डसो अहि क्रूरा ॥
लगें दंत द्वैक्षत लघु ताता ❀ सुत रक्षाहित डसो अघाता ॥
लगें काग पदवत रद तीनी ❀ अथवा चारि दंत क्षत कीनी ॥

काल प्रेरणा जानिये, जीवन को न उपाय।
भेदतीनि अहि डसितकर, सुनुमुनीश मनलाय ॥

प्रथम दंष्ट जानिये सुआरा ❀ पुनि दष्टानु पीत स विचारा ॥
दष्टोद्धृत तीसरो बिभेदा ❀ सुनुमुनि चिह्नत्यागि सबखेदा ॥

ओहि काटे ग्रीवा झुकि जाई ❀ ताहि दंष्ट भाषत मुनिराई ॥
काटि करै विषपान अहीशा ❀ कहु दंष्टतु पीत मुनि ईशा ॥
विष तृतियांश प्रवेश विचारौ ❀ दंष्टोद्धृत अस चिह्न निहारै ॥
नसै अखिल विष परै उताना ❀ निर्विष आपु होइ बलवाना ॥
सुनु लक्षण काटो अहि काला ❀ वचन भंग बोलै मतवाला ॥
हृदय शूल चष देखि न परई ❀ रदतन कृष्ण वर्ण अनुसरई ॥

निकसै विष्ठा मूत्र जेहि, ग्रीव कंध कटि दंड ।
होइ अधोमुख चष चढ़ै, कम्पदाह तनमंड ॥

निकरै रुधिर न तनमहँ काटे ❀ वेत घात वपु रेख न पाटे ॥
काटो जौन ठाम थल सोई ❀ जम्बू फलवत कृष्णित होई ॥
भरो क्षतज क्षत जनु पद कागा ❀ रुकै कंठ हुचकाय अभागा ।
पांडु वर्ण त्वच बाढ़ै श्वासा ❀ काल सर्प तेहि डसो न आसा ॥
क्षत सूजै होवै रँगलीला ❀ छुटै प्रसेद होइ वपुशीला ॥
अनुनासिक बोलै कछु बाणी ❀ लटकै ओष्ट अस्थि दुखप्राणी ॥
हृदय कम्प काटो अहि काला ❀ पीसै दंत नैन बिकराला ॥
लम्बी श्वास ग्रीव लटकावै ❀ फरकै नाभि कालतेहि खावै ॥

दर्पण वा जल मधि लखै, नहिं छाया निज अंग ।
रवि अतेज चष अरुण तन, पीड़ित कँपै उतंग ॥

दृग अरुणित पीड़ा तनमाहीं ❀ काल दंष्ट सो यमपुर जाहीं ॥
अष्टमि नवमी चौदशि माका ❀ नागपंचमी काटै जाका ॥
ताके जीवन महँ सन्देहा ❀ नहिं आश्चर्य तजै नर देहा ॥
आर्द्रा मघा बिशाषा स्वाती ❀ मूल श्लेखा भरणी घाती ॥
शतभिष कृतिका पूर्वा तीनी ❀ डसै तजै तन औषधि हीनी ॥
पूर्व कथित नक्षत्र न पाई ❀ जो विषखाइ अवशि मरिजाई ॥

तिथि नक्षत्र हुऔ यक साथा ❀ अग्निहोत्र शाला नर नाथा ॥
नामसान सूखे तरु पासा ❀ काटे तन त्यागै अनयासा ॥

सर्प एक शत अष्ट सुनि, नर शरीर महँ जानु ।
मुख्य एक दश जानिये, अब सुनु तासु बखानु ॥

अस्थि ललाट नर्न भ्रू बीचा ❀ अंडकोष मधि हृदय नगीचा ॥
वस्ति कक्ष काँधे अरु तालू ❀ ठोढ़ी गुदा डसै यदि कालू ॥
अथवा घात लगै मुनि भारी ❀ मरै विशेषि भणत गुणधारी ॥
डसै सर्प जब वैद्य बुलावै ❀ दूत विचारि सुजान पठावै ॥
रोगी हीन वर्ण जो होई ❀ उत्तम दूत न भेजौ कोई ॥
उत्तम वर्ण केर लघु धावन ❀ नहिं मुनीश जानिय मनभावन ॥
दंड हस्त नहिं धावन नीको ❀ लखि द्वै दूत वैद्य मन फीको ॥
श्याम अरुण धारे तन बासा ❀ वा शिर एक वस्त्र लपटासा ॥

मर्दै तैल शरीर महँ, खोलै केश कुदूत ।
घोर शब्द पीटै करण, दूत किधौं यमपूत ॥

अब अहि उदय सुनहु मुनिराई ❀ कहो यथा शंकर समुझाई ॥
है अनंत अर्यमा प्रकाशा ❀ वासुकि जनु शित भानु विकाशा ॥
तक्षक सोम रूप दरशाई ❀ कर्कोटक बुध तुल्य लखाई ॥
महापद्म कविपद्म वृहस्पति ❀ शंखपाल अरु कुलिक शनैगति ॥
सुनु प्रहरार्द्ध विचार भुआला ❀ डसै भूमिधर दुःख विशाला ॥
रवि दिन दशम चौथवां भाई ❀ सोमे अष्टम द्वादश पाई ॥
भौमे षष्टम दशम विचारौ ❀ बुधो चौथ अष्टम निरधारौ ॥
गुरु वे दूसर षष्टम जानौ ❀ अष्टम चौथ दशम कवि मानौ ॥

प्रथम षोडसो दूसरो, द्वादशमो शनिवार ।
निंदितहैं प्रहरार्द्ध ये, डसे सर्प दुखभार ॥

सुनु गौतम यमदूती काटो ❁ जियै न बृथा औषधी ठाटो ॥
निशा दिवस महँ सुनु मुनिराई ❁ द्वै प्रहरार्द्ध सर्प कर भाई ॥
दूसर अरु षोडसो सुजाना ❁ डसे सर्प तन तजै सयाना ॥
बाल अग्र जल जेतिक आवै ❁ तेतिक बिष अहिकाटि गिरावै ॥
जबलगि भुजा पसारै भाई ❁ तब लगि विष मस्तक चढ़िजाई ॥
बिष जब रुधिर प्रवेशै पावै ❁ तब अति बृद्धि होइ मुनि गावै ॥
तैल बिन्दु जिमि जल उतराई ❁ फैलत द्विगुण त्वचा बिषधाई ॥
रुधिर चारि गुण वृद्धि सु लेता ❁ पित्त अष्ट गुण वृद्धि कथेता ॥

कफमें षोड़श गुण बढ़त, बात तीस गुण होत ।
मज्जामें सोइ साठि गुण, प्राण अनंत उदोत ॥

सर्व शरीर श्रोत विष रोकै ❁ रुकै श्वास पहुँचै यमलोकै ॥
पंचभूत बिरचित तन एहा ❁ मिलतभूत सब निज निज देहा ॥
शीघ्र चिकित्सा बिषकी करई ❁ होत बिलम्ब प्राण परि हरई ॥
सर्पादिक विष जंगम गायो ❁ थावर बूटी रूप गनायो ॥
सप्त वेग विष करिय विचारा ❁ प्रथमहि तन रोमांच भुआरा ॥
दूसर वपुष प्रस्वेद जनावै ❁ तीसर कायाकम्प दिखावै ॥
चौथो रोकत श्रोत शरीरा ❁ पंचम हुचकी लावत बीरा ॥
षष्टम वेग ग्रीव लटकावै ❁ सप्तम प्राण हरण बुधगावै ॥

इन सातों बेगान महँ, सप्तधातु विषजात ।
सुनु लक्षण इन सबनकर, तोहिं कहों बिख्यात ॥

लोचनाग्र छावै अँधियारी ❁ सकै न ठाड़ होइ नर नारी ॥
तब जानो विष त्वचा समानो ❁ औषधि तासु तुरंतहि आनो ॥
तगर प्रियंगु आंक जड़ लावै ❁ अपामार्ग जल घोटि पियावै ॥
जब विष रुधिर पहूंचत जाई ❁ दाह अंग मूर्छा दरशाई

तन नीलोफर तगर उशीरा * चंदन कूट हींगलै बीरा ॥
सिंदुवार जड़ मूल धतूरा * मिरच मिलाइ पियाउ जरूरा ॥
मिटै न दाह वैद्य तब राई * जड़ कटेलि इन्द्रायन लाई ॥
वृश्चि कालि मेले औहिगंधा * घृतमें पीसि देइ वर धंधा ॥

जो न घटै विष लाइ तब, सिंदुवार जड़ हींग।
नाश देइ तत्कालहीं, घ्यावै तजि जग ढींग ॥

अंजन नैन देइ याही को * लेपन अंग करै वाही को ॥
रक्त त्यागि विष पित्त सिधावै * तब नर उठि उठि गिरि दुखपावै ॥
पीत वर्ण तन परै लखाई * ताहि पीत जग देइ दिखाई ॥
दाह अंग मूर्छा तन आवै * तब औषधि यह वेगि पियावै ॥
पिप्पलि घृत मधु महुआ पाई * तुंबि मूल इंद्रायन लाई ॥
पीसि नाश दै लेपन करई * यहि उपाय विष अहि अपहरई ॥
पितते विष कफ करत प्रवेशा * होत शिथिल तन सुनहु नरेशा ॥
चलत न श्वास भली विधिभूपा * घर्घर कंठ शब्द दुखरूपा ॥

मुखते फेना माहिं गिरत, तब औषधि ये लाइ।
पिप्पलि शुंठी मिरच अरु, कोशातकी मँगाइ ॥

लोध और मधुसार मिलावै * धेनु मूत्र महँ डारि पिआवै ॥
लेपन नस्य करै ततकाला * अंजन देइ पियावै हाला ॥
कफते विष वातहि चलि जाई * फूलै उदर न परै दिखाई ॥
दृष्टि भंग लक्षण उर आनी * औषधि देइ शत्रु गद जानी ॥
खिरनी गज पीपरि भारंगी * अरलू जल पिप्पलि विषभंगी ॥
देवदारु मधुसार तुराई * सिंदुवार अरु हींग मँगाई ॥
रचि गोली तेहि तुरत खवावै * अंजन लेपन आदि करावै ॥

१ खस २ सर्पगन्धा ३ तुरई ॥

यहि गोली कर विषहर नामा ❋ हरै अखिल विषनाहिं भ्रमयामा ॥

मज्जा में विष जातहै, बात पंथ महिपाल ।
नशतदृष्टि तबमिटतसुधि, करु औषधि तत्काल ॥

घृत शर्करा उशीरहि लावै ❋ मधु नख चंदन घोटि पियावै ॥
लेपनादि इनहीं को करई ❋ विष निवृत्त औषधि मन धरई ॥
मज्जा ते विष मर्मस्थाना ❋ पहुँचत जाइ विशेषि सुजाना ॥
नष्ट होइ इन्द्रिय गति ताता ❋ काटेहु रुधिर न निकरहि गाता ॥
केशाकर्षण पीड़ा होई ❋ जानहु मृत्यु विवश जनसोई ॥
असरोगी कर औषधि नाहीं ❋ साधारण वैद्यन के पाहीं ॥
सिद्धि मंत्र औषधि जो जानै ❋ सो समर्थ अस विष कह भानै ॥
शंकर कथित औषधी एका ❋ सुनहुतासु विधि सहित विवेका ॥

नकुल सिखिंडि बिलारकर, पित्ताप्रथमहि लाइ ।
काशमर्दकी छालि अरु, मूल घनाली भा ॥

केशर कूठ भार्गवी आनै ❋ उत्पल कुमुद कमल समजानै ॥
धेनु मूत्र महँ पीसि मिलावै ❋ बुध मृत संजीवनी बनावै ॥
देइ नस्य पुनि चतुर खवावै ❋ काल सर्प विष दूरि बहावै ॥
पुनि गौतम कर जोरि बखाना ❋ सुनि तव कथन चित्त हरषाना ॥
अब प्रभु सर्प सर्पिणी बाला ❋ सर्प सूतिका भनौ हवाला ॥
और नपुंसक व्यंतर नामा ❋ डसे भेदका मुनि गुण धामा ॥
सुनु संक्षिप्त कथा मुनिराई ❋ लक्षण रूपादिक मनलाई ॥
ऊर्द्ध दृष्टि होवै डसनागा ❋ नागिनि डसे अधोचष भागा ॥

काटे बालक नागके, दृष्टि दाहिनी ओर ।
बाल सर्पिणी के डसे, फिरत वाम चषकोर ॥

गर्भिनि काटत बहत प्रस्वेदा ❀ डसे प्रसूती कम्प अभेदा ॥
अरु रोमांच नृपति दरशाई ❀ डसे नपुंसक तन अँगड़ाई ॥
दिन निशि संध्याविष अधिकारा ❀ नाग नागिनी क्लीव विचारा ॥
अंधकार जल बन अरु सोवत ❀ पवन सर्पजाति बुध जोवत ॥
पूर्व कथित लक्षण नहिं जानै ❀ फिरि कस वैद्य चिकित्सा ठानै ॥
होत सकल अहि चारि प्रकारा ❀ दर्वीकर मंडली सुआरा ॥
राजिल व्यंतर नामनि जानौ ❀ अब स्वभाव इनके अनुमानौ ॥
दर्वीकर कर वात स्वभावा ❀ पित स्वभाव मंडली गनावा ॥

कफस्वभाव राजिल भणत, व्यंत रहै सनिपात।
रुधिरश्यामदर्वीकरहि, सोउअतिस्वल्पस्रात ॥

रुधिर अरुण गाढ़ा क्षपिराई ❀ अहि मंडली वपुष दरशाई ॥
राजिल व्यंतर महँ अति गाढ़ा ❀ रक्त अल्प निकरत हति काढ़ा ॥
चारि जाति अहिराज जहाना ❀ नहिं पंचम कीजिय अनुमाना ॥
द्विज क्षत्री आदिक चहुँवरणी ❀ होत सर्प सुनु तिनकर करणी ॥
विप्र सर्प काटे तन जरई ❀ मूर्छित आन न कूणित परई ॥
ग्रीवस्तंभ असंज्ञा होई ❀ औषधि तासु चित्त हम जोई ॥
अपामार्ग घृत हींग मँगावै ❀ अश्वगंध सिंदुवार मिलावै ॥
पीसि नस्य दै तुरत पियावै ❀ अहि द्विज दुख बुध दूरि बहावै ॥

अहि क्षत्री काटे कँपै, मूर्छित होइ शरीर।
ऊर्द्ध दृष्टि तन पीर अति, सुनु औषधि रणधीर ॥

अपामार्ग इन्द्रायण लावै ❀ पीसि प्रयंगुहि सरपि मिलावै ॥
देत नस्य विष विथा नशाई ❀ वैश्य सर्प काटै जब धाई ॥
बहु कफ गिरै बहै बहु लारा ❀ मूर्छित होइ असंज्ञा चारा ॥
तब गुग्गुल गृह धूमि गिरीषा ❀ अर्क पलाश मँगाइ मुनीशा ॥

और अश्वगंधा मँगवाई ❀ गिरि कर्णिका श्वेत पुनि लाई ॥
पीसि सकल गो मूत्रहि डारै ❀ नस्य देइ विष वैश्य उतारै ॥
अथवा घोरि पियावै जबहीं ❀ वैश्य सर्प विष नाशै तबहीं ॥
डसे शूद्र अहि शीत जनावै ❀ कम्पै तन ज्वर तन खुजलावै ॥

मधु केशर मधु सारलै, लोध कमल मँगवाइ।
सितगिरि कर्णी भाग सम, शीतलजलहिपिसाइ॥
पान करावै नस्य दै, शांत होइ विष वेग।
रोगी जीवै सहजही, होइ न पुनि उद्वेग॥
द्विज विचरत मध्याह्न लगु, क्षत्री अहि मध्यान।
वैश्य फिरत मध्याह्न गत, संध्या शूद्र प्रमान॥

द्विजअहि पुष्पभोजनहिं साजत ❀ क्षत्री मूष भक्षि मन भ्राजत ॥
वैश्य भषत शालूराह धाई ❀ शूद्र सर्व कछु खात नृराई ॥
द्विज काटत आगे ते आई ❀ क्षत्री दक्षिण अंगहि पाई ॥
वैश्य वाम दिशि ते कृतघाता ❀ शूद्र पृष्टि दिशि ते नृप जाता ॥
मद मातो अहि मैथुन चाहै ❀ धाइ डसै नहिं समय सराहै ॥
द्विजतन गंध प्रसून समाना ❀ क्षत्री तन श्रीखंड प्रमाना ॥
घृत कसवासु वैश्य वपु आवै ❀ मत्स्य गंध अहि शूद्र कहावै ॥
नदी कूप सर उपवन बागा ❀ बसत पवित्र थान द्विज नागा ॥

ग्राम नगर चौहट्ट महँ, अहि क्षत्री कृतवास।
ऊषरतृण गोशाल तरु, भस्महि वैश्य निवास॥

वन स्मशान शून्य गृह आदी ❀ बसत शूद्र अहि नीच विषादी ॥
श्वेत कपिल सात्विकी सतेजा ❀ होत विप्र अहि नम्र करेजा ॥
अरुण प्रवालिक हाटक रंगा ❀ क्षत्री रवि सम तेज भुजंगा ॥

अतसी वाण पुष्प सम काया ❀ बहु रेखा युत वैश्य गनाया ॥
अंजन वायस तन सम श्यामा ❀ शूद्र भुजंग धूम्रवत जामा ॥
दंशान्तर एकांगुल जासू ❀ बालक सर्प डसो तन तासू ॥
तरुण दंश अंतर अंगुल द्वै ❀ ढाई अंगुल भुजग वृद्ध स्वै ॥
सन्मुख देखत सर्व अनंता ❀ वासुकि वामे दृष्टि भणंता ॥

तक्षक देखत वाम दिशि, करिकै तीक्षण दीठि ।
कर कोटक मुनिवर लखत, सदा पिछारीपीठि ॥

अहि अनंत वासुकि तक्षक गनु ❀ कर्कोटक अरु पद्म नाम भनु ॥
महापद्म अरु शंख सपाला ❀ कुलिकअष्ट अहिराज विशाला ॥
पूर्वादिक दिशान के स्वामी ❀ अष्टायुध सुनु नृप अधिनामी ॥
पद्म सउत्पल स्वस्तिक ताता ❀ और त्रिशूल पद्म सुनु भ्राता ॥
शूल क्षत्र आयुध कर धारे ❀ अर्द्ध चंद्रकर कुलिक सम्हारे ॥
कुलिक अनंत विप्र विख्याता ❀ शंख वासुकी क्षत्रिय ताता ॥
महापद्म तक्षक धन भूपा ❀ शूद्र पद्म कर्कोटक रूपा ॥
शुक्ल वर्ण हैं कुलिक अनंता ❀ ब्रह्मा ते उपजे बुधिवंता ॥

शंखपाल बासुकि अरुण, पावक ते प्रगटान ।
महापद्म तक्षक हुओ, पीत वर्ण अनुमान ॥

वासव ते उपजे रणधीरा ❀ महाबली विषधर वरवीरा ॥
कृष्ण पद्म कर्कोटक जोऊ ❀ महिषध्वज ते प्रगटे दोऊ ॥
दर्वी करके षोडश भेदा ❀ सप्त भेद मंडली अखेदा ॥
राजिल के दशभेद विचारो ❀ व्यंतर चौंसठि भांति निहारो ॥
पिप्पलि गज पिप्पली मँगाई ❀ देवदारु अरु हींगहि लाई ॥
अरु बराह कर्णी सम भागा ❀ गांधारिका तथा वर वागा ॥
सिंदुवार तत्तुल्य नरेशा ❀ लै मधूक सारहि धरमेशा ॥

पीसि मेलि गोमूत्र सुवासा ❀ रचि गोली राखै निज पासा ॥

गौतम सौं कश्यप कही, यथा कथा नर नाह ।
कथ्यों तथा औषधि वरण, तनमन सहितउछाह ॥

भक्ति पूर्वक पूजे महिधर ❀ जानिय भूप चतुर धार्मिकनर ॥
तिथि पंचमि पय खीर चढ़ावै ❀ श्रावण शुक्ल पंचमी आवै ॥
दूनौं दिशि मंदिर के द्वारा ❀ गोबर के अहि रचै सुवारा ॥
दधि दूर्वा पय पुष्प चढ़ावै ❀ अक्षत गंध अनेक सुँघावै ॥
युत नैवेद्य पूजि अहिराजा ❀ विप्रहि भोजन देइ सुसाजा ॥
ताके कुल न सर्प भय होई ❀ भाद्र पंचमी आवै जोई ॥
लिखि बहुरंग नाग क्षितिनाथा ❀ पूजे घृत पायस पयसाथा ॥
अर्पि पुष्प दै गुग्गुल धूपा ❀ करै प्रसन्नित तक्षक भूपा ॥

होइ न ताके कुल नृपति, अहि भय पीढ़ी सात ।
अश्विनिपंचमिमहिपमणि, कुशअहिविरचैतात ॥

इन्द्राणी सह पूजन करई ❀ स्वस्थ चित्त चिंता परि हरई ॥
घृत पय नीर स्नान करावै ❀ दुग्ध पक्क गोधूम चढ़ावै ॥
विविधि भांति भोजन पकवाना ❀ लाइ चढ़ावैं सविधि सुजाना ॥
अश्विनि पंचमि पूजत नागा ❀ द्रवत वासुकी आदि सरागा ॥
पावत नागलोक जनवासा ❀ भोगत सुख बहुकाल शुभासा ॥
यह पंचमी कल्प नृप गायो ❀ अति प्रसन्न चित तोंहि नायो ॥
जहां पढ़ै यह कथा सनेहा ❀ तेहिथल अहि भय होइ न केहा ॥
निम्न लिखित मंत्रहि जित पढ़ई ❀ अहिभय तौन धाम नहिं कढ़ई ॥

ॐ कुरु कुल्लेहुं फट्स्वाहा ॥

रचो पंचमी कल्प भल, मुनि कृतके अनुसार ।

दुर्गावरणत बुद्धिसम तांजिनियोक्ति विस्तार ॥

आदित्यस्यनमस्कारं येकुर्वन्तिदिनेदिने ॥
जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यंनोपजायते १५६
उदयगिरिमुपेतं भास्करंपद्महस्तं ॥
निखिलभुवननेत्रं दिव्यरत्नोपमेयम्
तिमिरकरमृगेन्द्रं बोधकंपद्मिनीनां
सुरवरमभिवन्दे सुन्दरंविश्ववंद्यम् १५७
इति श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रसमाप्तम् ॥

राजा शतानीक गुणखानी ❀ पूँछि सुमंतहि संपुटपानी ॥
तवमुख यश श्रीरवि भगवाना ❀ सुनिपवित्र मन मोर अघाना ॥
तुम सर्वज्ञ त्रिकालिक ज्ञाता ❀ कलिमहीप गणनाकरु ख्याता ॥
हैहैं कौन कौन केहि जाती ❀ केतिक वर्ष राज्यपद थाती ॥
सुनि नृप प्रश्न कहो सुनि ज्ञानी ❀ कीन्ह प्रश्न भल कहौं बखानी ॥
कलि आरंभकाल ते राजा ❀ कुरु इक्ष्वाकु वंश वर साजा ॥
मागधवंश जनित नृप होवैं ❀ सहस वर्ष महि संकट खोवैं ॥
तत्पश्चात् प्रद्योत भुआला ❀ पंच महीधर होंहिं सुकाला ॥

राज्यकरैं वसु तीनि विधु, वर्ष प्रेम युत सोइ ।
दशराजा शिशुनागपुनि,होंहिं समरजित जोइ ॥

वर्ष तीनिसौ साठि नरेशा ❀ राज्य करैं वर भारत देशा ॥
धरमातम नरनाह गनाये ❀ फिरिन्नृप होंहिं शूद्रिका जाये ॥
नन्द नाम शूद्री सुत होई ❀ आठ पुत्र युत जानिय सोई ॥
राज्य करै शत वर्ष प्रमाना ❀ तब कोउ विप्र करै अनुमाना ॥

सोहत अकुल न नृपता गादी ❋ छीनि राज्य लेवै अविषादी ॥
मौर्यवंश मन बूझि प्रधाना ❋ चन्द्रगुप्त कहँ देइ सुजाना ॥
वर्ष सप्त गुणं महि महि भोगै ❋ तासु वंश दश नृप संयोगै ॥
शुंग नाम पुनि होइ नरेशा ❋ भोगहिं दश महीप यह देशा

राज्य एकसौ दश बरष, करैं शुंग युत हर्ष ।
कण्वनाम तिनकर शचिव, करिकै मन आमर्ष ॥

राज्य लोभ नृप शुंगहि मारी ❋ ह्वै हैं आपु भूमि अधिकारी ॥
यहि कुल राज्य बहुत दिन चालै ❋ वर्ष बाण श्रुति गुण प्रतिपालै ॥
सेवक एक शूद्र बलवाना ❋ करै कण्व कुलकेर निदाना ॥
करै राज्य कछु दिन नृप सोई ❋ जगत प्रसिद्ध आंध्र कुल होई ॥
ताके वंश होइ नृप तीसा ❋ भोगैं महि सुनु वर्ष क्षितीसा ॥
छप्पन अधिक चारिसौ वर्षा ❋ कलियुग भूप तथा दुख हर्षा ॥
पुनि आभीर होइँ नृप साता ❋ वर्ष एक शत नृपता ताता ॥
बहुरि होहिं गर्दभ दश राजा ❋ वसु नव वर्ष करैं नृप साजा ॥

षोड़श होवें कङ्क नृप, राज्य करैं सुनु भूप ।
वर्ष युगुलशत मुदितमन, कौतुककलि अनुरूप ॥

तब उज्जैन नगर महँ भाई ❋ होइ विक्रमादित्य नृराई ॥
बधि बहु म्लेच्छ धर्म महि थापै ❋ पर उपकारक प्रजा न तापै ॥
वर्ष एकसौ पैंतिस सोई ❋ महि भोगै अनीति जग खोई ॥
तासु अनन्तर महा प्रतापी ❋ होइ शालिवाहन अरि दापी ॥
क्षिति भोगै करि नीति प्रचारा ❋ वर्ष एकशत सुनहु भुआरा ॥
तत्पश्चात् यवन वसु होवैं ❋ अरु तुरक षोडश अघ जोवैं ॥
वर्ष तीनसौ उपर पचासा ❋ राज्य करैं करि श्रुति परिहासा ॥
पुनि गुरुंड पावैं अधिकारा ❋ दश महीप वर बुद्धि भुआरा ॥

वर्ष षष्ट विधु चन्द्र महि, भोगैं सुरुचि नृपाल ।
तिनके पीछे होइ हैं, मौन नाम धरपाल ॥
भूपति मौन एक दश होवैं ❀ वर्ष तीनसौ राज्य न खोवैं ॥
इन पीछे किलकिला प्रदेशा ❀ भूतनन्द आदिकन अँदेशा ॥
वर्ष एक शत पंच प्रमाना ❀ करैं राज्य भोगैं महि नाना ॥
कलिके चक्रवर्ति नृपगाये ❀ खंड राज्य पुनि विपुल गनाये ॥
भूतनंद कुल त्रैदश बालक ❀ वाल्हीक होवैं रिपु शालक ॥
कौशल देश होइ नृप साता ❀ करै राज्य कछु काल कुदाता ॥
फिरि वैदूरप नैषध राजा ❀ होवहिंगे भाषत श्रुति साजा ॥
विश्वस्फुजित होइ अति क्रोधी ❀ म्लेच्छ करै चहुँवर्णविरोधी ॥
सिंधु तीर कश्मीर अरु, देश कांची राइ ।
म्लेच्छ राज्यहोवै अवशि, अल्पायुष दुख दाइ ॥
क्रोधी प्रजा भक्ष खल काया ❀ अल्प सत्त्व आगम दरशाया ॥
वर्ष चारिसौ बारह भाई ❀ यहि प्रकार होवै नृप ताई ॥
धर्म नाश लखि पश्चिम ओरा ❀ उपजै राज ऋषय वर जोरा ॥
ब्रह्मज्ञाना संडित वीरा ❀ चलै तदज्ञा वश नृप धीरा ॥
धर्मवृद्धि जग करै अपारा ❀ अपर म्लेच्छकुल करै सँहारा ॥
तत्पश्चात् गौर सुख राजा ❀ होहिं प्रतापी सहित समाजा ॥
प्रजा पाल धर्मज्ञ सुजाना ❀ राज्य वृद्धि नित भणतपुराना ॥
अखिलनृपतिसेवहिंअनुशासन ❀ देहिं दंड महि अनमिष वासन ॥
वर्ष एकसौ असी लगु, नृप । करैं सनीति ।
समरविदुष धार्मिक चतुर, रिपु रण सकै न जीति ॥
विधिवश पश्चिम ते नर आवैं ❀ नृपति गौरसुख राज्य नशावैं ॥

शुद्ध वेद ब्राह्मण जब ह्वैहैं ❀ धर्म विरोधी म्लेच्छ नशैहैं ॥
प्रजापाल तब होहिं नरेशा ❀ अगणित संख्या विविधप्रदेशा ॥
वर्ष तीनसौ अधिक पचासा ❀ करिहैं राज्य सर्व हरि दासा ॥
कछुक काल बीते नरनायक ❀ तेहिकुल उपजिहि धर्मप्रजायक ॥
विजय नाम नृप महाप्रतापी ❀ धर्मात्मा म्लेच्छ संतापी ॥
ताके वंश रहै नृपताई ❀ वर्ष पंचशत सुनहु नृराई ॥
पुनि रोहितक नगर नर नाहू ❀ नागार्जुन उपजिहि वर बाहू ॥

महाप्रतापी तेजसी, तासु वंशके राइ ।
सहस वर्ष महि भोगि हैं, सुनु नरेश मन लाइ ॥

पुनि वलिनामक होइ नरेशा ❀ तासु वंश नृपता यहि देशा ॥
रहिहैं नृप ग्यारहसौ वर्षा ❀ आन चरित सुनु भूप सहर्षा ॥
म्लेच्छ शूद्र पुनि होहिं नृपाला ❀ जगत म्लेच्छता विवश कराला ॥
धर्मनाश निज हृदय विचारी ❀ प्रगटिहि कल्कि रूप असुरारी ॥
चढ़ि निज अश्व विष्णुभगवाना ❀ म्लेच्छ नाश करिहैं बलवाना ॥
धर्मस्थापन निज कर करि हैं ❀ कृतयुग तदाकाल अवतरिहैं ॥
शतानीक तुम्हरी रुचि देखी ❀ कही यथा आगम बुधि लेखी ॥
समाचार संक्षेप बखाना ❀ कलिभूपनकरजिमि अनुमाना ॥

अब जो पूछौ सो कथिय, पावन चरित नरेश ।
पूर्वार्द्ध पूरण भ ी, कथा रहस्य सुदेश ॥१॥

इति ॥
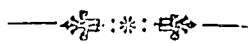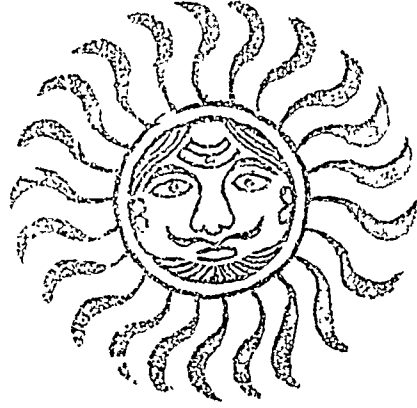
विश्वकर्मा शिल्पसागर ॥

दुर्गादासकृत·

तृतीय काण्ड ।

❀ विश्वकर्मा वंश उत्पत्ति ❀

प्रमान देखौ इसी पुस्तक के चतुर्थ काण्ड में

दो० सब देवनको बन्दिमैं, बार बार शिरनाय ।
बिश्वकर्मा के बंश को, बर्णों गुण समुदाय ॥

द्विज संज्ञा इनकी है भाई ❀ बेद पुकारि कहत सब गाई ॥
करिविचार बिधिवत अबकहिहौं ❀ बेद पुराण सहित सब गइ हौं ॥
बिश्वकर्मा जग बिच बहु नीको ❀ अद्भुत रचना कियो मही को ॥
सो सब कहिहौं आगे जाई ❀ बेद शास्त्र की जस मनशाई ॥
बर्ण व्यवस्था के सब भेदा ❀ पहिले कहौ निरखि सब बेदा ॥
सहित प्रमाण कहौं बहुभांती ❀ सुनिसबसुख लहिहैं दिनराती ॥
जो कहिहौं सो सहित प्रमानू ❀ रचना अमित मोरि मतिजानू ॥
बिश्वकर्मा के कुल रथ कारा ❀ शाकलद्वीप बसत रविद्वारा ॥

दो० रथक्रिया के योगसे, बिदित नाम यह जानि ।
शङ्का सब कह होत है, रथ कारहि जियमानि ॥

सूत्रधार सोई रथ कारा ❀ यह सिद्धान्त अहै यक सारा ॥
रूढ़ि शब्द रथ कारहि कहहीं ❀ पांच जातिकी पदवी लहहीं ॥
सूत्र अहै कात्यायन केरा ❀ ऋषिनिश्चय करि लिख्यो घनेरा
जात्यन्तर मग बर्ण कहायो ❀ मग द्विज शाकलद्वीप लखायो ॥
यहि कारण द्विजाति कहिलायो ❀ शिल्पकार बहुभांति सुहायो ॥
जात्यन्तर यह शब्द प्रचारू ❀ ता ऊपर अब करौं बिचारू ॥
का परिभाषा है यहि केरी ❀ करि बिचार सो कहौं बहोरी ॥
त्वष्ट वंश ये सब कहि लावैं ❀ सुन्दर यज्ञ पात्र रचिलावैं ॥
यज्ञ बीच परवेश इन्हीका ❀ और याति कर है नहिं टीका ॥

दो० अग्रशब्द जो सूत्र बिच, बिनसित अक्षर दोय ।
त्वष्ट वंश श्रुति कहति है, सूर्यबंश है सोय ॥

कृष्ण को पुत्र सांब रविसेवक ❀ जम्बूद्वीप बसत वर लेवक ॥

सूर्यदेव की आज्ञा पाई ❀ शाकलद्वीप जाइ मगलाई ॥
सूर्य वंश मग भोजक लीन्हा ❀ साम्बरविहि अस्थापन कीन्हा ॥
त्वष्ट वंश रवि आज्ञा पाई ❀ रचि दीनो मंदिर सुखदाई ॥
सोइ कुशि काश्य वंश रथ कारा ❀ और जाति कारुक है न्यारा ॥
विरचे रथन होत रथ कारा ❀ जाति नाम जानत संसारा ॥
गौतम ऋषि सो शकट दिखावा ❀ जाति नाम रथकार जो पावा ॥
तीनों वर्ण न संज्ञा लहहीं ❀ शाकलद्वीपी मग अनु सरहीं ॥
स्वर्ण कार अरु अश्माकारा ❀ लोह कार अरु काष्ठीकारा ॥
कांस्य कार यह नाम प्रचारा ❀ पाँच जाति रथकार पुकारा ॥

दो० त्वष्ट वंश रथकार को, वर्षा में अधिकार ।
अग्नि हवन विधिवत करै, कहै शास्त्र श्रु तिसार ॥

शरद्काल उत्तम ऋतुजोई ❀ पूरण मास अमावश दोई ॥
संसकार के निमित स्वहावा ❀ त्वष्टवंश यामें सुखपावा ॥
करिउपनयन क्रिया रथकारा ❀ पूजहि अग्नि सकल परिवारा ॥
दूसर समय ब्याह जब होई ❀ करि उपनयन लहै फल सोई ॥
स्वार्थ पार्थ सुभग मुनि जोई ❀ शास्त्र दीपिका में कह सोई ॥
जो मनमें शंका कछु राखत ❀ निरखौ प्रथम पाद अस भाषत ॥
वर्षाऋतु जो सब बिधि नीको ❀ शरदकाल में सुख सबहीको ॥
यामें अरुन्या धान प्रकारा ❀ बैजन्ती व्याख्या अनुसारा ॥
सूत्र हिरण्य केशको नीका ❀ बैजन्ती जाको है टीका ॥
संस्कार मग कीरति गाई ❀ शिल्प कार द्विज पदवी पाई ॥

दो० शिल्पशास्त्रके कामको, विधिवत कीन प्रचार ।
शकट धुरी विरचत भये, त्वष्टवंश रथकार ॥
पोत शकटको पाय के, बढ़त अमित व्यापार ।

देशान्तर में जाय के, वैश्य करत रोजिगार ॥
कल्प सूत्र में लिखो विचारी ❀ कल्प कौशिका चार्य प्रचारी ॥
कश्यप लिख्यो संहिता माहीं ❀ लिख्यो महीधर बहुविधिताहीं ॥
शरद्काल वर्षा के माहीं ❀ हवन करै रथकार सदाहीं ॥
सूत्रधार जो है रथकारा ❀ धैर्यवन्त जानत संसारा ॥
औरौ बाक्य द्विजाति बतावै ❀ सूत्रधार ज्यों द्विज कहिलावै ॥
सो मै प्रकट देखावौं सबहीं ❀ पैहैं सुख जो प्रेमी अहहीं ॥
त्वष्ट वंश कर है सुत जोई ❀ तक्षक नाम विदित जग सोई ॥
करि आचमन शिखा सो बाँधा ❀ करि उपनयन तीन व्रत साधा ॥
दो० बिनु द्विजाति करि सकत नहिं, सन्ध्या कर्म प्रचार।
याते इनहिं लखात है, सन्ध्या कर अधिकार ॥
यजुर्वेद बिच लिख्यो बहोरी ❀ शुक्ल संहिता नाम घनेरी ॥
धनुषबाण विरचै जग जोई ❀ धनुषकार पदवी लह सोई ॥
विरचै बहु गुण खानि बिमाना ❀ चलै अकाश बीच सो जाना ॥
यज्ञ बीच में ये सब जाई ❀ शूद्र बर्ण नहिं आज्ञा पाई ॥
मंत्र भाग ब्राह्मण जो अहई ❀ सो अस्पस्ट बाक्य अस कहई ॥
कुशिक बंश विरचै बहुनीके ❀ यज्ञ पात्र बहु भाँति शमीके ॥
सो लै सब यज्ञन महँ जावै ❀ त्रैबर्णिक है आज्ञा पावै ॥
वेद पुराण शास्त्र सब ढूंढ़ी ❀ दुर्गा कहै बात यह गूढ़ी ॥
दो० ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यये, भिन्न भिन्न प्रति भांति ।
जन्म होत जेहि गोत्रबिच, तासों जानिय ज्ञाति ॥
त्वष्टवंश कुशिकाख्य जो भयऊ ❀ कौशिक गोत्र वेद सो कह्यऊ ॥
कौशिक गोत्र द्विजाति कहावै ❀ रावण बेद भाष्य में गावै ॥
बिश्वकर्मा रथ क्रिया विचित्रा ❀ विरचै भांति अनेक सचित्रा ॥

सोइ सब काम करै कुशिकासा ❀ बिधिवत बेद अथर्वण सासा ॥
शिल्प शास्त्र में निपुण कहावै ❀ आदर सब देवन में पावै ॥
ताकर वंश विदित रथकारा ❀ शिल्प क्रिया जाकर व्यापारा ॥
यज्ञोकार अरु धन्वाकारा ❀ विदित नाम जानत संसारा ॥

भरद्वाज अरु अत्रिमुनि, द्विज गोत्री ये खास।
शिल्पकार ये विदित सो, बरणत दुर्गादास ॥
यज्ञ कर्म रथकार के, कुलको है अधिकार।
कहत सायणाचार्य यह, सर्व शास्त्र कर सार ॥

दसौ मुखन बरणत दशशीशा ❀ हैं विचित्र जाके भुज बीसा ॥
अग्निहोत्र यज्ञादिक करहीं ❀ सूर्य भाग विधिवत सो लहहीं ॥
औरौ यज्ञ करै जो कोई ❀ ब्राह्मण क्षत्रिय जग बिच जोई ॥
तामें यज्ञ पात्र लै जावै ❀ नीच वर्ण अधिकार न पावै ॥
तिन के नाम सुनावो तोहीं ❀ ऊष पात्र स्रुवा घृत वोही ॥
विरचै विविध भांति रथकारा ❀ जो है सब यज्ञन का सारा ॥
स्वर्णकार सुवरण की थाली ❀ यज्ञ बीच लैजाय निराली ॥
यज्ञ पात्र के हैं आधारा ❀ हैं सम्बन्ध द्वियातिक सारा ॥
जाते इनहि द्विजाति बतावै ❀ यज्ञ बीच में आज्ञा पावै ॥

काष्ठ लोह पाषाणकी, रचना है व्यापार।
द्विजवंशी रथकार की, जानत सब संसार ॥

शिल्पकर्म इनके हैं नाना ❀ जो बरणत अस्कन्द पुराणा ॥
बिरचै रथ ये धुरी समेता ❀ चक्र चारि जामें सुख देता ॥
अग्निहोत्र उपनयन जो अहहीं ❀ वेदाध्ययन सकल सो लहहीं ॥
शिल्प क्रिया जो हैं बहुभाँती ❀ सो जीविका करैं दिन राती ॥

काष्ठक्रिया जगबिच बहु सोहै ❀ अस्त्र शस्त्र लोहन के जोहै ॥
गृहारम्भ के काज घनेरे ❀ माटी पत्थर काष्ठन केरे ॥
यज्ञ पात्र सामग्री रचना ❀ इनकी उच्च जाति में गणना ॥
ये सब इन कर है अधिकारा ❀ त्वाष्ट वंश जो है रथकारा ॥

शिल्प कार्य की रचना, प्रचलित जो संसार ।
सदाचार रथकार के, तैत्तिरीय श्रुति सार ॥

चारि प्रकार धर्म जग माहीं ❀ करि सिद्धान्त कहत मनुताहीं ॥
प्रथम बेद बिच जो लिखि राखा ❀ दूसर जो असमृति सब भाखा ॥
तीसर सदा चार जो अहई ❀ कुलकर धर्म तासु सब कहई ॥
है प्रसन्न मन जाको गहई ❀ चौथा शुद्ध धर्म श्रुति कहई ॥
जैसे सर्व मेघ जग छाजै ❀ वैसन त्वाष्ट मेघहू गाजै ॥
त्वाष्ट मेघ सब दिन से साधा ❀ सदा चार के हैं यह पाधा ॥
शिल्पक्रिया जगबिच बहु भ्राजै ❀ सूत्र धार सब जाको साजै ॥
सदा चार सोऊ है सब को ❀ लहत धर्म जो बर्तत इनको ॥

तैत्तिरीय ब्रह्मण लिख्यो, शावण लिख्यो बहोरि ।
धर्म अहै रथकार कर, कहदुर्गा करजोरि ॥

विशुकर्मा के कुल रथ कारा ❀ अश्विनि अरु कुशिकाशिप्रचारा ॥
ऋभु विशु रूप सुधन्वा नामा ❀ यज्ञ करैं ये सब निज धामा ॥
तिनके गोत्र विदित जगमाहीं ❀ अश्व लायणरु काश्यप आहीं ॥
ब्रह्मा के तनु सों ये जाये ❀ याते सबै द्विजाति कहाये ॥
सृष्टि विचार बेद जहँ लिखेऊ ❀ ब्रह्मा से उत्पाति तहँ कहेऊ ॥
भार्गव सूत्र संहिता टीका ❀ सुख से अर्थ कियो बहु नीका ॥
क्रय विक्रय जो कर्म सुहावा ❀ सो सब यही जिविका पावा ॥
काष्ठ क्रिया बरतै रथ कारा ❀ त्रैवर्णिक कर है व्यापारा ॥

संसकार गर्भा दिक जोई ❀ करै मगस ब्राह्मण सम सोई ॥
शोम नाथ कृत कल्पयुत, कौस्तुभ ग्रन्थ प्रबीन।
कृषी कर्म निर्णय कियो, विधिवत जो प्राचीन ॥
पहिले संसकार का काला ❀ काष्ठीवंश जोहै अतिबाला ॥
कहिहौ पाछे कर्म छूड़ाई ❀ निरखिशास्त्र बहुबिधिमनलाई ॥
बारह वर्ष समय चलिजाई ❀ चौबिस के भीतर सुनुभाई ॥
करि उपनयन वेद जस भासा ❀ ब्रह्मचर्य कर करै सुपासा ॥
ब्रह्मचर्य करि गुरुके पासा ❀ बिद्या पढ़ै वेद जस भासा ॥
विधिवत गुरु से बिद्या पाई ❀ करै समावर्त्तन तब आई ॥
करिकै ब्याह गृहस्थ कहाई ❀ करै जीविका शास्त्र जो गाई ॥
काष्ठी केरि जीविका जोई ❀ बर्णे दुर्गा शास्त्र निगोई ॥
शिल्पकर्म देशान्तरु खेती, गोरक्षा पर दान।
रथ क्रिया बहु विधिकरै, वेद अथर्वणजान ॥
शिल्प कर्म के नाना भेदा ❀ जो सब कहै अथर्वण वेदा ॥
लोहा पत्थर काठ अनूपा ❀ कारीगरी विचित्र सरूपा ॥
बरतै काठ जीविका याही ❀ वरणित न्याय सुधा के माही ॥
कौशिक मुनि बरणत सो भयऊ ❀ यज्ञ नाम काष्ठी जो लह्यऊ ॥
अश्वि नेष्टि जग सोह रसाला ❀ कुशिक काष्टि यज्ञासु विशाला ॥
विश्व कर्मेष्टि यज्ञ बहुभांती ❀ करैं सदा रथकार की जाती ॥
अग्निहोत्र वर्षा के माहीं ❀ काष्टी करै सबहि विधि ताहीं ॥
संसकार उपनैन सोहावा ❀ धारण करि अधिकारहि पावा ॥
विश्वकर्मा के वंशजो, उत्तम कुल रथकार।
यहाँ जीविका करत ये, दुर्गा भणत विचार ॥
उत्तम मध्यम नीच बहोरी ❀ बरण तीन पदवी लह भोरी ॥

उत्तम शिल्पी कर्म सरेष्ठा ❀ कृषी कार बर्तै जो काष्ठा ॥
शिल्पक स्वर्णकार सूत्रधारा ❀ उत्तम वरण शास्त्र कहै सारा ॥
लोहकार अरु कांसी कारा ❀ उत्तम वरण अहै जग झारा ॥
शिल्पक नीच कर्म जो करहीं ❀ सुद्रवर्ण संज्ञा सो लहहीं ॥
जिनने मद्य पान ब्यापारा ❀ सो निकृष्ट जानत संसारा ॥
वर्ण चन्द्रिका के बिच देखी ❀ दुर्गा कहत द्विजहि गुण पेखी ॥
अग्निहोत्र उपनयन बिशाला ❀ जिनके संसकार सुख वाला ॥
उत्तम वंश जोई कहलावैं ❀ शौनकीय शाखा में गावैं ॥

संसकार से भ्रष्ट जो, शिल्पकार जगमाहिं।
सो भरिष्ट पदवी लहै, आगे देउँ दिखाहिं॥

विष्णु प्रतिष्ठा मन्दिर माहीं ❀ सूत्रधार पूजित तहँ जाहीं ॥
शिल्प कलासे मन्दिर रचहीं ❀ बिशुकर्मा स्थापित करहीं ॥
पूजन करै सदा चितलाई ❀ बिशुकर्मा में प्रीति दृढ़ाई ॥
इनकर मुख्य धर्म यह अहई ❀ कल्प संहिता में यम कहई ॥
अत्रि औ कुशिकाशु सुमन्ता ❀ चित्रगु बिशुकर्मा सब सन्ता ॥
ये सब करैं यज्ञ बहु भांती ❀ बिशु कर्मेष्टि सुलभ कहलाती ॥
तन्त्राकर अस कहत घनेरी ❀ वर्णाकर विच लिख्यो बहोरी ॥
ऐसो है जो यह रथकारा ❀ बहुबिध शिल्पशास्त्र विस्तारा ॥

मणिजमतङ्ग स्कन्दमुनि, अश्विनि औ कुशिकाशु।
द्विजबंशी उत्तम गिने, अपने को कहैं खास॥

एक समय गङ्गा के तीरा ❀ पूजत सोमेश्वर सब धीरा ॥
उत्तम रुद्रयाग तहँ होई ❀ करैं मुनीश्वर सब मिलि कोई ॥
यज्ञपात्र सब रचि कुशिकाशा ❀ बैठेउ जाय कुण्ड के पासा ॥
यज्ञ समाप्त कीन मुनि जबहीं ❀ बैठे निज निज आसन तबहीं ॥

मुसलइन्दु उत्तम पद लहेऊ ❀ तासों कोउ मुनि पूछत भयऊ॥
कौन वर्ण येहैं कुशिकासा ❀ बैठे आय कुण्ड के पासा॥
इतना सुनि बहुविधि मुनिभासा ❀ उत्तम द्विजवंशी कुशिकासा॥
यज्ञ बीच सब दिन ये आवैं ❀ तासे यज्ञ भाग सब पावैं॥

रघुअरु आर्य मतङ्ग ये, रुद्रयाग जब कीन।
विदितभयेकुशिकाशिजी, कौशिक कुंवरप्रवीन॥

अग्रिगण्य विशुकर्मा नीके ❀ प्रेरित यज्ञ बीच सबहीके॥
इनकहँ श्रेष्ठवरण जियजानी ❀ नेवतत यज्ञ माहिं सब प्रानी॥
ग्रन्थ निरुक्त दीपिका माहीं ❀ यह इतिहास लिखा मुनि आहीं॥
जो मनमें शंका कछु राखै ❀ सो द्वितीय अध्याय में चाखै॥
अग्र वंश यह जाति विशाला ❀ काष्ठक क्रेता नाम रसाला॥
काष्ठतक्षु कुशिकाशु सयानो ❀ गोत्र भेद कुल एकै जानो॥
अब माहिष वंश बिस्तारा ❀ बरणौ शास्त्र उक्त मैं सारा॥
त्वाष्टा के कन्या भइ एका ❀ त्वाष्टी अश्वि रूप है जेका॥
अन्त रिक्ष महँ तासो जाई ❀ सूर्य भोग कीन्ह्यो मन लाई॥
सुत अश्विनिकुमार तेहिकेरा ❀ भयो वंश कुशिकाशि घनेरा॥
भांवरि सप्त तीनि कुशबांधी ❀ पाणिग्रहण कीन्ह ब्रत साधी॥
त्वाष्ट वंश माहिष को मानो ❀ कल्प कौशिका चार्य बखानो॥
मधुमेलन लाजाहुति कीन्हा ❀ माहिष जब बिवाह निजकीन्हा॥
बिनु द्विजातिकर सक नहिं कोई ❀ यह कौशिक संहिता निगोई॥
कुशिकाशि कटुतक्षा जानो ❀ रचि ब्रत तीनि यज्ञ को ठानो॥
अग्र और माहिष भवीना ❀ यज्ञ बीच में ये सब लीना॥

विशुकर्माके सुतनको, शिल्पशास्त्र अधिकार।
पांच नामसे विदित भे, त्वाष्ट वंश रथकार॥

आदि सृष्टिसे कहतहौं, वंश बढ्यो ज्यहि भांति ।
सो सब सुनहु सचेत ह्वै, विशुकर्मा की जाति ॥
ब्रह्मा के दुइ रूप भे, अर्द्ध पुरुष अरु नारि ।
नाम स्वयम्भू विदित सो, शतरूपा सुकुमारि ॥

तिनके पुत्र सकल गुण खानी ❀ भे उत्तानपाद जग जानी ॥
तिनके ध्रुव भे परम पुनीता ❀ जिनको यश पुराण में गीता ॥
ध्रुवके उत्कल वत्सर जानो ❀ कल्प एक पुनि औरो मानो ॥
स्वर वीथी वत्सर की नारी ❀ षटसुत भे तिनके हितकारी ॥
प्रथम पुत्र पुषपारण भयऊ ❀ तिग्मकेतु दूसर सुत लह्यऊ ॥
तीसर पुत्र भयउ इषुताके ❀ उत्तम गुण जानत जग जाके ॥
चौथा पुत्र उर्ज गुण खानी ❀ पञ्चम वसु जो जग बिच ज्ञानी ॥
छठवां सुत जय नाम सुहावा ❀ उत्तम राम नाम गुण गावा ॥

पुषपारण के दुइ बहू, दोषा प्रभा बहोरि ।
पुत्र चारिभे प्रभाके, दोषा रहिगइ कोरि ॥

प्रातर मध्यम दिन अरु साया ❀ प्रभाचारि शुभ सुत उपजाया ॥
प्रातर के उत्तम सुत जाता ❀ नाम सुचक्षु जग विख्याता ॥
तिनके पुत्र भये मनु एका ❀ मनुकर पुत्र सत्यव्रत नेका ॥
तिनके उल्सुक भयो सयानो ❀ उल्सुक के षटसुत ये जानो ॥
अङ्ग सुमन अरु ख्याति विशाला ❀ क्रतु अङ्गिरस गया विमशला ॥
नाम सुनीथा अङ्ग कि रानी ❀ ताके बेन भये गुण खानी ॥
बेन केर सुत भे विजिताश्वा ❀ शोभित जाके गजरथ आश्वा ॥
ताकर पुत्र भये पृथुज्ञानी ❀ पृथुके तीनि पुत्र गुणखानी ॥

शुचि पावक पवमान युत, अन्तर ध्यान सचेत ।

दुर्गा बरणत शास्त्र लखि, सकल पुराण समेत ॥
शुचि पावकते बर्हिष भयऊ ❀ हविर्धान बर्हिष सुत जयऊ ॥
ताके पुत्र प्रजापति ज्ञानी ❀ काष्ठ क्रिया में जो गुणखानी ॥
तिनके, भये प्रचेता नामा ❀ रूप शील तप व्रतके धामा ॥
तिनके सुत भे दक्ष प्रतापी ❀ प्रजाहेतु नारायण जापी ॥
कन्या साठि भईं तिनकेरे ❀ सुन्दररूप शील जिनकेरे
दश कन्या धर्महि मनभाई ❀ दक्ष दीन्ह तिनका हर्षाई ॥
तिनके भे प्रभास विख्याता ❀ अष्टम वसुमें हैं सुखदाता ॥
विशुकर्मा प्रभास वसुकेरे ❀ भे सुत शिल्पी परम घनेरे ॥
वसु प्रभास की बधू, जो अंगिरिसी विख्यात।
विश्वकर्मा तासो भये, कीर्ती पतिकहि जात ॥
विश्वकर्मा के पाँचसुत, सब विद्या की खान।
मनुमय त्वष्टा शिल्पक, अरु दैवज्ञ सुजान ॥
इन पांचों के कर्म दृढ़ाई ❀ दुर्गा कहत विविध विधि गाई ॥
जो पढ़िहै सुनिहै मनलाई ❀ शिल्पक्रिया लहिहै सुखदाई ॥
अस्त्र शस्त्र बिरचै मनुजोई ❀ लोह केर संहारक सोई।
मय विरचै सब काष्ठ प्रकारा ❀ पालन करत सकल संसारा ॥
त्वष्ठा बहु पदार्थ जग जोई ❀ कांस्य पात्र विरचत बहुसोई ॥
गृह अरु दुर्ग कोट बहुनीके ❀ मन्दिर सब विरचे शिल्पीके ॥
है दैवज्ञ अमित गुणधारी ❀ सोना चांदी भूषण कारी ॥
यहिविधि सकल लोक हितकारी ❀ हैं अधीन इनके नरनारी ॥
बरणत इनके रूपको, दुर्गादास निमोय।
लिङ्ग शिवागम ग्रन्थ अरु, मार्त्तण्ड ये दोय ॥
जानो शिवस्वरूप मनुजोई ❀ विष्णुरूप मय कह सबकोई ॥

ब्रह्मरूप त्वष्टा को जानो ❀ शिल्पिहि इन्द्ररूप जिय मानो ॥
साक्षात नारायण केरा ❀ है दैवज्ञ रूप बहुचेरा ॥
जो इनको जानै मनलाई ❀ जानत इन्हैं इन्हहिं है जाई ॥
अब इनके गुण कहौं बिचारी ❀ सुख लहिहैं जो रखिहैं ज़ारी ॥
तमोगुणी मनु रह सबकाला ❀ सतोगुणी मय रहत विशाला ॥
रजोगुणी त्वष्टहि सबकहहीं ❀ शिल्पकत्रिगुणात्मकजगअहहीं ॥
शुद्ध सत्त्व दैवज्ञहि जानो ❀ सदा सुखी ये परम सयानो ॥

अब इनकी शुभ देहकर, कहौं रूप सब भांति।
पढ़त सुनत सब भगतरहिं, शिल्पकारकी जाति ॥

फटिकशिला सम मनुकी देहा ❀ नीलवर्ण मय सुखकर गेहा ॥
रक्तवर्ण त्वष्टाकर भाई ❀ धूम्रवर्ण शिल्पी का पाई ॥
स्वर्णवर्ण दैवज्ञ विराजै ❀ याको पढ़त पाप सब भाजै ॥
इनके कुण्ड सुनावों सबहीं ❀ सुनत पाप भाजत सब अहहीं ॥
मनुका कुण्ड सुभग मैं पावा ❀ तीनि कोण जामें दरशावा ॥
चारिकोण मयका पहिंचानो ❀ गोलकुण्ड त्वष्टाका जानो ॥
शिल्पी का षटकोण प्रसिद्धा ❀ अष्टकोण दैवज्ञ समिद्धा ॥
जो या कहँ जानै मनलाई ❀ ताकर सकल दोष छुटिजाई ॥

इन पांचों के दण्ड को, बरणौं मति अनुसार।
ताकी भय सब छूटि है, जो पढ़ि हैं रथकार ॥

चांदिका दण्डा मनुकेरा ❀ वेणुदण्ड मयका है फेरा ॥
ताम्रदण्ड त्वष्टाकर सोहा ❀ लोह दण्ड शिल्पी मनमोहा ॥
दण्ड सुवर्णकेर विख्याता ❀ है दैवज्ञ केर सुनु भ्राता ॥
अब आगे उपनयन बखानो ❀ सूत्रधारके सूत्रहि जानो ॥
रजत सूत्र मनुके मनभावै ❀ पद्म सूत्र मय हृदय लगावै

त्वष्टा ताम्र सूत्र अपनावा ❀ आगे कहौं जो शिल्पक पावा ॥
जो निर्मित कपास से अहही ❀ ताको शिल्पक मनसे गहही ॥
है दैवज्ञ केर विख्याता ❀ सुवरण सूत्र सकल शुभ जाता ॥

अब इनके व्यापार को, बरणत दुर्गादास।
लहिहैंसुख सुनि सुजनजन, खल करिहैं उपहास ॥

लोह क्रिया बरते मनु जोई ❀ काष्ठ जीविका मयकी होई ॥
त्वष्टा करै कांस्य व्यापारा ❀ रचना मन्दिर शिल्पक सारा ॥
है दैवज्ञ परम गुण खानी ❀ स्वर्ण क्रिया बरतै मनमानी ॥
जो प्राणी पढ़ि हैं मनलाई ❀ लहिहैं शिल्पशास्त्र सुखदाई ॥
जाको भणत वेद अधिकारा ❀ सो अब कहौं शास्त्र अनुसारा ॥
है ऋग्वेद केर अधिकारा ❀ मनु जो अहै कहत संसारा ॥
मय है यजुर्वेद अधिकारी ❀ त्वष्टा सामवेद व्रतधारी ॥
शिल्पक पढ़ै अथर्व बहोरी ❀ दैवज्ञा सुषुम्ण निहोरी ॥
इन पांचों कुल में उत्पन्ना ❀ हैं रथकार नाम सम्पन्ना ॥

जिस कुलमें जो विदित हैं, पाँच जाति रथकार।
आपन आपन वेद सब, पढ़ै सकल परिवार ॥

इनके संसकार सब भयऊ ❀ विद्या पढ़न गुरू ढिग गयऊ ॥
समय नियम करि गुरुके पासा ❀ ब्रह्मचर्य निज कीन प्रकासा ॥
चारों वेद सहित उपवेदा ❀ शिल्पशास्त्र में रह्यो न भेदा ॥
औरौ शास्त्र पढ्यो मनलाई ❀ विधिवत गुरुसों विद्यापाई ॥
गुरु दक्षिणा दीन सबकोई ❀ बिदामांगि निज गृह गे सोई ॥
निज निज गुण गृह कीन प्रकासा ❀ जो सब सीख्यो गुरुके पासा ॥
करि बिवाह विधिसों सब कोई ❀ पांच जाति प्रकटत भे सोई ॥
उप ब्राह्मण की पदवी पाइ ❀ अष्ट जाति बिच देत लखाइ ॥

मनुके वंश लोहार कहाये ❋ जो जीविका लोहसे पाये॥

काष्ठकार मयसुत भये, जो बढ़ई विख्यात।
काष्ठ क्रिया में चतुर ये, दुर्गादास कहात॥

कांस्यकार त्वष्टा सुत भयऊ ❋ जो ठठेर पदवी जग लह्यऊ॥
शिल्पक के सुत शिल्पी जानो ❋ थवई लोक विदित सो मानो॥
स्वर्णकार दैवज्ञहि जाये ❋ जो सुनार जग बीच कहाये॥
ये पांचों रथकार कहावैं ❋ संसकार की आज्ञा पावैं॥
संसकार इनके ज्यहि भांती ❋ अरु पदवी ज्यों लही द्विजाती॥
पढ़न केर इनके सब नियमा ❋ दुर्गा काष्ठि बरणै सीमा॥
बारह बर्ष अवस्था पाई ❋ करि उपनयन जाति जस गाई॥
मातु पिता सों आज्ञा मांगी ❋ गुरुपहँ जाय कामगृह त्यागी॥

समय नियमकरि पढ़नका, ब्रह्मचर्य्य के साथ।
पहिले निज निज वेद पढ़ि, नावहिं गुरुको माथ॥

बहुरि पढ़हिं शिल्पी के भेदा ❋ जे अथर्व कर है उपवेदा॥
अपर अङ्ग बसि गुरू निकेता ❋ गुरुसों पढ़ैं जीविका हेता॥
पढ़ि सब शिल्पशास्त्र सुनु भाई ❋ तब शिल्पी की पदवी पाई॥
चारिवर्ष अभ्यास के हेता ❋ बसैं नियम करि गुरू निकेता॥
तेहि अवसर गुरु अपने पासा ❋ वस्त्र अशन कर करै सुपासा॥
भोजन बसन केर सो दामा ❋ गुरुहिं समर्पै मन बच कामा॥
मातु पिता से आज्ञा मांगी ❋ जो है शिल्प वेद अनुरागी॥
याज्ञवल्क्य स्मृति सो लिख्यऊ ❋ सब व्यवहार अवस्था कह्यऊ॥

वेद शास्त्र के पढ़न में, ब्रह्मचर्य का काल।
विगत होत असकहैं मुनि, धारणकरि जयमाल॥

पढ़ते बहुरि नियम की आज्ञा ※ है इनको जो हैं शिल्पज्ञा ॥
वेद पढ़े बिन बुद्धि न बढ़ई ※ बुद्धि बढ़े बिन शिल्प न लहई ॥
वेद पढ़े पहिले मनलाई ※ समय नियम करि पाछे जाई ॥
गुरु गृह में सब करैं निवासा ※ शिल्प क्रिया सीखैं गुरुपासा ॥
गुरु निज गृह से भोजन देई ※ ताके बदले काज न लेई ॥
पालन करैं पुत्र की नांई ※ शिष्य पुत्र में भेद न भाई ॥
बिनु शिक्षा परिपूरण कीने ※ श्रेष्ठ गुरू जो सब गुण भीने ॥
ताको परित्याग जो करई ※ बिनु अवसर बीते मुनि कहई ॥

ता अवसर में विदित है, राजा को अधिकार।
आज्ञा देवै शिष्य को, काहे कियो करार ॥

गुरुकुल में तुमकरो निवासू ※ बिनु सीखे नहिं बनै सुपासू ॥
जो राजा का कहा न मानै ※ हठि गृहको जो करै पयानै ॥
तात्क्षण राजा देइ बँधाई ※ बेत चारि पाछे पिटवाई ॥
जबतक कार्य सिद्ध नहिं होई ※ तबतक गुरुगृह राखै सोई ॥
समय नियम के बीचहि काला ※ सिद्ध करै जो शिल्प रसाला ॥
सोउ बसि गुरुगृह काज सँवारै ※ शिल्प द्रव्य सब गुरुको वारै ॥
नियम कालतक यहिविधि रहई ※ सो तक्षा सब विधि सुखलहई ॥
गुरु दक्षिणा देइ बहुभांती ※ गुरुहि प्रसन्न करै दिनराती ॥

यहिविधिसबगुण प्राप्तकरि, गुरुहि बन्दि बहुबार।
करै प्रदक्षिण गुरुहि पुनि, आज्ञालहि सुखसार ॥

तब निज गृह को जावे जोई ※ है द्विजाति कुल काष्ठी सोई ॥
यहि विधि पठन क्रिया सब गाई ※ नारद निज संहिता दिखाई ॥
सोई दुर्गा कहत सुनाई ※ पठन क्रिया ज्यहिभांति सुहाई ॥
विद्या और पढ़त जो कोई ※ त्यागे गुरुदण्डी नहिं होई ॥

शिल्पशास्त्र में दण्ड विधाना ❀ दुर्गा देखत वेद पुराना ॥
याते शिल्पशास्त्र सबहीते ❀ है विचित्र मैं कहत सभीते ॥
करि विचार देखो मनमाहीं ❀ यहिबिनु सुखकोउ पावतनाहीं ॥
दुर्गा कहत बात यह सांची ❀ पण्डित जगन्नाथ सों जांची ॥

शिवपुराण को निरखिकै, दुर्गा कहै बहोरि।
जो द्विजाति रथकार हैं, ताके जन्म निहोरि॥

संसकार निज कीन जो नाहीं ❀ सोहैं व्रात्य बरण जगमाहीं ॥
घ्रिताक्षी सो कीन प्रसंगा ❀ जन्मे नौ बालक शुभ अंगा ॥
तिनके नाम सुनावों तोहीं ❀ शिवपुराण बिच शोभित जोहीं ॥
बनकट वा निषाद को विन्दक ❀ तबलदार चर्मकार जो निन्दक ॥
कुंभकार चित्रकार जो जाये ❀ नापित माला कार कहाये ॥
कर्म भेद सों संज्ञा पायो ❀ सोइ निज २ जीविका दृढ़ायो ॥
संसकार छांड़े जग जोई ❀ चाहे ब्राह्मण क्षत्रिय होई ॥
चाहे वैश्य उच्च कुल केरा ❀ सब-निन्दाके पात्र घनेरा ॥
संसकार सब करहु बहोरी ❀ दुर्गादास कहत करजोरी ॥

अब प्रसङ्ग वश कहत हौं, उतपति वैदन केरि।
ज्यों अश्विनीकुमारतें, प्रकट भये सो हेरि॥

अश्विनि कुमर जात मग देखा ❀ ब्राह्मण बधू सुभग युत वेखा ॥
रूप देखि मोहित सो भयऊ ❀ काम बिवश प्रसङ्ग तहँ कियऊ ॥
एक पुत्र तत्कालहि जायो ❀ ब्राह्मण बधू दुःख अति पायो ॥
सो धन्वन्तरि वैद्य कहायो ❀ जो सब विधि औषधी चलायो ॥
शूद्रा एक सकल गुणखानी ❀ धन्वन्तरि जियमाहिं समानी ॥
सो निज गृह बिच राख्यो ताही ❀ भोग कियो बहुभांति सराही ॥
तासों पुत्र भये बहुतेरे ❀ बन कटवा अरु वैद्य घनेरे ॥

सो फिरि शूद्रा ब्याहेउ जाई ❀ सर्प वैद्य तासों भे भाई ॥
नीच कर्म सों नीच कहायो ❀ यह सब ब्रह्मखण्ड में गायो ॥

वेद सहित रथकारकी, उतपति कहौं बहोरि।
अग्नि वायु अरु सूर्य सों, विश्व विराटनिहोरि ॥

विश्वकर्मा विराट महराजा ❀ प्रकट्यो वेद विश्व के काजा ॥
तीनि वेद पहिले उपजायो ❀ अग्नि वायु अरु सूर्य कहायो ॥
अग्नि सों प्रकट भयो ऋग्वेदा ❀ यजुर्वेद है वायु को भेदा ॥
सामवेद सूरय सों जायो ❀ यहिविधि मनुस्मृती में गायो ॥
रवि प्रकट्यो अश्विनीकुमारा ❀ भार्यासहित विदित जगसारा ॥
तिनके पुत्र विदित को कासा ❀ ब्राह्मण ग्रन्थमाहिं यह भासा ॥
औरौ तीनि पुत्र उपजायो ❀ कश्यप मरुत अरण्य कहायो ॥
काष्ठी अरु कपालिका दोई ❀ कन्या सब लक्षणयुत जोई ॥

काष्ठी को ब्याहत भयो, उदवन्ता ज्यहिभांति।
सो सब दुर्गा कहत है, शास्त्र निरखि दिनराति ॥

काष्ठी सों जो सन्तति भयऊ ❀ काष्ठकेता पदवी लह्यऊ ॥
उत्तम कुल रथकार सो मानो ❀ इनके संसकार सब जानो ॥
यह सब सत्य देव बिच लिखेऊ ❀ सोइ निषाद पदवी जग लहेऊ ॥
सोई आयसाचार्य कहावैं ❀ अश्माचार्य कि पदवी पावैं ॥
लोहा पत्थर काष्ठ घनेरा ❀ है व्यापार सदा इन केरा ॥
जिसमें जो है परम प्रवीना ❀ सो तामें आचार्य कुलीना ॥
यहिविधि ये उत्पति जगपायो ❀ क्रिया भेद से नाम सुहायो ॥
यह शंकर दिग्विजय में गायो ❀ सो सब दुर्गा प्रकट दिखायो ॥

नारिशि मेडय दुइ सुत गुणी, भे कपालिका माहिं।

स्वर्णकार सो विदित भे, कथा कहौं अब ताहिं॥

काम विवश शूद्रा पहँ जाई ❀ मेध्य आपनी विनय सुनाई॥
बहु प्रकार ताको समुझाई ❀ निज गृहमाहिं ताहि लै आई॥
तब गृह से सब दियो निकारी ❀ तासों स्वर्णकार भे भारी॥
कर्ण नासिका छेदत फिरहीं ❀ ये सब यही जीविका करहीं॥
सो सब जगबिच निन्दित भयऊ ❀ संसकार पदवी नहिं लह्यऊ॥
नारिकेर उत्तम कुल जानो ❀ अलका कार तासु सुतमानो॥
देवन पूजे विविध प्रकारा ❀ सोई अलकापुरी सँवारा॥
अलका कार नाम यहि भांती ❀ सो पायो रथकार सुजाती॥
यहिविधि शौनक बरणत भयऊ ❀ दुर्गादास प्रकट सो कह्यऊ॥

बिप्र शूद्र कुल होत हैं, शूद्र ब्रह्मकुल होत।
ऐसे क्षत्रिय वैश्य हू, उच्च नीच कुल होत॥

ब्राह्मण शूद्रा ब्याहि जाई ❀ तासों होत पराशव भाई॥
जो शूद्रा में कन्या होई ❀ ताको बिप्र ब्याहि फिरिलेई॥
तासों फिरि कन्या जो होई ❀ ब्राह्मण बधू होत फिरि सोई॥
यहिविधि सातबार जो करई ❀ ब्राह्मण वर्ण होत मनु कहई॥
ऐसेहि शूद्र होत द्विजभाई ❀ और कथा कहिहौं मनलाई॥
यहिविधि कह्यों वंश विस्तारा ❀ जो द्विजाति कुल हैं रथकारा॥
कहेउ सकल पूजन विधिगाई ❀ वेद शास्त्र की जस मनसाई॥
बहुरि कहेउ षोड़श संस्कारा ❀ ज्यहिविधि होत विप्रकरसारा॥
यह प्रकरण सम्पूरण भयऊ ❀ मन कामना बांचि सब लह्यऊ॥

शिव बासुकि सम्बादबिच, लिख्यो द्विजाति अनेक।
सो वृत्तान्त वर्णन करत, दुर्गा सहित विवेक॥

एक समय बासुकी विनीता ❀ पक्षिराज उर भयउ सभीता॥

सो कैलासहि गयो दुखारी ❀ नायउ शीश जाय त्रिपुरारी ॥
सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ ❀ परमदयालु शम्भु तब कहेउ ॥
धरहु धीर मम शिष अब मानहुँ ❀ काहूकी भय उर मति आनहुँ ॥
भरतखंड बिच सुन्दर देशा ❀ नाम विदित मेवाड़ विशेशा ॥
चित्रकूट गिरि तहँ अति भ्राजै ❀ ताऊपर मम लिंग बिराजै ॥
तहँ तुम जाय करहु मम सेवा ❀ उरबिच कछु जनि आनेहुभेवा ॥
यहिविधि शम्भुवचन सुनिकाना ❀ मेड़वार को कियो पयाना ॥
एक लिंग ढिग पहुँचेउ जाई ❀ तप अति कियो हर्ष उरलाई ॥

होइ प्रसन्न तब लिंग कहेउ, सुनहु बासुकी धीर।
मै प्रसन्न तव तप निरखि, मांगहुवर मम तीर ॥

तब बासुकी कहेउ शिरनाई ❀ नाथ मोरि भय देहु छोड़ाई ॥
एकलिंग पुनि कह मुसुकाई ❀ मम उपदेश करहु अहिराई ॥
ताते होइ उपद्रव नाशा ❀ लहहु निरन्तर सुख करि बासा ॥
मम ढिग तीर्थ विचित्र विराजै ❀ ऋषि आश्रम अनेक तहँ छाजै ॥
तहँ निर्माण करहु पुर एका ❀ तेहि पुर विप्र बसाव अनेका ॥
तिन विप्रन को आपन जानी ❀ पालन करहु ईश निज मानी ॥
ह्वै प्रसन्न वे द्विज तेहि काला ❀ देइहैं आशिर्बाद बिशाला ॥
तिन ब्राह्मण की सेवा हेता ❀ अपर द्विजन कहँ देहु निकेता ॥
आशिर्बादी विप्रन केरा ❀ अज्ञाकारी रहै घनेरा ॥

तिनके निमित सहाय जो, बैश्य सुतार लोहार।
स्वर्णकार आदिक सकल, यज्ञहेत शिल्पकार ॥

पुर बिच गृह बहु करहु तयारा ❀ गृह सामग्री धरहु अपारा ॥
दान देहु ब्राह्मणन बोलाई ❀ पूजहु शिव मम मन बिचकाई ॥
तिनके प्रेम विवश तहँ आई ❀ करिहौं मैं निवास हरषाई ॥

तेहिपुर करिहै बास भवानी ❁ कात्यायिनी नाम जग जानी ॥
नाम तीनि पुर कर विख्याता ❁ भय हर भट हर नागर जाता ॥
दै अशीस जो रक्षण करहीं ❁ ते द्विज तव उपकारी अहहीं ॥
पुरके नाम सहित द्विज केरा ❁ ह्वै है नाम विदित सो फेरा ॥
भय हर मेवाड़े द्विज एका ❁ दूसर नागर सहित विवेका ॥

नाम तीसरो विदित जग, मेवाड़े भटहार ।
यहि विधि ब्राह्मण शाखिसुद, सबहु सहित विहार ॥

एकलिंग की सुनि यह बाणी ❁ कहेउ बासुकी सर्प प्रमाणी ॥
तुमरी आज्ञा मैं शिर धारी ❁ मोहिं देखाउ विप्र त्रिपुरारी ॥
यह सुनि तुरत शम्भु दर्शावा ❁ चौबिस गोत्र केर द्विज पावा ॥
तिनके नाम सुनौ मनलाई ❁ दुर्गा कहत सनेह लगाई ॥
वत्स[1] वात्स्य[2] अरु भारद्वाजा[3] ❁ गार्ग्य[4] अवर उपमन्यु[5] विराजा ॥
कौंडिन्य[6] गौतम[7] द्विजराई ❁ कश्यप[8] मांडव्य[9] कह गाई ॥
कृष्णात्रेय[10] पाराशर[11] जानो ❁ कात्यायन[12] अरु गर्गहि[13] मानो ॥
शांडिल्य[14] अरु कुशिक[15] लखायो ❁ कौशिक[16] गोत्र नाम फिर पायो ॥

चन्द्रात्रे[17] जगविदित फिर, भार्गव[18] गालव[19] गोत ।
विष्णुवृद्ध[20] मुद्गल[21] तथा, मौनस[22] जो कुल द्योत ॥

वांछि[23] अत्रिय[24] चौबिस गोता ❁ भव वारिधि तारनको पोता ॥
ह्वै प्रसन्न शिव कह मृदुबानी ❁ ये चौबिस द्विज हैं गुणखानी ॥
निज वैभव रक्षण के हेता ❁ भटहरपुर महँ देहु निकेता ॥
भट मेवाड़े इनके नामा ❁ ये पूरण करिहैं तव कामा ॥
वैश्य चतुर्गुण देहु बसाई ❁ वे सब करिहैं सेवा आई ॥
ताकर अर्द्ध मेवाड़ सुतारा ❁ जानत वास्तु विषय कर सारा ॥
और बसाव सोनार मेवारे ❁ लोहकार ताम्बूली वारे ॥

नापित अरु कहार की जाती ❀ पुरबिच देहु बसाइ द्विजाती ॥

इन सबके गृह काजहित, और जाति सब राखि।
मेवाड़े के नामसे, विदित करहु तुम भाखि ॥

सकल सोनार लोहार सुतारा ❀ भट ब्राह्मण के अज्ञाकारा ॥
कलियुगहूं भट ब्राह्मण केरा ❀ है हैं ए यजमान घनेरा ॥
करिहैं अग्निहोत्र ये विप्रा ❀ यातें इन्हहिं बसावहु क्षिप्रा ॥
शिल्पकार द्विज आज्ञा मानै ❀ तासो इन्है सकल द्विज जानै ॥
भट मेवाड़े शिष्यन माहीं ❀ ये सब हैं प्रधान जगमाहीं ॥
मम ढिग त्रयं वायुपुर बासा ❀ देहु इन्हें सब भांति सुपासा ॥
त्र्यम्बायु मेवड़े नामा ❀ जिनको कहत त्रिवड़ी धामा ॥
ये हैं सब पदार्थ के ज्ञाता ❀ भटमेवाड़े द्विज सो नाता ॥

भट मेवाड़े विप्र हित, सेवक द्विज बोलवाय।
चौरासी पुर में इन्हें, देहु जीविका जाय ॥

चौरासी द्विज संज्ञा पाये ❀ भटमेवाड़े विप्र कहाये ॥
तीनि भेद ये द्विज कहलाये ❀ चौथा भेद अवर मुनिगाये ॥
चौबिस गोत्र जो मैं दर्शावा ❀ सो सब पृथक् २ द्विजगावा ॥
काहूको ये चौबिश गोता ❀ मान्यो बन्धु सरिस खद्योता ॥
तेहि कारण बन्धुल एकजाती ❀ भट मेवाड़े सबी द्विजाती ॥
इन सब कहँ टिकवहु मनलाई ❀ मम शिक्षा शिर धरि अहिराई ॥
अस कहि शिव भे अन्तर ध्याना ❀ तब वासुकी हर्ष उर आना ॥
विश्वकर्मा को तुरत बोलाई ❀ उत्तम पुर निर्माण कराई ॥

चौबिस गोत्र द्विजातिको, दियो पूजि अहिराय।
निज कुल रक्षा के निमित, शिवकी आज्ञा पाय ॥

भटहरपुर जब कीन्हों दाना ❁ आशिर्वाद दियो द्विज नाना ॥
लहि अशीस वासुकि यहिभांती ❁ प्रमुदित भये सर्प कुल जाती ॥
भटहर क्षेत्र बीच सब देवा ❁ कियो निवास देखि द्विज सेवा ॥
तिनके नाम सुनौ मनलाई ❁ वर्णत दुर्गा शास्त्र लखाई ॥
भट्ट अर्क शिव हरि गणनायक ❁ ढूंढी क्षेत्रपाल सबलायक ॥
कात्यायिनी भवानी नामा ❁ एक लिंग शिव तहँ अभिरामा ॥
अरु त्रिकूट गिरि कीन्हों बासा ❁ बहे नदी तेहि पुर बन्वासा ॥
ब्रह्मा गणपति बटुक विराजैं ❁ अन्न पूर्णा मन्दिर छाजैं ॥

ये प्रसिद्ध सुरगण सकल, तेहि पुर करैं निवास ।
और व्यवस्था कहौ अब, सुनौ चित्तधरि आस ॥
स्वायम्भू मनुके सुवन प्रियव्रत परम उदार ।
विश्वकर्मा की सुतामें, भे अग्नीध्र कुमार ॥

ब्रह्मा पूर्व चिती सुकुमारी ❁ भेजेउ रूप शील गुण वारी ॥
ताके सुतभे नाभि उदारा ❁ यज्ञ कीन पुत्रेष्टि प्रचारा ॥
ऋषभ देव सुत तिनके भयऊ ❁ सुत शत जायती में जनेऊ ॥
ऐकाशी भये ब्राह्मण जानो ❁ कर्म्म प्रधान विश्व मे मानो ॥
नव भये योगी परम पुनीता ❁ विद्या ज्ञान ध्यान अगुनीता ॥
भरत एक भे परम उदारा ❁ जासों भारत खण्ड उज्यारा ॥
तिनके भये सुमति बुधि सागर ❁ देवताजिततिनके अतिआगर ॥
देव द्युम्न ताकर सुत भयेऊ ❁ दिवद्युम्न परमेष्ठी जनेऊ ॥
तिनके सुत प्रतीह गुणधामा ❁ प्रति हर्ता तिनके अभिरामा ॥
प्रतिहर्ता के सुत अज भूमा ❁ तिनके भे उद्गीथ सुरूमा ॥

तिनके भे प्रस्ताव, ताके हृदयज विदित यह ।

तिनके विष्णु पृथुषेण, नक्त गया भे ताहि पह॥
गयके सुतभे चित्ररथ, ताके भे सम्राट।
तिनके भये मरीचि, नृप धर्म शील के बाट॥
बिन्दु मान ताके भये, मधु तिनके अभिराम।
बीरव्रत ताके भये, मन्थु प्रमन्थू नाम॥
मन्थू सुत भौवन भये, महाबली रणधीर।
तिनके सुतत्वष्टा भये, शिल्प शास्त्र में बीर॥
तासों शिल्पाचार्य्य भे, महागुणी सुख धाम।
लखि स्कन्द पुराण बिच, दुर्गा करत प्रणाम॥
नारायण के कमल से, ब्रह्मा भये प्रकाश।
ब्रह्मा से अत्री भये, जिन कुलके कुशि काश॥
अत्री ऋषिके वंशमें, भये सोम नृपराज।
तिनके बुध बुधसे भये, पुरुरवा महराज॥

सो उर्वसी स्वरूपा पाई ❃ बहु प्रकार भोग्यो मनलाई॥
तासों आठपुत्र गुण खानी ❃ भये जगत में जो विज्ञानी॥
ताके नाम सुनावौं सबही ❃ जेहिविधिविदितविश्वबिचअहही॥
आयु द्रढायु और अश्वायू ❃ वसु धृतिमान विदित धनरायू॥
शुचि सुतायु संज्ञा इन केरी ❃ आयुके तीन पुत्र भे फेरी॥
नहुप छत्ररथ गुणके धामा ❃ रजी रम्भ इनके यह नामा॥
यति संयाति ययाति रायती ❃ कृति वियती षट नहुष संतती॥

यतिकुमार योगी भये, बैखानस ऋषि नाम।
राजा भये ययाति तब, योग ज्ञान तप धाम॥

तेहि ययातिके हुइ बधू, उत्तम गुणकी खान।
देवयानि पहिली बधू, शर्मिष्ठा पुनि मान॥

देव जोनि पहिली महरानी ❁ कन्या शुक्राचार्य्य सो मानी॥
शर्मिष्ठा दूसरि जो रानी ❁ सो बृषपर्वा सुता सयानी॥
यदु अरु तुर्बसु देवयानि के ❁ पुरु अरुद्रुह्य द्वितीय मात्रिके॥
पुरुके जनमेजय सुत भयेउ ❁ जनमेजय प्राचीनहि जनेउ॥
ताके मनसि भये यश धामा ❁ तासों भयो वीत भय नामा॥
तासों सिन्धु भयो यह जानो ❁ अमित पुत्र तिनके फिर मानो॥
तिनके भे संयाति कुमारा ❁ अहवादिता के सुकुमारा॥
अहंवादिके भे भद्राश्वा ❁ ताके भाति नारज भे खासा॥
तिनके प्रति रथ भये उदारा ❁ ताके कण्व भये जग न्यारा॥
मेधा तिथि ताके रणधीरा ❁ युद्ध क्रिया में जो अति बीरा॥
तिनके तंसुरोध नृप राऊ ❁ तिनके सुत दुष्यन्त गनाऊ॥
एक समय राजा दुष्यन्ता ❁ गये बनहि मृग मारन जंता॥
देखेउ नारि तहां सुकुमारी ❁ शकुन्तला देवन मनहारी॥
भयउ बिवाह योग गन्धर्बा ❁ लायो नृप निज भवन सो गर्बा॥

भरत भये दुष्यन्त से, महाबली रणधीर।
दान युद्ध गुणशील युत, भूप अनूपम बीर॥

मातु कोपते सुत नहिं भयऊ ❁ भूप हृदय चिन्ता सो दह्यऊ॥
मरुत देव तब लीन्ह बोलाई ❁ पुत्र हेतु शुभ यज्ञ कराई॥
भरद्वाज सुत लहेउ पुनीता ❁ तिनके वितथ नाम अविनीता॥
तिनके पांच पुत्र बहु रंगा ❁ कपिल सुकेत इंगि शुभ अंगा॥
सुहोतार होत्रक गुणखानी ❁ ये भये पांच पुत्र मृदुबानी॥
कुश अरु काश्य गृत्स पतिज्ञानी ❁ सुहोतार के सुत गुणखानी॥

काश्य के पुत्र काशि है खासा ❀ जाकर अपाभ्रंश को काशा ॥
अपाभ्रंश सुहोतार सुतारा ❀ काष्ठ क्रिया जो कीन प्रचारा ॥
काशि पुत्र से बहुत भांति के ❀ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य जाति के ॥

पुत्र हेतु जब यज्ञ किय, श्री दशरथ महराज।
शिल्पकार तहँ जायके, बहु विधि कीन्हो काज ॥

सो प्रसंग सब देउ देखाई ❀ जेहिविधि बालमीक मुनिगाई ॥
अवधपुरी के दशरथ राजा ❀ जाकर नाम जगत में छाजा ॥
शासत राज्य बहुत दिनबीते ❀ बिना पुत्र दुख कहत सभीते ॥
गुरुवशिष्ठ यक दिवस बोलाई ❀ ताको मन की विथा सुनाई ॥
तब वशिष्ठ कह सुनहु भुआला ❀ चिन्ता दूर करहु यहि काला ॥
यज्ञ अहै पुत्रेष्टि रसाला ❀ ताको शीघ्र करौ महिपाला ॥
है हैं चारि पुत्र गुण धीरा ❀ समर क्रिया में सो अति बीरा ॥
सुनि दशरथ बोलेउ करजोरी ❀ पुरवहु नाथ आस अब मोरी ॥

दशरथ कहेउ कि सुनहु गुरु, तुम सबलायक नाथ।
यज्ञ वस्तु मँगवाइके, मो कहँ करहु सनाथ ॥

एवमस्तु कहि गुरु तेहि काला ❀ वृद्ध विशेष राज्यके आला ॥
तिनहिं बोलाई वशिष्ठ सुनावा ❀ यज्ञ क्रिया जस वेद बतावा ॥
तब तिन जाय द्विजाति हकारा ❀ कर्म्म कार वर्द्धक रथकारा ॥
रचना यज्ञ क्रिया बहुभांती ❀ जो जानत रथकार द्विजाती ॥
सो सब आय यज्ञ अस्थाना ❀ रचना अमित भांति सो ठाना ॥
यज्ञ क्रिया सब तुरत बनावा ❀ देखिसो दशरथ अतिसुखपावा ॥
बालमिक ने जो लिखि राखा ❀ दुर्गादास निरखि सो भाखा ॥

विश्वकर्मा के चरित अरु, पूजन विविध प्रकार।

आदिपर्व भारत लिख्यो, दुर्गा कहति बिचार ॥

कुती प्रभास बधू गुणखानी ❁ तासों मे बिशुकर्मा ज्ञानी ॥
देव वर्द्धकी जगत प्रसिद्धा ❁ कर्त्ता शिल्प सहस्र सब सिद्धा ॥
भूषण अमित भांति जगजेते ❁ विश्वकर्म्मा बिरचे शुभ तेते ॥
रचै विमान देवहित जोई ❁ शिल्पा चार्य्य कहावत सोई ॥
पूजित सो जग बिच बहुभांती ❁ शिल्पकार पूजत दिन राती ॥
ता कहँ जो पूजै मन लाई ❁ शिल्प क्रिया पावै सुखदाई ॥
भारत बिच यह कथा बिराजै ❁ अपर पुराणन में फिर भ्राजै ॥
सो सब दुर्गादास बखानै ❁ बिश्वकर्मा को सब जग मानै ॥

बातस्कन्ध विशाखअरु, कालविधातानाम ।
विश्वकर्म्मा अरु तुम्बरू, कालदन्तगुणधाम ॥

बिना योनि उत्पति इनकेरी ❁ कोउ योनिज इनकहँ कह फेरी ॥
भक्षण करैं वायु यहि भांती ❁ तीनिलोक बिचरैं दिन राती ॥
बिश्वकर्म्मा विमान जो रचेऊ ❁ ताकर भेद कहौ यश सुनेऊ ॥
जब रघुबीर निशाचर मारा ❁ रावण हनेउ सहित परिवारा ॥
अवधपुरी को कीन पयाना ❁ तब पुष्पक मांगेउ भगवाना ॥
रामचन्द्रकी आज्ञा पाई ❁ तुरत विभीषण दियो मँगाई ॥
ताकर उपमा कहौं बहोरी ❁ बाल्मीक मुनि कहेउ निहोरी ॥
तामें सुबरण की चितकारी ❁ बिश्वकर्म्मा जो रचेउ सवांरी ॥

बिबिधि भांतिके वृक्षअरु, पशुपक्षी बहुभांति ।
बेदी मणि बैडूर्यकी, जो शोभित दिनराति ॥

छाति चांदी की बनी विशाला ❁ सुबरण कवँल केर शुभमाला ॥
घंटा सब दिशि माहिं बिराजै ❁ खिड़की अमितभांति सो राजै ॥

मोतिनकी झालर बहुसोहै ❀ रतन अनेक प्रकार के जोहैं ॥
जेहिविधि शोभित पुष्प विमाना ❀ को कविबरणि सकत सो जाना ॥
यहिविधि बाल्मीक मुनि बरणा ❀ सो दुर्गा भाष्यो करि परणा ॥

शिल्पशास्त्र उपदेश की, विधिवर्णों बहुभांति।
ऐहि विधि बरणेउ वेदश्रुत, सोसब सुनोद्विजाति ॥

॥ १ ॥

विद्या शिल्प सिखन के हेता ❀ करै प्रश्न गुरु जाय निकेता ॥
सुनिकै प्रश्न गुरू ततकाला ❀ उत्तर करैं बिचारि बिशाला ॥
यहि विधि मित्र परस्पर मानी ❀ बिजुली आदि सिखावैं ज्ञानी ॥

॥ २ ॥

जो विद्वान करैं नित दाना ❀ विद्या शिल्प बुद्धि सन्माना ॥
हमैं तुम्हैं आनन्दित करहीं ❀ सो विद्वान प्रशंसा लहहीं ॥

॥ ३ ॥

जब मनुष्य ज्ञानी ढिग जावैं ❀ सत्य ज्ञान कर प्रश्न सुनावैं ॥
उत्तम पुत्र होहिं केहि भांती ❀ शूर बीर उपजैं दिन राती ॥
ते विद्वान देयँ उपदेशा ❀ करैं प्रचार जाय सब देशा ॥

॥ ४ ॥

जो विद्वान पढ़ाइकै, करि बहुबिधि उपदेश।
सबकी बुद्धि बढ़ावहीं, वैद्विज हितू हमेश ॥

॥ ५ ॥

सायण वेद भाष्य अनुसारा ❀ भृगु कर अर्थ कियो रथकारा ॥
यातें सिद्धहोत यह बानी ❀ शिलपकला जानत सब ज्ञानी ॥

॥ ६ ॥

औरौ कहौ कथा मनलाई ❀ यहिविधि वेद बीच ऋग गाई ॥
जो सत संग करैं दिनराती ❀ सिखन हेतु बिद्या बहु भांती ॥
वे नर सदा प्रशंसा लहहीं ❀ तिनकहँ शत्रुजीति नहिं सकहीं ॥

रहत धनाढ्य सदा ते प्राणी ❀ वैशिक्षित बोलैं नित बाणी ॥
ताकर बढ़त पराक्रम भारी ❀ दुर्गाकह यहि भांति पुकारी ॥
बरणौं बहुरि व्यवस्था नीकी ❀ लिख्यो वेदबिच हित सबहीकी ॥
॥ ७ ॥

उत्तम वै विद्वान हैं, जो देवैं उपदेश ।
तिनकी मान्य बड़ाई, गावै वेद हमेश ॥

पर उपदेश उन्हीं को देहीं ❀ जो पदार्थ में रहैं सनेहीं ॥
सो उपदेशक सुखी सदाहीं ❀ सोइ धन धर्मज्ञान उपजाहीं ॥
जो नित करै प्रशंसिति कर्मा ❀ सो विद्वान बीच लहै धर्मा ॥
॥ ८।९ ॥

याते सुनहु सुजन ममबाता ❀ जासों पढ़यो वेद की बाता ॥
पूजहु तिनहिं बृद्धसम जानी ❀ चाहे युवा होहिं वह ज्ञानी ॥
॥ १० ॥

औरो बात सुनहु मनलाई ❀ कहौं तुम्हैं ऋग्वेद देखाई ॥
जो विमान बाहन बहुनीका ❀ बिरचै और चलावै ठीका ॥
शिल्पी चतुर कहावैं सोई ❀ पूजहु तिनकहँ मिलि सबकोई ॥
यहि विधि सबमिलि प्रीतिदृढ़ाई ❀ विद्या शिल्प पढ़ावो भाई ॥
॥ ११ ॥

जो उपदेश दियो प्रभु, ऋग मंडल के माहि ।
सो मैं सबहि सुनावौं, सुनो सकलजन ताहि ॥

येसब मनुज सुनौ मनलाई ❀ तुम बिरचौ बिमान सुखदाई ॥
जो बिनु बृषभ अश्वकर चलई ❀ केवल अग्नि वायु जल गहई ॥
चलै सदा जल थल आकाशा ❀ अव्याहत जाकी गति खासा ॥
यहि विधि यान रच्यौ सुखदाई ❀ सुख सम्पदा लहौ सब जाई ॥
॥ १२ ॥

जो यह वेद और उपवेदा ❀ अंग उपाय सहित सब भेदा ॥

और शिल्प विद्या गुणखानी ❀ जो जानै सोई जग ज्ञानी ॥
शिक्षा करै सबहि मनलाई ❀ सो सत्कार पाय जग भाई ॥
दुर्गा यहिविधि कहत हुलासा ❀ पण्डित जगन्नाथ के पासा ॥
॥ १३-१४ ॥

अलग अलग जो अग्निके, लखैं पदारथ माहिं।
सो सब कारज करि सकैं, लिख्योवेदऋगमाहिं ॥
॥ १५ ॥

यहिविधि कहेउ वेद मनुसाई ❀ अवरि कथा बरणौं अब भाई ॥
नहुष युधिष्ठिर कर सम्बादा ❀ वर्णन करौं सहित मर्यादा ॥
पूछेउ नहुष युधिष्ठिर पासा ❀ कहौ नाथ ब्राह्मण इतिहासा ॥
जाति से विप्रनाथ मैं जानौं ❀ की निज कर्म किये ते मानौं ॥
की कुल के जन्मे द्विज होहीं ❀ कहौ कि बहुत सुने द्विज होहीं ॥
की वृत्तीकारण यहि माहीं ❀ कहौ बुझाइ नाथमम पाहीं ॥
सुनि यह प्रश्न युधिष्ठिर भासा ❀ जाति से होहिं न ब्राह्मण खासा ॥
होहि न वेद पढ़ेते भाई ❀ सुने न जन्म उच्चकुल पाई ॥

कर्म कियेते होत द्विज, जो वृत्ती अनुसार।
शुभगुणकर्म स्वभावते, जानेउ ब्रह्मसुआर ॥

करै वृत्ति ब्राह्मण जग जोई ❀ द्विज मनते जानेउ जेहि सोई ॥
यहि विधि कहेउ कथा मनलाई ❀ और वृत्त बरणौं सुखदाई ॥
॥ १६ ॥

अब कछु नाम ऋषिन के गावों ❀ जे शिल्पकार वेद मैं पावों ॥
वामदेव पुरू छेप सुजाना ❀ दीर्घ तमा अगस्तजगजाना ॥
विश्वामित्र, कण्व, अत्रेया ❀ मधुछंदा अरु गौतम ज्ञेया ॥
परमेष्ठी, वशिष्ठ, विख्याता ❀ भारद्वाज बत्स जिमि जाता ॥
अरू भारथबर ऋषिन के राजा ❀ सुश्रुत अरु सर्वस्यु बिराजा ॥

ये सब ऋषिगण वेदमें, विशुकर्मा विख्यात।
शिल्पकार इनको भनत, ब्राह्मण ग्रन्थ देखात॥
और ऋषिन के नाम हजारा ❀ शिल्पकार जो विदित अपारा॥
ग्रन्थबृद्धि भयतें नहिं लिखऊँ ❀ और बृत्त कछु बर्णन करऊँ॥
॥ १७ ॥
बर्णों उमा शम्भु सम्बादा ❀ स्कन्द पुराण लिखेउ मर्यादा॥
कहेउ शम्भु अब सुनो भवानी ❀ विशुकर्मा शिल्पी अति ज्ञानी॥
ताकर बंश अमित रथकारा ❀ जो प्रतिमा देवन की सारा॥
कर्ता मोहिं जगतकर जानों ❀ शिल्पी को कर्ता मम मानों॥
शिल्पी के उर सब गुण भरेऊ ❀ मोहि शिल्पी में भेद न रहेऊ॥
यहि विधि शम्भु उमा सो भाषा ❀ दुर्गा ये सब बर्णेउ खासा॥
और कथा अब कहत हौं, पद्मपुराण देखाइ।
विशुकर्मा से कहेउ शिव, प्रेम सहित उरलाइ॥
विशुकर्मा अब सुनु ममबानी ❀ शिल्प क्रियामें सब विधि ज्ञानी॥
याते मम गृह रचहु सवांरी ❀ शोभा अमित भांति सुखसारी॥
तामें रहि सुख लहौं अपारा ❀ जो बैकुण्ठ स्वर्ग सों न्यारा॥
यहि विधि संभाषण शिव कीन्हा ❀ पूजन अष्टाक्षर से कीन्हा॥
पूजा शम्भु मन्त्र से कीन्हा ❀ अंग आवरण सहित प्रवीना॥
विशुकर्मा निज सुतन बोलाई ❀ सब मिलि सदन विचित्र बनाई॥
बन उपबन बहुभांति बनावा ❀ देखि सदाशिव के मन भावा॥
सब विधि जब परिपूरण कीन्हा ❀ तब पूजा करि शिववर दीन्हा॥
कहेउ शम्भु शिल्पी सुनो, होइ न कबहुं बिनास।
जो तुम्हरी सन्तान है, बृद्धि सिद्धि लहै खास॥
जो तुमको सुमिरै जग कोई ❀ पद पद पर पावै सुख सोई॥

असकहि बिदा उमापति कीन्हा ❁ अमितरत्न शिल्पिन को दीन्हा ॥
तब शिव भवन बीच पगु धारा ❁ साथ उमा गुणगण आगारा ॥
एहिहेत प्रभु कीन्ह बिहारा ❁ उमा साथ तेहिं समय अपारा ॥
याते चतुर मनुज जग जोई ❁ पूजे शिल्पी सब विधि सोई ॥
शिल्पी सदा करे जो कर्म्मा ❁ बरणन करौं सदा निजधर्म्मा ॥
करै सदा बलि वैश्व रसाला ❁ दानदेय सब भांति विशाला ॥
पूजैं शिव सब विधि जियजानी ❁ जप अरु होम करै मनमानी ॥

जो त्रिगुणात्मक देवये, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
तेहि विश्वकर्महि भेद नहिं, पूजिहि तिनहिंहमेश ॥

विश्वकर्मा शिल्पिन के देवा ❁ पूजन करिय न राखिय भेवा ॥
ये षट कर्म अहैं इन केरा ❁ दुर्गा बहुत यतन करि हेरा ॥
शिल्पिन के प्रधान गुण जोई ❁ बर्णन करौं सुनौं सब कोई ॥
पुर अरु नगर राजगृह जोई ❁ पञ्चदेव प्रतिमारच सोई ॥
कर्म प्रधान शिल्पियन केरा ❁ कथा और अब कहौ घनेरा ॥
अत्रेय ब्राह्मण जेहिविधि लिखेऊ ❁ मुख्य जीविका सो सब गहेऊ ॥
सो सब प्रकट देखावों भाई ❁ शिल्पी जनों सुनो मनलाई ॥
अग्नि वायु अरु सूर्य बिराजा ❁ इनसे करैं सदा ये काजा ॥
इनही के बल स्वर्ग पताला ❁ रथचढ़ि जायँ देव सबकाला ॥

शिल्प प्रशंसा कहतहौं, सुनौ सबै दै कान ।
कांसा तांबा आदि सब, धातुकार्य्य को मान ॥

॥ १७ ॥

शौनक सूत केर सम्बादा ❁ सुनौ कथा पावन मर्यादा ॥
कहेउ सूत सब सुनौ मुनीशा ❁ शिल्प शास्त्र उपदेशक बीशा ॥
तिनके नाम सुनौ मनलाई ❁ मत्स्य पुराण बीच जसगाई ॥

भृगु अरु अत्रि वशिष्ठ विशेषा ❀ विशुकर्मायम नारद शेषा ॥
अग्निजीत अरु इन्द्र सयानो ❀ बिशालाक्ष ब्रह्मा फिर मानो ॥
नन्दी श्वर अरु सनत कुमारा ❀ शौनक अरु बसुदेव कुमारा ॥
गर्गाचार्य्य कृष्ण अनुरुद्धा ❀ शुक्रदेव गुरु सब कुल वृद्धा ॥
ये सब शिल्प शास्त्र अधिकारी ❀ शिल्पकला बहुबिधि निर्धारी ॥

इति तृतीयकांडसमाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ।

❀ अथ ❀
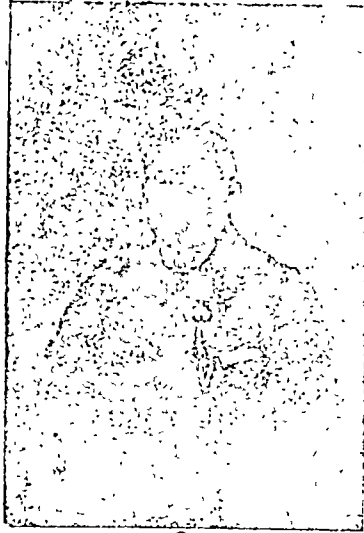
।। विश्वकर्म्म शिल्पसागर ।।

❀ दुर्गादास कृत ❀

❀ चतुर्थ काण्ड वेदशास्त्रोद्धृत ❀

मूर्ति श्रीविश्वकर्म्मा जी की ।

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ॥ ध्यानावस्थितद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ १ ॥ निराकारं निराधारं निराभासं निराश्रयम् ॥ नमामि सच्चिदानन्दं परमानन्दविग्रहम् ॥ २ ॥ विश्वकर्मान्वयं वक्तुं नालं ब्रह्म चतुर्मुखः॥तं वन्दे विश्वकर्माणं वन्दनीयपदाम्बुजम्॥३॥ लक्ष्मणपुर्य्यान्तु यत्स्थानं सदराख्यं,सुशोभते ॥ गुरुदीनात्मजस्तत्र काष्ठाश्मायःसुवृत्तिमान् ॥ ४ ॥ अस्ति दुर्गाप्रसादाख्यो धर्मवांश्चप पराक्रमी ॥ अनेन स्थापितः सौम्यो विश्वकर्मालयःशुभः, ॥ ५ ॥ अत्रैव स्थापिताशाला शिल्पकर्मप्रचारिका ॥ कुशिकासीयबालानां या समुन्नतिहेतवे ॥ ६ ॥ अस्या एव प्रधानो यो जातीयैः सम्मतो नरैः ॥ तेनैव तन्यतेचेयं त्वष्टृशप्रदीपिका ॥७॥ मुनिशास्त्राङ्कचन्द्राब्दे मासआषाढके शुभे ॥ जगत्प्रसादविज्ञेनं वर्णिता या महात्मना ॥ ८ ॥

तत्रैतद्विचार्य्यते किन्त्रैवर्णिको रथकारो रथक्रियाया योगाद्रथकारः ॥ १ ॥ उत जात्यन्तरमिति उभयत्र प्रयोगदर्शनात् सन्देहः किं तावत् प्राप्तम्-त्रैवर्णिक इति यथा (नियतञ्च) न त्रैवर्णिको रथकारः किन्तर्हि जात्यन्तरमेव तस्मिन्नहि रथ कारशब्दो रूढः स्मर्य्यते ॥ २ ॥

तस्मादपि जात्यन्तरमिति जात्यन्तरशब्दस्यको ऽर्थः। आन्तर्योधिकृत्यत्वष्टृवंशाग्रगण्यात्। नृपोद्भवा हंसोत्तीर्थं समानैकमूलत्वात्। यथाश्विनौ ककुहासा दयः। रक्षणामिव सकलसाकल्यात् न त्रैवर्णिको रथकारः कल्प्यते वक्तुम्॥ ३॥ योगनिमित्तः शब्दो यावद्योगयु क्तोऽतोन रथकाराख्याया रथकारनिमित्ततावात्स्यग्रहणं प्रत्ययकाद्यर्थमिति गौतमीयवचनम्-तद्यथा, शरदि संस्कारमिति द्वितीयानिर्देशाद्युपनयनसंस्कृतास्त्रैवर्णि काः किमस्माभिः कर्त्तव्यमिति लिखितंच शारथिपार्थौ मीमांसाशास्त्रे शास्त्रदीपिकायाम्॥ ४॥

अत्रचिन्त्यते रथाकृति धुरशकटसाध्यसमुदायादि रचना रथकाराणाम्॥ कल्पसूत्रे वर्षासु रथकारोऽग्नीना दधीत, शारदीयाः शरदि संस्कृतोपनयनाग्निहोत्रसम्ब न्धमत्र न कुर्युःविना त्रैवर्णिकान्तस्य जातित्वव्यवहारा दिति कल्पकौशिकाचार्येण प्रणीतमिति रथकारं धैर्याय तक्षाणामितिश्रुतेः॥ लिखितंचकश्यपस्यापि संहिताया म्। तथामहीधरभाष्यात्कल्पसूत्रात्प्रसिद्धञ्च॥ ५॥

अत्रधैर्यायतक्षाणांसूत्रधारं सूत्रशब्दस्य तन्तुकार्पास कुल्योधृतसूत्र संमेलनम्-चाग्निस्कन्धोत्रतन्त्रिकेणशुद्ध शिखाबन्धनाचमनीयमन्त्रव्यवहर्त्तव्यम्॥ यथाशुक्लयजु र्वेदसंहितायाम्॥ ६॥ शाखायाइषुकार एवं हेत्वै धनुष्का रम्-कर्म्मणिज्याकारं प्रसिद्धञ्च। अस्मिन्स्थले बाणकर्तृ

त्वचापवाहिकत्वेन तन्तंधर्मयाज्ञिका वदन्त्यत्र त्वष्टृ वंश
विभागत्वेन यज्ञमण्डलानुप्रवेशाधिकारः ॥ न तुर्य्यमत्र
प्रतीयते ॥ ७ ॥

किं विशिष्टमत्र ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्ववैश्यत्वविशिष्टानु
सन्धानात् प्रतीतं च यथा कुहश्विदोषाकुहवस्तोरश्विना
इतिश्रुतेः ॥ अश्विनाश्विनौयज्ञाभिमानिनौ पुंस्त्रियौ सम
भ्यार्चनास्त्र विभागकर्तृकः किमुभौ सूर्य्या पत्न्यौ अश्वि
ना अश्विनौ तज्जन्यमूल प्रतिबोधकत्वेन कुशिकाशा
त्रिवशिष्ठ यमदग्नि विश्वामित्रभरद्वाज प्रभृतिमहर्षीणां
मध्ये मौख्यैक्यप्रसिद्धं महर्षिम् ॥ ८ ॥

कश्यपगोत्रापत्याश्विनाश्विनौ ककुहास विश्वविरेच
कोद्रचनानुकूलव्यापार कर्तृको विश्वकर्मेति प्रसिद्धः । त
ज्जन्यरथकाराज्याकारेषु कर्तृकत्वविशिष्टत्वेन शौनकी
याथर्ववेद शाखामूल कत्वेन तत्तदापत्य धर्मशालीनाश्च।
अत्रलङ्केश्वरोक्तिध्वणितंचेतिभाष्ये, अपरान्तरेऽन्याच्च।
तद्यथा—वच्यन्ते वां ककुहासोजूर्णायामधि विष्टपि यद्वार
थो विभिष्पतात् । हविषा जारोऽपां पिपर्त्ति । हे अश्विना
श्विनौ देवौ अपांजारः स्वकीयतापेनोदकानांजरयितासू
र्य्यः। हविषाअस्मद्दत्तेन देवान् पूरयति। उदिते सूर्य्येहविः
प्रदानात्--सूर्य्यस्यपूरकत्वं द्रष्टव्यम् । अतः सूर्योदयकाले
युवाभ्यामागन्तव्यम् ॥ ९ ॥ यज्ञाग्निहोत्रकर्म कर्त्तव्य
मिति पात्राधेयरथ चक्रोषापात्रस्रुक् कारधर्माधिधेयाधार

भूतयज्ञानां पूर्वानुसन्धानकृत्। शोधकानां पुरुषाणां मध्ये समावेशो जातः सोऽयं शिल्पकर्म विशिष्टः।अनुज्ञा॥ १०॥ सितंच वर्णचिन्तामणौ प्रथमाध्यायत्रिपादपञ्चमानुवाक स्थवाक्यस्यैवार्थो विचिन्त्यत इति ॥ ११ ॥ काष्ठाश्मा यस रचनादिव्यापार परिवर्तकत्वक्रिया नैपुण्यात्। अग्निहोत्र संस्कारोपनयनवेदाध्ययनसामर्थ्यात् तथा एव शिल्पोपजीवनत्व व्यवसायेन व्यवस्थिताः "कानि शिल्पकर्माणि" स्कन्दपुराणे, यथा-रथचक्रं च काष्ठं च आयसादि समन्वितम्। आज्याकारंच नैपुण्याच्छिल्प कर्म प्रकीर्तितम्॥ गृहारम्भेन्द्रयज्ञेचकाष्ठपात्रादिविस्तृतम्। यज्ञायज्ञप्रवेशः स्यादेतच्छिल्पसनातनम्" अत्रसमावर्त्ति तव्या शिल्पकर्मा चरणसदाचाराइतिधर्माङ्गप्राधान्यञ्च त्यक्त्वोत्कर्षब्राह्मध्यमा मानंचैव तैत्तिरीयारण्यकश्रुति मूलकत्वभाष्यप्रसिद्धञ्च। सदाचारनिर्णयः वेदस्मृतीसदा चारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षा द्धर्मस्यलक्षणम्॥ यथाब्रह्मन्नस्वंमेदयं भवन्तस्यामिदेवे भ्यः इतिश्रुतेः तैत्तिरीयब्राह्मणप्रसिद्धा इति लिखिता अत्र भाष्य भूषित लङ्केश्वरेणक्विम्। यज्ञव्यापाराधेयकर्तृ कत्वधर्मगाहूय यज्ञं यजेति ॥ १२ ॥ गोत्राश्वलायन क श्यपौ समुत्पन्नं ककुहासविश्वकर्मादौ उरूलदस्येति वेदा ध्यवेदेति प्रसिद्धम्। मानं चैतत्। भार्गवीयश्रौत्र सूत्रसं हितायाम्। वर्णकल्पे अनुवाकपञ्चमस्थ वाक्यस्यैवार्थः।

यथाऊरूशब्दस्य गर्भगहनपुष्पादि संश्लेषविशिष्टत्वेन तत्तद्धर्मप्रतिपादकत्ववर्णान्तर्यवैश्यविभागाश्च मानं चै तत् श्रौत्रात्रिसंहितायां तृतीयाध्याये शरसूत्रभागुरीयभा ष्यप्रसिद्धे यथेष्टोप नयनादिसंस्कारद्विजातिवद् व्यवहर्त्त व्यम् ॥ १३ ॥ इतिशोभनार्थीयकल्पकौस्तुभे द्वादशाब्दा त्तथाचतुर्विंशाब्दं यथोपनयनसंस्कार कृषि वाणिज्य गो रक्षादानाद्याचार रथचक्र शिल्पमन्त्रोपजीवनकर्म कर्त्त व्यमिति बोध्यत इति न्याय सुधायाम् । संस्कार सम्मेलन प्रकरणान्तरे कौशिक एवं व्याख्यातवान् । देवाश्विनाश्विनौ ककुहासेष्टि विश्वकर्मेष्टियागौ कुर्वत्व न इति अग्निहोत्रं सुञ्जिका मेलनं मेखलामित्य न्तरञ्च त्वाष्ट्रवंश कर्मञ्चतुशिल्प सायस सम्भव इति लिखितं चो ल्काचार्य: कर्माधिकारानधिकार विवेचनाभागात् ॥ १४॥ द्विजोत्तममध्यमाधमाश्च उत्तमाश्चौलिपक रथकारद यश्च द्विजाति विपरीताकृतव्यवहारमध्यमाश्च रसश्च सोमाधमाश्चवर्णार्थ चन्द्रिकायाम् । अन्याश्च अग्निहो त्रोपनयनसंस्कारोत्तमाश्च। व्यापारायस काष्ठक्रियानै पुण्यव्यापारोपलम्भनाच्च शौनकीयाथर्व असान्त्रिक यागोपदेशात् ॥ १५ ॥ विष्णुमन्दिरार्चन विश्वकर्मस्था पन विधिमन्त्रकल्पनाप्यधिकारविधेयम् । यमकल्पसं हितायाम्-ककुहासात्रिभुमन्त्रचित्रगौ।विश्वकर्म कर्मेष्टि साधनत्वेन उपलायसच्छेदनत्वात्। इति तन्त्राकरे द्विती

ध्याये वर्ण विवेचनायाम् ॥ १६ ॥ स्कन्दमतङ्गौ मणि
जाद्विजनौ गङ्गातटे सोमेश्वरार्चनसमये महारुद्रयागक
रणात्वक्रियायाम्। पृच्छ्यते मुनिभिः कोऽयं ककुहासो
लिखित मस्ति वर्णार्थ चन्द्रिकायाम्-सुशलेन्द्रेण प्रश्नो
त्तरं दत्तं ककुहासाख्यं द्विजातित्व साधनत्वेन व्यवसाय
व्यवहारात् ॥ १७ ॥ एषवार्यमतङ्गेनरुद्रयज्ञ करणानन्तर
मेकः ककुहासख्या द्विजनौ विश्वकर्मा त्रिगण्येन जाति
त्वार्थ द्विजातयः सम्भाव्याः। तूष्णीत्वं मुन्यत्रिप्रभृत्या
आस्ताम्। लिखितंच निरुक्तार्थ दीपिकायां द्वितीयाध्याये
तृतीयानन्ते त्वष्टृवंशेतिलोकेप्रसिद्धम्। कालिपकार्थो
द्विजातयः मधून् स्वादेन सम्मेलनम्-मधुपीड़नम्। लाजा
परिक्रमणकुशनय बन्धनास्य रसपाणिं पाणिं प्रतिपाणिं
गृह्णीयात्। माहिषघ्नो माहिष्यात्। क्षत्रियाज्जातो
वैश्यायां माहिष्यः इतिश्रुतेः। त्रैवर्णिकस्य शिल्पोपजी
वनं प्रतिषेधम्। क्षत्रिया वैश्यकन्यजो माहिषेण उद्वाहृ
तम्। नारदश्रौत्रसूत्र नारदीय मालायामध्यायश्चतुर्थो
दृष्टव्यः। मार्गे गेहेवटेऽरण्ये दृष्टायाऋषिमेलनम्। जाता
अर्द्धनिशायान्तु महिष्या धर्मसंज्ञिकाः॥ उत्तमा मध्यमा
श्चैव अधमास्त्रिविधाःस्मृताः। अग्निहोत्रं च कार्यं च
उपनयनादिकर्मभिः। उत्तमा। वैश्यभार्यायां मध्यमा
नृपसङ्करी ॥ अधमाद्दष्टिसंजाता माहिष्यास्त्रिविधाः स्मृ
ताः। इति शाल्यसूत्र टीकायाम् ॥ १७ ॥

अथ विश्वकर्म्मोत्पत्तिः ॥

कस्य रूप समूहेधा यत्काय मभिचक्षते यस्तुतत्र पुमा
नसो भून्मनुः स्वायंभुवः स्वराट स्त्रीयासच्छित रूपाख्या
महिष्यस्य महात्मनः ॥ १ ॥ १८ भा० ३-१२-५२
प्रियव्रतोत्तानपादौ सुतौस्वायंभुवस्यवै यथाधर्मं युगुप
तुः सप्तद्वीपवतीं महीम् ॥२॥ जायेउत्तानपादस्य सुनीतिः
सुरुचिस्तयो सुरुचिः प्रेयसी पत्युर्नेतरायत्सुतोध्रुवः ॥३॥
प्रजापतेर्दुहितरं शिशुमारस्य वै ध्रुवः उपयेमे भ्रमिं नाम
तत्सुतौ कल्पवत्सरौ ॥ ४ ॥ स्ववींथि वत्सरस्येष्टा भार्या
सूतष डात्मजान् । पुष्पार्णतिग्मकेतुं च इष मूर्जं वसुंजयम्
पुष्पार्णस्यप्रभाभार्या दोषा च द्वेवसूवतुः प्रातर्मध्यंदिनं
सायं इतिह्यासन्प्रभासुताः ॥ सुचक्षुः सुत माकूत्यां पत्न्यां
मनुमवापह पुरंकुत्संत्रितंद्युम्नं सत्यवन्तं धृत व्रतं ॥
उल्मुको जनयत्पुत्रान्पुष्करिण्यावडुत्तमान् अंङ्गं सुमन
संख्यातिं क्रतुमङ्गिर संगयम् ॥ सुनीथाङ्गस्य यापत्नी सुषु
वेवेनमुल्बणं यद्दौः शील्यासराजर्षिः निर्विण्णो निरगा
त्पुरात् ॥ विजिताश्वोधिराजासीत्पृथुपुत्रः प्रतापवान् ।
अन्तर्द्धानगतिंशक्राल्लब्धान्तर्धान संज्ञितः अपत्यत्रय
माधत्त सिखण्डिन्यां महाबलः। वर्हिषत्सुमहाभागोहावि
र्धानिः प्रजापतिः क्रियाकाण्डेषुनिष्णातोयोगेषुच कुरू
द्वह ॥ प्राचीन वर्हिषः पुत्राःशतद्रुत्यां दशाभवन् तुल्य

नामव्रताः सर्वेधर्मस्नाताः प्रचेतसः । तेभ्यस्तस्यां समभ
वद्दक्षः प्राचेतसः किल यस्यप्रजा विसर्गेणलोकाआपूरिता
स्त्रयः ॥ ततः प्राचेतसोसिक्न्या मनुनीतः स्वयम्भुवा
दृष्टिसञ्जनयामासदुहितृः पितृवत्सलाः । वसोराङ्गिरसी
पुत्रोविश्वकर्मा कृती पतिः ततोमनुश्चाक्षुषोभूद्विश्वेसा
ध्याः मनोःसुताः त्वष्टुःद्विजातित्वादिथंव्याख्या वंशः
प्रियव्रतस्यापिनिबोधन्नृपसत्तम ॥ अथचदुहितरं प्रजापते
र्विश्वकर्मण उपयेमे आग्नी ध्रादीन्नवप्तुता नुत्पादया
मास । तस्यामुहवाआत्मजान्सराजवरआग्नीध्रोनाभिकिं
पुरुष हरिवर्षैलावृत संज्ञान्नवपुत्रा नजनयत् ॥ तस्यहवा
इत्थंवर्ष्मणावरीयसा बृहत्श्लोकेनचौजसाबलेन श्रियाय
शसावीर्यशौर्याभ्यां च पिताऋषभइतीदंनामचकार ॥
यवीयांसएकाशीतिर्जायंतेयाः पितुरादेशकराः महाशाली
नाः महाश्रोत्रियाः यज्ञशीलाः कर्मविशुद्धाः ब्राह्मणाव
भूवुः ॥ १३ ॥ नवाभवन्महाभागाः मुनयोह्यर्थ संसिनः
कविर्हरिरंतरिक्षः प्रबुद्धःपिप्पलायनः ॥१४॥ येषांखलुमहा
योगीभरतोज्येष्ठःश्रेष्ठगुणआसीद्येनेदं वर्षंभारतमिति
व्यपदिशंति भरतस्यात्मजःसुमतिर्नामाभिहितोतस्माद्
वृसेनायां देवता जिन्नामपुत्रोभवत् अथासुय्यांतत्तनयो
देवद्युम्नस्ततोधेनुमत्यांसुतः परमेष्ठी तस्यसुवर्चलायां
प्रतीह उपजातः प्रतीहात्सुवर्चलायां प्रतिहर्त्रा प्रतिहर्तस्तु
त्याभजभूमानावजनिषाताम् भूमनऋषिकुल्याया मुद्गी

थस् ततः प्रस्तावो देवकुल्यायां प्रस्तावान्नियुत्सायां हृदयजआसीद्विभु र्विभोरत्यांचपृथुषेणस्तस्मान्नक्तआकूत्यांजज्ञे नक्ताद्रुतिपुत्रोगयोराजर्षिप्रवर उदारश्रवाअजायत गयाद्गयन्त्यांचित्ररथः चित्ररथा दूर्णायां सम्राडजनिष्ट ततउत्कलायांमरीचिः मरीचेर्विंदुमत्यांविंदुमानुतपद्यत तस्मात्सरघायांमधुनामाभवन्मधोः सुमनसिवीरव्रतस्ततोभोजायांमन्थुप्रमन्थू जज्ञातेमन्थोः सत्यायांभौवनस्ततो दूषणायां त्वष्टा जनिष्ट ॥

अथ मेदपाठब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम् ३८
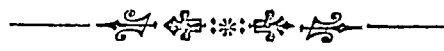
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मेदपाठब्राह्मणोत्पत्तिसारमाह पाद्मे पातालखंडे एकलिंगक्षेत्रमाहात्म्ये ॥ श्रीविंध्यवासिनींदेवीं नाम्ना कात्यायनी च या ॥ ढुंढिक्षेत्रपतिं चैव कश्यपं मुनिपुंगवम् ॥ १ ॥ एकलिंगं शिवं साक्षात्तीर्थं पावनसंज्ञकम् ॥ त्रिकूटं पर्वतं गंगां नत्वा वक्ष्यामि संस्फुटम् ॥२॥ शौनक उवाच ॥ भट्टहराख्यक्षेत्रस्य माहात्म्यं वदसूतज ॥ मेदपाठाख्यविषये चैकलिंगाश्रितस्य च ॥३॥ सूतउवाच ॥ एकदा पुष्पदंतोऽसौ भगवंतमपृच्छत ॥ त्वया यत्पृष्टमधुना मुने तेनापि तत्तथा ॥ ४ ॥ एकदा नारदो योगी पद्मिनीकर्तुमागतः ॥ पातालगंगापुलिने नागान्वे

विरक्तनारदः ॥ ५ ॥ अनंतमभिगम्यासौ दत्तः स्वागति-कासनः ॥ पृष्टः प्राह कृपानाथो वचो विस्मयकारकम् ॥६॥ भवतां विमलश्चैव जगदानंदवर्द्धनः ॥ आह्लादयति भूभा रधारिणः सुकृतस्थितेः ॥ ७ ॥ अतीवसंतुष्टमना आगतो ऽस्मि विलोकितुम् ॥ भवतां वंशतन्तुस्तुपाताले विस्तृतिं गतः ॥ ८ ॥ नैवास्ति गारुडी भीतिः कापि शामान्यभो-गिनाम् ॥ स्वामिन्येवं निगदति प्रीत्या तस्मिन्मुनीश्व-रे ॥ ९ ॥ तक्षकः प्राह सहसा स्वात्मानं बहु मानयन् ॥ मुने सर्वत्र भवतां गतिरव्यभिचारिणी ॥ १० ॥ अकुतो भीतिरस्माभिः सदृशः क्वापि वीक्षितः ॥ ततः स भगवा नाह मानिनं प्रहसन्निव ॥११॥ नारद उवाच॥ भवादृशो न कुत्रापि निर्भीतिः कापि दृश्यते ॥ एवंविधोऽपि भवतां वंशो भस्मीभविष्यति ॥ १२ ॥ तक्षकस्यापराधेन केन चिन्नोदितस्य ह ॥ अस्मद्दृष्टिसमायाति तव वाक्यश्रुते रपि ॥ १३ ॥ अयमस्ति भवन्मुख्यो डिंडिरः परमोज्ज्व लः ॥ एतच्चरणविश्रामभाविनां वः सरीसृपाम् ॥ १४ ॥ उपप्लवं शमयितुं ज्ञापिता तद्भयस्थितिः ॥ भवत्सु तुष्टि मास्थाय करयोर्निगतेष्वपि ॥ १५ ॥ अतस्तद्भयनाशाय भवंतस्तक्षकादयः उपक्रमध्वं सेवायै नित्यमेव हिनाकि नः ॥ १६ ॥ संतुष्टो भवतां स्वामी भवंतस्तस्य भूषणम् ॥ सर्वाभयविनाशाय प्रकारं भावयिष्यति ॥ १७ ॥ अथैवं मुनिनोक्तस्तुयथावासुकिः स्वतः ॥ विचार्य च समाहूय

सर्वान्सर्पकुलोद्भवान् ॥ १८ ॥ कर्कोटकमुखान्सर्वानादि
देश तदेश्वरः ॥ अहो शृणुध्वं भवतां ज्ञापितो भाव्युपद्र
वः ॥ १९ ॥ तद्वारकः प्रयत्नोऽपि मुनिनात्र प्रदर्शितः ॥
तस्माद्भवद्भिः सर्वैर्हि ह्यक्रोधनपरैः सदा ॥ २० ॥ वर्तित
व्यं यतः सौख्यं भवेद्वश्च क्षमावताम्॥ एवमावेद्य नागेशः
कैलासं वासुकिर्ह्यगात् ॥ २१ ॥ नारदादिष्टविधिना भगवं
तमुपासत ॥ कथयामास तत्सर्वं वासुकिश्चकपर्दिने ।२२॥
पुष्पदंतकृतस्तोत्रमहिम्नो वासुकेरपि ॥ कष्टोच्चयविना
शाय शिवो वचनमब्रवीत्॥२३॥नागराज भवद्दंशविनाश
विनिवारणम् ॥ मदुक्तेनाध्वना कुर्यात्कृतश्रद्धासुवासनः ॥
२४॥अस्ति भारतखंडेऽस्मिन्देशः परमशोभनः॥मेदपाठ
इतिख्यातोऽनेकतीर्थसमन्वितः ॥ २५ ॥ चित्रकूटात्रिकू
टादिगिरिभिः परिरक्षितः ॥ तत्र याहि त्रिकूटाद्रौ निव
संतं कपर्दिनम् ॥ २६ ॥ एकलिंगं भवत्प्रेम तत्रस्थं भासु
पास्व च ॥ एवमादिष्ट ईशेन वासुकिः प्रहसन्निव ॥२७॥
करं निधाय,पदयोः प्रणम्य स पुनर्ययौ॥त्रिकूटं तत्रविश्वेशं
सेवयामास भक्तिभः॥२८॥एकलिंगः प्रसन्नोभूद्वासुकिंप्रो
क्तवांस्ततः ॥ संतुष्टोऽस्मि भवद्भक्त्या वासुकेवरमर्थय ॥
२९॥ वासुकिरुवाच ॥ स्वामिन्नस्माकमागामिभयनाशं
करोषि चेत् ॥ संतुष्टोऽसि कृपानाथ तदेशो वाक्यमब्रवीत्॥
३०॥वासुके नागराज त्वं मदुक्तं त्वरितं कुरु॥ निदानमेत
देवास्ते तदुपप्लवनाशनम् ॥ ३१ ॥ मदंतिके तीर्थभूःसाव

तते ऋषिसेविता ॥ तस्यां निवासय पुरं वास्तुनिर्माणमाशु च॥३२॥ तत्र वासय विप्राग्र्यान्मदीयान्स्थापनाविधिः॥ तावत्कानिवतान्सत्या नितरां परिपालय ॥ ३३ ॥ ततःप्रभृति ते सर्वे सुखदस्थं कल्याणान्विताः ॥ आशीःशतैर्वदिष्यंति श्रेयसामागमं मुहुः ॥ ३४ ॥ तेषां तु परिचर्यार्थे तावंतः सान्वयान् हितान् ॥ द्विजाग्र्यानपरान् स्थाने स्थापयाशु मनीषिणः ॥ ३५ ॥ तथा च तेषां सेवार्थे स्थापयात्र ततोऽपरान्॥ वणिजः शिल्पिनश्चापि वास्तुविद्याविशारदान्॥ ३६ ॥ सर्वर्द्धिगृहदानादिपुरस्कारविधानतः ॥ वासुके प्रयतो भूत्वा सजतान् हररूपिणः ॥ ३७ ॥ तत्रैव निवसिष्यामि तेषां प्रेमवशोऽह्यहम् ॥ कात्यायनी च तत्रैव पुरे स्थास्यति निश्चितम् ॥ ३८ ॥ भटत्वप्राप्तिजन्येन हेतुना भयहृद्भवान् ॥ तस्माद्भयहरं नाम पुरमेतद्भविष्यति ३९॥ भट्टाहरा इव यतो निवसिष्यंति सुद्विजाः ॥ अतो भट्टहरं नाम पुरस्यास्य भविष्यति ॥ ४० ॥ संति ये वैदिकाश्शी र्मिनांगान्भयसमागमात् ॥ निर्भयीकरणास्थित्या सर्वदाप्यपकारिणः ॥ ४१ ॥ नागरानिति तस्मात्तान्वदंति कवयस्त्विमान् ॥ सार्थकानि पुरस्यास्य नामानि त्रीणि तान्यथ ॥ ४२ ॥ पुरनामानुसारेण द्विजनाम भविष्यति ॥ स्युर्भट्टहरनामानो नागरा नागरक्षणात् ॥ ४३ ॥ भट्टहराश्चते भट्टा वेदपाठाः प्रसिद्धितः ॥ वासुकिरुवाच ॥ भगवञ्छ्रीमदादिष्टं करवाणि मुदान्वितः ॥ ४४ ॥ तदर्थं

भगवन्मह्यं दर्शनीयास्तु ते द्विजाः ॥ इत्युक्तो भगवाञ्छ
म्भुर्दर्शयित्वा द्विजोत्तमान् ॥ ४५ ॥ उवाच परमप्रीतो
वासुके शृणु मेवचः ॥ चतुर्विंशतयस्त्वेते इमे वत्स समा
गताः ॥ ४६ ॥ इमान् स्थापय नागेंद्र वैभवं रक्षितुं तव ॥
श्रीमद्रुद्रहरेर्मह्यान् मेदपाठान्द्विजोत्तमान् ॥ ४७ ॥ चतुर्विं
शतयो गोत्रपतयः पुण्यवृत्तयः ॥ प्रत्येकं तत्रते स्थाप्या व
णिजोपि प्रवृत्तये ॥ ४८ ॥ गृह कार्यादिकर्त्तव्यविषये च च
तुर्गुणाः॥ तदर्धं शिल्पिनः स्थाप्या वास्तु विज्ञानसुन्दराः॥
४९ ॥ तद्गेहकार्य विषये सदाचारे प्रसंगिनः ॥ तेषां तद
भिधानेन ज्ञातिनामापि च क्रमात् ॥ ५० ॥ कर्तव्यमहिना
तेन विश्वनाथानुसारिणा ॥ वणिजोभट्ट संयुक्ता मेदपाठाः
पुनस्त्वमी ॥ ५१ ॥ शिल्पिनाऽपि च ते भट्टमेदपाठा गुणा
न्विताः ॥ एतेषामेत एव स्युर्गुरवस्तत्सुवंशजाः ॥ ५२ ॥
सेवका यजमानाः स्युः कलावपि मनस्विनः ॥ भट्टानश्च
यमवानेतान्मेदपाठान्द्रिजन्मनः ॥५३॥ सेवयंतो भवेयुः
स्म ज्ञातिसिद्धा न चान्यथा ॥ एतेषामग्निहोत्राणि गार्ह
पत्यानुमंति च ॥ ५४ ॥ तत्र रक्ष्योपयोगेन वर्तमाना
महाधियः ॥ स्थापनीयाः प्रयत्नेन द्विजराजानुयायिनः ॥
५५ ॥ एतेषामेव ये शिष्याः गुरुशुश्रूषवो द्विजाः ॥ ततो
भिन्नस्थजातीयाः स्वतंत्रस्थितिहेतवः ॥५६॥ मदंति परि
वृत्तेस्मिन्नयंवाख्यपुरेस्थिताः ॥ त्रवायमेदपाठास्ते ज्ञात
यस्तत्पृथङ्मताः ॥ ५७ ॥ तेऽपि स्युर्मेदपाठानां भट्टा

स्थानां हितैषिणः॥गुरुसेवाविधिज्ञानवृत्तयो मुनिपुंगवाः॥ ५८ ॥ प्रामाणिकपदार्थानां वेत्तारः स्वहिते रताः ॥ तथैव तत्प्रियकृते द्विजास्तदनुयायिनः ॥५९॥ चतुरशीतिकग्रा मवासिनः स्थापयामास वै ॥ ततः पृथग्वरज्ञातिश्चतुरशीति नामवान् ॥ ६० ॥ समसूत्रसेदपाठाख्यो भट्टानां सोनुगः कृती ॥ तेषां त्रयाणामपिहिप्रेमवाञ्ज्ञाति रुत्तमः ॥६१॥ चतुर्विंशतिकस्थानी चतुर्विंशाख्यवृत्तिमान्चतुर्विंशतिगो त्राणांप्रत्येकं सोऽपिचैककः ॥ ६२ ॥ सेवायै समसूदेव चतु र्विंशतिकाभिधः स्वबंधुत्वेन विख्यातो बंधुलः पंचविंशकः ६३॥स्वतंत्रः स तुविज्ञेयो ज्ञातौ परमशोभनः ॥ भट्टानुया यी तु पुनः भट्टानामनुसारवान् ॥ ६४ ॥ चतस्रो वृत्तयस्त्वे ता ज्ञातिसिद्धाः पृथक्पृथक् ॥ भट्टो मुख्यतमस्त्वेषां गुरुत्वेनोपगीयते ॥ ६५ ॥ तस्मादेवं प्रयत्नेन ज्ञातीनां स्थापनं कुरु ॥ विज्ञापयित्वाप्रययौ वासुकिश्च ततः परम् ॥ ६६ ॥ संस्मृत्य विश्वकर्माणं पुरं निर्माणशोभ नम् ॥ चतुर्विंशतिगोत्रेभ्यः स्ववंशस्य विवृद्धये ॥ ६७ ॥ श्रीमद्भट्टहरं पुरारिवचनात् स्थानं द्विजेभ्योददावानंदप्लुव मानपन्नगपतिः श्रीवासुकिः क्ष्मातले ॥ यत्रब्रह्मचतुष्टयं गणपतिर्भट्टार्क ईशो हरिः ॥ दुण्ढीक्षेत्रपतिश्च कार्मुक धरा कात्यायनी तिष्ठति ॥ ६८ ॥ यत्र क्षेत्रे महादेव एक लिंगः प्रभुर्महान् ॥ त्रिकूटः पर्वतश्रेष्ठो नदी स्वच्छजला तथा ॥६९॥ विनायकोर्धनारीशो वेधाः श्रीवटुकस्तथा ॥

अन्नपूर्णा च वसति वासुकिप्रीतये सदा ॥ ७० ॥ भट्टाद्यानिपुणप्रभावविधयः श्रीमेदपाठाह्वयाः सुब्रह्मण्य नियामकास्तदनु ते नागेंद्रसंस्थापिताः ॥ श्रीमंतः शिव सन्निधौ शिववचोयुक्तं विधाय स्थिताः स्वाशीर्वादशतैर्नि रंतरतया नंदंति ये वासुकिम् ॥ ७१ ॥ चतुर्विंशतिगोत्रा णां नामानि प्रवदाम्यहम् ॥ कृष्णात्रेयं च प्रथमं पाराशर मतः परम् ॥ ७२ ॥ कात्यायनं च गर्गंच शांडिल्यं कुशिकं तथा ॥ कौशिकं वत्स वात्स्यं च भारद्वाजं च गार्ग्यकम्॥ ७३ ॥ उपमन्योश्च कौंडिन्यं गौतमं काश्यपं तथा ॥ मांडव्यचंद्रात्रेयं च भार्गवं गालवं तथा ॥ ७४ ॥ विष्णु वृद्धं मुद्गलं च मौनसं वार्द्धिसंज्ञकम् ॥ अत्रिगोत्रं चांतिमं वै गोत्राण्येवं विनिर्दिशेत् ॥ ७५॥ शौनक उवाच ॥ पंच विंशस्त्वया कोऽयं कथितो यश्चबन्धुलः ॥ वद मां गोत्र मुख्योऽस्मिन् स ज्ञातिरपरः किमु ॥ ७६ ॥ सूत उवाच ॥ आसन् भट्टहरा विप्राश्चतुर्विंशतिसंमताः ॥ बंधुबल्लाति यः प्रीत्या निजात्मानं परं च वा ॥ ७७ ॥ प्रीतिमान्रक्ष यन्नेव बंधुलत्वमवाप्नुयात् ॥ गणितो गणनाद्वारा पृथ- ग्भूतो द्विजः प्रियः ॥ ७८ ॥ शुचिक्रियासु सर्वत्र स ज्ञाते रधिको हि सः सर्वत्र व्यवहारेषु गृहमेधीयकर्मसु ॥७९॥ मिथस्तेषां च तेषां च नांतरं कियदन्वभूत् ॥ तथापि यून पिंडादौ बभूव महदंतरम् ॥ ८० ॥ निरंतरा भवेयुः स्म स्नेहतो भिन्नधर्मिणः ॥ सांतराःस्युर्विवाहादौ ज्ञातिकार्येषु

तेऽच्युत ॥ ८१ ॥ विवाहे च विशेषं वै प्रवक्ष्याम्यत्र तच्छृणु ॥ ततः सुवासिनीवारि कुंभद्वितयधारिणी ॥ ८२ ॥ कुंभोपरिफलारोपकारिणी यात्रिके गृहे ॥ वरा याचमनं दद्याद्दिशते शोभनासने ॥ ८३ ॥ अन्याः पुरंध्र्यो गायंत्यो तत्र ता अपि तस्थिरे ॥ संपूजयेत्सुवस्त्राद्यैरेनां सौभाग्यसुंदरीम् ॥ ८४ ॥

तया सह ततः पश्चात्कृत्वा च वरमग्रतः ॥ पूजनं च वरस्यैव उभयोर्मङ्गलंस्त्रियः ॥ ८५ ॥ कुर्युस्ततोऽर्घ्यं दानं च कवलग्रहणं ततः स्वगृह्योक्तविधानेन विवाहं चरत्क्षणम् ॥ ८६ ॥ पुटापुटिमयाचारं यात्रिकाणां च पूजनम्॥गौरवाख्यं भोजनं च कुर्वंत्येते द्विजोत्तमाः ८७ वणिजः शिल्पिनश्चैव स्वर्णकारादयः परे ॥ स्थापिता द्विजसेवार्थं नागेन पूर्वमेवहि ॥ ८८ ॥ नाम्ना ते संभवि ष्यंति मेदपाठभटादयः ॥ तेषामपि कुले धर्मः शूद्रचर्या विलासवान् ॥ ८९ ॥ ब्राह्मणस्य यथासंध्या भवेन्मुख्य पदे तथा ॥ शूद्रवर्णस्य विज्ञेया परिचर्या द्विजन्मनाम् ॥ ९० ॥ शौनक उवाच ॥ सूत भट्टहरस्थानमाहात्म्यं बहु वर्णितम् ॥ यदर्थं नागराजेन पुरमेतद्विनिर्मितम् ॥ ९१ ॥ तत्कारणं समाचक्ष्व भाव्युपद्रवनाशकम् ॥ सूतउवाच ॥ पंडुवंशोद्भवो राजा परीक्षिदिति नामतः ॥ ९२ ॥ ब्रह्म शापेन मृत्युर्वै तक्षकाच्च भविष्यति ॥ तस्य तद्दुःखयोगे न तत्पुत्रो जनमेजयः ॥ ९३ ॥ मेदपाठे नागदाहभूम्यां

सत्रं करिष्यति ॥ तन्मध्ये सर्व सर्पाणां नाश एव भवि
ष्यति ॥ ९४ ॥ इति निश्चित्य तत्पूर्वं वासुकिर्नागराट्
तदा ॥ जरत्कारुं स्वभगिनीं गृहीत्वा त्वरयान्वितः॥९५॥
भट्टादिभेदपाठाह्वविष्णुवृद्धकुलाय च ॥ प्रददौ धर्मपत्न्य
र्थं विवाहविधिना मुदा ॥९६॥ जनयामास यास्तीकंपितुः
शतगुणाधिकम् ॥ तपोनिष्ठं सुतं दृष्ट्वा जरत्कारुर्वचोऽब्रवी
त् ॥ ९७ ॥ तपस्तपसि तात त्वं निश्चित इव केवलम् ॥
माता महकुलं तात विनाशमधिगच्छति ॥ ९८ ॥ श्रुत्वा
मातुर्वचः सम्यगास्तीको वाक्यमब्रवीत् ॥ मातर्यामि
तदर्थाय सर्पसत्रस्य मंडपम् ॥ ९९ ॥ प्रार्थयामि न्याय
मार्गैर्लपसर्गस्य शांतये ॥ उक्त्वेदं मातरं विप्रश्चास्तीको
ऋषिसत्तमः ॥ १०० ॥ सर्पसत्रं ततो गत्वा मोहयामास
भूपतिम् ॥ वरधन्वंतरिं चैव वाक्यैर्वामनरूपवत् ॥ १ ॥
गृहाण मत्तो विप्रेंद्र इति राज्ञा प्रतिश्रुते ॥ तक्षकं मोचय
स्वाद्य सहेंद्रमिति चास्तिकः ॥ २ ॥ ययाचे तेन तत्रासी
द्धाहाकारो जयस्तथा ॥ सर्पसत्रादुपरतो भूपतिर्जनमेज
यः ॥ ३ ॥ नागराजाः शशंसुः स्म महिमानं मुनेरिमम् ॥
धन्या वयं स्वसा धन्या यया जातो महान्मुनिः ॥ ४ ॥
मातामहकुलं येन मृत्युग्रस्तं विमोचितम् ॥ तस्माद्यत्र
भवन्नाम तत्र मास्त्वहिजं भयम् ॥ ५ ॥ अहयो नवजा
तीयकुलजा येऽवशेषिताः ॥ तेषांप्राणप्रदाता स्यादास्ती
कः केवलं मुनिः ॥ ६ ॥ आस्तीकस्मृतिमात्रेण सर्पा नि

लिप्ततामियात् ॥ यदि नेयात्सलिप्येत मृतसर्पाहसा स्व
तः ॥ ७ ॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा सर्पः सर्पंतु सत्वरम् ॥
निर्विषीभूयस्तत: सन्तु मा तं दशतु कश्चन ॥ ८ ॥ चतुर्विं
शतिभट्टादिमेदपाठद्विजाशिषः ॥ सफलाः संभवेयुः स्म
वासुकेर्विषसन्छिदे ॥ ९ ॥ ततो नागद्रहं नाम पुरं निर्माय
वासुकिः ॥ ब्राह्मणान् कतिचित्तत्र स्थापयामास तत्पुरे ॥
१० ॥ सेवार्थे द्विजवर्णानां वणिजो द्विगुणास्ततः ॥
नागद्राहेतिनामानः स्थापिता:प्रत्यवर्तयन् ॥ ११ ॥ भ
ट्टानां परिचर्यार्थे कृतसत्त्वमसूसुचत् ॥ वासुकिर्वासया
मास ततोऽभूदकुतोभयः ॥ १२ ॥ श्रीमद्भट्टहरस्थानानि
र्माणस्य प्रयोजनम् ॥ एतच्चरित्रश्रवणात्सर्वान्कामान
वाप्नुयात् ॥ १३ ॥ भट्टादिमेदपाठीये रक्षितो नागिका
न्वयः ॥ हरिकृष्णः ॥ अत्र दंतकथा चैका मया पूर्वं श्रुता
किल ॥ १४ ॥ तामहं कथयिष्यामि विवाहव्यवहारिकी
म् ॥ मेदपाठद्विजानां च चतुर्भेदा भवंति हि ॥ १५ ॥
एकदा नागकन्याया विवाहे समुपस्थिते ॥ आगता भट्ट
विप्रस्य कुमारास्त्रय एव हि ॥ १६ ॥ नागकन्याविषेणै
व ज्येष्ठस्तत्र पलायितः ॥ गतो गोपुरपर्यंतं तद्वंशो भट्ट
संज्ञकाः ॥ १७ ॥ चतुष्पथांते द्वितीयो तदीयाश्चतुराशि
काः ॥ तृतीयो भट्टपुत्रस्तु कन्याया विषयोगतः ॥ १८ ॥
मृतवत्पतितो भूमौ सखी वाक्यमथाब्रवीत् ॥ हे कन्ये
विषयोगेन यद्येवं च भविष्यति ॥ १९ ॥ कथं तर्हि विवा

हस्यसिद्धिरग्रे भवेत्तव ॥ नागकन्या सखीवाक्यं निशम्य मनसि स्थिरम् ॥ १२० ॥ विचार्य गुडखंडस्य नागं कृत्वा विषापहम् ॥ मूर्च्छितस्योपरि क्षिप्तस्तदा तूर्णं स उत्थितः ॥२१॥ तेन साकं विवाहोभूत्ततस्तद्वंशजा द्विजा ॥ त्रिपाणिनाम्ना विख्याता बभूवुर्भुवि निश्चितम् ॥२२॥त्रिपाणिविप्रसंघस्थः कश्चिद्ब्राह्मणसत्तमः ॥ मोढोडब्राह्मण ज्ञातिकन्यया सह मेलनम् ॥ २३ ॥ विवाहमकरोत्सर्वैर्वारितोपि रजोगुणात् ॥ तत्पक्षीयास्ततो जाता राजसा मेदपाठकाः ॥ २४ ॥ विवाहसमयात्पूर्वं नागपूजा विधीयते ॥ इत्येवं कथितो मेदपाठविप्रसमुद्भवः ॥ १२५ ॥

इति श्रीब्राह्मणो०मेदपाठ ब्राह्मणभेदवर्णनं नाम प्रकरणम् ॥ ३८ ॥

पञ्चद्रविडमध्ये गुर्जरसंप्रदायःआदितः श्लोक संख्याः ३१,७४

अथ पांचाल-ब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम् ५१
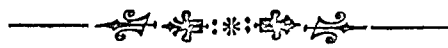
अथ शैवपांचालब्राह्मणब्रह्मपांचालब्राह्मणोपपांचाल ब्राह्मणोत्पत्तिमाह- लैंगे शैवागमे ॥ ब्राह्मणानां च जन्मैव शिववक्त्राच्च जायते ॥ पंचवक्त्रसमुत्पन्नाः पंचभिः कर्मभिर्द्विजाः ॥ १ ॥ मनुर्मयस्तथा त्वष्टा शिल्पिकश्च तथैव च ॥ दैवज्ञः पंचमश्चैव ब्राह्मणाः पंच कीर्तिताः ॥ २ ॥ मनुः संहारकर्त्ता च मयो त्रैलोकपालकः ॥ त्वष्टा चोत्प-

त्तिकर्त्ता च शिल्पिको गृहकारकः ॥ ३ ॥ दैवज्ञः सर्वभूषा दिकर्त्ता वै हितकाम्यया ॥ लोकानांपंच पांचालाः अभूव न्त्रिवक्तः ॥ ४ ॥ पांचालानां च पंचानां वक्ष्ये लक्षणमु त्तमम् ॥ तस्य विज्ञानमात्रेण शिल्पाचारः स्फुटो भवेत् ॥ ५ ॥ ऐश्वर्यं मनुरूपं च मयरूपं च वैष्णवम् ॥ वैरिंचं त्वाष्ट्ररूपं च माहेंद्रं शिल्पिकस्य च ॥ ६ ॥ रूपं नारा यणस्यैव दैवज्ञस्य प्रकीर्तितम् ॥ पंचरूपाणि योवेद मु च्यते सर्वकिल्विषात् ॥ ७ ॥ तमोगुणो मनुश्चैव मयः सत्त्वगुणः स्मृतः ॥ रजोगुणोथ त्वष्टा च शिल्पिकस्त्रिगुणा त्मकः ॥ ८ ॥ दैवज्ञः शुद्धसत्त्वश्च ब्रह्माण्डे स विजायते ॥ यो वै गुणत्रयं वेद मुच्यते सर्वबंधनात् ॥ ९ ॥ मनुः स्फटिकवर्णश्च नीलवर्णो मयः स्मृतः ॥ त्वाष्ट्रको रक्त वर्णश्च शिल्पिकोधूम्रवर्णकः ॥ १० ॥ स्वर्णवर्णश्च दैव ज्ञः पंच वर्णाः प्रकीर्तिताः ॥ पंच वर्णांश्च यो वेद मुच्यते सर्वपातकात् ॥ ११ ॥ मनोः कुंडं त्रिकोणं च चतुष्कोणं मयस्य च ॥ वर्तुलं त्वाष्ट्रकं चैव षट्कोणं शिल्पिकस्य वै ॥ १२ ॥ दैवज्ञस्याष्टकोणं तु पंच कुंडानि तानि वै ॥ एतानि चैव यो वेद सर्वदोषाद्विमुच्यते ॥ १३ ॥ रजतस्य मनोर्दंडो वेणुदंडो मयस्य च ॥ त्वाष्ट्रस्य ताम्रदंडश्च लोहदंडश्च शिल्पिनः ॥ १४ ॥ सुवर्णदंड आख्यातो दैवज्ञस्यागमात्मके ॥ पंचदंडांश्च योवेद मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ १५ ॥ रजतस्य मनोः सूत्रं पद्मसूत्रं मयस्य

च ॥ ताम्रसूत्रं त्वाष्ट्रकस्य कार्पासं शिल्पिकस्य च १६
दैवज्ञस्य समाख्यातं स्वर्ण सूत्रं महर्षिभिः ॥ पंचसूत्राणि
यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १७ ॥ अयसां च मनुः कर्त्ता
काष्ठकारी मयः स्मृतः ॥ त्वाष्ट्रकः कांस्यकर्त्ता च शिला
कर्त्ता च शिल्पिकः ॥ १८ ॥ दैवज्ञः स्वर्णकारश्च पंचा
नां कर्मपंचकम् ॥ यो वेद पंच कर्माणि सर्वपापैः समु
च्यते ॥ १९ ॥ ऋग्वेदश्च मनोश्चैव यजुर्वेदो मयस्य
च सामवेदस्त्वाष्ट्रकस्य त्वथर्वा शिल्पिकस्य च ॥ २०॥
सुषुम्णाभिधवेदोसौ दैवज्ञानां प्रकीर्तितः ॥ पंचवेदांश्च
यो वेद सायुज्यं लभते नरः ॥ २१ ॥ अथ ब्रह्मपांचालोप
पांचालोत्पत्तिः ॥ पांचालानां च सर्वेषां वर्णानां च तथैव
च ॥ उत्पत्तिं संप्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥२२॥
विश्वकर्मनिदेशेन पुरा सृष्टा विरंचिना ॥ चत्वारो मनवो
लोकनिर्मिताः सृष्टिहेतवे ॥ २३ ॥ यो विरंचिः स वैराजः
प्रजापतिरुदारधीः अंतराले गणानां च वरिष्ठो लोककार
कः ॥ २४ ॥ वैराजस्य मुखाज्जज्ञे विप्रः स्वायंभुवो मनुः ॥
स्वारोचिषो मनुः क्षत्री ब्रह्मणो बाहुमंडलात् ॥ २५ ॥
रैवताख्यो मनुर्वैश्यो वैराजस्योरु मंडलात्॥ तामसाख्यो
मनुः शूद्रो वैराजस्यांघ्रिमंडलात् ॥ २६ ॥ स्वायंभुवस्य
षट्पुत्रा ज्येष्ठोथर्वा प्रकीर्तितः ॥ सामवेदो यजुर्वेदः क्रमा
दृग्वेद एव च ॥ २७ ॥ वेदव्यासः पंचमोथ प्रियव्रत उदी-
रितः ॥ एते षण्मुख्य विप्राश्च नृपविप्रानथो शृणु ॥ २८॥

आद्यः शिल्पायनश्चैव गौरवायन एव च॥ कायस्थायन आख्यातस्ततो वै मागधायनः ॥ २९ ॥ अथर्वाद्य आद्याश्च मनोः स्वायंभुवस्य ते ॥ षट् पुत्रा मुख्यविप्रा श्च कथिता वेदवादिभिः ॥ ३० ॥ ऋग्वेदादिकवेदाना मेषामध्ययनं स्मृतम् ॥ ते मुख्य वेदिनः सर्वे मुख्यब्राह्म णसंज्ञकाः ॥ ३१ ॥ स्वायंभुवमनोः पुत्राः प्रोक्ताः शिल्पा यनादयः ॥ चत्वार उपविप्राश्च कथिता वेदवादिभिः ३२ आयुर्वेदादिवेदानामेषामध्ययनं स्मृतम् ॥ ते चोपवेदिनः सर्वे ह्युपब्राह्मणसंज्ञकाः ॥ ३३ ॥ ब्राह्मणानां शिखासूत्रं मुख्यानां परिकीर्तितम् ॥ तथा चैवोप विप्राणां विहितंच विरंचिना ॥ ३४ ॥ मुख्यानां ब्राह्मणानां च गायत्रीश्रवणं खलु ॥ तथा चैवोपविप्राणां गायत्री श्रवणं स्मृतम् ॥३५॥ मुख्यानां ब्राह्मणानां च तथा चैवोपवेदिनाम् ॥ संध्या विधिरुपास्योयं विहितोथ विरंचिना ॥ ३६ ॥ अथर्वण स्योपवेदः शिल्पवेदः प्रकीर्तितः ॥ तस्मादाथर्वणाः प्रोक्ताः सर्वे शिल्पिन एवच ॥ ३७॥ शिल्पायनस्य ये पुत्रास्तेषु ज्येष्ठश्च लोहकृत ॥ सूत्रधारः प्रस्तरारिस्ताम्र कारः सुवर्णकः ॥ ३८ ॥ पांचालानां च सर्वेषां शाखा वै वैश्वकर्मणी ॥ तेषां वै पंचगोत्राणां प्रवरं पंचकं स्मृतम् ॥ ३९ ॥ तेषां वै रुद्रदैवत्यं त्रिष्टुप् छंदस्तथैवच ॥ मुख्या नां ब्राह्मणानां च पांचालानां प्रकीर्तितम् ॥ ४० ॥ शिल्प वेदश्च शिल्पानां पंचानां परिकीर्त्तितः ॥ अध्ययनंच तत्रैव

संहितापंचकं स्मृतम् ॥ ४१ ॥ शिल्पायनसुतो ज्येष्ठो मनोः शिष्यत्वमेत्यवै ॥ पपाठ संहितामाद्यां धातु वेदस्य लोहकृत ॥ ४२ सूत्रधारो द्वितीयोथ मयशिष्यत्वमादरा त ॥ संहितां सूत्रधाराख्यामपठत्कोकमेवच ॥ ४३ ॥ शिल्पायनसुतस्तक्षा शिल्पैः शिष्यत्वमादरात ॥ सशैल संहितां तस्मात्पपाठ शृणुनन्दन ॥ ४४ ॥ अथ ताम्र करः शिष्यः शिल्पिकस्याभवत्पुरा ॥ शिल्पायनसुतस्तु र्यस्त्वपठत्ताम्रसंहिताम् ॥ ४५ ॥ नार्ङिधमोथ शिष्यो भूद्दैवज्ञस्यैव पंचमः ॥ सुतः शिल्पायनस्यैव पपाठ स्वर्ण संहिताम् ॥ ४६ ॥ पांचालानां च सर्वेषां संहितापंचकस्य च ॥ अभूदध्ययनं सौम्यं ब्रह्मपञ्चकमीरितम् ॥ ४७ ॥ पठेयुः सर्वपांचालाः विश्वकर्मस्वशाखिनः ॥ पांचाला मानवा एते एतेषां संततिस्तथा ॥ ४८ ॥ मृत्युलोके च ते सर्वे उपब्राह्मणसंज्ञकाः ॥ अथैषां देवताःपंचविश्वकर्म मुखोद्भवाः ॥ ४९ ॥ मनुर्मयस्तथा त्वष्टा शिल्पिकश्च तथैव च ॥ दैवज्ञः पंचमः प्रोक्ताः स्वर्गस्था यज्ञपोषकाः ॥ ५० ॥ पांचालानां च सर्वेषामाचार इति गीयते ॥ अष्टां गयोगः कर्मषट्कं पंचयज्ञा इति श्रुतिः ॥ ५१ ॥ यजनं याजनं चैव तथा चाध्ययनं स्मृतम् ॥ अध्यापनं ततः प्रोक्तं तथा दानं प्रतिग्रहः ॥ ५२ ॥ स्नानं संध्या त्रिका लेषु अग्निहोत्रं तथैव च ॥ षट् कर्माण्येव मेतानि पांचा लानां स्मृतानि च ॥ ५३ ॥ नित्यं नैमित्तिकं कर्म द्विजा

तीनां यथाक्रमम् ॥ पितृयज्ञं भूतयज्ञं दैवयज्ञं तथैव च ॥ ५४ ॥ जपयज्ञं ब्रह्मयज्ञं पंच यज्ञांश्चरन्ति वै ॥ एवं त्रिविध आचारः कर्त्तारस्ते द्विजातयः ॥ ५५ ॥

इति श्रीब्राह्मणोत्पत्तिमार्तंडाध्याये पांचालब्राह्मणोत्पत्तिभेदकथनंनाम प्रकरणम् ॥ ५१ ॥ समाप्तमिदम् ॥
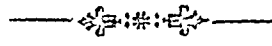
शाकद्वीपिब्राह्मणोत्पत्तिप्रकरणम् ॥४५॥
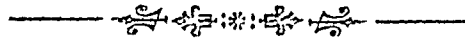
अथ शाकद्वीपिमगभोजकब्राह्मणोत्पत्तिसारमाह॥भविष्य पुराणे १३३ तमेऽध्याये ॥ कृष्णपुत्रोऽति तेजस्वी साम्बो जाम्ब वतीसुतः॥सूर्यस्य च महाभक्तःप्रासादं स चकार ह १ तस्मिन्सूर्यप्रतिष्ठां च कृत्वा साम्बपुरे शुभाम् ॥ ततश्चि न्तापरो जातो नित्यपूजनहेतवे ॥ २ ॥ अस्यार्चनं नित्य मेव ब्राह्मणः कः करिष्यति ॥ साम्बो गौरमुखंगत्वा प्रार्थ यामास पूजने ॥ ३ ॥ न प्रासादं प्रगृह्णामीत्युवाच ऋषि सत्तमः ॥ साम्बोब्राह्मणलब्ध्यर्थं सूर्यमाराधयत्तदा ॥ ४ ॥ ततः प्रसन्नो भगवान् साम्बमाह दिवाकरः ॥ सूर्य उवाच॥ ममार्चनेऽस्मिन्द्वीपे तु ह्यधिकारी न को हिते ॥ ५ ॥ शा कद्वीपे ते वसंति वर्णाश्चत्वार एव च ॥ मगश्च मगस श्चैव मानसो मन्दगस्तथा ॥ ६ ॥ तत्राद्यवर्णोऽह्यव्यंगो

वेदवेदांगपारगः ॥ अष्टादशकुलैर्युक्तः मगोनाम द्विजो त्तमः ॥ ७ ॥ समार्चनरतो नित्यं तमानाय्य निवेशय ॥ साम्बः सूर्यवचः श्रुत्वा चारुह्यगरुडं द्रुतम् ॥ ८ ॥ शाकद्वी पात्समानाय्य चाष्टादशकुलोद्भवान् ॥ कुमारान्स्थापया मास चंद्रभागानदीतटे ॥ ९ ॥ रम्ये मित्रवनेसाम्बपुरे पूजनकर्मणि ॥ ते तु नित्यं पूजयंति सूर्यं भक्तिपुरः सराः ॥ १० ॥ तन्मध्ये मंदगाश्चाष्टौ मगाश्च दशसंख्यकाः ॥ ततः साम्बो भोजकन्याः समानाय्य प्रयत्नतः ॥ ११ ॥ मगाख्यदशविप्रेभ्यो दत्तवान्विधिपूर्वकम् ॥ ततो जाता श्चये पुत्रास्ते तु भोजकसंज्ञकाः ॥ १२ ॥ ब्राह्मणेन समा नाश्च कार्पासव्यंगधारकाः ॥ वेदपाठविपर्यासान्सगास्ते परि कीर्तिताः ॥ १३ ॥ भोजने मौनिनः सर्वे ऋषिवत्कु र्चधारकाः ॥ वर्चाचाश्चाष्टवर्षे च ह्यमाह्कविधारकाः १४ सव्याहृतैर्हि सूर्यस्य गायत्र्या जपतत्पराः ॥ अग्निहोत्र रताः सर्वे मद्यं संस्कारपूर्वकम् ॥ १५ ॥ सौत्रामणौ ब्रा- ह्मणवत्पानं कुर्वंति ते मगाः ॥ अष्टभ्यः शाककन्याश्च दत्तास्ते शूद्रकाः स्मृताः ॥ १६ ॥ तेऽपि सूर्यस्य भक्ता श्च मंदगा नात्र संशयः । इति संक्षेपतः प्रोक्तं शाकद्वी पीयवृत्तकम् ॥ १७ ॥

इति श्रीब्राह्मणोत्पत्तिमार्तंडाध्याये शाकद्वीपिभोजकब्राह्मणोत्पत्तिवर्णनं नाम प्रकरणम् ॥ ४५ ॥ समाप्तम् ॥

इति पंचगौडमध्ये उत्कलमैथिलादिसंप्रदायः ॥ आदितः

अथ कुशिकवंशोत्पत्तिः।

नारायणात्समुत्पन्नो ब्रह्माविश्व प्रजापतिः ॥ तस्या क्षणो रत्रिरभवत्सरी चिर्मनसो भवत् १ म० अ० १९५ अत्रेःसोमःसुतः श्रीमान्तस्य पुत्रोबुधःस्मृतः॥ पुरूरवाबुधा ज्जज्ञे सर्वलोक नमस्कृतः २ पुरूरवाच उर्वस्यामष्टपुत्रानजी जनत्॥ आयुर्दृढायुरस्वायुर्धनायुर्धृतिमान्वसुः ३ श्रुचिर्वि घःसुतायुश्च सर्वेदिव्यवलौजसः॥ यः पुरूरवसःपुत्र आयु स्तस्याभवत्सुतः ४ नहुषः छत्रवृद्धश्च रजीरम्भश्चवीर्य वान् ॥ अनेनाइतिराजेन्द्र प्रथुत्र वृद्धोन्वयम् ५ यतिर्य याति:संयाति रायतिः वियतिःकृतिः ॥ षडिमेनाहुषस्या सन्निन्द्रियाणीव देहिनाम् ६ यतिःकुमार भावेपि योगी वैखान सो ऽभवत् ॥ यजातिश्चाकरोद्राज्य धर्मैकशरणः सदा ७ शर्मिष्ठातस्य भार्याभूद्दुहिता वृषपर्वणः ॥ भार्गव स्यात्मजातद्वै देवजानीतिसुव्रता ८ देवयानीयदुंपुत्रंतुर्वसुं चाप्यजीजनत् तथाद्रुह्यमनुम् पूरुंशर्मिष्ठाजनयत्सुतान् ॥ पूरोर्जन्मेजयोसूतः प्राचीनंतस्तुत्तत्सुतः ॥प्राचीनन्तान्म नस्युश्चतस्मा द्वीतमयोन्नृपः ९ सिंधुर्वीतमयादासीत् सिं धोर्बहुविधः सुतः ॥ बहुविधाच्चैव संयाति रहंवादीचतस्सु तः तस्यपुत्रोथ भद्राश्वो पुत्रः प्रतिरथस्ततः ॥ आसीत्प्रति रथात्कण्वः कणवात्मेधातिथिस्त्वभूत्१०तंसुरोधात्ततोज

ह्नेदुष्यंतोमतिमान्नृपः शकुन्तलायांतुबली दुष्यंताद्भरतो भवति ११ सुतेषुमातृ कोपेन नष्टेषु भरतस्य च॥ ततोमरु द्भिरानीयपुत्रः सतु बृहस्पतेः॥संक्रामितो भरद्वाजस्तस्मा च्चवितथोभवत् ११ सचापिवितथः पुत्रानजनयामासपंच वै॥ सुहोत्रंचसुहोतार गिंगिकंच तथैवच १२ कपिलंचमहा त्मानंसुकेतुं च सुतद्वयम्॥कास्यःकुशोगृत्सपतिर्सुहोत्रस्य सुतास्त्रयः १३ काश्यस्य काशिस्तत्पुत्रो राष्ट्रेदीर्घसमः पिता॥ब्राह्मणाःक्षत्रियाः वैश्याः काशेः दीर्घतमाःसुतः१४ ततोधन्वंतरिश्चासीत्तत्सुतोभूच्चयकेतुमान्॥ केतुमतोहेम रथोदिवोदासःप्रतर्दनात् १५ प्रतर्दनोदिवोदासात् भर्गव त्सः प्रतर्दनात्॥ वत्सादनर्कआसीच्चअनर्काच्छेमको भवत् १६ छेमकादर्ककेतुश्चवृषकेतुः विभुस्ततः॥ विभो रानर्तकःपुत्रो तस्यापिसुकुमारकः १७ सुकुमारात्सत्यके तुर्वत्स भूमिस्ततोभवत्॥ वत्सभूयेर्वत्सकस्तुवत्सकस्यसु तास्त्रयः १८ अजमीढोद्विमीढश्चपुरुमीढश्चवीर्यवान्॥ अजमीढस्यकेशिन्यांजज्ञेजन्हुः प्रतापवान् १९ जह्नोरभू दजकाश्वो वलाकाश्वस्तदात्मजः॥ बलाकाश्वस्यकुशि ककुशिकाद्गाधिरंभकाः गाधेःसत्यवतीकन्याविश्वामित्रः सुतोत्तमः॥ मधुच्छंदाः कृपिमुखाः विश्वामित्रस्यवैसुताः २० हरिश्चंद्रस्यहिमखात्समानीयनराधिपः॥ सुनःसेफं स्वपुत्रेषुज्येष्ठमेनमकल्पयत् २१॥

अथ काष्ठकेता बंशावली ॥

यथा ब्रह्मणः सकाशात्त्रयो देवा असृजन्नाग्निर्वायुरादित्यस्तेतपोऽतप्यन्त तेभ्यस्तेपानेभ्यस्त्रयोवेदा असृजन्नग्नेः ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेद आदित्यात्सामवेदस्तज्जायत, अश्विनाश्विनौ क्रमशः विश्वकरणाध्येयत्वेन कडुहासादूभृगसौशल्यादिचिकीर्ष्यात् ॥

अब बंशोत्पत्ति का अधिकार कहता हूं ।

जैसे ब्रह्मासे तीन देवता उत्पन्न हुये–जिनका नाम अग्नि, वायु, आदित्य है । अग्नि से ऋग्वेद पैदा हुआ व वायु से यजुर्वेद और आदित्य से सामवेद पैदा हुआ–इसका निष्कर्ष यह है कि ब्रह्मा की इच्छा से अग्नि, वायु, आदित्य उत्पन्न हुये और इन्हीं के तपोबल से तीनों वेद उत्पन्न हुये । आदित्य से स्त्री पुरुष अश्विनीकुमार उत्पन्न हुये–अश्विनीकुमार से जो पुरुष पैदा हुआ उसका नाम विश्वकर्मा विख्यात हुआ तथा विश्वकर्म्मा नाम विधाता का भी है । परन्तु यह अर्थ यहां ग्राह्य नहीं है–क्योंकि विश्वकरणाध्ये यत्व इस पदसे आधाराधेय सम्बन्ध है । इसलिये विश्व पद आधेयता सम्बन्ध है । पद में अधिकरणता सम्बन्ध है–इत्यादि वाक्यों से जाति बोधक विश्वकर्मा शब्द होता । वेदोत्पत्ति का विधान अग्नि आदि ऋषियों से मनु आदिकों ने भी माना है ॥ यथा ॥

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् ।
दुदोहयज्ञसिद्धयर्थ मृग्यजुः सामलक्षणम् ॥

इत्यादि वाक्यों से यह न कोई समझे कि ब्रह्माजी से पहिले ये

तीनों ऋषि थे-किन्तु ब्रह्माजी ने इन तीनों ऋषियों को अपने तपोबल से उत्पन्न किया है। जिस प्रकार कि कोई पुरुष मन्त्र द्वारा देवता का आवाहन करके अपने कार्य की सिद्धि करै, तो वह देवता उसके पीछे नहीं समझा जायगा। इसीप्रकार ब्रह्माजी ज्योतिरूप ऋषियों को विग्रह रूप में लाकर पैदा किया॥

इसी क्रमसे "मुसल्यायसाचार्य्यौ" इस वाक्य से मुसली व आयसाचार्य-ये दोनों विश्वकर्मा से पैदाहुये। तदनन्तर आयसाचार्य से ४पुत्र उत्पन्न हुये। यह विषय पारिजात माला के चतुर्थाध्यायके बत्तीसवें सूत्र में स्पष्टरीति से वर्णन कियागया है॥ यथा॥

ककुहासः कश्यपारण्यौ मरुतः काष्ठी कपालिका।
वपजान्नं विधानंच विस्तृतं गृहमेदिनी॥

इस कल्पकारिका से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये सब वैश्य वर्ण थे क्योंकि लिखते हैं कि ककुहास कश्यप आरण्यक ये चारिपुत्र आयसा के पैदा हुये-और काष्ठी, कपालिका ये दोनों कन्या उत्पन्न हुईं। काष्ठी का बिवाह उदवन्त के साथ हुआ-उससे जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम काष्ठक्रेता हुआ-यह कथा बृहत् शङ्कर दिग्विजय के तृतीय सर्ग में वर्णन की गई है। काष्ठक्रेता का वृत्तान्त सत्यनारायण की कथा में वर्णित है-सत्यनारायण की कथा से विदित होता है कि ये लोग काष्ठक्रिया करते थे। 'आयसाचार्य' इस पदसे उभय निष्ठ अर्थात् पत्थर व लोहा आदिकों का भी व्यापार करते थे और कारीगरी भी ये लोग करते थे। इसीलिये आयसाचार्य कहे जाते हैं-क्योंकि जो जिस काम में निपुण होता-वह उस कामका आचार्य होता है-इन प्रमाणों से ककुहासवंशी वैश्य हैं और दूसरा प्रमाण वैश्य होने का यह है कि कारिका में वपुजान्न पद पड़ा है-जिसका अर्थ यह

है कि बोने से अन्न को पैदा करना और गृहमेदिनी पदसे यह अर्थ विदित होता है कि पृथ्वी में मकानादि अपनी कारीगरी के द्वारा बनाया करते थे और कपालिका के दो पुत्र हुये–जिनके नाम इस प्रकार से हैं ॥ यथा ॥

नार्शिमेड्यौ नृपोत्तमौ ।

यह गौडपादाचार्य्यजी का वचन है । नार्शि व मेडच ये दो कपालिका से उत्पन्न हुये (मेडचवंशी सुनार होते भये-क्योंकि मेडच ने शूद्रा स्त्री को रखलिया था–इसलिये जाति से अलग करदियागया इससे जितने पुत्र उत्पन्न हुये वे सब सुनार कहे जातेहैं परन्तु नार्शि जो था वह शुद्ध था–उसमें किसीप्रकार का दोष न था । उसके एक पुत्र पैदाहुआ–जिसका नाम इसप्रकार से है ॥ यथा ॥

अलकारः सुरर्चकः ।

जो देवता का पूजन करनेवाला हुआ और कुबेर की नगरी (अलका) का बनाने वाला हुआ–इसीलिये अलकाकार उसकानाम होगया अब यदि कोई ऐसी शङ्का करे कि अलकार पद सूत्रमें नहीं है सो ठीक नहीं है क्योंकि शौनकाचार्य ने अपने इसी सूत्रकी व्याख्या में स्पष्ट दर्शाया है कि ॥

अलेति अलकाख्या, ककारो अचेति दोषाभावात् ।

अल शब्द से अलकापुरी कोषके अनुसन्धान से लिया जाता है । ककार द्वय सूत्र में न लिखने का कारण केवल अचोपलब्ध अइ उण् इस प्रत्याहार विधायक सूत्र से अच परिहारार्थ है इस भाष्य से अलकाकार जानलेना । यदि कोई कहै कि यही पद सूत्रमें क्यों न रक्खा गया सो ठीक नहीं है क्योंकि पूर्व लिखितभाष्य से बाध होजाताहै ॥

त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायत आशुरश्वः ॥ त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्त्तारमिह यक्षि होतः ॥ [यजु० अ० २९ मन्त्र ९] देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुपोषप्रजाः पुरुधाजजान ॥ इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद्देवा नामसुरत्वमेकम् ॥ [ऋग्वेद म० ३ अ० ५ सूक्त ५५ मं० १९] विश्वकर्माभवत्पूर्वं सृष्ट्या द्वौ विदितः श्रुतौ । रचित्वाऽखिलदेवादीन्ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ॥ ७ ॥ पश्चाद्ब्रम्हकुले भूत्वा शिल्पविद्याप्रकाशकः । त्वष्टा प्रजापतेः पुत्रो निपुणः सर्वकर्मसु ॥ २ ॥ द्वौ प्रोक्तौ विश्वकर्माणौ मयस्त्वष्टा च योगवित् । द्वौ च धाता विधाता च पौराणौ जगतः पती ॥ १ ॥ [अग्निपु०गण भेदाध्याये] विश्वकर्माऽभवत्पूर्वं ब्रह्मणस्त्वपरातनुः । त्वष्टुः प्रजापतेः पुत्रो निपुणः सर्व कर्मसु ॥ कृतोपनयनः सोऽथ बालो गुरुकुले वसन् । चकार गुरुशुश्रूषां भिक्षान्न कृतभोजनः ॥ [स्कन्द पु० काशी खण्डे अध्यायः ८६ श्लो० ३ । ४] विश्वकर्माप्रभासस्य पुत्रः शिल्प प्रजापतिः । प्रासादभवनोद्यान प्रतिमा भूषणादिषु ॥ तडागारामकूपेषु कथितो देव वार्द्धकिः ॥ १ ॥ [मत्स्यपुराणे अ० ५] प्रत्यूषस्य विदुः पुत्रं ऋषिं नाम्ना तु देवलम् । विश्वकर्मा प्रभासस्य विख्यातो देववार्द्धकिः ॥ [गरुड पुराणे अ० ५] बृहस्पतेस्तु भगिनी वरस्त्री ब्रह्मचारिणी

योगसिद्धा जगत्कृत्स्नमसक्ता विचरत्युत ॥ प्रभासस्य तु भार्य्या सा वसूना मष्टमस्यतु। विश्वकर्मा महाभागस्तस्यां जज्ञे महामतिः॥ कर्त्ता शिल्पसहस्राणां त्रिदशानां च वार्द्धकिः। भूषणानां च सर्वेषां कर्त्ता शिल्पवतां वरः॥ यःसर्वेषां विमानानि देवतानां चकारह। मनुष्याश्चोपजीवन्ति यस्यशिल्पान्महात्मनः॥ ८॥ [विष्णुपुराणे अं० १। अध्या० १५] प्रत्यूषस्य विदुः पुत्रमृषिं नाम्ना च देवलम्। द्वौपुत्रौ देवलस्यापि क्षमावन्तौ मनीषिणौ॥ बृहस्पतेस्तु भगिनी वरस्त्री ब्रह्मवादिनी। योगसक्ता जगत्कृत्स्नमसक्ता विचचारह॥ प्रभासस्यतु सा भार्या वसूनामष्टमस्यहि। विश्वकर्मा महाभागोयस्यां जज्ञे प्रजापतिः॥ कर्त्ताशिल्पसहस्राणां त्रिदशानां च वार्द्धकिः। भूषणानांच सर्वेषां कर्त्ता शिल्पवतांवरः॥ [ब्रह्मपुराणे अ० १ श्लो० १५४। १५७] बृहस्पतेस्तु भगिनी वरस्त्री ब्रह्मचारिणी। योगसक्ता जगत्कृत्स्नम सक्ता विचचारह॥ प्रभासस्यचसा भार्या वसूनामष्टमस्य च। विश्वकर्मा महाभागस्तस्यां जज्ञे प्रजापतिः॥ [महाभारतहरिवंश पर्वणि अ० ३। ४५। ४६] वसोराङ्गिरसीपुत्रो विश्वकर्मा कृतीपतिः। ततो मनुश्चाक्षुषोऽभूद्विश्वे साध्या मनोः सुताः॥ १॥ [श्रीमद्भागवत स्कं० ६ अ० ६ श्लो० १५] नाभिदेशाद्विश्वकर्मा बभूव शिल्पिनां गुरुः। महान्तो वसवोऽष्टौ च महाबलपराक्रमाः॥

[ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे अ० ८ श्लो० ११] ॥ २६ ॥ शक्रस्यतु सभादिव्या भास्वराकर्मभिः र्जिता ॥ स्वयंशक्रेण कौरव्य निर्मितार्क समप्रभा ॥ [महाभारत सभापर्वणि अ० ७ श्लोक १] सभावैश्रवणीराजन्। शतयोजनमायता। विस्तीर्णा सप्ततिश्चैव योजनानिसितप्रभा ॥ तपसाविनिर्मिताराजन् स्वयं वैश्रवणेनसा॥[अ० ८ श्लो० ११२]तेषांनामानिमे शृणु । अजैकपादाहिर्बुध्नस्त्वष्टारुद्रश्चवीर्यवान्॥ [विष्णुपु० अं० १ अ० १५ श्लो० १२२] अजैकपादहिर्बुध्नो विरूपाक्षोऽथ रैवतः। [मत्स्यपु० अ० ५ श्लो० ३८] त्वष्टुश्चाप्यौरसः पुत्रोविश्वरूपोमहायशाः। [गरुड पु० अ० ७ श्लो० ३५] त्वाष्ट्रीतु सवितुर्भार्या वडवारूपधारिणी । असूयत महाभागा सान्तरिक्षेऽश्विनावुभौ। [महाभारत आदिपर्वणि अ० ६६ श्लो० ३६] पैतामहो मनुर्देवस्तस्य पुत्रः प्रजापतिः। तस्याष्टौ वसवः पुत्रास्तेषां वक्ष्यामिविस्तरम्॥ [महाभारत आदिपर्वणि अ०६६ श्लो० १७] त्वष्टा प्रजापतिस्त्वासीद्देवश्रेष्ठो महातपाः। सपुत्रंवैत्रिशिरसमिन्द्रद्रोहात्समासृजत् ॥ [महाभारते उद्योगपर्वणि अ० ७ श्लो० ६।] त्वष्टुर्दैत्यानुजाभार्य्या रचनानामकन्यका। सन्निवेशस्ततो जज्ञे विश्वरूपश्च वीर्यवान् ॥ तंवव्रिरे ॥ सुरगणा दौहित्रं द्विषतामपि ॥ [इतिविष्णुभागवते स्कं० ६ अ० ६ श्लो० ४४] ब्रह्महत्यामञ्जलिना जग्राह यदपीश्वरः ॥ [विष्णुभा० स्कं०

६ अ० ९ श्लो० ६ त्वष्टुः पुत्रे हतेपूर्वं ब्रह्मन्निन्द्रस्यतेजसः । ब्रह्महत्याभिभूतस्य पराहानि रजायत [इतिमार्कण्डेयपुराणे अ० ५ श्लो० १] सवंर्च्चीसा पयसा संतनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन ॥ त्वष्टासुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टुतन्वो यद्विलिष्टम् इति यजुर्वेदस्यद्वितीयाध्याये चतुर्विंशमन्त्रस्यत्वष्टादेवोस्ति ॥

बृहस्पतेस्तु भगिनी वरस्त्री ब्रह्मवादिनी । योगसक्ताजगत्कृत्स्नमसक्ता विचचारह ॥ प्रभासस्यतुभार्यासा वसूनामष्टमस्यच । विश्वकर्मा महाभागो जज्ञे शिल्प प्रजापतिः ॥ कर्त्ता शिल्प सहस्राणां त्रिदशानां च वार्द्धकिः । भूषणानां च सर्वेषां कर्त्ता शिल्पवतां वरः ॥ यो दिव्यानि विमानानि त्रिदशानां चकारह । मनुष्याश्चोपजीवन्ति यस्य शिल्पान् महात्मनः ॥ पूजयन्तिचयं नित्यं विश्वकर्माण मव्ययम् । [महाभारते आदि पर्वणि षट्षष्टितमे ऽध्याये श्लोकः १९ तथा श्लोकाः २६-३१]

यजुर्वेदमन्त्र ॥

नमस्तक्षभ्योरथ कारेभ्यश्चवो नमो नमो कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वोनमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवो नमो नमोश्वनायिभ्यो मृगयिभ्यश्च वोनमो नमः १ ॥

श्रीगणेशायनमः ।

विश्वकर्मा चशूद्रायां गर्भाधानं चकारसः । ततोव भूवुःपुत्राश्च नवैते शिल्पकारिणः ॥ १ ॥ मालाकार-श्चर्मकारः शंखकारः कुविन्दकः ॥ कुम्भकारः कंसकारः षडेते शिल्पिनांवराः ॥ २ ॥ सूत्रधारश्चित्रकारः स्वर्ण कारस्तथैव च ॥ पातितास्ते ब्रह्मशापा दयाज्यावर्णसं-कराः ॥ ३ ॥ सौति रुवाच ॥ कथंदेवो विश्वकर्मा वीर्या-धानं चकारसः ॥ शूद्रायां चाधमायांच कथंते पतिता स्त्रयः ॥ ४ ॥ कथंतेषु ब्रह्मशापो बभूव केनहेतुना ॥ हे पुराण विदां श्रेष्ठ तन्नः शंशितुमर्हसि ॥ ५ ॥ शौनक उवाच॥घृताचीकामतः कामं वेशं चक्रेमनोहरम्॥तांददर्श विश्वकर्मा गच्छंतीं पुष्करेपथि ॥ ६ ॥ आगच्छन्नविलो-काच्च प्रसादोत्फुल्ललोचनाम् ॥ तांययाचेसश्रृङ्गारं कामेन हृतचेतनः ॥ ७ ॥ रत्नालंकार भूषाढ्यां सर्वावयव कोमलाम् ॥ यथाषोडशवर्षीयां शश्वत्सुस्थिरयौव-नाम् ॥८॥ बृहन्नितम्बभारार्तां मुनिमानसमोहिनीम् ॥ अति वेशकटाक्षेण लोलां कामार्ति पीडिताम् ॥ ९ ॥ तच्छ्रोणीं कठिनां दृष्टा वायुनांशुक संहृताम् ॥ अतीवो च्चस्तन युगं कठिनं वर्तुलाकृति ॥ १० ॥ सस्मितं चारु वक्त्रंच शरच्चन्द्र विनिन्दकम् ॥ पक्क निम्ब फलारक्त मोष्ठाधरमनोहरम् ॥ ११ ॥ सिंदूर बिन्दु संयुक्तं कस्तूरी बिन्दुभिःसह ॥ कपाल मुज्वलं तावत्कपोलं मणिकुण्ड-

त्तम् ॥ १२ ॥ तामुवाच प्रियां शान्तां कामशास्त्र विशा रदः ॥ कामाग्नि वर्द्धनोद्योगि वचनं श्रुति सुन्दरम् ॥१३॥ विश्वकर्मा वाच ॥ अयिक यासि ललितं ममप्राणाधिके प्रिये ॥ ममप्राणांश्चापहृत्य स्थिरासवक्षणं प्रिये ॥ १४॥ तवैवान्वेषणं कृत्वा भ्रमामिजगतीतले ॥ स्वप्राणां स्त्य कुमिष्टोऽहं त्वांन दृष्टहुताशने ॥ १५ ॥ त्वंयासीति काम लोकं श्रुत्वारंभासुखेऽधुना ॥ आगच्छन्नहमेवाद्य चास्मि न्वर्त्मं न्यवस्थितः ॥ १६ ॥ अहोसरस्वतीतीरे पुष्पोद्याने मनोहरे ॥ सुगन्धमन्द शीतेन वायुना सुरभी कृते ॥१७॥ रसकासं मया सार्द्धयूनाकान्तेन शोभने ॥ विदग्धाया विदग्धेन संगमो गुणवान् भवेत् ॥ १८ ॥ स्थिर यौवन संयुक्ता त्वमेव चिरजीविनी ॥ कामुकी कोमलाङ्गी च सुन्दरीषुच सुन्दरी ॥ १९ ॥ मृत्युञ्जय वरेणैव मृत्यु कन्या जितामया ॥ कुवेर भवनं कृत्वा धनं लब्धं कुवे- रतः ॥ २० ॥ रत्नमालाच वरुणाद्वायोः स्त्रीरत्नभूषणम् ॥ वह्निशुद्धं वस्त्रयुगं वन्हेःप्राप्तं च चेतनात् ॥ २१ काम शास्त्रं कामदेवा द्योषिद्रञ्जन कारणम् ॥ शृङ्गार शिल्पं यत्किञ्चिल्लब्धं चन्द्राच्चदुर्लभम् ॥ २२ ॥ रत्नमाला वस्त्रयुगं सर्वाणि भूषणानिच ॥ तुभ्यं दातुं हृदि कृतं प्राप्तं तत्क्षण एवच ॥ २३ ॥ गृहे तान्येवसंयम्य चारुतो ऽन्वेषणेभव ॥ विरागे सुख संतापे तुभ्यं दास्यामिसा म्प्रतम् ॥ २४ ॥ कामुकस्य वचः श्रुत्वा घृताचीसस्मि

तामुने ॥ ददौ प्रत्युत्तरं शीघ्रं नातियुक्त मनोहरम् ॥२५॥
घृताच्युवाच ॥ त्वया यदुक्तं भद्रंतन् स्वीकरोम्यधुना
पिच ॥ किन्तु सामयिकं वाक्यं ब्रवीष्यामि स्मरातुर ॥
२६ ॥ कामदेवालयं यामि कृतं वेषं चतत्कृते ॥ यद्दिने
यत्कृते यामो वयंतेषांच योषितः ॥ २७ ॥ अद्याहं काम
पत्नी च गुरुपत्नी तवाधुना ॥ त्वयोक्त मधुनेदंच पठितं
कामदेवतः ॥ २८ ॥ विद्यादाता मन्त्रदाता गुरुर्लक्षगुणः
पितुः ॥ मातुः शहस्र गुणितो नास्त्यन्य स्तत्समोगुरुः ॥
२९ ॥ गुरोः शतगुणैः पूज्या गुरुपत्नी श्रुतौ श्रुता ॥ पितुः
शतगुणैः पूज्या यथामाता तथैवसा ॥ ३० ॥ मात्रासहित
शृङ्गारे यावान् दोषः श्रतौश्रतः ॥ ततो लक्षगुणो दोषो
गुरुपत्नी समागमे ॥ ३१ ॥ मातरित्येव शब्देन यांच सं
भाषते नरः ॥ सामातृ तुल्या सत्येन धर्मःसाक्षीसतामपि॥
३२ ॥ त्वया सहित शृङ्गारे कालसूत्रः प्रयातिसः ॥ तत्र
घोरे वसाम्येव यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥३३॥ मात्रा सहित
शृङ्गारे ततो दोषश्चतुर्गुणः ॥ सार्द्धंच गुरु पत्न्याच तल्ल
क्षगुण एवसः ॥ ३४ ॥ कुम्भीपाके पतत्येवयावद्वै ब्रह्मणो
वयः ॥ प्रायश्चित्तं पापिनश्च तस्य नैव श्रुतौ श्रुतम्॥३५॥
चक्राकारंकुलालस्य तीक्ष्णधारं च खड्गवत् ॥ वसामूत्र
पुरीषैश्च परिपूर्णं सुदुस्तरम् ॥ ३६ ॥ शूलवत्कृमिसंयुक्तं
तप्त मग्निसमप्रभम् ॥ पापिनांतद्विहारंच कुम्भीपाकं
प्रकीर्तितम् ॥ ३७ ॥ यावान्दोषोहि पुंसांच गुरुपत्नी

समागमे ॥ तावांश्चगुरुपत्न्यां च तत्रैव कामुकीयदि ॥ ३८ ॥ अद्ययास्यामि कामस्य मन्दिरं तस्यकामिनो ॥ वेषंकृत्वागमिष्यामि तत्कृतेहं दिनांतरे ॥ ३९ ॥ घृताचीवचनं श्रुत्वा विश्वकर्मारुरोषताम् ॥ शशापशूद्रयोन्यां त्वंव्रजेति जगतीतले ॥४०॥ घृताचीतद्वचः श्रुत्वातंशशापसुदारुणं ॥ लभजन्मभवे त्वंच स्वर्गभ्रष्टोभवेतिच॥४१॥ घृताचीत्येवमुक्त्वाच जगाम काम मन्दिरम् ॥ कामेन सुरतंकृत्वा कथयामास तांकथाम् ॥ ४२ ॥ साभारतेचकामोत्कया गोपस्यमदनस्यच॥ पत्नीप्रयागनगरे ललाभजन्म शौनक ॥४३॥ जातिस्मरातत्प्रसूता बभूव च तपस्विनी ॥ वरं नवव्रे धर्मिष्ठा तपसायन्मनोदधौ ॥ ४४॥ तपश्चकारतपसा तप्तकांचनसन्निभा ॥दिव्यंच शतवर्षंसागङ्गातीरे मनोरमे ॥ ४५ ॥ वीर्येणपुरकारोश्च नवपुत्रान्प्रसूयसा ॥ पुनःस्वर्लोकंगत्वाच घृताची सावभूवह॥४६॥शौनक उवाच॥ कथंवीर्यं सादधार सुरकारोस्तपस्विनी॥४७ पुत्रान्नवप्रसूताच कुत्रवाकतिवाद्दिनान् ॥ सौ रुवाच॥ विश्वकर्मातुतच्छापंसमाकर्ण्यरुषान्वितः ॥४८॥ जगाम ब्रम्हणः स्थानं शोकेन हतचेतनः ॥ गत्वास्तुत्वाच ब्रह्माणं कथयामास तांकथाम् ॥ ४९ ॥ ललाभ जन्म ब्राह्मण्यां पृथिव्यामाज्ञया विधेः ॥ सएव ब्राह्मणो भूत्वा भुवि कारुर्बभूवह ॥ ५० ॥ नृपाणां च गृहस्थानां नाना शिल्पं चकारह ॥ शिल्पांश्च कारयामास सर्वांश्च सर्वतः सदा ॥

५१ ॥ विचित्रं विविधं शिल्पमाश्चर्यं सुमनोहरम् ॥ एकदा तु प्रयागे च शिल्पं कृत्वा नृपस्यच ॥ ५२ ॥ स्नातुंजगाम गंगाञ्च ददर्शतत्र कामिनीम् ॥ घृताचीं नवरूपां च युवतीं तां तपस्विनीम् ॥ ५३ ॥ जातिस्मरांतांबुबुधे सच जातिस्मरोद्विजः ॥ दृष्ट्वा सकामः सहसा बभूवहृत चेतनः ॥ ५४ ॥ उवाच मधुरं शान्तः शान्तां तांच तपस्विनीम् ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ अहोधुनात्वमत्रैव घृताचि सुमनोहरे ॥ ५५ ॥ मामां स्मरसि रंभोरु विश्वकर्माहमेवच ॥ शापमोक्षं करिष्यामि भजमांतन सुन्दरि ॥ ५६ ॥ त्वत्कृतेति दहत्येव मनोमे सच मन्मथः ॥ द्विजस्य वचनं श्रुत्वा घृताची नवरूपिणी ॥ ५७ ॥ उवाच मधुरं शान्ता नीति युक्तं परंवचः ॥ गोपिकोवाच ॥ तद्दिने काम कान्ताह मधुनाचतपस्विनी ॥ ५८ ॥ कथं दास्यामि शृङ्गारं गङ्गातीरे च भारते ॥ विश्वकर्मन्निदं पुण्यं कर्म क्षेत्रंच भारतम् ॥ ५९ ॥ अत्रयत्क्रियते कर्म भोगोन्यत्र शुभाशुभम् ॥ धर्म मोक्ष कृते जन्म संलभ्य तपसः फलात ॥ ६० ॥ निबद्धः कुरुते कर्म मोहितो विष्णु मायया ॥ मायानारायणी शानीपरितुष्टाच यम्भवेत् ॥ ६१ ॥ तस्मै ददातिश्रीकृष्णो भक्तितन्मन्त्रमीप्सितम् ॥ योमूढोविषयाशक्तोलब्धजन्माचभारते ॥ ६२ ॥ विहायकृष्णंसर्वेशं समुग्धोविष्णुमायया ॥ सर्वंस्मरामिदेवाह महं जातिस्मरापुरा ॥ ६३ ॥ घृताचीदेववेश्याह मधुनागोपकन्यका ॥

तपः करोमिमोक्षार्थं गङ्गातीरेसुपुण्यदे ॥ ६४ ॥ नात्रस्थ लंचक्रीडायाः स्थिरस्त्वंभवकामुक ॥ अन्यत्रकृतपापं च गङ्गायांचविनश्यति ॥ ६५ ॥ गङ्गातीरेकृतंपापंसद्योलक्ष गुणं भवेत् ॥ तन्नारायणक्षेत्रे तपसाच विनश्यति ॥६६॥ यद्येवकामतः कृत्वा निवृत्तश्च भवेत्पुनः ॥ घृताची वचनं श्रुत्वा विश्वकर्मा निराकृतिः ॥ ६७ ॥ जगामतां गृहीत्वाच मलयं चन्दनालयम् ॥ रम्यांच मलय द्रोण्यां पुष्प तल्पे मनोरमे ॥ ६८ ॥ पुष्प चन्दन वातेन सततं सुरभी कृते ॥ चकार सुख संभोगं तयासह सुनिर्जने ॥ ६९ ॥ पूर्णं द्वादश वर्षंच तुबुधेन दिवा निशम् ॥ बभूव गर्भः कामिन्याःपरिपूर्णः सुदुर्वहः ॥ ७० ॥ सासुसाव चतत्रैव पुत्रान्नव मनोहरान् ॥ कृत शिक्षित शिल्पांश्च ज्ञानयुक्तांश्च शौनक ॥ ७१ ॥ पूर्वप्राक्तनतो युष्मान् बलयुक्तान् विचक्षणान् ॥ मालाकार कर्म कंस शंखकार कुविन्दकान् ॥ ७२ ॥ कुम्भकार सूत्रधार स्वर्णचित्रकरां स्तथा ॥ तौच तेभ्योवरंदत्वातान्संस्थाप्य महीतले ॥ ७३ ॥ मानवीं तनुमुत्सृज्य जग्मतुर्निजमन्दिरम् ॥ स्वर्ण कारः स्वर्णचौर्याद्ब्राह्मणानां द्विजोत्तम ॥ ७४ ॥ बभूव पतितः सद्यो ब्रह्मशापेन कर्मणा ॥ सूत्रधारो द्विजानांतु शापेन पतितो भुवि ॥ ७५ ॥ शीघ्रंच यज्ञ काष्ठानिनद दौ तेनहेतुना ॥ व्यति क्रमेण चित्राणां सद्यश्चित्र कर स्तथा ॥७६॥ पतितो ब्रह्मशापेन ब्राह्मणानांच कोपतः ॥

इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे ब्रह्मखण्डेदशमाध्याये ॥

वैश्यायां विधिना विप्राज्जातोह्यम्बष्ठ उच्यते ॥
कृषिजीवी भवेत्तस्य तथैवाग्नेय वृत्तिकः ॥ १ ॥ ध्वजि
नी जीविका वापि अम्बष्ठाः शस्त्रजीविनः ॥ औशनस
स्मृति अ ८ श्लो० ३१ । ३२ सार्द्धिको हार्द्धिकश्चैव
वार्द्धिकाष्ठी न्त्रिकाश्रितः अनुज्यारथकारश्च स्याताम्ब
ष्ठौरसाःस्मृताः ॥ २ ॥ तथाच (वैश्याश्विककुहासाम्ब
ष्ठौख्यः) वैश्यकन्यासमुद्भूतो ब्राह्मणे नतुसंस्कृतः ॥
सहार्द्धिकइतिज्ञेयो भोज्योविप्रैर्नसंशयः ॥ ३ ॥ पाराशर
स्मृति अ० १० श्लो० २५ एकैवभार्या वैश्यस्य तथाशू-
द्रस्य कीर्तिता ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या विप्रभार्या प्रकी
र्तिताः ॥ ४ ॥ क्षत्रिया चैव वैश्या च क्षत्रियस्य विधीय
ते ॥ वैश्याचभार्या वैश्यस्य शूद्राशूद्रस्यकीर्त्तिताशङ्ख
स्मृति अ० ४ श्लो ७ । ८ ॥ वैश्यायांब्राह्मणाज्जातोऽम्ब
ष्ठोहि मुनिसत्तमः ॥ ब्राह्मणानां चिकित्सार्थं निर्द्दिष्टोमुनि
पुङ्गवैः ॥५॥ वैद्योश्विनीकुमारेण जातश्च ब्रह्मयोषिति ॥
वैद्यवीर्येण शूद्रायां बभूवुर्बहवोजनाः ॥ ६ ॥ तेचग्राम गुण
ज्ञाश्च मन्त्रौषधिपरायणाः ॥ तेभ्यश्च जाताः शूद्रायां
ते व्याल ग्राहिणोभुवि ॥ ७ ॥ शौनक उवाच ॥ कथंब्राह्म
ण्यांतु सूर्यपुत्रोऽश्विनीसुतः ॥ अहोकेन विपाकेनवीर्या
धानं चकारसः ॥८॥ सौतिरुवाच ॥ गच्छन्तीं तीर्थयात्रा
यां ब्राह्मणीं कुरुनन्दन ॥ ददर्श कामुकीं कान्तः पुष्पो
द्याने मनोहरे ॥ ९ ॥ तयानिवारितोयत्नाद्बलेनबलवान्

सुरः अतीवसुन्दरींदृष्ट्वावीर्याधानं चकारसः ॥ १० ॥ द्रुतं तत्याज गर्भं सा पुष्पोद्यानेमनोरमे ॥ सद्योबभूवपुत्रश्च तप्तकाञ्चनसन्निभः ॥ ११ ॥ सपुत्रा स्वामिनोगेहं जगाम व्रीडता तदा ॥ स्वामिनं कथयामास यस्मादैवादि संकटम् ॥ १२ ॥ विप्रोरोषेण तत्याज तंचपुत्रं स्वकामिनीम् ॥ सरिद्बभूवयोगेन सात्र गोदावरी स्मृता ॥ १३ ॥ पुत्रंचिकित्साशास्त्रं च पाठयामास यत्नतः ॥ नानाशिल्पं च शास्त्रं च स्वयं सरविनन्दनः ॥ १४ ॥ [इति ब्रह्मवैवर्ते ब्रह्मखण्डे दशमोऽध्यायः] [वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासुतौ] [इति मनुसंहिता] माहिष्यः-क्षत्रिया हैहयकन्यायां माहिष्यस्य च संभवः [इतिपरशुरामसंहिता] अपिच-माहिष्योऽर्यां क्षत्रियोः इत्यमरः ॥

वातस्कन्धो विशाखश्च विधाताकालएवच ॥ करालदन्तस्त्वष्टा च विश्वकर्मा चतुम्बुरुः ॥ १ ॥ अयो निजायोनिजाश्चवायुभक्षा हुताशिनः ॥ ईशानंसर्वलोकस्य वज्रिणंसमुपासते ॥ २ ॥ (महाभारतसभापर्वणि अ० ७ श्लो० १४-१५ ॥ पुनः प्राप्तेवसन्तेतुपूर्णः संवत्सरोभवत् ॥ प्रसवार्थं ततोयष्टुंहयमेधेन वीर्यवान् ॥ १ ॥ अभिवाद्य वशिष्ठंच न्यायतः प्रतिपूज्यच ॥ अब्रवीत्प्रश्रितं वाक्यं प्रसवार्थं द्विजोत्तमम् ॥ २ ॥ यज्ञोमे क्रियतां ब्रह्मन् यथोक्तं मुनिपुङ्गव ॥ यथानविघ्नः क्रियते यज्ञाङ्गेषु विधीयताम् ॥ ३ ॥ भवान् स्निग्धः सुहृन्मह्यं गुरुश्च परमो

महान् ॥ सोऽध्वर्यो भवता चैवभारो यज्ञस्य चोद्यतः ॥ ४ ॥ तथेतिचस राजान मब्रवीद्द्विजसत्तमः ॥ करिष्ये सर्वमे वैतद्भवतायत्समर्पितम् ॥ ५ ॥ ततो ब्रवीद्द्विजान् वृद्धान् यज्ञ कर्मसु निष्ठितान् ॥ स्थापत्ये निष्ठितां श्चैव वृद्धान् परमधार्मिकान् ॥ ६ ॥ कर्मांतिगान् शिल्पकारान् वर्द्धकीन् खनकानपि ॥ गणकान् शिल्पिनश्चैव तथैव नट नर्त्तकान् ॥ ७ ॥ तथा शुचीञ्छास्त्रविदः पुरुषान् सुबहुश्रु तान् ॥ यज्ञकर्मसमीहन्तां भवन्तो राजशासनात् ॥ ८ ॥ (इति वाल्मीकीय रामायणे बालकाण्डे त्रयोदशसर्गे) यज्ञकर्मसुये ऽव्यग्राः पुरुषाः शिल्पिनस्तथा ॥ तेषाम पिविशेषेण पूजाकार्या यथा क्रमम् ॥ १ ॥ येस्युः संपू जिताः सर्वे वसुभिर्भोजनेनच ॥ इति वाल्मीकीयरामा यणे बालकाण्डे त्रयोदशसर्गे श्लोकाः ६१४—६१५ ॥ ततःकाञ्चनचित्राङ्गं वैडूर्यमणि वेदिकम् ॥ कूटागारैः परिक्षिप्तं सर्वतोरजतप्रभम् ॥ १ ॥ पाण्डुराभिः पताका भिर्ध्वजैश्च समलंकृतम् ॥ काञ्चनं काञ्चनैर्हर्म्यैर्हेम पद्मवि भूषितैः ॥ २ ॥ प्रकीर्णकिंकिणी जालैर्मुक्तामणिगवाक्ष कम् ॥ घंटाजालैः परिक्षिप्तं सर्वतो मधुरस्वरम् ॥ ३ ॥ तंमेरु शिखराकारम् रचितं विश्वकर्मणा ॥ वृहद्भिर्भूषि तं हर्म्यैर्मुक्तारजतशोभितैः ॥ ४ ॥ ततः स्फटिक चित्रा ङ्गैःवैडूर्यैश्च वरासनैः ॥ महार्हस्तरणोपेतै रुपपन्नं महा धनैः ॥ ५ ॥ उपस्थित मनाधृष्यन्तद्विमानं मनोजवम् ॥

निवेदयित्वा रामायतस्थौतत्र विभीषणः ॥ ६ ॥ तत्पुष्प कं कामगमं विमान मुपस्थितं भूधर सन्निकाशम् ॥ दृष्ट्वातदा विस्मयमाजगाम रामः ससौमित्रिरुदारसत्वः॥ ७॥ वाल्मीकीय रामायणे युद्धकाण्डे १२३ सर्गेश्लोकाः २४-३० विश्वकर्मा प्रभासस्य विख्यातो देववार्द्धकिः ॥ गरुडपुराणे अ० ६ श्लो० ३४ ऋकूसामयोः शिल्पे तस्थे वामा स्मेते मायातमास्य यज्ञसो हृचः शर्मासि शर्म सेयच्छनमस्ते ऽस्तुमाहि ग्वंसीः [यजु० अ० ४ मं० ९ [२९] वैश्यात्तु जायते व्रात्यात्सुधन्वा चार्य्यं एवच ॥ कारुकश्च विजन्मा च मैत्रःसात्वत एवच ॥ १ ॥ मनु० अ० १०-श्लो० १८ ॥ वैश्य व्रात्यात्तु वैश्यायां स्थपतिः स्वर्णकारकः ॥ तथा शिल्पी वर्द्धकीच पञ्चैते कर्म भेदतः ॥ १ ॥ [इति शिवपुराणे] समान वर्णापुत्राः सवर्णाभवन्ति] नच वैश्यस्य कामःस्यान्नरक्षेयं पशूनि ति ॥ वैश्यश्चेच्छालिनान्येन रक्षितव्यं कथंचन ॥३२८॥ मणिमुक्ता प्रवालानां तान्तवस्यच विक्रयी ॥ गन्धानां च रसानां च विद्यादर्द्ध बलावलम् ॥३२९॥ बीजानामुप्ति विच्चस्यात्क्षेत्रदोषगुणस्यच ॥ मानयोगं च जानीयात्तु लायोगांश्च सर्वशः ॥३३०॥ सारा सारंच भाण्डानां देशा नांच गुणागुणान् ॥ लाभालाभंच पण्यानां पशूनां परि वर्द्धनम् ॥ ३३१ ॥ वैश्यवृत्ति मनातिष्ठन्ब्राह्मणः स्वेपथि स्थितः ॥ अवृत्ति कर्षितः सीदन्निमंधर्मं समाचरेत्१०१॥

सर्वतःप्रति गृह्णीयाद्ब्राह्मणस्त्वनयंगतः ॥ पवित्रं दुष्य तीत्येतद्धर्मतो नोपपद्यते (१०२) विद्याशिल्पंभृतिः सेवा गोरक्ष्यं विपणिःकृषिः ॥ धृतिर्भैक्ष्यं कुसीदंच दश जीवनहेतवः ॥ शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेयसा चेत्प्रजा- यते ॥ अश्रेयान् च्छ्रेयसींजातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात् ॥ ६४ ॥) शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम् ॥ क्षत्रियाज्जातमेवंतु विद्या द्वैश्यात्तथैवच ॥ ६५ ॥ मनु० अ० १०) उभाभ्यामप्य जीवन्तु कथंस्यादिति चेद्भवे त् ॥ कृषि गोरक्षमास्थाय जीवे द्वैश्यस्य जीविकाम् ॥ ८२ ॥ वैश्यवृत्त्यापि जीवन्तु ब्राह्मणाः क्षत्रियोपिवा ॥ हिंसाप्रायांपराधीनां कृषिंयत्नेन वर्जयेत् ॥ ८३ ॥ जीवे देतेनराजन्यः सर्वेणाप्यनयंगतः ॥ नत्वेवज्यायसीं वृत्तिमभिमन्येत कर्हिचित् ॥ ९५ ॥ वैश्यो जीवन्स्वधर्मे ण शूद्र वृत्यापिवर्तयेत् ॥ अनाचरन्न कार्याणि निवर्तेतच शक्तिमान् ॥ ९८ ॥ अशन्कुवंस्तु शुश्रूषांशूद्रः कर्तुंद्विज न्मनाम्॥ पुत्रदारात्ययं प्राप्तो जीवेत्कारुककर्मभिः९९॥ यैःकर्मभिः प्रचरितैः शुश्रूष्यन्ते द्विजातयः ॥ तानिकारु ककर्माणि शिल्पानि विविधानिच ॥ * ॥

पितृवंश.	मातृवंश.
१ ब्रह्मा	१ ब्रह्मा.
२ स्वायम्भुवमनु.	२ अङ्गिरा.
३ प्रजापति,	३ बृहस्पति, उतथ्य, संवर्त्त; ये तीन पुत्र और एक कन्या, जिसका नाम महाभारत आदि इतिहासों से विदित नहीं हुआ है.
४ प्रभास.	४ कन्या.
५ विश्वकर्मा.	५ विश्वकर्मा.
६ अजैकपात्, अहिर्बुध्न, त्वष्टा या विरूपाक्ष, रुद्र या रैवत.	
७ त्वष्टा	
८ विश्वरूप तथा त्वाष्ट्री कन्या.	
९ त्वाष्ट्रीके अश्विनी कुमार.	
१० अश्विनी कुमार के कङ्कहास.	

—:※:—

अवाच्चक्षं पदमस्य सस्वरुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन् । अपृच्छमन्याँ उत ते म आहुरिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम ॥ २ ॥ ऋ० मं० ५ अ० सू० ३० ॥

पदार्थः—शिल्प विद्या की (इच्छन्) इच्छा करता हुआ मैं जिन (अन्यान्) अन्य बिद्वानों को (अपृच्छम्) पूंछूं (ते) वे (बुबुधानाः) संबोध युक्त (नरः) नायक जन बिद्वान् (मे) मेरे लिये (इन्द्रम्) विजुली को (आहुः) कहैं उस को (अस्य) इस शिल्प विद्या के [निधातुः] धारण करने वाले के (सस्वः) गुप्त [उग्रम्] उग्रगुण, कर्म और स्वभाव वाले [पदम्] प्राप्त होने योग्य विज्ञान को (अनु आयम्) अनुकूल प्राप्त होऊं और अन्यों के प्रति (अव, अचचक्षम्) निश्शेष कहूं इस प्रकार (उत) भी मित्र के सदृश वर्त्तमान हम लोग अङ्ग और उपाङ्गों के सहित शिल्प विद्याओं को (अशेम) प्राप्त होवें ॥ २ ॥

भावार्थः—जब शिल्प आदि विद्या के जानने की इच्छा करने वाले जन विद्वानों के प्रति पूंछें तब उन के प्रति यथार्थ उत्तर देवें इसप्रकार परस्पर मित्र हुए बिजुली आदि की विद्या की उन्नति करैं ॥२ ॥

नोट—हमने श्रीमान् पं० रलियाराम जी सम्पादक स० ध० प्र० के लेखको यहां छापने की प्रतिज्ञा की थी परन्तु अब उसे कै एक कारणों से भूमिका के साथ छापा है कृपया वहीं देखैं ।

ऋभुक्षणो वाजा मादयध्वमस्मे नरो मघवानः सुतस्य। आवोऽर्वाचः क्रतवो न यातां विभ्वोरथं नर्यं वर्तयन्तु ॥ १ ऋग्वेद मं० ७ । अ० ३ । सू ४८ ॥

पदार्थः—हे [ऋभुक्षाणः] महात्मा [मघवानः] बहुतउत्तम धन युक्त [विभ्वः] सकल विद्याओं में व्याप्त (अर्वाचः) जो पीछे जाने वाले (वाजाः) विज्ञानवान् (नरः) मनुष्यो तुम (ऋतवः) अतीव बुद्धियों के (न) समान (सुतस्य) उत्पन्न हुए के सेवने से (अस्मे) हम लोगों को (मादयध्वम्) आनन्दित करो (आ, याताम्) आते हुए (वः) तुम लोगों के और हमारे (नर्यम्) मनुष्यों में उत्तम (रथम्) रमणीय यान को और नर (वर्तयन्तु) वर्ते ॥ १ ॥

भावार्थः—इस मन्त्र में उपमा लङ्कार है-हे मनुष्यों ! जो विद्वान् जन तुम्हें और हमें विद्या और बुद्धि के दान से वा शिल्पविद्या से आनन्दित करते हैं वे सर्वदा प्रशंसा करने योग्य हैं ॥ १ ॥

अयं समह मातनूह्याते जनाँ अनु। सोमपेयं सुखो रथः ॥ ११ ॥ ऋ० मं० १ अ० १७ सू० १२० ।

पदार्थः—हे (समह) सत्कार के साथ वर्त्तमान विद्वान् आप जो (अयम्) यह (सुखः) सुख अर्थात् जिसमें अच्छे २ अवकाश तथा [रथः] रमण बिहार करने के लिये जिसमें स्थितहोते वह विमान आदि यान हैं जिससे पढ़ाने और उपदेश करने हारे (अनूह्याते) अनुकूल

एक देश से दूसरे देश को पहुँचाए जातेहैं उससे (मा) मुझे (जनान्) वा मनुष्यों अथवा (सोमेयसेम्) ऐश्वर्य युक्त मनुष्यों के पीने योग्य उत्तम रसको (तनु) विस्तारो अर्थात् उन्नति देओ ॥ ११ ॥

भावार्थः-जो अत्यन्त उत्तम अर्थात् जिस से उत्तम और न बन सके उस यान का बनाने वाला शिल्पी हो वह सब को सत्कार करने योग्य है ॥ ११ ॥

इह प्रजामिह रयिंरराणा इह श्रवो वीरवत्तक्षतानयेन वयं चितयेमात्यन्यान्तं वाजं चित्रमृभवो ददानः ॥ ९। ८॥ ऋग्वेद मं० ४ अ० ४ सू० ३६ ॥

पदार्थः-हे [ऋभवः] बुद्धिमानो आप लोग [इह] इस संसारमें [नः] हम लोगोंके लिये [प्रजाम्] उत्तम सन्तान वा राज्य को(इह) इस संसार में (रयिम्) धनको और (इह)इस संसारमें (वीरवत) प्रशंसा करने योग्य वीरों के करने वाले (श्रवः) अन्न वा श्रवण को (रराणाः) देतेहुए (तक्षत) प्राप्त कराओ (येन) जिससे (वयम्) हम (लोग (अन्यान्) औरों के प्रति (अति) चितयेम उत्तम रीति से विज्ञान को कहें (तम) उस (चित्रम्)अद्भुत वाजम्) विज्ञानको (न) हम लोगों के लिये (ददा) दीजिये ॥ ८ ॥

भावार्थः-जब मनुष्य विद्वानों को प्राप्त होवें तब विज्ञान सत्य श्रवण धन उत्तम प्रजा और शूरवीर युक्त सेना की याचना करें उनसे यथार्थ विद्याको प्राप्त होकर अन्यों को निरन्तर बोध करावें ॥ ८ ॥

यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यस्परि विद्वांसो विश्वा नर्याणि भोजना। द्युमंत वाज वृषशुष्म मुत्तममानो रयिमृभव स्तक्षतावयः॥ ८॥ ऋग्वेद मं० ४। अं० ४। सू० ३६॥

पदार्थः-हे (विद्वांसः) विद्वानो (ऋभवः) बुद्धिमानो (यूयम्)

आप लोग (अस्मभ्यम्) हम लोगों के लिये (धिषणाभ्य) बुद्धियोंसे (विश्व) संपूर्ण (नर्य्याणि) मनुष्योंमें श्रेष्ठ वा मनुष्यों के लिये हितकारक (भोजना) पालन व अन्न (द्युमन्त) प्रकाशवाले (वृषशुष्म) बलियों के बल और (उत्तमम्) श्रेष्ठ (वाजम्) विज्ञान और (रयिम्) धन का तथा (नः) हम लोगों के लिये (वयः) जीवन का (आ, तक्षत) विस्तार कीजिये उससे सुख को (परि, आ) सब प्रकार से बढ़ाइये ॥ ८ ॥

भावार्थः—जो विद्वान् पढ़ाने और उपदेश करने से मनुष्योंकी बुद्धि बढ़ाते हैं वे सब के हितैषी जानने चाहिये ॥ ८ ॥

'तक्षा के लिये धीर, कवि, और विपश्चित् शब्द'

श्रेष्ठंवः पेशोअधि धायिदर्शतं स्तोमोवाजाऋभवस्तञ्जुजुष्टन । धीरासोहिष्ठा कवयो विपश्चितस्तान्वएनाब्रह्मणा वेदयामसि ॥७॥ ऋग्वेदः मं० ४ । अ० ४ । सू० ३६ ॥

हे (वाजाः+ऋभव) विज्ञानी तक्षो ! (वः) आपका (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ (दर्शतम्) दर्शनीय (पेशः) रूप (अधि+धायि) सर्वत्र प्रसिद्ध है इस कारण (स्तोमः) यह हमारा स्तव है (तम्+जुजुष्टन) इसे सेविये । आप लोग (धीरासः) धीर (कवयः) कवि और विपश्चित् = विद्वान् (हि+स्थः) प्रसिद्ध हैं (तान्+वः) उन प्रसिद्ध आप लोगोंको एना+ब्राह्मणं इस वाणी से (आवेदयामसि) आवेदन करते हैं निपुण तक्षा की प्रशंसा करनी चाहिये । उस के यश को बढ़ा चढ़ाकर गाना चाहिये जिस से कि वह उत्साहित हो नवीन कला कौशल और शिल्प विद्या निकाला करे । यह इससे उपदेश है । श्रीमान् पण्डित शिवशङ्कर जी शर्मा काव्य तीर्थ रचित वेद तत्त्व प्रकाश पृष्ठ ॥ १०२ ॥

एतं वां स्तोम मश्विनावकर्म्मा तक्षाम भृगवो न

रथम् । न्यमृक्षाम योषणां न मर्यं नित्यं नसूनुं तनयं दधानाः १० । ३९ । १४ ॥

(भृगवः+न+रथम्) जैसे भृगुगण अर्थात् बुद्धिमान् तक्षगण सुन्दर सुगठित रथ प्रस्तुत करते हैं तद्वत् (अश्विनौ) हे अश्विनौ हेराजन्! तथा राज्ञि!(वाम्) आप दानोंके निमित्त (एतम्+स्तोमम्) स्तोमको(अकर्म) बनायाहै (अतक्षाम) अच्छे प्रकार भूषितकिया है और (मर्य+न+योषणाम्) जैसे विवाह के समय जामाता के देने के हेतु कन्या को भूषणालंकृत करतेहैं और जैसे (तनयम्+सूनुम्+न) वंशवृद्धिकर पुत्र को संस्कृत करते हैं तद्वत् (दधानाः) यज्ञ कर्म्म करते हुये हम लोग (नि+अमृक्षमो) आप के लिये यह स्तोम संस्कृत करते हैं उसे सुनें। सायण-(रथकारास्भृगवः) भृगु का अर्थ रथकार करते हैं । इससे सिद्ध है कि बुद्धिमान् पुरुषका यह कार्य्य है । श्रीमान् पण्डित शिवशङ्कर जी शर्मा काव्यतीर्थ रचित वेद तत्त्वप्रकाश पृष्ठ १०२ ॥

स वाज्यर्वा स ऋषिर्वचस्यया स शूरो अस्ता पृतनासु दुष्टरः ॥ स रायस्पोषं स सुवीर्यं दधे यं वाजो विभ्वाँ ऋभवो यमाविषुः ॥ ६ ॥ ऋग्वेदः मं० ४ । अ४ । सू० ३६ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो (ऋभवः) बुद्धिमान् जन (विभ्वां) व्यापक पदार्थ से (यम्) जिसको (आविषुः (विद्यायुक्त करें और (यम्) जिस को) वाजः) विज्ञानवान् धारण करता है (सः) वह (वचस्यया) अत्यन्त प्रशंसा के साथ (अर्वा) उत्तमगुणों को प्राप्त कराने वाला (वाजी) विज्ञानयुक्त (सः) वह (ऋषिः) वेदार्थ को जानने वाला (सः) वह (पृतनासु) शत्रुओं की सेनाओं में (दुष्टरः) दुःख से उल्लङ्घन करने योग्य (शूरः) वीर पुरुष (अस्ता) शत्रुओं को फेंकने वाला होता है (सः) वह (रायः) धन की (पोषम्) पुष्टि

और (सः) वह (सुवीर्य्यम्) उत्तम बल और पराक्रम को (दधे धारण करता है ॥ ६ ॥

भावार्थः—जो मनुष्यों विद्वानों के संग से गुणों के ग्रहण करने की इच्छा करते हैं वे प्रशंसित, शत्रुओं से नहीं जीतने योग्य, धनाढ्य और पराक्रमी होते हैं ॥ ६ ॥

ऋभुतो रयिः प्रथम श्रवस्तमो वाज श्रुतासो यमजी जनन्नरः । विभ्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यो यं देवासोऽवथा सविचर्षणिः ॥ ५ ॥ ७ ॥ ऋ० मं० ४ सू० ॥ ३६ ॥

पदार्थः—हे [देवासः] विद्वानों जो (वाज श्रुतासः) विज्ञान के सुनने वाले (नरः) नायक जन (यम्) जिसको (अजाजनन्) उत्पन्न करते हैं (सः) वह (विभ्वतष्टः) व्यापक पदार्थों में नहीं पण्डित उनको नहीं जाने वाला (विदथेषु) जानने योग्य व्यवहारों में (प्रवाच्यः) कहने के योग्य होवे इससे (ऋभुतः) बुद्धिमानों के समीप से प्रथम (श्रवस्तमः) अत्यन्त प्रथम श्रवण वा अन्न जिससे वहः (रयिः) धन प्राप्त होवे और (यम्) जिस की आप लोग (अवथ) रक्षा करते हो (विचर्षणिः) संपूर्ण देखने योग्य पदार्थों को देखने वाला मनुष्य होवे ॥ ५ ॥

भावार्थः—वे ही विद्वान् उत्तम हैं कि जो विद्यार्थियों को विद्वान् करते हैं उन्हीं को पढ़ाना और उपदेश देना चाहिये पदार्थ विद्या से रहित होवें, वेही सुखी होते हैं जो विद्या और धनको प्राप्त होकर धर्मात्मा होवें ॥ ५ ॥

एकं वि चक्र चमसं चतुर्वयं निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिः । अथा देवेष्वमृतत्व मानशुः श्रुष्टीवाजा ऋभव-स्तद्व उक्थ्यम् ॥ ४ ॥ ऋ० मं० ४ अ० सू० ॥ ३६ ॥

पदार्थः–हे (वाजाः) ऐश्वर्य्य से युक्त (ऋभवः) बुद्धिमान् जनो (तत्) वह [वः] आपलोगों [उक्थ्यम्] प्रशंसा करने योग्य कर्म कि जिससे आपलोग [शुष्ठी] शीघ्र [धीतिभिः] अङ्गुलियों के सदृश विलेखनगतियों से [चर्मणः] त्वचा की [गाम्] भूमि को [अरिणीत] प्राप्त हुजिये [अथ] इस के अनन्तर इस से [देवेषु] विद्वानों में [अमृतत्वम्] [मोक्षसुखको [आनश] प्राप्त हुजिये और जैसे [एकम्] सहाय रहित अर्थात् अकेले (चमसम्) मेघों के सदृश विभक्त (चतुर्वयम् चार हम लोग [वि, निः, चक्र] करें वैसे आप लोग भी करें ॥ ४ ॥

भावार्थः–इस मंत्र में वाचकलु०–जो प्रशंसित कर्मो को करते हैं वे व्यावहारिक और पारमार्थिक सुखको प्राप्त होकर पण्डितवरों में प्रशंसा को प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

तद्वो वाजा ऋभवः सुप्रवाचनं देवेषु विभ्वो अभवन्महित्वनम्। जिव्री यत्सन्ता पितरा सनाजुरा पुनर्युवाना चरथाय तक्षथ ॥ ३॥ ऋ० मं० ४ अ० ४ सू० ३६ ॥

पदार्थः–हे (वाजाः) अन्न आदिकों से युक्त (ऋभवः) बुद्धिमानों (विभ्वः) सकल विद्याओं में व्याप्त (यत्) जो (वः) आपलोगोंके प्रति (देवेषु) विद्वानोंमें (महित्वनम्) प्रतिष्ठा को (सुप्रवाचनम्) उत्तम प्रकार पढ़ाना और उपदेश करना (अभवत्) होवे (तत्)उसको प्राप्तहोकर (जिव्री) जीवते हुए (सन्ता) विद्यमान और (सनाजुरा) सदा वृद्धावस्था को प्राप्त (पितरा) माता पिता (चरथाय) चलने विज्ञान वा भोजन के लिये (पुनः) फिर (युवाना) युवावस्था को प्राप्त हुए (तक्षथ) करो ॥ ३ ॥

भावार्थः–हे बुद्धिमान् जनो ! जो आपलोग विद्वानों में स्थित

होकर उनसे अध्ययन और उपदेश करें तो ज्ञान वृद्ध होने से युवावस्थाको प्राप्त हुए भी वृद्ध होकर सत्कृत होवें ॥ ३ ॥

रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतसोऽविह्वरन्तं मनसस्परि ध्यया। ताँ ऊन्व १ स्य सवनस्य पीतय आवो वाजा ऋभवो वेदयामसि ॥ २ ॥ ऋ० मं० ४ अ० ७ सु० ३६॥

पदार्थः--हे (वाजाः) हस्तक्रिया को प्राप्त हुए (ऋभवः) बुद्धिमानों (ये) जो वः आप लोगों को (अस्य) इस (सवनस्य) शिल्प विद्यासे उत्पन्नहुए कार्य की (पीतये) तृप्तिके लिये (सुचेतसः) उत्तम विज्ञान वाले (मनसः) विज्ञान से [ध्यया] ध्यानसे (अविह्वरन्तम्) नहीं टेढ़े चलने वाले (सुवृतम्) उत्तम प्रकार अंग और उपांगों के सहित (रथम्) विमान आदि बाहन को (परि, चक्रुः) सब ओर से बनाते हैं और जिनको हम लोग (आ, वेदयामसि) जानते हैं (तान्) उनको (नु) निश्चय करके (उ) ही आप लोग शीघ्र ग्रहण कीजिये ॥ २ ॥

भावार्थः--हे बुद्धिमानों ! जो बाहनोंके बनाने और चलानेमें चतुर शिल्पी जनहोवें उनका ग्रहण और सत्कारकरके शिल्प विद्याकी उन्नति करो ॥ २ ॥

अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो ३ रथस्त्रिचक्रः परि वर्त्तते रजः। महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ ॥ १ ॥ ऋ० मं० ४ अ० ४ सु० ३५ ॥

पदार्थः—हे (ऋभवः) बुद्धिमानो (वः) आप लोगों के लिये(अनश्वः) घोडों से रहित (अनभीशुः) जिसने किसी का दिया नहीं लिया वह (उक्थ्यः) प्रशंसा करने योग्य (त्रिचक्रः) तीन पहियों से युक्त (रथः) बाहन बिशेष (जातः) उत्पन्न हुआ (यत्) जो

(महत्) बड़े [रजः] लोक समूह के [परि] सब ओर [वर्त्तते] वर्त्तमान है [तत्] वह [देव्यस्य] विद्वानों में उत्पन्न कर्म का [प्रवाचनम्] उपदेश सब ओर वर्त्तमान है उससे (द्याम्) प्रकाश (पृथिवीम्) और अन्तरिक्ष वा भूमि को आप लोग (पुष्यथ) पुष्ट करो ॥ १ ॥

भावार्थः–हे मनुष्यो! तुम लोग अनेक प्रकारके अनेक कला चक्रों तथा पशु घोड़ा के वाहन से रहित अग्नि और जल से चलाये गये विमान आदि वाहनों को बना पृथिवी, जलों और अन्तरिक्षमें जा आकर और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर पूर्ण सुख वाले होओ ॥ १ ॥

ते मर्मृजन्त दहृवांसो अद्रिंतदेषामन्ये अभितोविवोचन्। पश्वयन्त्रासो अभिकारमर्चन्विदन्त ज्योतिश्चकृपन्त धीभिः ॥ १४ ॥ ऋ० ॥ मं० ४ अ० १ सु० १ ॥

पदार्थः–हे मनुष्यो जो हम लोगों के मनन करने और पालन करने वाले (अद्रिम) मेघके (दहृवांसः) तोड़ने वाले किरणोंके सदृश हम लोगों को (मर्मृजत्) शुद्ध होकर शुद्ध करते हैं (एषाम्) इनके मध्य में (अन्ये) दूसरे लोग (तत्) इस कारण (अभितः) चारों ओर से सन्मुख (वि वोचन्) उपदेश देते (पश्वयन्त्रासः) देखे हैं यन्त्र जिन्हों ने ऐसे होते हुए (कारम्) शिल्प कृत्य का (अभि-अर्चन्) सत्कार करते (धीभिः) बुद्धियों वा कर्मों से (ज्योतिः) प्रकाश को (विदन्त) जानते और सबों में (चकृपन्त) कृपालु होते हैं (ते) वे सब लोगों से सत्कार कराने योग्य होवें ॥ १४ ॥

भावार्थः–इस मंत्र में वाचकलु०–हे मनुष्यो जो वेद उपवेद अंग और उपांगों के पार जाने और शिल्प विद्या के जानने वाले विद्वान् लोग लोगों की कृपा से सब को उत्तम प्रकार शिक्षा का उपदेश करके

विद्या युक्त करें वे सब लोगों से सत्कार करने योग्य होवें ॥ १४ ॥

ससस्य यद्वियुता सस्मिन्नुधन्नृतस्य धामन्रणयन्त देवाः । महाँ अग्निर्नमसा रातहव्यो वेरध्वराय सदमिद्दृतावा ॥ ७ ॥ ऋ० मं० ४ अ० १ सू० ७ ॥

पदार्थः—जो (देवाः) विद्वान् लोग (नमसा) पृथ्वी आदि अन्न के साथ वर्त्तमान (रातहव्यो) जिसने ग्रहण करने योग्य पदार्थ दिया (ऋतावा) जो जलका बिभाग करनेवाला (महान्) महान् (अग्निः) बिजुली रूप अग्नि (वेः) पक्षी के सदृश (सदम्) प्राप्त होने योग्य स्थान को प्राप्त कराता है (यत्) जिस अग्नि में (सस्मिन्) सब (उधन्) अवयवों में और (ऋतस्य) सत्य के (धामन्) स्थान में (ससस्य) स्वप्न सम्बन्धसे (वियुता) वियुक्त अर्थात् विना स्वप्न वस्तुएं (रणयन्त) शब्द करती हैं उसको (अध्वराय) अहिंसनीय व्यवहार के लिये (यत्) जानतेही हैं वे सत्यके जानने वाले होते हैं ॥ ७ ॥

भावार्थः—हे बुद्धिमान् पुरुषो ! जो अग्नि शरीर आदेमें और निद्रा में प्रसिद्ध होता है वह बड़ा होने से सर्वत्र व्यापक है ॥ ७ ॥

वेद प्रमाणम् ॥

तं शश्वतीषु मातृषु वन आवीत मश्रितम् तन्न सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनम् ॥ ६ ॥ ऋ० मं० ४ अ० १ सू० ७ ॥

पदार्थः—हे विद्वानों आपलोग (शश्वतीषु) अनादिकालसे वर्त्तमान (मातृषु) आकाशआदि पदार्थों में (वन) किरणमें विद्यमान (गुहा) बुद्धि में (हितम्) स्थित (सुवेदम्) उत्तम विज्ञान जिसका (कूचिदर्थिनम्) जो कहीं बहुत अर्थों से युक्त (अश्रितम्) और

नहीं सेवन कियागया (आवीतम्) व्याप्त (तम्) उस (चित्रम्) अद्भुत गुण कर्म स्वभाव वाली बिजली नामक अग्नि को जान के कार्यों को सिद्ध करो ॥ ६ ॥

भावार्थः—जो मनुष्य सर्व पदार्थों में अलगही अलग वर्त्तमान अग्नि को तत्त्व से जानते हैं वे सब काम साध सकते हैं ॥ ६ ॥

भारत का साररूप इतिहास समुच्चय पौराणिक दुनियांमें प्रसिद्ध है। इस में अ० ३७ में नहुष = सर्प युधिष्ठिर संवाद में लिखा है कि-नहुष उवाच ॥

जात्या कुलेन निर्वृत्तः स्वाध्यायेन श्रुतेन वा ।
वृत्तेन वा ब्राह्मणःस्यात्तन्मे वद नृपोत्तम ॥ १ ॥
युधि०-न जात्या न कुलेनापि न स्वाध्यायैःश्रुतेन वा ।
ब्राह्मणत्वं लभेन्मर्त्यो वृत्तमेव हि कारणम् ॥ २ ॥
अनेके मुनयस्तात तिर्यग्योनिषु संभवाः ।
स्वधर्माचारनिरताः ब्रह्मलोकमितोगताः ॥ ॥ ३ ॥
बहुना किमधीतेन नटस्येव दुरात्मनः ।
तेनाधीतं श्रुतं तेन योवृत्तमनुतिष्ठति ॥ ४ ॥
कपालस्थं यथा तोयं श्वहास्थं च यथा पयः ।
दुष्टं स्यात्स्थानदोषेण व्रतहीने तथा श्रुतम् ॥ ५ ॥
वृत्तं यत्नेन संरक्ष्यं वृत्तमेव महानिधिः ।
अक्षीणो वृत्ततोऽक्षीणो दुर्वृत्तस्तु हतो हतः ॥ ६ ॥
किं कुलेनोपदिष्टेन विपुलेन दुरात्मनः ।
कृमयः किं न जायन्ते कुसुमेषु सुगन्धिषु ॥ ७ ॥

पठकः पाठकश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः ।
सर्वे व्यसनिनो राजन् यः क्रियावान् स पण्डितः ॥८॥
तस्माद्विद्धि महाराज ! वृत्तं ब्राह्मणलक्षणम् ।
चतुर्वेदोपि दुर्वृत्तः शूद्रात्परतरस्तु सः ॥ ९ ॥
योऽग्निहोत्रपरो दान्तः सन्तोषनिरतः शुचिः ।
तपः स्वाध्यायशीलश्च तं देवा ब्राह्मणंविदुः ॥ १० ॥
येन केनचिदाच्छन्नं येन केन चिदाश्रितम् ।
येन केन शयानं च तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥ ११ ॥
सर्वं द्वन्द्वसहो वीरः सर्वसङ्गविवर्जितः ।
सर्वं भूतहितो मित्रस्तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥ १२ ॥
सत्त्वं दमस्तपो दानमहिंसेन्द्रियनिग्रहः ।
दृश्यते यत्र राजेन्द्र ! सब्राह्मण इति स्मृतः ॥ १३ ॥
शूद्रे चैव भवेद्वृत्तं ब्राह्मणे न च विद्यते ।
शूद्रोपि ब्राह्मणो ज्ञेयो शूद्रो ब्राह्मण एव च ॥ १४ ॥
काम क्रोधानृत द्रोहलोभ मोह मदादयः ।
न सन्ति यस्मिन्राजेन्द्र ! तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥१५॥
अदेवं दैवतं कुर्याद् दैवतं चाप्यदैवतम् ।
शूद्रोपि विप्रो मन्तव्यो शूद्रविप्राविति क्रमौ ॥ १६ ॥
नजातिः कारणं तात ! गुणाः कल्याणहेतवः ।
सद्वृत्तस्थोहि चांडालः सोपि सद्गुणमाप्नुयात् १७ ॥
कैवर्त्तजन पद्मासमृष्यश्रृङ्गं मृगी यथा ।
क्षितिश्चैव दधीचिश्च सिद्धास्ते किं न वृत्ततः ॥ १८ ॥

क्षत्रियाणां कुले जातो विश्वामित्रो महामुनिः।
तस्माद्वृत्त विहीनो यो रक्षोभिः परिपद्यते ॥ १९ ॥
मा विषीद महाव्याघ्र! राक्षसेषु पवित्रता।
शिल्प मध्ययनं नाम वृत्तं ब्राह्मण लक्षणम् ॥ २० ॥
अग्निहोत्राश्च वेदाश्च राक्षसानां गृहे गृहे।
दया सत्यञ्च शौचं च राक्षसेभ्यो निवर्त्तत ॥ २१ ॥

भावार्थ।

नहुष कहता है कि हे नृपोत्तम (राजा युधिष्ठिर!) जाति से, या कुल से या स्वाध्याय से, या बहुश्रुत होने से ब्राह्मण होता है या वृत्त (गुण कर्म स्वभाव) से ब्राह्मण होता है? यह मेरे प्रति कहिये ॥१॥ युधिष्ठिर बोले कि न जातिसे न कुलसे न वेद पढ़ने से न बहुश्रुत होने से मनुष्य ब्राह्मण होता है, केवल (वृत्त) गुण कर्म स्वभाव ही ब्राह्मणत्व का कारण है ॥ २ ॥ हे तात! अनेक मुनि जन तिर्यक् योनियों से उत्पन्न हुये अपने धर्म और आचार के कारण यहां से ब्रह्मलोक को चले गये ॥ ३ ॥ नट जैसे दुरात्माको बहुत पढ़नेसे क्या होताहै। वही पढ़ाहै, उसी ने श्रवण किया है जो शुभ गुण कर्म स्वभाव में स्थित है ॥ ४ ॥ जैसे खोपड़ी में भरा जल और मशक में भरा दूध स्थान दोष से अशुद्ध हो जाता है ऐसे ही वृत्तहीन का पढ़ना सुनना है ॥५॥ वृत्तकी यत्न से रक्षा करे, वृत्त ही महा निधिबड़ी दौलत है। जो वृत्त से क्षीण नहीं वही अक्षीण है, दुर्वृत्त तो मरा है मराहै ॥ ६ ॥ दुरात्मा के बड़े कुल से क्या है। पढ़ने पर उपदेश से क्या सुगन्धियुक्त फूलों में कीड़े पैदा नहीं होते ॥ ७ ॥ पढ़ने पढ़ाने वाले और जो शास्त्र बिचारने वाले हैं हे राजन्! सब व्यसनी हो सकते हैं। जो क्रियावान्

है सो ही पण्डित है ॥ ८ ॥ इसलिये हे महाराज ! वृत्त को ही ब्राह्मण का लक्षण जानों। चारों वेदों से संयुक्त भी दुर्वृत्त, शूद्र से भी नीच है ॥ ९ ॥ जो अग्निहोत्री दयावान् सन्तोषरत तपस्वी स्वाध्याययुक्त शूद्र है उस को देवता ब्राह्मण जानते हैं ॥ १० ॥ जिस के जैसे तैसे वस्त्र जैसा तैसा स्थान जैसे तैसे सोरहना (अर्थात् कुछ आडम्बरादि की इच्छा न हो) उस को देवता ब्राह्मण जानते हैं ॥ ११ ॥ सब कष्टों का सहन करै, सब सङ्गों से पृथक् रहै सब भूतमात्र का हितैषी मित्र हो उसे देवगण ब्राह्मण कहतेहैं ॥ १२ सत्त्व, दम, तप, दान, अहिंसा इन्द्रियनिग्रह जिस में दीखें वह ब्राह्मण कहाता है ॥ १३ ॥ शूद्र में वृत्त हो और ब्राह्मण में वृत्त न हो तो शूद्र भी ब्राह्मण है और ब्राह्मण शूद्र है ॥ १४ ॥ हे राजेन्द्र ! जिस में काम, क्रोध, झूंठ, द्रोह, लोभ मोह, मदादि न हों उसको देवता ब्राह्मण कहते हैं ॥ १५ ॥ अदेव को, देव और देव को अदेव (वृत्त) कर देता है। शूद्र को ब्राह्मण,ब्राह्मण को शूद्र भी (वृत्त) कर देता है। हे तात ! जन्ममात्र ब्राह्मणत्व का कारण नहीं, किन्तु गुण कल्याण के कारण हैं ॥ १७ ॥ सद्वृत्त चाण्डाल भी सद्गुणों को प्राप्त हो जाता है। ऋष्य शृङ्गकी मृगी माता धीवर जनपदी थी और दधीचि की माता क्षिति नाम की थी वह सिद्ध थे। क्या वृत्त ही कारण न था ? ॥ १८ ॥ क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुये विश्वामित्र महामुनि थे । इसलिये वृत्तविहीन राक्षसीभाव को प्राप्त होते हैं ॥ १९ ॥ हे राजन् ! घबराओ मत ! (अर्थात् कुछ आश्चर्य नहीं है) राक्षसों में भी पवित्रता होती है शिल्प का अध्ययन करना अर्थात् शिल्प नामक कार्य्य को करने पर उसमें योग्यता प्राप्त करना वृत्त ब्राह्मण का लक्षणहै ॥२०॥ अग्निहोत्र और वेद राक्षसोंके घर२में होता है परन्तु दया, सत्य और शुद्धि राक्षसों से पृथक्रहतेहैं ॥

यह इतिहास समुच्चय भी नवीन ग्रन्थ नहीं है ४०० वर्ष तक से इसका पता चलता है। कई एक पुराणों के टीकाकारों ने भी इसका प्रमाण दिया है। श्रीमद्भागवत के टीकाकार श्रीधरस्वामी ने भी प्रमाण दिये हैं। निर्णयसिन्धु में भी प्रमाण पाया जाता है।

पुराण प्रमाणम् ॥

सूत उवाच ॥

(१) भृगुरत्रिर्वसिष्ठश्चविश्वकर्मामयस्तथा ॥
नारदो नग्निजिच्चैव विशालाक्षः पुरंदरः ॥ १ ॥
ब्रह्मा कुमारोनंदीशः शौनको गर्गएवच ॥
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथाशुक्रबृहस्पती ॥
अष्टादशैते विख्याता शिल्प शास्त्रोपदेशकाः २॥

मत्स्य पुराण अध्याय २५२

यदेव शिल्पानि एतेषां वै शिल्पनामनुकृतिर्हिशिल्प मधिगम्यतेहस्तीकंसोवासो हिरण्य मश्वतरी रथशिल्पं३ शिल्पं ह्यस्यमधिगम्यते। यएवंवेद। यदेवशिल्पानि। आत्मसंस्कृतिर्वैशिल्पान्यात्मानमेवास्यतत्शिक्षुर्वंति ॥

अथर्वण वेदीय श्रुति गोपथ ब्राह्मण उत्तर भाग प्रपाठक ६ वा शिल्पानि शंसन्ति ॥ ४ ॥

शिल्पिनां देवकर्तृत्वं वंश्यानां विश्वकर्मणः।
अहं विश्वस्य कर्ताच कर्तारोमम शिल्पिनः ॥५॥
शिल्पिकर्माणि लिंगानि लिंगगर्भाश्च शिल्पिनः
शिल्पिरूपं तु मद्रूपं न भेदः शृणुपार्वति ॥ ६ ॥

स्कंद पुराणे प्रतिष्ठा खंडे

वेदभू रथ कर्ताच विष्णुर्नारायणः प्रभुः ॥ ७ ॥
उमापति र्विरूपाक्षःस्कन्दः सेनापतिस्तथा ॥
विशाखो हुतभुग्वायुश्चंद्र सूर्यौ प्रभाकरौ ॥ ८ ॥
शक्रः शचीपतिर्देवो यमो धूमोर्णयासह ॥
वरुणः सह गौर्याच सह रुध्या धनेश्वरः ॥
सौम्यागौः सुरभिर्देवी विश्रवा च महानृषिः ॥ ९ ॥
संकल्पः सागरो गंगा स्रवंत्योऽथ मरुद्गणः।
आदित्या वसवो रुद्राः साश्विनाः पितरोऽपिच ॥
धर्माः श्रुतं तपो दीक्षा व्यवसायः पितामहः ॥ १० ॥
सर्वेयदिवसा श्चैव मारीचःकस्यपस्तथा ॥
शुक्रोवृहस्पतिर्भौमो बुधोराहुःशनैश्चरः ॥ ५ ॥
नक्षत्राण्यृतवश्चैवमासाः पक्षाश्चवत्सराः।
वैनतेयाः समुद्राश्चकद्रुजाः पन्नगास्तथा ॥ ६ ॥

भारत अनुशासनपर्व अध्याय १६५

इष्वस्त्रवरसंपन्न मर्थशास्त्रविशारदम्।
सुधन्वानमुपाध्यायं कच्चित्त्वंजातमन्यसे ॥

वाल्मीकीय रामायण सर्ग १०० श्लोका १४

प्रजापतिर्वैपितृकृसून्मर्त्यान्सतोमर्त्यान्कृत्वा तृतीयसवनमाभजत् ॥

श्रुति ऐतरेय ब्राह्मण पं० ६ अध्याय ४

ब्रह्मयज्ञसमारंभे ब्रह्मगायत्री विवाहकथायां विश्वकर्मा समागत्यततोमस्तक मंडनं ॥ चकार ब्राह्मणश्रेष्ठो नागराणांमतेस्थितः॥ २२ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्र केशानि

र्पणोविधेः विश्वकर्मासमस्तानांच गायत्र्यास्तदनंतरं २३ ॥

नागरखंडे अध्याय १८०
श्लोक २२ । २३

इंद्रोहरीयुयुजेअश्विनारथंबृहस्पतिर्विश्वरूपामुपाजत॥ ऋभुर्विभ्वावाजोदेवाअगच्छतस्वपसोयज्ञियंभागमैतन ६

भाष्यं--इंद्रोहरी युयुजे । ऋभुभिर्निर्मितौहरिद्वर्णौ वश्वौ स्वरथेयोजयति ॥ अश्विन ॥ अश्विनौयुयुजाते । ऋभुभिः कृतंरथंयोजयतः । बृहस्पतिः विश्वरूपामेत न्नामिकामृभुभिः कृतांगामुपाजतस्वीकरोति । अतः । ऋभुर्विभ्वावाजइति ऋभवोदेवानागच्छन्देवत्वंप्राप सु-कर्माणोऽश्व रथगवादिपरमाद्भुतकर्मणांकर्तारोयूयंयज्ञीयंभागमैतनय ज्ञेनप्रार्पितस्यहविषो भागंप्राप्तवंतःस्थ ॥

भारत अनुशासन पर्व अ० ८३ अष्टौचांगिरसः पुत्रा आग्नेयास्तेऽप्युदाहृताः ॥ बृहस्पतिरुतथ्यश्च पयस्यः शांतिरेवच ॥ घोरोविरूपः संवर्तःसुधन्वाचाष्टमःस्मृतः

वायुपुराण अध्याय ४-शृणुतांगिरसोवंशमग्नेः पुत्र स्यधीमतः । यस्यान्ववाये संभूताः भारद्वाजाः सगौ तमाः ॥ ९६ ॥

देवाश्चांगिरसोमुख्याइषुमंतोमहौजसः ॥ सुरूपाचैव मारीची कार्दमी च तथास्वराट् ॥ ९७ ॥ पथ्याचमानवी कन्यातिस्रोभार्यास्त्वथर्वणः ॥ इत्येतांगिरसः पत्न्यस्ता सुवक्ष्यामि संततिम् ॥ ९८ ॥ अथर्वणस्य दायादास्तासु जाताःकुलोद्वहाः ॥ उत्पन्नामहताचैवतपसाभावितात्म

नाम् ॥ ९९ ॥ बृहस्पतिः सुरूपायां गौतमः सुषुवेस्वराट् अवंध्यंवामिदंवचऔतथ्य सुशिजंतथा॥ १०० ॥ धिष्णुः पुत्रस्तु पथ्यायां संवर्तश्चैव मानसः ॥ विचितश्चतथा यास्यः शरद्वांश्चाप्युतथ्यजः ॥ १०१ ॥ औशिजोदीर्घत माबृहद्वायोवामदेवजः ॥ धिष्णुः पुत्रः सुधन्वासऋभव श्चसुधन्वनः ॥ १०२ ॥ रथकाराः स्मृतादेवा ऋषयोये परिश्रुताः ॥ बृहस्पतेर्भरद्वाजो विश्रुतःसुमहायशाः॥१०३॥ अंगिरसस्तुसंवर्तोदेवानांगिरसः शृणु ॥ बृहस्पतेर्यवीयां सो देवाह्यंगिरसः स्मृताः ॥ १०४ ॥

लोहशिल्पअतिविचित्र ॥ लोहकर्मामन्वीश्वर ॥ त्याशि येसंततीमाजीसमग्र ॥ शस्त्रादिप्रकारनिर्मितील ॥ ७१ ॥ दारूक्षणजेकाष्ठनामदारव ॥ कृष्णोपकरणादिअपूर्व ॥ निर्मीलसर्वमयाचार्य ॥ ७२ ॥ एवंतुझीनिजसंतती पंचाल नाम्नीशिल्पाधिपती ॥ शिल्पविद्यानिपुणक्षिती ॥ तुझी-च प्रतीहोईपूर्ण ॥ ७३ ॥

अग्निपुराण अध्याय ३८ मूर्तिकर्मफलम् ॥ शिवब्र ह्मार्कविघ्नेशचंडीलक्ष्म्यादिकात्मनाम् ॥ देवालयकृतेः पुण्यंप्रतिमाकरणेऽधिकम् ॥ ३१ ॥ प्रतिमास्थापनेयागेफ लस्यांतोनविद्यते ॥ मृन्मयाद्दारुजेपुण्यं दारुजादिष्टकाभ वे ॥३२॥ इष्टकोत्थाच्छैलजेस्याद्धेमादेरधिकंफलम्॥ सप्त जन्मकृतंपापंप्रारंभादेवनश्यति ॥ ३३ ॥

पद्म पु. सृ. अध्या. २८ महादेवउवाच--विश्वकर्मन्न

मस्तेऽस्तुविश्वचित्रविभावन ॥ ७३ ॥ विभावयममाभीष्टं गृहालंकरणादिकम् ॥ त्वत्कृतांभोगसामग्री मुपादाय महामते ॥ ७४ ॥ भोक्ष्यामिविविधान्भोगा निहामुत्रच-योजितः ॥ एवमुक्त्वामहादेवो विश्वकर्माणमद्भुतम् ॥ ७५ ॥ अष्टाक्षरणमंत्रेणपूजयामासमादरम् ॥ सांगंसाव-रणं-देवंशिल्पानामीश्वरंप्रभुं ॥ ७६ ॥ ततःस्वेष्टंगृहारामा लंकाराद्याप्तवान्सुखम् ॥ पंचभिस्तनयैःसार्धंविश्वकर्मात-दाशिवम् ॥ ७७ ॥ तोषयामासशिल्पैःस्वैस्ततस्तुष्टोमहे-श्वरः ॥ कार्यांतिपूजयामासततस्तान्शिल्पिसत्तमान् ॥ ७८ ॥ वासोभिरन्नपानैश्चधनैर्नानाविधैरपि ॥ वरांश्च-तेभ्यःप्रत्येकंददौदुःखहरोहरः ॥ ७९ ॥ अक्षयंसंततिर्वो ऽस्तुयशःस्फीतंतथाऽस्तुवः ॥ युष्मांश्चस्मरतःसन्तुसंपद-श्चपदेपदे ॥ ८० ॥ इत्युक्त्वातन्महादेवो विसर्ज्यचयथा क्रमम् ॥ प्रासादेरमयामासपुत्रकामासुमांसतीम् ॥ ८१ ॥

तस्माच्छिल्पि वरान्नित्यं पूजयंतिर्विचक्षणाः ॥ तेहि कांक्षंति कल्याणं गृहिणां जीवनार्थिनः ॥ ३ ॥ पद्मपुराणे सृ० अ० २१ ॥

स्कंद पुराणे प्रभासखंडे सोमनाथ माहात्म्ये सोमपुत्र संवादे शिल्पिनामुत्पत्तिप्रकरणे ॥ ईश्वर उवाच शिल्प्यु त्पत्तिं प्रवक्ष्यामि शृणुषण्मुखयत्नतः ॥ विश्वकर्मामहद्भू तं शिल्पिनां शिवकर्मणाम् ॥ १६ ॥

मदंगेषुचसंभूताः पुत्राः पंचजटाधराः ॥

हस्तकौशलसंपूर्णाः पंचब्रह्मरताः सदा ॥ १७ ॥
पाणिस्थापक संजातामम तुल्याश्चशिल्पिनः ॥
संध्यात्रयंप्रकुर्वंति स्नानदानादितर्पणम् । १८ ॥
वैश्वदेवं बलिर्दानंषट्कर्माणीतिशिल्पिनां ॥
शिवार्चनरतानित्यंजपहोमादिकर्मसु ॥ १९ ॥
एवंविधाक्रियाख्याता शिल्पिनां चैव शंकर ॥
विश्वकर्मपराणांच ब्रह्मविष्णुशिवात्मनाम् ॥ २० ॥
तत्रसूत्रंसमाख्यातं विश्वसूत्रंस्वयंभुवा ॥
प्रासादभुवनादीनिलिंगस्थापनमेवच ॥ २१ ॥
प्रतिष्ठापंचधाकार्याशिल्पिनाशिवकर्मणा ॥
ब्रह्मस्थाने भवेद्ब्रह्माललाटेचाग्निमादिशेत् ॥ २२ ॥
चंद्रादित्यौनयनयो र्नासायामश्विनौतथा ॥
मुखेब्रह्मासपुत्रश्चकंठेदेवो जनार्दनः ॥ २३ ॥
हृदयेचेश्वरोदेवोनाभौगंधर्वदेवता ॥
गुह्येकामेश्वरोदेवः पादयोर्वायुदेवता ॥ २४ ॥
पादाधोवरुणोरक्षेदंगुलीषुच मातृकाः ॥
भुजयोः कृष्णगोपालावग्रतः शेषतक्षकौ ॥ २५ ॥
मणिबंधेमहामायाचांगुली र्च्चीश्वरीकृतिः ॥
एवं विधः समाख्यातः शिल्पिनोऽगेषुषण्मुख ॥ २६ ॥
इतिस्कंपु० प्र० खंडेसोमनाथमाहात्म्ये प्रथमोऽध्यायः१॥
रुद्राक्षमाल्यांबरधरोगिरिकोगिरिकाप्रियः ॥
शिल्पीशः"शिल्पिनांश्रेष्ठःसर्वशिल्पप्रवर्तकः ॥२५२ ॥

वायुपुराण अ० ३० दक्षकृतशिवस्तुतौ"

कलौदेव सचेतन ॥ वर्णतूयासी ब्राह्मण ॥ ब्राह्मण पूज्य शिलास्वर्ण। प्रमुख निर्माण सुरप्रतिमा ॥ ९ ॥ शिला स्वर्णादि निर्मित ॥ देवमूर्तीसमस्त ॥ मातृपितृसुभक्तवत मुख्यदेवत शिल्पी पूज्य ॥ १० ॥ शिलास्वर्णादिप्रतिमा॥ प्रतिष्ठा काली शिल्पिसत्तमा। तदर्थपूजावैपूजकोत्तमा॥ तेणें प्रतिमा सुप्रसन्न ॥ ११ ॥ शिल्पी विश्वकर्मण: प्रतिमा युगत्वधर्म्मानुरूपंतत्कर्म ॥ १२ ॥

सप्तदश प्रजापति:। प्रजापतेराप्त्यै। अर्वासिसप्तिरसि। वाज्यसीत्याह। अग्निर्वाअर्वा। वायु: सप्ति:। आदित्योवाजी। एताभिरेवास्मैदेवताभिर्देवरथंयुनक्ति प्रष्ठिवाहिनंयुनक्ति। प्रष्ठिवाहीवैदेवरथ:। देवरथमेवास्मै युनक्ति ॥ तै० ब्रा०

शिल्पाचार्य देवाय नमस्ते विश्वकर्मणे ॥ इतिब्रह्मपुराणेवत्सरारंभविधौ ॥

भूमिकालिप्तानेन मयस्याष्टोतरंशतम् ॥ सार्धंहस्तत्रयंचैवकथितंविश्वकर्मणा॥ प्राहु:स्थपतयश्चात्रमतमेकंविपश्चिता: ॥ कपोत पालिसंयुक्ता न्यूनागच्छन्ति तुल्यताम् ३८।

हिरण्यकेशिसूत्र-निषादरथकारयो राधानादग्निहोत्रंदर्शपूर्णमासौचानियम्येते। वैजयंतीव्याख्या। यांवर्षासुरथकारोऽग्नी नादधीतेतितथाऋभूणांत्वादेवानांव्रतपते

व्रतेनादधामीति रथकारस्येतिच दर्शनादाधानंरथकार जातेः आधानोत्पन्नाग्नीनापरार्थत्वा दग्निहोत्रदर्शपूर्ण मासौनियमस्तथा चैतया निषादस्थपतिंयाजये दिति ॥ निषादश्चासौस्थपतिश्चेतिकर्मधारयाभिप्रायेण निषाद इत्युक्तंतेन आपस्तम्बसूत्रे निषादानांस्थपतिस्त्रैवर्णिकं एवेतितन्निराकृतेमतन्न्यायशास्त्रसिद्धं । तस्येष्टिविधा नादाधानमाचार्योमन्यते । एकस्याधानमात्रं । नियतं परस्यविकृतेष्ट्युपक्षिप्तमाधानं । द्वयोरप्यग्निहोत्रंदर्शपूर्ण मासौचनियम्यते न्यायमतेन निषादस्याधानंतस्यलौकि काग्निषु ॥ विकृत्तेष्टिमात्रमवकीर्णिनोब्रह्मचारिणइवगर्द भस्याति ॥

अष्टाध्यायी पाणिनिसूत्रपाठे ॥ सूत्रे ॥ शिल्पिनि चाकृञः । ६ । २७ । ६ संज्ञायांच । ६ । २ । ७७ ॥ सिद्धा न्तकौमुद्यांवृत्तौशिल्पिवाचिनिसमासे अण्णांतेपरे पूर्व मा दात्तं सचेदणकृञः परो न भवति । तंतुवायः । शिल्पि निकिं । कांडलावः । अकृञः किं । कुंभकारः ॥ संज्ञायांच अण्णंतेपरे । तंतुवायोनामकृमिः अकृञः इत्येव ॥ रथकारो नामब्राह्मणः ॥ सि० ३८११ ॥

प्रमाण २ रे कुर्वादिभ्योण्यः । पाणिनिसूत्रं ४ । १ । १५१ । ब्राह्मण जातिबोधक आर्षेयगोपत्याधिकारे गणसूत्रं कुरु । गर्ग । मंगुष । अजमार । रथकार । वावदूक । क- वि । मति । कापिंजल । इत्यादिषु ब्राह्मणजात्यर्थंको-

ष्यप्रत्ययः॥ कौरव्याः ब्राह्मणाः। गार्ग्याः। मांजुष्याः। आजमार्याः। राथकार्याः। वावदूक्याः। क्राव्याः। मात्याः कार्पिजल्याः। ब्राह्मणाः। इति सर्वत्र॥

अन्यत्र क्षत्रियेषु अण् प्रत्ययः॥ पद्म संहितायां क्रियापादे प्रतिष्ठाविधौ-प्रासादं प्रविशेच्छिल्पीरथकारो द्विजोत्तमः॥ इति॥

श्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणि दानधर्मे भीष्म युधिष्ठर संवादे, योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादिकर्मच॥ वेदाःशास्त्राणिविज्ञानं एतत्सर्वं जनार्दनात्॥

नैरुक्तेदेवता कांडे पृ० '३१९' अंगिरसोनः पितरोन नवग्वा अथर्वाणोभृगवःसोम्यासः ऋ० ७।६।१९ इति॥ विश्वमेदिन्यौ कोशौ- नचतुःश्लोकस्तुधन्वाविश्वकर्माणि

श्रुतिऐतरेय ब्राह्मण पंचिका ६ खंड २७ अ० ५ शिल्पानि शंसंतिदेवशिल्पान्येतेषां वैशिल्पानामनुकृतीह शिल्पमधिगम्यते। हस्ती कंसोवासो हिरण्यमश्वतरी रथः शिल्पं हास्मिन्नधिगम्यते। यएवंवेद यदेव शिल्पानि॥ ३॥

सायणभाष्ये---आश्चर्यकरं कर्मब्रते। तच्चाशिल्पं द्विविधं देवशिल्पं मानुषशिल्पंचेति। नाभानेदिष्ठादीनि शिल्पानि देवानां प्रीतिहेतुत्वादेवशिल्पानीत्युच्यन्ते। एतेषामेवदेव शिल्पानामनुकृतिः सदृशरूपं इहमनुष्यलोके शिल्पमधिगम्यते प्रतीयते हस्तीत्यादिनातदेवोदाहृयते।

लोके शिल्पिनः कर्मकरामृद्दार्वादिभिःहस्तिसदृशमाकारं निर्मिमीते । तथान्येःशिल्पिभिः कंसोदर्पणादिनिर्मीयते। अपरैरन्यैः सुवर्णमयकटकमुकुटादि निर्मिमीते।

अपरैश्चाश्वतरीरथोनिर्मिमीते । गर्दभ्यामश्वादुत्प न्नाश्वतरी जातिः तद्युक्तोरथोऽश्वतरीरथः तदेतत्सर्वम स्माभिरधिगम्यमानमानुष शिल्पमेतदृष्ट्वानाभानेदि ष्ठादिशिल्प माश्चर्यकरमिति निश्चेतव्यं । वेदनं प्रशंस ति शिल्पं हास्मिन्नधिगम्यतेयएवंवेदेति ।

अस्मिन्वेदितरिशिल्पं कौशलं नानाविधं प्राप्यते सानुनासिक प्लुतेन शिल्पानां पूज्यत्वं दर्शयति । यदे- व शिल्पानँ ३ इति । यस्मान्नाभानेदिष्ठादीनि शिल्प- शब्दवाच्यानि तस्मात्सुवर्णाभरणादिवर्ज्यानित्यर्थः ॥ वाल्मीकि रामायणे बालकांडेसर्ग १४—इष्टकाश्चय था न्यायंकारिताश्चप्रमाणतः ॥ चितोग्नि र्ब्राह्मणैस्तत्र कुशलैः शिल्प कर्मणि ॥ २८ ॥ सचितोराजसिंहस्यसं चितः कुशलै र्द्विजैः ॥ गरुडो रुक्मपक्षोवै त्रिगुणाष्टाद शात्मकः ॥ २९ ॥

॥ इति ॥

——:*:——

श्रीगणेशायनमः।

✽ अथ ✽

॥ विश्वकर्म्म शिल्पसागर ॥

✽ दुर्गादास कृत ✽

✽ पञ्चम काण्ड ✽

॥ विश्वकर्म रचना प्रकाश ॥

विश्वकर्म्म रचना।
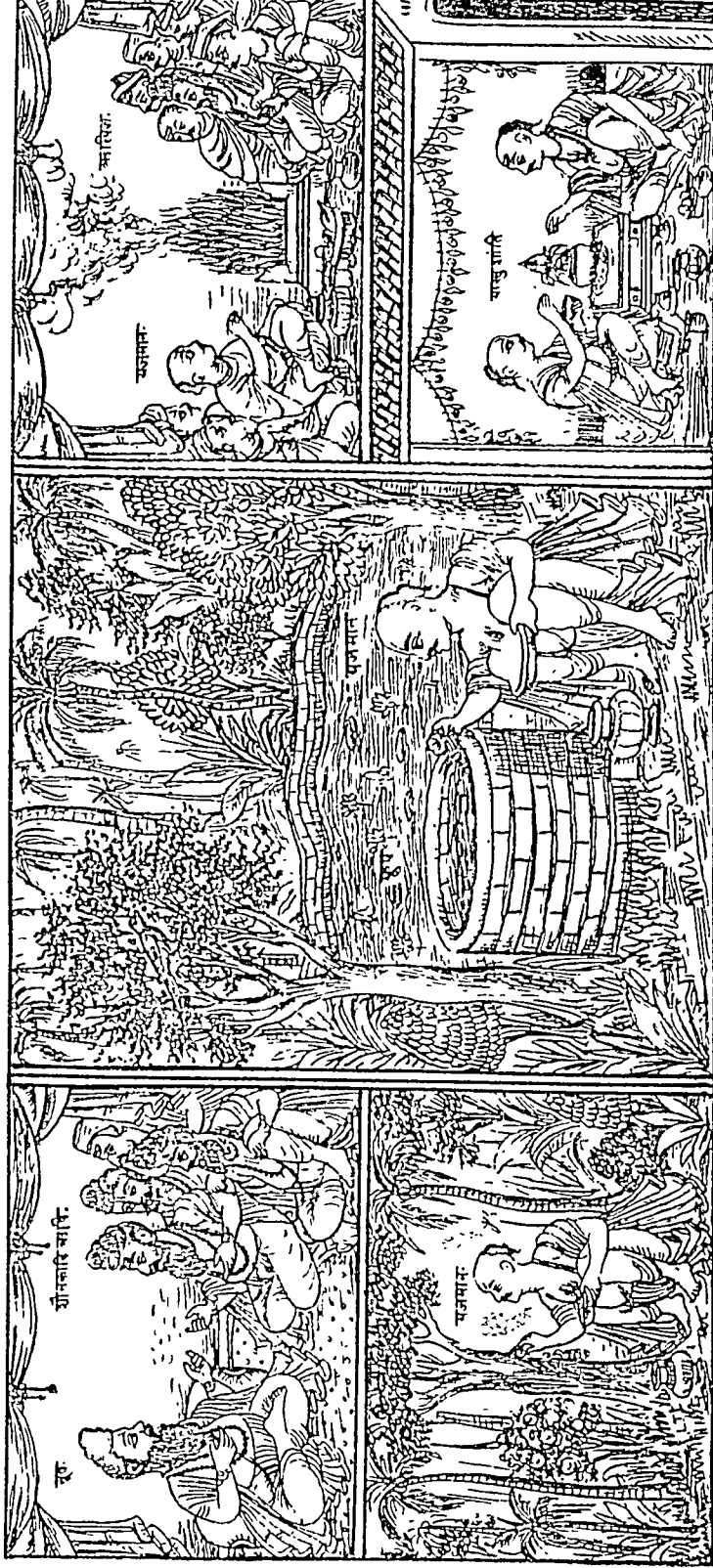
श्रीरघुनाथहि नाइ शिर, कहौं कथा विस्तार ।
सतुरची नलनील ज्यों, शतयोजन विस्तार ॥

जब रावण लङ्का से जाई ❋ जनक सुता को हरेउ ढिठाई ॥
आश्रम शून्य देखि रघुनाथा ❋ खोजनचलेउ अनुज लघुसाथा ॥
खोजत विपिन मिलेउ सुग्रीवाँ ❋ महाबीर अतुलित बल सीवाँ ॥
कहेउ नाथ अब करहु निवाहू ❋ आनौ खबरि शीघ्र मै तासू ॥
अस कहि पवन तनय बहुकीशा ❋ लै सँग गयेउ नगर दशशीशा ॥
मिलि जानकिहि शत्रु पुर जारी ❋ अक्षयकुमार आदि भट मारी ॥
रामहि तुरत जनायेउ आई ❋ लै बहु सैन्य चले हर्षाई ॥
पहुँचे जाय बारिनिधि तीरा ❋ तीनि दिवस तहँ रहे रघुबीरा ॥

विनयनमानतजलधिजड़, गये तीनिदिनबीति ।
बोले राम सकोप तब, बिनु भय होय न प्रीति ॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू ❋ शोषै बारिधि विशिख कृशानू ॥
शठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ❋ सहज कृपण सन सुन्दर नीती ॥
ममतारत सन ज्ञान कहानी ❋ अतिलोभी सन विरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा ❋ ऊसर बीज बये फल यथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ❋ यह मत लक्ष्मण के मन भावा ॥
सन्धानेउ प्रभु विशिख कराला ❋ उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला
मकर उरग झष गण अकुलाने ❋ जरत जन्तु जलनिधि जब जाने
कनक थार भरि मणि गण नाना ❋ बिप्र रूप आये तजि माना ॥

काटे पै कदली फलै, कोटि यतन करि सींच ।
बिनय न मानमतङ्ग ज्यों, डाटेहि पै नवनीच ॥

समय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे ❋ क्षमहु नाथ सब औगुण मेरे ॥

गगन समीर अनल जल धरणी ❀ इनकी नाथ सहज जड़करणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये ❀ सृष्टि हेतु सब ग्रंथन गाये ॥
प्रभु आयसु जेहिकहँ जस अहही ❀ सो तेहि भांति रहै सुख लहही ॥
प्रभु भल कीन मोहिं सिख दीन्हीं ❀ मर्यादा सब तुम्हरी कीन्हीं ॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ❀ ये सब ताड़न के अधिकारी ॥
प्रभ प्रताप मैं जाब सुखाई ❀ उतरै कटक न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई ❀ करहु बेगि जो तुम्हैं सुहाई ॥

सुनत बिनीत बचन अति, कह कृपालु मुसुकाइ ।
जेहिबिधि उतरै कपिकटक, तातसोकरहु उपाइ ॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ❀ लरिकाईं ऋषि आयसु पाई ॥
विशकर्म्मा के सुत गुण खानी ❀ इन परसे पै शिल उतरानी ॥
तिनके परस किये गिरि भारे ❀ तरिहैं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उरधरि प्रभु प्रभुताई ❀ करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
यहि विधि नाथ पयोधि बँधावहु ❀ नल अरु नील केर यश छावहु ॥
सुनि कृपालु सागर मन पीरा ❀ तुरतहि हरी राम रण धीरा ॥
देखि राम बल अतुलित भारी ❀ हर्षि पयोनिधि भयो सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ❀ चरण बन्दि पाथोधि सिधावा ॥

सिंधु बचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभुअसकहेउ ।
अब बिलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥
सुनहु भानु कुल केतु, जामवन्त करजोरि कह ।
नाथ नाम तब सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥

यह लघु जलधि तरत कतबारा ❀ अससुनि पुनिकह पवनकुमारा ॥
प्रभ प्रताप बड़वानल भारी ❀ शोखेउ प्रथम पयोनिधि बारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा ❀ भरी बहोरि भयो तेहि खारा ॥

सुनि असयुक्ति पवनसुत केरी ❀ बिहँसे रघुपति कपितन हेरी ॥
जामवन्त बोले दोउ भाई ❀ नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥
राम प्रताप सुमिरि उर माहीं ❀ करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपि निकर बहोरी ❀ सकल सुनहु यक बिनतीमोरी॥
रामचरण पङ्कज उर धरहू ❀ कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मरकट बिकट बरूथा ❀ आनहु बिटप गिरिनके यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करिहूहा ❀ जै रघुबीर प्रताप समूहा ॥

अति उतंग तरु शैल गण, लीलहिं लेहिं उठाय ।
आनि देहि नल नीलकहँ, बिरचहिं सेतु बनाय ॥

शैल बिशाल आनि कपि देहीं ❀ कन्दुक इव नल नील सो लेहीं ॥
देखि सेतु अति सुन्दर रचना ❀ बिहँसि कृपानिधि बोलेबचना ।
परमरम्य सुन्दर यह धरणी ❀ महिमा अमित जाइनहिं बरणी॥
करिहौ यहां शम्भु थापना ❀ मोरे हृदय परम कल्पना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये ❀ मुनिवर निकट बोलिलै आये ॥
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा ❀ शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा ॥
शिवद्रोही ममदास कहावै ❀ सो नर सपनेहु मोहिं न भावै ॥
शङ्कर बिमुख भक्ति चह मोरी ❀ सो नर मूढ़ मन्दमति थोरी ॥

शङ्कर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास ।
तेनर करिहँ कल्प भरि, घोरनर्क महँ बास ॥

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं ❀ सो तनतजि ममधाम सिधरिहैं॥
जो गंगाजल आनि चढैहैं ❀ सो शिवपूजि मुक्ति नर पैहैं ॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि ❀ भक्ति मोरि तेहि शंकर देइहि ॥
नल कृत सेतु जो दर्शन करिहैं ❀ सो बिनु श्रम भवसागर तरिहै ॥
राम बचन सबके मन भाये ❀ मुनिवर निजनिज आश्रमआये॥

बांधेउ सेतु नील नल आगर ❁ राम कृपायश भयउ उजागर ॥
बूड़हिं आनहिं बोरहि जेई ❁ भये उपल बोहित समतेई ॥
महिमा यह न जलधि की बरणी ❁ पाहन गुणन कपिनकी करणी ॥

श्री रघुबीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाषान ।
तेमतिमन्द जे राम तजि, भजहिं आनप्रभुजान ॥

बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ❁ देखि कृपानिधि के मन भावा ॥
निज मुख प्रभु तब कीन प्रशंसा ❁ धन्य तुम विशकर्मा के अंसा ॥
शिल्प क्रिया करि बांधेउ सेतू ❁ क्षणमहँ केवल मोरे हेतू ॥
तुमसन उऋण न हौं मैं आजू ❁ कीन्हेउ सब प्रकार ममकाजू ॥
पौरुष तोर सकल जगजाना ❁ जेहि प्रकार तुम राखेउमाना ॥
बीर धुरीण सकल गुण शीला ❁ कज्जल बरणनाम नल नीला ॥
जो पुजिहैं तुम कहँ मनलाई ❁ शिल्पक्रिया पैहैं सुखदाई ॥
अस कहि श्री रघुनाथ सराही ❁ पूज्यो भुज बहुबिधिप्रभुताही ॥

पदुम अठारह कपि कटक, चल जिनकी भुज छाँह ।
निजकर सुरभी सुमनलै, रघुपति पूजी बाह ॥
सेतु कथा यहि बिधिकह्यो, दुर्गा दास बिचारि ।
तुलसीकृत रामायण, निरखि नैन भरि बारि ॥

इति नल नील सेतु बन्धनम् ।

सब देवन को बन्दि मैं, बार बार शिर नाय ।
विश्वकर्मा निज देवकी, कीरतिकहौंबनाय ॥

अलकारच्यो सँवारी ❁ सो प्रसंग सब कहौं बिचारी ॥
कुबेर महराजा ❁ धनद नाम जाकर जगछाजा ॥
महँ करै निवासू ❁ रत्न अनेक भांति ढिगजासू ॥

भृत्य अनेक करैं सेवकाई ❀ यक्षराज की सब चितलाई ॥
अश्व असंख्य बंध तेहि केरे ❀ पवन सदृश मग चलै घनेरे ॥
गज रथ अमित भांति सो सोहै ❀ राज्य हेतु सामग्री जोहै ॥
सो है मणि माणिक की जाती ❀ शुभ गृह सुखन लहै दिन राती ॥
सुख सामग्री सब बिधि ताके ❀ शुभगृह बिनु बहुदुख मनजाके ॥
यहि बिधि शोच करत बहु भांती ❀ रहत कुवेर मलिन दिन राती ॥

एक समय नारद तहाँ, करत विष्णु गुण गान।
विष्णुलोकते प्रकट भे, धनद समीप सुजान ॥

देखि कुवेर उठे हरषाई ❀ सिंहासन पद गहि बैठाई ॥
भोजन विविध भांति पकवाना ❀ नारद निकट धरेउ जलपाना ॥
करि भोजन सबबिधि सुनिज्ञानी ❀ पियो मधुर गंगा को पानी ॥
कहहु धनद निज कुशल खरारी ❀ मनमलीन तोहिंलखौं दुखारी ॥
निज दुखकर कारण सब कहहू ❀ मैं उपाय बर्णौं सुख लहहू ॥

मुनि की आज्ञा पाय, यक्षराज बोले वचन।
सुनहु नाथ ममबात, तोहि सुनावौंदुख जनन ॥

राज साज सब मेरे पासा ❀ ऋद्धि सिद्धिसबकरतनिवासा ॥
केवल गृह उत्तम नहिं सांई ❀ तेहि बिनु दुःख सहौं अधिकाई॥
यहिबिधि धनद बिनय बहु कीना ❀ सुनि नारद बहु धीरज दीना ॥
सुनहु धनद मैं कहौं उपाई ❀ जासो शोच दूरि होइ जाई ॥
सकल द्वीप नगर अति पावन ❀ दक्षिणदिशि सोहत मनभावन ॥
तहां अहै विश्वकर्म्मा धामा ❀ शिल्पक्रिया है जाको कामा ॥

देवनको गृह रच सो, बिबिध भांति क्षण माहिं।
दूत एक पठवहु निपुण, जोलै आवहि ताहि ॥

क्षणमहँ रचै सुभग पुर तेरा ❀ अलकापुरी नाम जेहि केरा ॥
सुनि नारद कर बचन सप्रीती ❀ भो धनेश उर परम प्रतीती ॥
यक्ष दूत यक लियो हँकारी ❀ यो अति बली गुणी हितकारी ॥
पत्र एक लिखि ताको दीन्हा ❀ साकलद्वीप गमन जिनकीन्हा ॥
बिश्वकर्म्मा ढिग पहुँचेउ जाई ❀ धनदपत्र तेहि बांचि सुनाई ॥
विश्व कर्म्मा रथ भयो सवारा ❀ यक्षनगर को तुरत पधारा ॥
बायु बेग रथ चलै अकासा ❀ तुरत गयो कुबेर के पासा ॥
तब कुबेर विश्वकर्म्महि चीन्हा ❀ स्वागत पूछिसुआसन दीन्हा ॥

करि दंडवत परस्पर, कुशल बूझि धननाथ ।
बिश्वकर्म्महि पूजतभये, अमितरतनके साथ ॥

विश्वकर्म्मा तब कहउ बहोरी ❀ धन नायक का आज्ञा तोरी ॥
सो सब करौं निमिष यक माहीं ❀ मोकहँ कछु दुर्लभ जग नाहीं ॥
है प्रसन्न तब कहेउ धनेसू ❀ रचना मंदिर करौ सुरेसू ॥
दुर्गएक मणि माणिक केरा ❀ तहँ बिरचहु बहु भांति घनेरा ॥
हाट बाट सब रतन समेता ❀ चहुँदिशिरचहुविचित्रनिकेता ॥
पुष्पकमणि को रचहु बिमाना ❀ जो अकाश बिच सोहै याना ॥
गगन चलै जो पवन समाना ❀ मन कामना मोरि यह नाना ॥
यहि विधि कह्यो धनेश बखानी ❀ सो दुर्गा जियमाहिं समानी ॥

सुनि वाणी धन नाथ की, विश्वकर्म्मा ततकाल ।
पर बाहर सो जायके, शोधेउ भूमि विशाल ॥

लग्नशुद्ध करि भूमि सवांरी ❀ मणि माणिक सब लीन बहारी ॥
पहिले दुर्ग कौन तैयारा ❀ चौंसठि योजन कर विस्तारा ॥
बोत्तस योजन केरि उँचाई ❀ अड़तालिश कीहे चौड़ाई ॥
दुर्ग बीच रचना बहु नीको ❀ निरखि मोह मन यक्ष राजको ॥

स्फटिक शिला की रची दिवारा ❀ बिश्वकर्म्मा निज हाथ सँवारा ॥
ह ला यहि भांति बिराजै ❀ चित्र दुर्ग बिच बहुविधिभ्राजै ॥
चन्द्रकान्ता मणि प्रासादा ❀ जाकी मणि बिचहै मर्य्यादा ॥
सोइ मणिलै छति सकल सँवारी ❀ उपमा को कवि कह सकसारी ॥
चन्द्रकान्ता के गुण ऐना ❀ दुर्गादास कहै निज बैना ॥

चन्द्रकान्तामणि उपरै, इन्दुकला परि जाइ।
बिन्दु बर्षा जल बहिचलै, जो नाहिं कहूँ समाइ ॥

सूर्य्यकान्तामणि को येता ❀ भवन रच्यो सरदी के हेता ॥
नागदन्त मरकतमणि केरी ❀ खम्भा बिच २ रच्यो बहोरी ॥
मणि सब बिच २ दियो लगाई ❀ निरखि इन्द्र मन जात लुभाई ॥
कलश असंख्य दुर्ग पर सोहैं ❀ झलझलात सुबरण के जोहैं ॥
दुर्ग बीच सो रची बजारा ❀ फाटक चारि बिचित्र सँवारा ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू ❀ छावा परम बिचित्र बजारू ॥
कनक कलश कलशन पर थारा ❀ भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥
धरे सुधासम सब पकवाना ❀ बेचन हित नहिं जाइ बखाना ॥
फलअनेक बर वस्तु बनावा ❀ क्षिणमहँ रचि सो प्रकटदेखावा ॥

पुष्प बाटिका दुर्ग बिच, ता बिच मन्दिर नेक।
धनद हेत बिरचत भये, विश्वकर्म्मा धरिटेक ॥
हरित मणिन के पत्र फल, पद्मराग के फूल।
रचना देखि बिचित्रअति, मनविरंचिकरमूल ॥

विविधिभांति सों कीन अरम्भा ❀ विरचे कनक केदली थम्भा ॥
बेणु हरितमणि मय सब कीन्हो ❀ सरलसपर्ण परहि नहिं चीन्हो ॥
कनक फलित अहि बेलि बनाई ❀ लखि नहिं परै सपर्ण सोहाई ॥
तेहि के रचि रचि विन्दबनाये ❀ बिच बिच मुक्ता दाम सोहाये ॥

माणिक मरकत कनक पिरोजा ❀ चीर केरि पचि रचे सरोजा ॥
सुर प्रतिमा खम्भन गढ़ि काढ़ी ❀ मङ्गल द्रव्य सहित सब ठाढ़ी ॥
किये भृंग बहुरंग विहंगा ❀ गुंजहि कूजहि पवन प्रसंगा ॥
नाचहि मोर कुहिंक कलगाना ❀ तोता राम नाम व्रत ठाना ॥

सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किये नीलमणि केरि।
हेम बौर मरकत घवरि, लसत पाट मय डोरि ॥

रचे रुचिर वर बन्दनवारे ❀ मनहुँ मनो भवफन्द सवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये ❀ ध्वज पताक पट चमर सुहाये ॥
दीप मनोहर मणि मय नाना ❀ बरणिन जाय विचित्र बिताना ॥
जेहि विधि मण्डप रचेउ सँवारी ❀ बरणि न सक शारदा बिचारी ॥
बाहर दुर्ग परिख बहुनीको ❀ कियो तयार सोधि सबही को ॥
यहि विधि बिश्वकर्मा सुख सारा ❀ दुर्ग निमिष महँ कियो तयारा ॥
देखि दुर्ग प्रसन्न सो भयऊ ❀ धनपतिबहुविधि आदर कियेऊ ॥
यहि विधि दुर्गा कह्यो बिसूझी ❀ जगन्नाथ पण्डित सों बूझी ॥

दुर्ग पास उपबन सघन, सर बापी बहुभाँति।
कूप अनेक बिचित्र तहँ, वृक्ष सुखद सब जाति ॥

बिकसे सरसिज नाना रंगा ❀ मधुर सुखद गुंजत बहु भृंगा ॥
बोलत जल कुक्कुट कलहंसा ❀ जो बिलोक सो करत प्रशंसा ॥
चक्र वाक बक खग समुदाई ❀ देखत बनै बरणि नहिं जाई ॥
मणि सोपान विचित्र सुहावा ❀ बरणि न जाय बिचित्र बनावा ॥
सुन्दर खग गण गिरा सुहाई ❀ जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥
सर समीप बहु बृक्ष बिराजै ❀ नूतन किसलय जामें छाजै ॥
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला ❀ पाटल पनस पलास रसाला ॥
नव पल्लव कुसमित तरु नाना ❀ चंचरीक कोकिल कर गाना ॥

शीतल मन्द सुगन्ध सुहाऊ ❀ सन्तत बहै मनोहर बाऊ ॥
कुहू कुहू कोकिल ध्वनि करहीं ❀ सुनिसो शब्द ध्यानमुनिछुटहीं ॥

फूले फले विटप सब, रहे भूमि नियराय।
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पतिपाय॥

बन वाटिका दुर्ग विधि नाना ❀ छणमहँ विरचि सो रचेउविमाना
मरुत तुल्य है जावें बेगा ❀ शोभानिरखिछुटतमुनि योगा ॥
चक्र चारि बहुरंग सुहावा ❀ पुतरी सुवरण केरि बनावा ॥
काहू के कर चँवर विराजै ❀ काहू के कर पंखा छाजै ॥
लागत पवन नृत्य कोउ ठानी ❀ गावत कोउ मनोहर बानी ॥
कोउ बहुभाँति बाद्य अनुसारै ❀ समय पाय जैशब्द उचारै ॥
कठपुतरी बहुभांति बनाई ❀ विश्वकर्म्मा बिमान बिचलाई ॥
बिच बिच मुक्ता दाम लगावा ❀ पुष्पराग मणि लै छति छावा ॥

पुष्पक नाम बिमान को नारद धरेउ बिचारि।
धनदहेतु बिरचत भयो विश्वकर्म्मा मणिझारि॥

ध्वज पताक तोरण बहुनीके ❀ बिचबिच गुच्छा कुसुमकलीके ॥
नील पीत मणि शोभा हेता ❀ बिच २ दियो लगाय सुखेता ॥
सूर्य्य समान जासु परकाशा ❀ जगमगात जो चलतअकाशा ॥
तासु निकट तम कबहुँ न जाहीं ❀ देखि निशाचर कुल कदराहीं ॥
देवन हृदय हर्ष अति बढ़ई ❀ लहत निरन्तर सुख जो चढ़ई ॥
यहि विधि सुभग विमान बनाई ❀ धन नायकहिं तुरत बैठाई ॥
चढ़ि विमान धननायक तबहीं ❀ कियो प्रवेश दुर्गमहँ जबहीं ॥
विविधिभांति बिशुकर्म्महिपूजा ❀ तो सम हितू मोर नहिं दूजा ॥

करि बहु बिधि सत्कार सो, अमित वेतन दीन।
ह्वै प्रसन्न धनपति दियो, विश्वकर्म्मा सो लीन॥

विश्वकर्म्मा प्रसन्न होइ, आशिष दीन अपार ।
अलकापुर दिन दिन बढ़े, बाढ़े वंश तुम्हार ॥
तब नारद निज लोक सिधाये ❀ अमित दान महिदेवन पाये ॥
जाचक भये अजाचक तबहीं ❀ धनद प्रवेश कीन पुर जबहीं ॥
विश्वकर्म्मा निज धामहि गयऊ ❀ धन नायक पहुँचावत भयऊ ॥
अलकापुर यहिभांति बनाई ❀ विश्वकर्म्मा महराज दृढाई ॥
सो सब कथा कहेउ मनलाई ❀ जो पुराण बिच मैं सुनिपाई ॥
जो यह कथा छुद्रछल त्यागी ❀ पढ़िहैं भक्त प्रेमरस पागी ॥
ते शुभगृह अरु सम्पति पइहैं ❀ जबतक भू पहाड़ जग रहिहैं ॥
यहि बिधि दुर्गा बरणत भयऊ ❀ अलकापुर ज्यो निरमितकियऊ ॥

अथ द्वारिका पुरी वर्णनम् ॥

श्री जगदम्बहि नाइ शिर, दुर्गा बरणत जाति ॥
पुरी द्वारिका को रच्यो, विश्वकर्मा जेहिभांति ॥ १ ॥
सोइ वृन्तान्त कहौं जेहि हेतू ❀ बसेउ द्वारिका यदुकुल केतू ॥
जेहि अवसर मथुरा महँ जाई ❀ कंसहि हत्यो कृष्ण दोउ भाई ॥
सकलराज दीन्ह्यो ततकाला ❀ उग्रसेन कीन्ह्यो महिपाला ॥
मथुरा भयो धर्म्म की खानी ❀ लहत निरन्तर सुख सबप्रानी ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य रसाला ❀ निज निजधर्म्मकरततेहिकाला ॥
शूद्र करैं सेवा मनलाई ❀ समुझि धर्म्म आपन सुखदाई ॥
ब्रह्मचर्य्य अरु गृहीपद, करैं सकल नर नारि ।
बानप्रस्थ संन्यास युत, सोभित आश्रम चारि ॥
राजा उग्रसेन यहिभांती ❀ पालै प्रजा दिवस अरु राती ॥
करैं सहाय कृष्ण बलदाऊ ❀ यहिविधि सुखीरहत सब काऊ ॥

दुःख बस केवल कंस कि रानी ❀ अस्ति प्राप्ति शोभाकी खानी ॥
रहत शोक बस सदा मलीना ❀ जरासन्ध दोउ सुता प्रवीना ॥
एक दिवस दोउ महल मझारा ❀ आपस में यह कीन बिचारा ॥
अब यहँ रहब हमैं भल नाहीं ❀ बिनुपतिसुखनमिलतजगमाहीं ॥
पिता सदन अब चलबो नीका ❀ यहां रहब सबको अति फीका ॥
यह विचार करि रथ सजवाई ❀ दोनौ बहिन चढ़ी तहँ जाई ॥
पिता भवन कहँ कीन पयाना ❀ हांक्यो स्यंदन सूत सुजाना ॥

चारि दिवस महँ जाय के, दोनो बहिन अनाथ ।
पिता भवन मैं पहुँचि कर, रोयो शिर धरि हाथ ॥

जरासन्ध पूछेउ सब बाता ❀ दूनौ सुता देखि बिलखाता ।
सब वृत्तान्त पिता सों भाखा ❀ मनमें कछू भेद नहिं राखा ॥
आदिहि ते सब कथा सुनाई ❀ जेहि बिधि कंसहिंहत्योकन्हाई ॥
कहेसि प्रथम देवकी बिवाहा ❀ बसुदेवहि ज्यो भयो उछाहा ॥
गिरा अकाश बीच जो भयऊ ❀ सो सुनि कंस परमदुख लहेऊ ॥
कृष्णजन्म सो कहेसि बहोरी ❀ गोकुल गये कंसकी चोरी ॥
सून्य भवन महँ कन्या पाई ❀ कंस तुरत जमलोक पठाई ॥
त्यागत प्राण कहेसि सो बाला ❀ शत्रु तोर जनम्यो नँदलाला ॥

सो कन्या की बात सुनि, स्वामिहि भा अति शोच ।
बूड़त बिरह समुद्र महँ, भई पूतना पोच ॥

कहेसि कंस तुम धीरज धरहू ❀ गरल पियाय प्राण मैं हरहूं ॥
अस कहि सो गोकुल में जाई ❀ कृष्ण उठाय हृदय सो लाई ॥
पयपीवत सो कुवँर कन्हाई ❀ प्राण तुरत यम भवन पठाई ॥
सो सुनि कंस अधिक दुख पावा ❀ कागासुर कह तुरत पठावा ॥
चोंच फारि ज्यों कृष्ण नसावा ❀ सो वृत्तान्त निजपितहिसुनावा ॥

शकटासुर बध कहेसि बहोरी ❀ पलनाते ज्यों उतरि मरोरी ॥
तृणावर्त्त को कंस पठावा ❀ शकटासुर बध जब सुनिपावा॥
बौंडर रूप तुरत सो भयऊ ❀ कृष्ण उठाय गगन लै गयऊ ॥
ग्रीवापकड़ि कृष्ण तेहि मारा ❀ चूर चूर करि महि में डारा ॥

तृणावर्त्त बध बरणि फिर, बर्णेसि ब्रज के हाल।
कृष्णचरित विधिवत कहेसि, जोकीन्होसँगग्वाल॥

बृन्दाबन ज्यों गयो मुरारी ❀ सो सब चरितकहेसि बिस्तारी॥
वत्सासुर ज्यों हत्यो कन्हाई ❀ सो सब कथा तात सो गाई ॥
बृन्दाबन ज्यों कियो बिहारा ❀ गोपिन सँग बसुदेव कुमारा ॥
वरण्यो सो सब कथा प्रसंगा ❀ कृष्ण बकासुर कीन्ह्यो भंगा ॥
हत्यो अघासुर ज्यों नँदलाला ❀ सो प्रसंग सब बरणेसि बाला ॥
कूदि यमुन जल भीतर जाई ❀ नाथ्यो कालीनाग कन्हाई ॥
दावानल ब्रज जारन आयो ❀ ब्रज के जीव देखि भय पायो ॥
सबको प्रभु तब आंखि मिचाई ❀ सब ज्वाला एक क्षण में खाई ॥

ग्वाल रूप धरि विपिनबिच गयो प्रलम्ब अकेल।
लख्यो न काहू भेदसो कृष्ण जानि कियो खेल॥

बलदाऊ को कृष्ण जनावा ❀ ग्वाल रूप यह राक्षस आवा ॥
दैत्य तुरत निज रूप दिखावा ❀ निरखि सो रूप गोप भयपावा ॥
मुष्टिक मारि गोपाल नसावा ❀ देखि गोप सबअति सुखपावा ॥
शंखचूड़ वध कहेसि बहोरी ❀ वृषभासुर की ग्रीवातोरी ॥
केशी वध कीन्हो यदुनाथा ❀ सो सब पितुसो वरणेसिगाथा ॥
व्योमासुर वध पितहि सुनावा ❀ जेहावाध कृष्णचन्द्र दर्शावा ॥
रजक मारि मथुरा ज्यो जाई ❀ मल्लयुद्ध कीन्ह्यो यदुराई ॥
ताहि मारि मम महल सिधारा ❀ पतिकह जाय तुरत परिचारा ॥

बैठि कंस यक मंच पर, सोचिरह्यो तेहिकाल ।
खोजत पहुंच्यो जाय तहँ, बलदाऊ नंदलाल ॥
अति बलवन्त नन्द के बारे ❀ तब सकोप नृप ओर निहारे ॥
गये मचान मचकि चढ़ि दोऊ ❀ बाज झपट जन लवपर कोऊ ॥
हैगयो चकित नृपतिभय मान्यों ❀ आयोकाल निकट यह जान्यों ॥
रहिगयो लिये खड्ग कर माहीं ❀ हरिको मारि सक्यो सो नाहीं ॥
तवहीं श्याम लात एक मारी ❀ गिरिगया मुकुट शीशते भारी ।
दीन ढकेलि मंचते भूपर ❀ कूदिपरयो हरि ताके ऊपर ॥
तहँ अद्भुत जो रूप दखायो ❀ शीशकाटि यम लोक पठायो ॥
मारो कृष्ण पतिहि जियजानी ❀ मोरेउरउपजी अति ग्लानी ॥
सो बियोग सहिसकेंउ नाहिं, अब आयेंउं तवपास ।
उचित होइ सो करहु तुम, जेहि बिधि यदुकुलनास ॥
जरासंध यहि बिधि सब सुनेऊ ❀ क्रोधानल ते उर अति दहेऊ ॥
बहुप्रकार कन्यहि समुझाई ❀ बीच सभामें बैठ्यो जाई ॥
पूछन लगो सभा सदपाहीं ❀ कौन बीर जन्म्यो ब्रजमाहीं ॥
जो मथुरामें जाय प्रचारा ❀ असुर समेत कंस को मारा ॥
अब यह प्रण मैं सबहि सुनाऊं ❀ मथुरादहि यदुकुलहिं नसाऊं ॥
जीवत धरौं कृष्ण दोउभाई ❀ मगधदेश कर पानि भराई ॥
जो नहिं लेउं कंसको दांऊं ❀ जरासंध निज नाम न गाऊं ॥
गदा एक अब देउं बहाई ❀ नाशकरै यदुकुल को जाई ॥
राम कृष्ण को मारिकै, बैर कंसका लेउं ।
काढ़ि यादवबंशको, मथुरा रहन न देउं ॥
जरा सन्ध को जो बरदाना ❀ भयो सो दुर्गा दास बखाना ॥
शीश फेर चहुँ तरफ घुमाई ❀ गदा देत जेहि ओर बहाई ॥

तै जोजन पर शत्रु सँघारै ❀ जितनी बार शीशपर वारै ॥
तेहि घमंड सों गदा उठाई ❀ शिर ऊपर शतबार भ्रमाई ॥
मथुरा पर फेंकेउ करि क्रोधा ❀ जरासंध अतुलित बल योधा॥
सहसमने की गदा प्रचंडा ❀ चली मगध ते तुरत अखंडा ॥
आवत गदा जानि बनवारी ❀ फेंकि गदा निज तुरत निवारी ॥
लौटि गयो जब गदा तुरन्ता ❀ जरा संध तब कीन्हेव चिन्ता ॥

जरासंध मन शोच करि, राजन लियो हकारि ।
जो निज आज्ञा में रहत, सब आये ललकारि ॥

दल तेइस अक्षौणी हेरी ❀ मथुरा जाइ तुरत सो घेरी ॥
सेना अगम देखि तेहि काला ❀ कांपि उठे तबहीं दिगपाला ॥
मथुराबासी गये डेराई ❀ तुरत कृष्णपहँ जाइ सुनाई ॥
दीनबन्धु अब करौ सहाई ❀ मथुरा राक्षस घेरेउ आई ॥
तब बलरामहि लियो बोलाई ❀ उग्रसेन पहँ गयो कन्हाई ॥
उग्रसेन सों बोलेउ जाई ❀ रक्षा किहेउ नगर की सांई ॥
अब मैं जाउँ युद्ध के हेता ❀ राक्षस घेरेउ आय निकेता ॥
उग्रसेन सों आज्ञा मांगी ❀ पहुँचे रामकृष्ण बड़ त्यागी ॥

संख चक्र अरु गदा लै, पद्मसहित गोपाल ।
चारि अश्व युत रथ निरखि, बैठि गयो ततकाल ॥
हल मूशल बलराम लै, निज रथ बैठेउ जाय ।
सेना को कछु साथ लै, हाँकि दियो यदुराय ॥

जरासंध ढिग पहुँचे जाई ❀ मारूबाजा सुन्योउ कन्हाई ॥
पांचजन्य प्रभु शंख उठाई ❀ मुख लगाय सो दियो बजाई ॥
शंख शब्द नभ पूरण भयऊ ❀ जरासंध सेना सब डरेउ ॥
जरासंध रथ दियो बढ़ाई ❀ सेना से कछु बाहर आई ॥

जरासंध को देखि कन्हाई ❀ पहुचे तहां जाय दोउ भाई ॥
जरासंध बोला अभिमानी ❀ कृष्ण देखि शोभा की खानी ॥
तेरो मुख देखत हम नाहीं ❀ महा अधम पापी जग माहीं ॥
जिन अपने मामा को मारा ❀ पाप पुण्य कछु नहीं विचारा ॥
तासों युद्ध कवनविधि कीजै ❀ जासों नेम धर्म्म सब छीजै ॥

तेहि बालकसन युध करत, आवतहै मोहिं लाज।
याते हम बलभद्र सों, युद्ध करैंगे आज ॥ १ ॥

यह सुनि बोले तुरत कन्हाई ❀ जाहु सदन निज प्राण बचाई ॥
समर विमुख मैं हतौं न काहू ❀ सेना लै सब घरको जाहू ॥
कादर निजमुख करत बड़ाई ❀ सूर समर बिच करत सुराई ॥
रण चढ़ि करत कपट चतुराई ❀ रिपुपर कृपा परम कदराई ॥
जेहि कृपाण मामहि मैं मारा ❀ अपर दैत्य को कीन सँहारा ॥
तेहि कृपाण तव यूथ नशाऊँ ❀ लरिकाई निज तुमहि देखाऊँ ॥
बलदाऊ सों तुम अब लरहू ❀ युद्ध केर फल तुम अब लहहू ॥
यहि विधि कृष्णबचनजब सुनेऊ ❀ जरासधं उर तब अति दहेऊ ॥

उरदहेउकहेउकिधरहुधावहुबिकटभटरजनीचरा ॥
करगदामुष्टिक शक्तिशूल कृपाणपरिघ परशुधरा ॥
प्रभुदीन शंखबजाइ प्रथम कठोर घोर भयो महा ॥
भयेबधिर यातुधानन ज्ञान तेहि अवसर रहा ॥

सावधान होइ धाये, जानि सकल आराति।
लागे वर्षन कृष्ण पर, अस्त्र शस्त्र बहु भांति ॥
तिनके आयुध तिल सरिस, करि काटे प्रभु धीर।
तानिचक्र हलधर मुसर, पुनि छाड़े दोउ वीर ॥

तब चलो चक्र कराल । फुंकरत जानहु व्याल ॥
कोपेउ समरबलराम । चलेबिशिष निशितनिकाम ॥
अवलोकि रण गंभीर । मुरि चले निशिचर बीर ॥
एक एक कहँ न सम्हार । करे तात मात पुकार ॥
कोउकहतमरुनहिंकीन । जो युद्ध न मन लीन ॥
हल चक्र अतिहि कराल । ग्रसे आइ मानहु काल ॥
कह मगधराज रिसाइ । जो भागि रणते जाइ ॥
तेहिबधबहमनिजपानि । सबफिरहुयहजियमानि ॥
कह दुर्गा यह मनन करि, हैं इनके बड़भाग ॥
तरण चहैं प्रभु सर लगे, बिना योग जपयाग ॥

जरासंघ तब कोपकरि, बलदाऊ ललकार ।
गदा एक मारत भयो, हृदय मांझ बिकरार ॥

बलदाऊ तब गयो बचाई ❀ गदा भूमि पर गिरयो सोहाई ॥
बलदाऊ तब कोपत भयेऊ ❀ मूशल एक ताहि उर हनेऊ ॥
लागत मूशल मूर्च्छा आई ❀ गिरेउ भूमि जनु तरु भहराई ॥
हल मूशल लै सेना माहीं ❀ कूदि परेउ रथते ध्वज छाहीं ॥
हल सेना को लेहि बटोरी ❀ मूशलन मारि निपाते फोरी ॥
कृष्ण सुदर्शन छोड़त भयऊ ❀ सेना बीच तुरत सो गयऊ ॥
काटै शीश भुजा अरु जाना ❀ जेहि बिधि काटैं कृषी किसाना ॥
जरासंध की मूर्च्छा जागी ❀ धावा तुरत युद्ध अनुरागी ॥

कृष्णहि घेरेउ आयसो, सँग लै दैत अनेक ।
अस्त्र शस्त्र बर्षन लग्यो, प्रभुपर बिना बिबेक ॥

आयुध अनेक प्रकार । सन्मुखते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपेउ जानि । तब कृष्ण धनुसन्धानि ॥
शर छूट अमित कराल । लगे कटन वीर विशाल ॥
उर शीश कर भुज चरन । जहँ तहँ लगे भुवि परन ॥
रिकटन लागि जवान । बहु परे शैल समान ॥
भट कटत तन शत खण्ड । पुनि उठत करि पाखण्ड ॥
नभ उड़तबहु भुज मुण्ड । बिनु मौलि धावत रुण्ड ॥
खग कंक काक शृगाल । कटकटहि कठिन कराल ॥

छन्द ।

कट कटहि जम्बुक भूत प्रेत पिशाच खप्पर साजहीं ॥
वैताल वीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
श्रीकृष्ण गदा प्रचण्ड फेरत भटनके उर भुज शिरा ॥
जँहतँहगिरहिंउठि लरहिंधरु धरुकरहिंभकलभयंकरा ॥
अन्त्र गलीलै उड़हि गृद्ध पिशाच कर गहि धावहीं ॥
संग्राम पुर बासी मनहु बहु बाल गुडी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहरत परे ॥
अवलोकिनिजदलबिकलभगधाधी शतंहिछनअतिजरे ॥
शर शक्ति तोमर गदा शूल कृपाण एकहि मारहीं ॥
करि कोप श्रीनँदलालपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभु निमिष महँ रिपु शस्त्र काटि प्रचारि मारे राक्षसा ॥
महिँ गिरतउठिभटलरत पुनिपुनि करत मायातामसा ॥
बल्दाऊ अरु कृष्ण मिलि, कीन्हेउ युद्ध अपार ॥

मारेउ ढाई घरी में, सब राक्षस परिवार ॥

यहि बिधि हते कृष्ण करि खेला ❀ जरासंध रहि गयो अकेला ॥
रक्त नदी प्रकटी तेहि काला ❀ अगम भयो रण भूमि कराला ॥
रक्त श्रवत करि शिरते कैसे ❀ कज्जल गिरिते झरना जैसे ॥
बिनु सारथी बहे रथ कैसे ❀ नदी बीच बहु नौका जैसे ॥
बीरन के शिर रण बिच सोहै ❀ कच्छपकी उपमा कबि जोहै ॥
कटी भुजा बीरन की बहहीं ❀ मछली कीशोभा सोलहहीं ॥
बिनु शिर बहत कबन्ध अपारा ❀ दुर्गा कहत मनहु धरि आरा ॥
रथ के चक्र बहतहै कैसे ❀ भवर अगम जल सोहत जैसे ॥

मणि मुक्तन की माल बहु, टूटि परीं रणखेत ।
सो सबयहिबिधि देखिये, ज्यों जल भीतररेत ॥
मांसाहारी जीव सब, गृद्ध काक अरु श्वान ।
अमिषखाय अगरतभये, योगी गावैं गान ॥

यहि बिधि सेना सकल नशानी ❀ जरासंध मन कीन गलानी ॥
गदा युद्ध हलधर सों कीना ❀ हल लगाइ गलमें धरि लीना ॥
हलधर कह्यो कृष्ण सो तबहीं ❀ आज्ञा होइ बधों मैं अबहीं ॥
सो सुनि तब बोलेउ यदुराई ❀ याको बधब उचित नहि भाई ॥
छोड़हु जियत जाय निज देशा ❀ फिर सेना को करै निदेशा ॥
राक्षस मारि हरौ भूभारा ❀ यहि कारण लीनेउ अवतारा ॥
जरासन्ध जो जीवत जावै ❀ तौ बहु दैत्य तुरत लै आवै ॥
बिनु प्रयास मैं तिनको हनऊ ❀ कहं दुष्टन को खोजत फिरऊ ॥

सुनि बाणी नँदनन्द की, हलधर दीन्हेउ छाड़ि ॥
लज्जित है निज देशगे, जरासंध मन माड़ि ॥

सिंहासन बैठा शिरनाई ❀ आनहु सम्पति सकल गँवाई॥
लागेउ शोच करन मनमाहीं ❀ अब यँह रहब हमैं भल नाहीं॥
अमित मित्र मैं दीन नशाई ❀ कौन भांति मुँह सबहिंदेखाई॥
राजछोड़ि अब बिपिन सिधारौं ❀ मित्रन कर दुख तहां बिसारौं॥
जरा संध जब कीन पयाना ❀ तेहि क्षण मिलेउ सुहृद बहुनाना॥
सबमिलि कहा सुनौ मम नाता ❀ तजकु शोच जनि राखहुताता॥
बिजय पराजय रणमें होई ❀ शोच न हर्ष वीर मन सोई॥
फिर उद्योग सैनकर करहू ❀ यदु बंशिनसो फिर चलि लरहू॥

सुहृद बचन यहि भांति सुनि, जरासन्ध धरिधीर॥
मित्रन सों बोलत भयो, भली कही तुमबीर॥

सबसों कहा सुनो प्रिय मेरो ❀ करहु सहाय बीर अब हेरो॥
जरा संध जब बचन सुनाई ❀ जोड़न लगो सैन्य सब भाई॥
जरा सन्ध की यह गति भाई ❀ कृष्ण कथा बरणौं मनलाई॥
दैत्यन को बधि कृष्ण मुरारी ❀ लूटेव धन निज सैन्य सम्हाँरी॥
सुमन बृष्टि देवन झरि लाई ❀ मघवा दुन्दुभि दियो बजाई॥
मन्द सुगन्ध शीत बहवाऊ ❀ जोअति शुभग सुखदसबकाऊ॥
गान करैं किन्नर की जाती ❀ नाचत बहु अपसर यहि भाँती॥
यहिबिधि आनंदलहि नँदलाला ❀ नगर पयान कीन तेहि काला॥

नगर निकट पहुचत भयो, यदुबंशिनलै साथ॥
मथुरा पुरबासी सकल, कृष्णहि नायेउ माथ॥

घर घर भयो मङ्गला चारा ❀ सब ब्राह्मण मिलि वेद उचारा॥
सगुनहेत दुर्वा दधि काढ़ी ❀ निज निज द्वार बधू बहु ठाढ़ी॥
बहुतक चढ़ी अटारि निहारैं ❀ लै लै सुमन कृष्ण पर वारैं॥
नर नारिहि यहि बिधि सुखदेता ❀ राम कृष्ण निज गयो निकेता॥

उग्रसेन ढिग पहुचेउ जाई ❀ तिनहिं शीस नायेउ दोउ भाई ॥
कृष्ण सकल धन राजहि दीन्हा ❀ दूनो भाइ विनय बहु कीन्हा ॥
तव प्रताप मै रणमें जाई ❀ शत्रुहि जीत बिजय बहु पाई ॥
निर्भयराज करहु तुम ताता ❀ पालौ प्रजा दिवस अरु राता ॥

उग्रसेन उठि बालकन, लियो हृदय में लाय ॥
बल सराहि आशिष दियो, लियो गोद बैठाय ॥

बहुत द्रव्य सो दियो लुटाई ❀ अमित द्रव्य निजकोश पठाई ॥
यहि बिधि मथुरा भयो सुखारी ❀ जरासन्ध उरलगी दवारी ॥
तेइस अक्षोणी फिर साजी ❀ जरासंध की मारू बाजी ॥
सत्रह बार कृष्ण को घेरा ❀ जो संग्राम पीठ नहिं हेरा ॥
पहिली बार दैत्य ज्यों मारा ❀ ताही भांति कृष्ण संहारा ॥
जरासंध बहु बिधि परिचारा ❀ सत्रह बेर कृष्ण सो हारा ॥
तब मन में बहु कीन गलानी ❀ लज्जितहोइ मन में ब्रतठानी ॥
करौं तपस्या बनमें जाई ❀ लै बरदान फिरौं फिर आई ॥
अब गृह जाउँ कौन मूँह लाई ❀ दैत्य सकल मैं दीन नशाई ॥

अस बिचारि बनको चलेउ, जरासंध तेहिकाल ।
मारग बिच नारद मिलेउ, शोभितउर बनमाल ॥

मुनिको तुरत शीश सो नावा ❀ देअशीश मुनि बचन सुनावा ॥
जरासंध तोहिं लखौं मलीना ❀ कारण कहहु गमन कहँ कीना ॥
कह मुनि सुनहु हवाल हमारा ❀ सत्रह बार कृष्ण सों हारा ।
चन्द्र नन्द अरु अग्नि प्रमाना ❀ अक्षौहिणी सैना बलवाना ॥
कृष्ण राम रण बीच नशाई ❀ मोसो मुख नहिं जात देखाई ॥
तेहिके हेतु जाउ बन माहीं ❀ बरलीन्हे बिनु लौटब नाहीं ॥
मुनि सर्बज्ञ न तुमसम कोई ❀ कहौ उपाय बिजै ज्यों होई ॥

जरासंध की गिरा बिनीता ❀ सुनि बोलेउ मुनि बचनपुनीता ॥
काल जमन काबुल बसै, महाबली सो जान ।
ताको संग लेहु फिर लरहु, सिद्ध मनोरथ मान ॥
ताको तुरत लेहु बोलवाई ❀ दोनौ मिलि फिर करहु लराई ॥
हैहै बिजय सत्य यह मानौ ❀ अवरि बात मन में नहिं आनौ ॥
जरासंध तब कह हरषाई ❀ नाथ दूत बहु दिनमें जाई ॥
अव्याहत गति हो तुम नाथा ❀ बारम्बार नवावौं माथा ॥
क्षणमहँ जाय काज यह करहू ❀ दास जानि मम संकट हरहू ॥
तुम सन उऋण कबौ मैं नाहीं ❀ तुमसम हितू न कोउ जगमाहीं ॥
तुरत गमन कर कीन सुपासा ❀ पहुंचेउ काल यमन के पासा ॥
कालयमन उठि कीन प्रणामा ❀ आसन दै पूछत मे कामा ॥
जरासंध की कथा सुनाई ❀ काल यमन सुनि कह हर्षाई ॥
जरासन्ध पहँ जायके, नाथ कहहु मम बात ।
कालयमन आवत लरन, तुम दल साजहु तात ॥
कालयमन यहि बिधि समुझाई ❀ बिदाकीन नारदमुनि जाई ॥
नारद चलेउ मगध की ओरा ❀ कालयमन निज सैन बटोरा ॥
नारद जरासंध पहँ जाई ❀ कालयमन की गाथा गाई ॥
सो सुनि जरासंध हरषाना ❀ सैन्य साजि फिर कीन पयाना ॥
तीनकरोड़ म्लेक्ष लै साथा ❀ जिन के उच्च दाँत अरु माथा ॥
कालयमन मथुरा में आई ❀ घेरेउ नगर चहूँदिशि जाई ॥
पुरबासिन को देखि दुखारी ❀ कृष्णचन्द्र मनमाहिं बिचारी ॥
उदधि बीच एक नगर बसाऊं ❀ पैहै सुख यदुकुल तेहि ठाऊं ॥
अस बिचारि बलभद्र बोलाई ❀ बीच सभा बैठे दोउ भाई ॥
कहा कृष्ण अब कहो प्रिय, कीजिय कौन उपाय ।

कालयवन बहु सैन्य लै, मम पुर घेरेउ आय ॥
जरासंध लै सेन अपारा ❀ लरन हेत आवत यहि बारा ॥
करिहौं युद्ध एक सौं जाई ❀ दूसर नगर लेइं लुटवाई ॥
हारेउ जरासंध बहु बारा ❀ आवत है करि कोप अपारा ॥
कालयवन सहकारी पाई ❀ अवशि उपद्रव करिहै आई ॥
अब यहँ रहब हमैं भल नाहीं ❀ नीति विरुद्ध बिदित जगमाहीं ॥
देश उपद्रव युत बुध कहहीं ❀ त्यागे सुख प्राणी सब लहहीं ॥
यहां उपद्रव दिन अरु राती ❀ करत निरंतर प्रबल अराती ॥
याते कहौ उपाय बिचारी ❀ मैं शोचा सो कहौं पुकारी ॥
बरणौं एक उपाय मैं, जो आयो मन माहिं ।
पुरबासी कहुँ किये बिनु, युद्ध करब भलनाहिं ॥
बलदाऊ बोले सुनि बचना ❀ आज्ञा देहु होइ पुर रचना ॥
बिश्वकर्म्महि प्रभु तुरत बोलावा ❀ समाचार सब उनहिं सुनावा ॥
विश्वकर्म्मा बोलेउ करजोरी ❀ नाथ भाग्य प्रकटी बड़ि मोरी ॥
आज्ञा होइ सो करौं मुरारी ❀ कृपा तुम्हाँरि चहौं बनवारी ॥
सुनि बाणी बोलेउ नँदलाला ❀ तुम सबलायक हौ यहि काला ॥
बीच समुद्र रेत महँ जाई ❀ नगर एक बिरचौ सुखदाई ॥
यामें मथुरा नगर निवासी ❀ लहैं निरन्तर सुखकी रासी ॥
विश्वकर्म्मा अब विलम न करहू ❀ यहि क्षण जाय नगर अबरचहू ॥
सुनि बाणी नँदलालकी, विश्वकर्म्मा तेहि काल ।
रची द्वारिकापुरी सोइ, जो सबते बिमराल ॥
जो विश्वकर्मा रचेउ सवाँरी ❀ सो प्रसंग अब कहौ बिचारी ॥
द्वादश योजन है विस्तारा ❀ विश्वकर्म्मा जो नगर सँवारा ॥
मन्दिर अमित सुबर्णनकेरा ❀ सिंधु बीच सो रचेउ घनेरा ॥

बिच बिच रतन अनेक लगावा ❀ नगर अधिक शोभा तब पावा ।।
मणि माणिक जो सब बिधिनीके ❀ सो कपाट बिच जड़ेउ सबीके ।।
सो कपाट द्वारन में लाई ❀ मुक्ताकी झालर लटकाई ।।
ऊपर कोट कँगूर बनावा ❀ जो शोभा बहुभांति बढ़ावा ।।
अति उत्तम जलनिधि चहुँपासा ❀ कनक कोट कर परम प्रकासा ।।

रचेउ बजार बिचित्र सो, बिश्वकर्मा पुर माहिं ।
मन मोहत सब बिश्वको, जो देखन तहँ जाहिं ॥

षोड़श सहस एकसौ आठा ❀ महल मनोहर बहुबिधि ठाठा ॥
मणि माणिक बहुभांति लगावा ❀ जाकी प्रभा रबिहि समगावा ॥
कृष्णहेतु यहिभांति सवांरा ❀ उपमा को कबि कहै अपारा ॥
महलन बिच सो अजिर बनावा ❀ तामें शिलपकला दर्शावा ॥
जल अरु थल न परहिं पहिंचाने ❀ बिनु असपर्स जात नहिं जाने ॥
प्रतिमा बिबिधभांति गृह मांहीं ❀ उपमा लखी जात कहुँ नाँहीं ॥
नर अरु नारि बिहंग अपारा ❀ शिलप कला बहुभांति सवाँरा ।।
समय पाइ निज बचन उचारैं ❀ सुनि नर नारि सजीव पुकारैं ।।

तर ऊपर सत महलसों, याहिबिधि रची सवाँर ।
छतकी शोभाको कहै, बहुबिधि बन्दनवार ॥

गजशाला बहुभांति ललामा ❀ रचेउ बाजि शाला सुखधामा ॥
अमित भाँति बिरचेउ गौशाला ❀ बिद्या शाला रचेउ बिशाला ॥
रथशाला बिरचेउ बहुनीके ❀ हेरत मन मोहत सबही के ॥
सँकेट बिमान केर गृह रचेउ ❀ तीनिलोक में नहिं अस जचेऊ ॥
द्वार देश नौबत अस थाना ❀ झरना झरत मेघ अनुमाना ॥
द्वारपाल के निमित अनेका ❀ बिरचेउ भवनत्यागि अबिवेका ॥
ब्राह्मण क्षत्री बैश्यनँ केरा ❀ बिलग २ पुर रचेउ घनेरा ॥

गृह सामग्री सबके हेता ❀ यथा योग्य कल्पेउ जगजेता ॥
ब्रह्मण पुर बिरचत भयो, हेमालय युत सोय ॥
पूजा की सब बस्तुलै, गृह गृह धरी निगोय ॥
भोजन बस्तु अनेक प्रकारा ❀ बिशुकर्मा गृह गृह निर्धारा ॥
वस्त्र अभूषण पात्र अनेका ❀ बिप्रन के गृह धरेउ बिबेका ॥
क्षत्रिन के गृह अस्त्र अनूपा ❀ शस्त्र अनेक लहत जो भूपा ॥
हाटक बस्तु कहौं मनलाई ❀ जो बैश्यन हित धरेउ बनाई ॥
ऊन सूत के बस्त्र अनेका ❀ पण व्यवहार होत बहुटेका ॥
भोजन पत्र अनेक प्रकारा ❀ काँस्य कार हित सो बिस्तारा ॥
सकल अन्नकी ढेर लगाई ❀ बेचन के हित धरेउ बनाई ॥
पूड़ी मालपुआ पकवाना ❀ खुर्मा आदि मिठाई नाना ॥
यहि बिधि भोजन बस्तु सब, हलुआई के हेत ।
बिशुकर्मा बिरचत भयो, शिल्पी कला समेत ॥
स्वर्ण रजत के अभरण नाना ❀ स्वर्ण कार हित कियो विधाना ॥
सूची सूत्र बस्तु बहु भाँती ❀ जो बर्तत निशि दिवस बिसाती ॥
पट अरु डोरि अनेक प्रकारा ❀ पटहेरन हित सोउ सँवारा ॥
फूल माल बहुभाँति रसाला ❀ जो माली बरतत सब काला ॥
लोहकार को लोह प्रकारा ❀ तक्षा के हित काष्ठ सँवारा ॥
भाजी विविधि भाँति दर्शावा ❀ जो जीविका मुराई पावा ॥
ताम्बूल सब भाँति बनावा ❀ ताम्बूली जासो सुख पावा ॥
यहि विधि साजत भयो बजारू ❀ दुर्गा कहत शास्त्र अनुसारू ॥
कनक कोट बिचित्रमणि कृतसुन्दरायतअतिघना ॥
चहुं हाट घाट सुबाट बीथी चारु पुर बहुबिधि बना ॥
बनबाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं ॥

नरनाग सुर गन्धर्ब कन्या रूप सुनि मन मोहहीं ॥
यहि विधि पुर बिरचत भये बिशुकर्म्मा क्षणमाहिं ॥
नाम द्वारिकापुरी धरि, गये तुरत प्रभु पाहिं ॥
तेहि अवसर सब देवता, रत्न अनेक प्रकार ॥
पहुँचायो तेहि नगर बिच, कृष्ण हेतु निर्धार ॥
सो सब कहत सनेह बस, दुर्गा दास बहोरि ।
पढ़तसुनत नर भव तरत, यह सिद्धांतनिहोरि ॥

श्यामकर्ण बाजी बहुनीको ❀ पठयो बरुण द्वारिका जीको ॥
रथ अरु रत्न अनेक प्रकारा ❀ दियो धनद तेहि समय अपारा॥
ऐरावत अरु सभा सुधर्म्मा ❀ इन्द्र पाहिं लायो बिशकर्म्मा ॥
औरो कल्पवृक्ष त्यहि काला ❀ भेजेउ इन्द्र जो है अति बाला ॥
यहि विधि सकल रत्न सब देवा ❀ धरेउ द्वारिका एकहि खेवा ॥
बिशुकर्म्मा तब खबर जनाई ❀ सुनि सो कृष्ण उठे हर्षाई ॥
जगदम्बहि आवाहन कीना ❀ तुरत आय दर्शन सो दीना ॥
करि प्रणाम आसन सुभ दीना ❀ बिधिवत देविहि पूजन कीना ॥

जगदम्बहि शिर नाय पुनि, कहा कृष्ण सुनु मात ।
मथुरा पुरबासी सकल, यहिक्षण दुखी लखात ॥

मैं द्वारिका पुरी बनवावा ❀ जो सब देवन के मन भावा ॥
मथुरा पुरवासी जिय जामा ❀ पहुँचावहु क्षणमें तेहि ठामा ॥
यह प्रसंग जानै नहिं कोई ❀ करहु तुरत जासों सुख होई ॥
एवमस्तु कहि तुरत भवानी ❀ योग कृपा प्रकटेउ मनमानी ॥
बसुदेवादि गये पुनि सोई ❀ निद्राबस यह लखा न कोई ॥
नर अरु नारि सकल पशुप्राणी ❀ क्षणमें पहुँचायो तहँ बाणी ॥

प्रातसमय जागे नर नारी ❋ देखि भवन सब भये सुखारी ॥
सब मिलि कृष्ण सराहत भयऊ ❋ जगबिच अस कोऊनहिंभयेऊ ॥
यहि बिधि रची द्वारिका, बिश्वकर्म्मा महराज ॥
सो सब दुर्गा रणेऊ, नाइ शीश ब्रजराज ॥ १ ॥
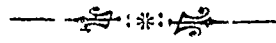
रचना सुदामापुरी की श्रीविश्वकर्म्मा ने ॥
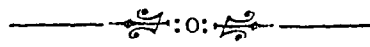
श्रीगणेशपद सुमिरि उर, सन्तन पद शिरनाय ।
कहत सुदामाकी कथा, बिश्वकर्म्मामनलाय ॥
बिशकर्म्मा जेहि भाँतिसों, पुरी सुदामा जाय ।
बिबिधि भाँति बिरचतभयो, दुर्गा दीन देखाय ॥
दक्षिणदिशि यक द्राविड़ देशा ❋ बिप्र बणिक तहँ बसहिं सुबेशा ॥
पुनि सब तहँ सुमिरैं भगवाना ❋ करहिं यज्ञ जप तप बहु दाना ॥
बसहिं तहां इक बिप्र सुदामा ❋ कृष्ण बन्धु गुरु सब गुण धामा ॥
अति मलीन तन क्षीण दुखारी ❋ बस्त्र हीन प्रति दिवस भिखारी ॥
घर पर फूस न कछु धन ताके ❋ बिश्व विभूति हृदय हरि जाके ॥
नारि तासु पतिब्रता सुहाई ❋ करहिं कंत की नित सेवकाई ॥
अधिक बढ्यो दारिद्र जब, तब सो अति घबरान ।
बोली इक दिन ब्राह्मणी, सुनिये कन्त सुजान ॥
हम दरिद्र बश अति दुख पायो ❋ कबहुँपात्रधरि अशन न खायो ॥
सय्यापर कबहूँ नहिं सोई ❋ क्षितिपर शयन करत हम रोई ॥
चहौ दूर किय यह दुख कंथा ❋ तौ तुम सों भाषों इक पंथा ॥

कहद्विज कहहु यतन तुम प्यारी ❀ जाते नशहिं वेगि दुख भारी ॥
कह तिय तव सुमित्र भगवाना ❀ बसहिं द्वारिका परम सुजाना ॥
तिनके पास जाहु तुम स्वामी ❀ सो दाता हरि अंतरयामी ॥
तहँ तुम्हरो दरिद्र नाशि जाई ❀ हुइहौ धनी भूरि धन पाई ॥
जाकर सुहृद ऐस जग होई ❀ क्यों घर घर कणमांगत सोई ॥

कह्यो सुदामा नारसुनु, वृथा और सब भोग ।
सत्य भजन भगवानको, व्यर्थ सकल सुखयोग ॥

बिप्रन के धन केवल भिक्षा ❀ भूपन को चाहिय धनइच्छा ॥
ब्राह्मणको मांगत नहिं लाजा ❀ अधिकद्रव्यते तिनहिं न काजा ॥
अधिक द्रव्य करनो कह प्यारी ❀ हमहिं परम धन ध्यान मुरारी ॥
होत द्रव्यते अति मन लोभा ❀ भक्तन को धनकी कह शोभा ॥
सुनि यह बचन कन्तके ओरे ❀ कहत ब्राह्मणी दोउ कर जोरे ॥
भोजन बस्त्रपूर्ण जो पोती ❀ तो घरते तुमको न पठौती ॥
जो सुनती हरिते नहिं हेतू ❀ तौ द्वारिका जान किमि देतू ॥
ऐसी भांति नारि समुझावे ❀ ब्राह्मणके मन एक न आवे ॥
भयो कहा तोहिं नारि अयानी ❀ देहिं लदाय लदा जिय जानी ॥
जेहि निज कर्म दरिद्र लिखावा ❀ तौधन धान्य धाम किमि पावा ॥
हरिसों प्रीति हमारी जैसी ❀ तू अजान जाने कह तैसी ॥
काहू भांति उचित यहनाहीं ❀ कृष्ण पास हम मांगन जाहीं ॥

कबहुं न कीजै मित्रसों प्यारी बातैं चार ॥
मांगन अरु दिलमें कपट लेन देन व्यवहार ॥
गरुअई अरु नेहु मान बड़ाई प्रेमरस ॥
जबहि कही कछु देहु यह पांचो तबहीं गये ॥

हमरे जो कछु लिखा लिलारा ❀ कोउन ताकर मेटन हारा ॥

सुनि बोली तब नारि सयानी ❀ सुनहु कंत तुम सब गुण खानी ॥
ऐसो मति असुझो मनमाहीं ❀ धन कारण भेजत हरि पाहीं ॥
हरि दर्शन अति सरस सुहायो ❀ यह रस बिना भाग्य किन पायो ॥
मांगनते लजात मन माहीं ❀ दर्शन को तो पिय डर नाहीं ॥
करत यही कारण मित्राई ❀ सुख दुख में नित होत सहाई ॥
नारी इष्ट मित्र मन इच्छा ❀ बिपति परै तब करे परिच्छा ॥
जोन अबहिं हरि होयँ सहाई ❀ कौन काज आवै मित्राई ॥
यदुकुल चन्द्र लोक तिहुँगांई ❀ तासु द्वार पिय जात लजाई ॥
संध्या करत पढ़त श्रुति मन्त्रा ❀ मांगत कन्त जाहु भगवन्ता ॥

घर घर ओ..त कर फिरत तनिक अन्न के काज ॥
काहूकहौं पिय शुद्ध चित तहाँ न आवत लाज ॥
मानहु कहो हमार जाउ द्वारका प्राणपति ॥
यदुपति जगदाधार करहिं कृपा कछु जानि जन ॥

बोले तबहिं सुदामा बानी ❀ जाहु जाहु पियअसनकठानी ॥
जिन प्रिय पूर्वदान नहिं कीन्हा ❀ तिनहिंन प्रभुसुखसंपतिदीन्हा ॥
मूरख भई गई मति तेरी ❀ बात कौन बूझे वह मेरी ॥
तोहिं कहा कहिके समुझावौं ❀ हौं दुखिया कहँ पैठनपावौं ॥
जीवन अल्प रहो प्रिय आई ❀ हरि को होउँ कनौड़ो जाई ॥
बैठत प्रभु निज जोरि समाजा ❀ तहां जात मोहिं लागत लाजा ॥
कहँलग कहौं सो दम्पतिबानी ❀ कह्यौं सुदामा बिप्रबखानी ॥
यद्यपि जाउँ कहे प्रिय तोरे ❀ अक्षत चारि भेट नहिं मोरे ॥

दो० यह सुनिकै तब ब्राह्मणी गई परोसिन पास ।
पावसेर चावल लिये आई सहित हुलास ॥

बांधि डुपटिया खूंट सुदामा ❀ चले मनाय गणाधिप नामा ॥

मांगत खात चलो द्विज सोई ❀ लखि द्विज दीन देइ कोइ कोई ॥
मगमें आवत विप्र सुदामा ❀ पहिंचानिहैंमोहिं नहिंघनश्यामा ॥
बालापन की प्रीति बिहारी ❀ समुझैंगे की नाहिं मुरारी ॥
वस्त्रहीन मैं दीन भिखारी ❀ जैहौं कस हरि सभामँझारी ॥
क्यों प्रतिहार जान मोहिं देहैं ❀ कैसे जाय कृष्ण सो कैहैं ॥
सकल महीपति जिनहिं जुहारैं ❀ सो कैसे मम ओर निहारैं ॥
कोउ उपाय हरि सन्मुख जैहौं ❀ कहाँ ठौर बैठन को पैहौं ॥
द्वारपाल कहिहैं हटि जाऊ ❀ तब मैं करिहौं कौन उपाऊ ॥
तबतो हँसी होय जग भारी ❀ फिरकस ऐहौं नगर मँझारी ॥
लोग हँसैंगे दै दै तारी ❀ मुख दिखावनो परिहै भारी ॥
मरण होय सब लोगन माहीं ❀ भीखहु मोहिं देइ कोउ नाहीं ॥

दो० हमको लोभी कहैंगे सब जगके नर नार ।
कहूं खिजावै तब नारिको यह मोहिं अधिक बिचार ॥

सो० चलहिं कदम दो चार पुनि पाछे को पग धरैं ।
सोचहिं बारम्बार कौन पाप मैं फँसि गयो ॥

दीन दैव मोहिं बिपति घनेरी ❀ आश कौन पुजवै यह मेरी ॥
अहो विधाता बिपति बिदारण ❀ क्योंमोहिं दुःख देत बिनकारण ॥
जो कदापि मैं घर फिरजाऊं ❀ नारि न चैन देय तेहि ठाऊं ॥
दोउ भांति सों मरण हमारो ❀ बिधि मोहिं भले पापमें डारो ॥
जो न सुनौं पतनी के बैना ❀ घरमें कलह रहे दिन रैना ॥
जो जाऊँ मैं जहां बिहारी ❀ तहँ न सुनै कोउ बात हमारी ॥
लौटत जात और बहु शोचत ❀ चक्र समान नैन जल मोचत ॥
तीन दिवस यहिभांति सुदामा ❀ चले दिवस निशिउर घनश्यामा ॥
बाट श्रमित निद्रा कहुँ आई ❀ सोयरह्यो द्विज घास बिछाई ॥

दो० अन्तर्यामी आपहरि जानिभक्ति की पीर ।
सोवत लै ठाढ़ो कियो सासुन्दर के तीर ॥
तहां समुन्दरदरशाते अति प्रसन्नतेहिचित्त ।
पुनि तहँपर स्नान करि कीन्होनित्तनिमित्त ।
भाल तिलक सुन्दर दियो गहीसुमरनीहाथ ।
देखिजाय लखि द्वारका भयो अनाथसनाथ ॥

चारिहु ओर समुद्र बिराजै ❀ ताके बीच द्वारिका छाजै ॥
दीख सोबरण कोट सोहावा ❀ कुलिश कपाट अरुणछविछावा ॥
एक एकते भवन सोहाये ❀ सबमणि आकृत काम बनाये ॥
दृग चकचौंधि गये द्विज केरे ❀ एकते एक अधिक गृह हेरे ॥
बन उपवन लखि सुन्दर बागा ❀ द्विजके मन उपजो अनुरागा ॥
कहुँ कहुँ पुष्पवाटिका न्यारी ❀ तिनमें फूलिरही फुलवारी ॥
भांति भांति खगपरम सोहावन ❀ बोलि रहे बोली मन भावन ॥
बरणि न जाय नगर की शोभा ❀ सोछबिलखिशिवअजमनलोभा ॥

दो० शोभा निरखत विप्रतहँ गयो नगर के बीच ।
जहँमन्दिर श्रीकृष्ण को पहुँच्यो तहँ मन हीच ॥
शोभावरणि न जाय भयोचकितचितलखिभवन ।
रही भवन में छाय तीनभुवन शोभामनहुँ ॥

तहां सकल जनसाधु समाना ❀ हरि चर्चा कहुँ कथा पुराना ॥
पुरजन द्विजहि दीन अतिदेखी ❀ धायचरण गहि पूँछ बिशेषी ॥
कित आगम कीन्ह महराजा ❀ देहु बताय भवन ब्रजराजा ॥
दीन जानि केहुँदीन बताई ❀ कृष्ण पौरि गवन्यो सकचाई ॥
द्वारपाल तहँ खड़े ललामा ❀ विप्र जानिकियो दंड प्रणामा ॥

कौन देशते कियो पयाना ❀ कहो कृपाकरि कृपा निधाना ॥
कौन काज इतको पगुधारो ❀ महाराज कह नाम तुम्हारो ॥
द्राविड़ देश हमारो धामा ❀ कृष्णमित्र ममनाम सुदामा ॥
द्वारपाल हरिके ढिग आयो ❀ द्विजको सब संदेश सुनायो ॥
शीश पगान झँगातन मानी ❀ नहिं जानो सोरहत कहाहीं ॥
लटीसी फटी धोती नहिं आना ❀ दुर्बल देह पाद नहिं त्राना ॥
द्वार खड़ोलखि चकित धामा ❀ तुमहिं मित्र कहै नाम सुदामा ॥

दो० राज काज छांड़ो सकल सुनत सुदामा नाम ।
सिटपिटातपटलखिनकछु उठे झपटिझटश्याम ॥

दोउ करजोरि परे पद जाई ❀ लोचन जल सरिता बहि आई ॥
पोंछत पग छांड़त हरि नाहीं ❀ मोहिंपति आत लजात सो नाहीं ॥
द्विजकी चरण रेणु सुखदाई ❀ कमल नैन लै शीश चढ़ाई ॥
हरिगति लखि अति डरो सुरेशा ❀ झपो कल्प द्रुम कपो धनेशा ॥
कृष्णचन्द्र पुनि कर गहिलाये ❀ सिंहासन पर तेहि बैठाये ॥
पग धोवन कहँ आनि पराता ❀ बैठत चरण गहेउ जन त्राता ॥
षोडश सहस रानि हरि केरी ❀ प्रभुकी प्रीति चकित रहिंहेरी ॥
मनमहँ तर्क करैं पटरानी ❀ नहिंकछु तिन प्रभुकीगतिजानी ॥

दो० लै आये हरि भवनमें को यह दुर्बल दीन ।
आजजनै कह ह्वैगयो हरितौ परम प्रबीन ॥

देखैं पुनि पुनि कृष्ण मुरारी ❀ मित्र कौनगति भई तुम्हारी ॥
हाय मित्र बड़ पाव कलेशा ❀ आये इत न रहे केहि देशा ॥
पानि परात छुयो नहिं हाथा ❀ लोचन जल धोये पद नाथा ॥
धोय चरण पट पीत मँगावा ❀ पोछत कृपासिंधु सुखपावा ॥

छंद गीतक ॥

अति चकित रुक्मिणि आदि भामिन मनहिं मन तिन अस कहा
केहि पुण्य के परताप कर हरि किहिन है आदर महा
कटि बीच पट अति मलिन बांधे शीश पाग महाफटी
अति दीन दारिद थाहि घेरे भाग्य याकर अति लटी
अन्तर्यामी श्याम जानिगये तिन मनगती ।
यहि कारण गुरुधाम बात करन लागे तुरत ॥

हम तुम गुरु सांदीपन धाई ❀ विद्या पढ़त रहे इक ठाई ॥
सो गुरुदेव परम सुखदाई ❀ महिमा तिनकी कही न जाई ॥
एक अक्षर पढ़िये जेहि पाहीं ❀ तहिते उऋण हूजिये नाहीं ॥
हमने सब विद्या पढ़िलीनी ❀ टहल गुरूकी कछुनहिं कीनी ॥
जे नर कर्म धर्म पहिंचानैं ❀ गुरु गोबिन्द एककर मानैं ॥
संथा हमहिं भूलिजब जाती ❀ तुम शिक्षा देते दिन राती ॥
यहि कारण तुम गुरू हमारे ❀ नहिं भूलत उपकार तुम्हारे ॥
वादिन की सुधि है कै नाहीं ❀ हम तुम गये रहे बनमाहीं ॥
ईंधन हेत पठै गुरुनारी ❀ रहे क्षुधित बासरभरि झारी ॥
धरिकै बोझ चले जेहि काला ❀ बरषन लग्यो मेघ तेहिकाला ॥
अतिकारी आंधी पुनि आई ❀ तब तरुवर तर रैनि गँवाई ॥
कहँलगि कहौं गुरूकी बाता ❀ ढूंढ़त हमहिं तुमहिं बिलखाता ॥
होत प्रात व्याकुल गुरु आये ❀ हमहिं तुमहिं बनते गृह लाये ॥
गुरु गृहते बिछुरे तुम भाई ❀ तबते आजु दर्श दिये आई ॥

दो० जबलग तुम्हरे सँग रहे तुम सुख दिये अपार ।
कछुनहिं हमसो बनसक्यो हम अति मूढ़गँवार ॥
सत्राजीत कुमारि ताहिबोलि प्रभु अस कहेउ ।

कीजिय पाकसम्हारि सुनतचलीअतिमुदितमन ॥

बहुरि बिहँसि बोले भगवाना ❀ सुनहु सुदामा मित्र सुजाना ॥
अधिक प्रीति कर देखन आये ❀ हमको कहौ भेंट कह लाये ॥
भाभी दियो सो काहे न दे तू ❀ गाठरि चापि रहेउ केहि हेतू ॥
आगेहु चना बांधि गुरु भाई ❀ तुम चाबे हमको न दिखाई ॥
हौ तुम तस्कर कर्म प्रवीना ❀ तस भाभी के तंदुल कीना ॥
पाछिल बानि अजहुँ नहिं गयऊ ❀ असकहि बसन खैंचिप्रभुलयऊ ॥
छोरत हरि द्विजअति सकुचाई ❀ पुनि पुनि बसन बिलोकतजाई ॥
छोरत पट फाटेउ तेहि ठौरा ❀ बिथरि गये बरभावर चौरा ॥

यक मूठी भरि तेहि समय चाबे दीनदयाल ।
मनमें अति आनँदहइ कहन लगे तेहि काल ॥

अबलौं बहुत अन्न हम खायो ❀ ऐसो स्वाद कबहुँ नहिं पायो ॥
भोजन नित्त होत गृह माहीं ❀ ऐसो स्वाद होत सो नाहीं ॥
यशहिं सराहि सराहि मुरारी ❀ दूजी मुठि बहुरि मुख डारी ॥
भवन भरे अगणित पकवाना ❀ कबहुँन प्रीति करत भगवाना ॥
भूसुर कोउ परम दुखदीना ❀ तन्दुल लाय भेंट हरि कीन्हा ॥
प्रीतिकी रीति निबाहन काजू ❀ देख चबात रमापति आजू ॥
सुरनर मुनि अरु तिहुँपुरमाहीं ❀ शोर परे अति बरणि न जाहीं ॥
मुठी तीसरि भरेउ उठाई ❀ तब रुक्मिणी गहेउ कर धाई ॥
कहु पिय यहधौं कौन मिलापू ❀ बिप्र आपु सम द्विज सम आपू ॥
जो त्रिभुवन पति होय सुदामा ❀ कहां रहौ तुम कहँ हम भामा ॥
जानि बूझि तुम भये अयाने ❀ शिवकी नाईं तुमहुँ भुलाने ॥
यह सुनिकै बिहँसे यदुराई ❀ भली बात तुम प्रिया जनाई ॥

दो० कहँलग शुभगुण विप्रके तुमसे करहुँ बखान ।

रुक्मिणिसोंअसकह्योहरियहमोहिंप्रियसमप्रान ॥
सो० है यह परमप्रवीन याहि न धनसों काज कछु ।
मम दरशन में लीन तीनलोक में अस नहीं ॥
ताहि समय श्रीकृष्ण सों कह्यो सेवकिनि आय ।
भई रसोई सिद्धि प्रभु भोजन करिये जाय ॥
विप्र सहित यदुनाथ जी धोती पहिरि बनाय ।
सन्ध्या करि मध्यान्हकी चौका बैठे जाय ॥
कनकथार भर भोजन नाना ❀ धरयो मित्र आगे भगवाना ॥
भोजन कीन्ह परमहित मानी ❀ जेंय उठे द्विज अरु धनुपानी ॥
करि आचमन सेज पुनि आयो ❀ गयोसोय द्विज अतिसुख पायो ॥
तब हरि शोच कियो मनमाहीं ❀ या द्विजके इच्छा कछु नाहीं ॥
याहि ब्राह्मणी पेलि पठायो ❀ धनके काज विप्र इत आयो ॥
याके तो इच्छा कछु नाहीं ❀ अति निर्मोह रहै जगमाहीं ॥
विश्वकर्महिं पुनि नाथ बुलावा ❀ विप्रनगर तेहि जाय बनावा ॥
रच्यो नगर द्वारका समाना ❀ भेद न जाने कोइ सयाना ॥
दो० नगरसुदामा विशद अति विश्वकर्म्मा सबभांति ।
सुभग मनोहर सुखद सो रच्यो एकही राति ॥
महल अनेक विचित्र बनावा ❀ शोभा कहत शेष सकुचावा ॥
अन्तापुर विरच्यो बहुनीका ❀ अमित भांति लायो मणिनीका॥
सुवरण कलश विचित्र बनावा ❀ यासों गृह अति शोभा पावा ॥
शतमहला चहुँओर विराजै ❀ मंगल मय माणिक बहुभ्राजै ॥
सभाभवन अति रुचिर बनावा ❀ चित्र विचित्र रंग बहुछावा ॥
मुक्ताजाति अनेक लगाई ❀ मध्यभवन झालर लटकाई ॥

हाट बाट बहुभांति सँवारा ❀ वस्तु अनेक न पारा वारा ॥
देखत बनै बरणि नहिं जाई ❀ विश्वकर्म्मा ज्यों रच्यो बनाई ॥
दो० पुरी सुदामा को विरंचि सकल रत्न की खानि।
गुणसमूह निज प्रकटकिय, कृष्ण प्रीतिजियमानि ॥
अनुपम भूषण विविधि बनावा ❀ प्रियवधू लखि अति सुख पावा ॥
वस्त्र अनेक भांति जग जोई ❀ विश्वकर्मा प्रकट्यो छण सोई ॥
हरित पीत अरु ललित ललामा ❀ ऊन सूत अरु रेशम नामा ॥
यहिविधि प्रकटि ब्राह्मणिहिंदीना ❀ उठि सब वस्तु हर्ष सो लीना ॥
वस्त्र अभूषण धारण कीन्हा ❀ विशकर्मा को आशिष दीन्हा ॥
सेवाहित बहुलोग लुगाई ❀ विशकर्म्मा संग कियो बनाई ॥
गृह गृह में धरि सम्पतिनाना ❀ आयो बहुरि जहां भगवाना ॥
कृष्णहि सब वृत्तान्त सुनावा ❀ विशकर्म्मा प्रभु के मन भावा ॥
सात दिवस रहि विप्र सुदामा ❀ मांगी बिदा चल्यो निज ग्रामा ॥
कृष्णचरण अरविंदको शीशनाय करजोरि।
दीन्हेउनाथ न हाथकछु चल्योस्वदेशबहोरि ॥
कृष्णचन्द्र सुखधाम पहुँचावन द्विजको चले।
बोले द्विजसों श्याम दर्शन फिर भी दीजियो ॥
द्विज अपनेही शोचमें मोहन बरते नीति।
दुखको कोउ संग नहीं लोग दिखाऊ प्रीति ॥
बहआदरकी भांति बहु पुलकनिबहु उठिमिलनि।
कछू न जानी जाति वह पठवनि गोपालकी ॥
शोच करन लाग्यो द्विजराई ❀ लाग्यो हरिकी करन बुराई ॥
मैं कब आवत हौं हरि नेरे ❀ पाछे परी ब्राह्मणी मेरे ॥

ठेलि पेलि मोहिं यहां पठायो ❀ यहां आय सब भरम गँवायो ॥
अमित सम्पदा कंचन धामा ❀ अपने कर्म न कीनेउ कामा ॥
तब हिय मोहिं न आवत भावा ❀ तिय सुठि हठकरि मोहिंपठावा ॥
आखिर तो यह वही कन्हाई ❀ ग्वालिनियों की छांछ चुराई ॥
संतति के तो आप भिखारी ❀ मोको कह देते बनवारी ॥
बावनह्वै बलि द्वार सिधाये ❀ हाथ पसारत नाहिं लजाये ॥
दधिके कारण हाथ बँधाये ❀ ग्वालिनियों के गुलचे खाये ॥
घरघर तनिक मही के काजा ❀ हाथ पसारत होतनिलाजा ॥
शिशुपन परम मित्र हरि मोरा ❀ तेहिते शाप देहु कह घोरा ॥
यदुकुलचन्द्र दीन्ह मोहिं जैसा ❀ पावहु तथा शाप मम तैसा ॥

भली प्रीति पाली तुमन धन्य कृष्ण महराज ॥
गुण अवगुण सब आपके मैंने जाने आज ॥

कहन जाय सुनु प्रिय अलबेली ❀ लायउँ धन अब धरहु सकेली ॥
बहुरि बिप्र समुझो मनमाहीं ❀ विघ्न अनेक होत धन माहीं ॥
धन मद पाय बढ़े मोहादिक ❀ लालच तृष्णा अरु क्रोधादिक ॥
धन को लागहिं चोर लबारा ❀ धनमद जाल महा संसारा ॥
धनपाये हरि भजन न होई ❀ कबहु धनी निशि चैन न सोई ॥
यहिमिस हरि को दर्शन पायों ❀ तीन लोक को धन जनु लायों ॥
निजातियको प्रबोध अबकरिहौं ❀ धनसे इच्छा कबहुँ न धरिहौं ॥
सकल आयु बीती यहि भांती ❀ अन्त कहा धन लावों थाती ॥
भिक्षा भोजन अरु हरि भजना ❀ है निर्बिघ्न उचित सब द्विजना ॥
मित्रजानि दाया हरि कीनी ❀ ताते सम्पति मोहिं न दीनी ॥
याबिधि मनमें करत बिचारा ❀ पहुँचो द्विज निज नगर मझारा ॥
सुन्दर राज समाज न थोरा ❀ कंचन धाम बने चहुँ ओरा ॥

अपनी कूटी छानि न पायो ❀ मंदिर देखि बहुत घबरायो ॥
सकल नगर चहुंओर मझायो ❀ कहीं कुटी को खोज न पायो ॥
तब शोचत द्विज राज मन भले मिले हम मीत ॥
इतको खोई ब्राह्मणी उत खोई परतीत ॥
बकत झकत मन करत बिचारू ❀ आयो जहां राज दरबारू ॥
हे विधि कौन नगर मैं आवा ❀ निज झोपरी न खोजेउ पावा ॥
द्वारपाल बैठे नृप द्वारे ❀ भूषण बस्त्र शस्त्र शुभ धारे ॥
तिन सों पूछत बिप्र सुदामा ❀ मंदिर यह केहिके अभिरामा ॥
हे महराज कौन यह देशा ❀ करै राज्य यहँ कौन नरेशा ॥
नाम सुदामावती अनूपा ❀ बिप्र सुदामा कहिये भूपा ॥
यह सुनि बहुत हँस्यो द्विजराई ❀ देखहु हरिने हँसी कराई ॥
कहै पौरिया भवन तुम्हारे ❀ कहैं सुदामा नाहिं हमारे ॥
हँसी करौ नहिं जानहु दीना ❀ इन बातन को परम प्रवीना ॥
कुटी बतावहु मोहिं प्रवीना ❀ जहां ब्राह्मणी दीन मलीना ॥
तबै ब्राह्मणी चढ़ी अटारी ❀ पति आवन लखि परम सुखारी ॥
अतिशय चित्त माहिं हरषानी ❀ बोलि सपदि बर नारि सयानी ॥

छन्दगीतक ॥

बर नारि बोलि सयानि मंदिर बसन भूषण साजहीं ॥
शृंगार करि पुनि गवनि नूपुर किंकिणी बहु बाजहीं ॥
चतुरंग जलचर केतुकी जनु सकल सुन्दरि गावहीं ॥
इहि भांति द्विजवर नारि हिय सुख मुदित बिहँसत आवहीं ॥
गई निकट जबकंत के चरण बन्दि कर जोर ।
मृदुल मनोहर बचन हँसि बोली नयन मरोरि ॥
चलिय नाथ किन आपन गेहा ❀ प्रकट कीन हरि तिहुँ पुर नेहा ॥

मोकहँ कंत कहत किमि नारी ❀ मैं कबहुँन परनारि निहारी ॥
मैं तुम्हारि सोइनारि पियारी ❀ समुझि देखिये कंथ बिचारी ॥
नाथ कृपा प्रभुता यह पाई ❀ दीन्ह मोहिं हरि सुन्दरताई ॥
लघुमंडली बसत मम नारी ❀ मणिमय कृत यह हेम अटारी ॥
वह पहिरे पट मोट खसीना ❀ दुर्बलतन अतिबदन मलीना ॥
तुम अनुहारि हमारी प्यारी ❀ सुनत बचन बिहँसी बरनारी ॥
सुनु मम प्राण सजीवन मूरी ❀ नाथ कृपा से दारिद दूरी ॥
तुम पंडित परमारथ ज्ञानी ❀ देखि विभवकिमि करतगलानी ॥
नाथ वही मैं नारि तुम्हारी ❀ दीन्ह मोहिं अतिरूप मुरारी ॥
पुनि पुनिकंत कहत मोहिंपाहीं ❀ नारि समाज लाज तोहिं नाहीं ॥
चंद्र सरिस तब रूप निहारी ❀ मानहुँ बिश्व नरेश पियारी ॥

मम बनितापर मोट पट भूषण दीन दुखारि ।
बसत सो याही ठौरही कछु तेरी अनुहारि ॥

जानि बिप्र उर संशय भारी ❀ सुनि सुनि बचन हँसै नरनारी ॥
सुनपति गिरा नारि मुसकानी ❀ बोली मधुर मनोहर बानी ॥
तुम पाछे बिश्वकर्मा आये ❀ तिन मन्दिर पल मांझ बनाये ॥
भूषण बसन रूप धन नाना ❀ पठय कृपाकरि सो भगवाना ॥
पुनि द्विज तियहि परीहठरौती ❀ दीन्ह डारि पुनि तवा कठौती ॥
हँसि हँसि तिय पिय को समुझावै ❀ सकल चिह्न पुनिठौर दिखावै ॥
तब द्विज देव जानि निज नारी ❀ गयो सकल भ्रम संशय भारी ॥
तब तिय साथ गयो गृहमाहीं ❀ देखि विभव संशय मन माहीं ॥

भलो बुरो घनश्यामको हाय कह्यो मैं आज ।
लाज लजावैंगे अधिक जो जनिहैं ब्रजराज ॥

दासी सकल करैं सेवकाई ❀ शुचि सुगंधि उबटन लै आई ॥

सो लगाय अस्नान करायो ❀ रुचिर सिंहासन पर बैठायो ॥
आय प्रिया आरती उतारी ❀ चरणन माहीं परी सो नारी ॥
विप्र सुदामा अति सकुचायो ❀ मनमें अति संदेह बढ़ायो ॥
लखि उदास पति को शिरनाई ❀ बोली भूसुर नारि सुहाई ॥
प्रभुता पाय सबन सुख माना ❀ मे उदास किमि जीवन प्राना ॥
कह द्विज प्रिया ठगो जग जानै ❀ संत वृथा सुख जाकर मानै ॥
मैं कृपाल मांगेउँ नहिं तोहीं ❀ दीन व्याधि यह नाहक मोहीं ॥
मेरी प्रीति प्रतीति न कीन्हीं ❀ भक्ति भजनमें बाधा दीन्हीं ॥
यद्यपि नहिं मांगेउँ तुम स्वामी ❀ वे दयालु सब अन्तर्यामी ॥
मोहिं बासना धनकी रहेऊ ❀ सो कृपालु परिपूरण दयऊ ॥
सुनत गिरा द्विज मन हरषाना ❀ बैठ पलँग जनु ब्रह्म समाना ॥

मणिमयमन्दिर तबलखे भयो चकितमन माहिं।
यहि समान दोउलोकमें और ठौर कहुँ नाहिं ॥

परम मनोहर सभा जो देखी ❀ इंद्रसभा सम आदि बिशेषी ॥
पुनि द्विजने अपने मन जानी ❀ मोपर कृपाकरी सुख दानी ॥
जिनको मन उदार जग माही ❀ जो कछुदेत कहत वेनाहीं ॥
मैं मतिमन्द अन्ध अज्ञानी ❀ हरिके मनकी बात न जानी ॥
दीन दयाल नाम जिनकेरो ❀ कैसे करत भलो नहिं मेरो ॥
सुनितिय कहत सुनहु पिय प्यारे ❀ क्यहि बिधि भेंटे मित्र तुम्हारे ॥
क्यहिबिधि तुम्हरो आदर कीन्हे ❀ कौन भांति तंदुल तुम दीन्हे ॥
देखि तुम्हारी दुर्बल देही ❀ तब बोले कह श्याम सनेही ॥
जब तुम खाली हाथ सिधारे ❀ तब कह आई मनहिं तुम्हारे ॥
कैसे वचन कहे यदुबर को ❀ सब वृत्तान्तकहो तेहि छिनको ॥
यह सुनि द्विज वृत्तान्त सुनावा ❀ सुनत नारि अतिही सुखपावा ॥

तब दम्पति मांगी यह बाता ❀ हरिको नहिं भूलूं दिनराता ॥

अन्त न पावत संत जन हरिकी कथा अनंत ।
कियो बिप्र क्षण एक में निर्धनते धन वन्त ॥
बिनहरि दीनदयाल को मानैं अस प्रीति करि ।
गोब्राह्मण प्रतिपाल करत सदा गोपालजी ॥

धनि धनि कृष्णचन्द्र सुख धामा ❀ धन्य धन्य द्विज राज सुदामा ॥
हरिकी देखहु सुन्दर रीती ❀ करत सदा भक्तन पर प्रीती ॥
द्विज के जब से तंदुल खाये ❀ सो अबलों हरिनाहिं भुलाये ॥
जगन्नाथ महँ दया निकेता ❀ भात खात नित भक्त समेता ॥

क०- कै वह टूटीसी छानि हुती अरु कै बर कंचन धाम सुहावत ।
कै पगकी पनहीं न जुरैं कै लै गजराज चढ़े सुख पावत ॥
कै भूमि कठोर पैरात्रि कटै कै उज्वल सेजपै नींद न आवत ।
कै जुरतो नहिं कोदो सवां कै मेवा सुभोग नहीं मन भावत ॥

धन्य धन्य यदुबंश मणि दीननपै अनुकूल ।
धन्यसुदामा सहिततिय कहि वर्षहिंसुरफूल ॥

छंदगीतक ॥

याहि द्विज सुदामा की कथावर सुनहिं जौन सुनावहीं ।
सो सर्व सुख जग भोग करिके अन्त हरि पुरजावहीं ॥
पुनि नित्य नारायण हरी हर सुमिरि संकट नितकटैं ।
भवसिन्धु बिचहरि नामनौका भक्तजन नितप्रतिरटैं ॥

जो नर चित्त लगाय पढ़ै सुदामा की कथा ।
तापर होयँ सहाय नारायण घनश्यामजी ॥
विश्वकर्मा जेहि बिधि रची पूरी सुदामाजाय ।
दुर्गा सो वर्णन कियो कृष्ण चरण चित लाय ॥

इति श्री सुदामा चरित्र व पंचमकांड समाप्तम् ॥

* श्रीसरस्वत्यैनमः *

* अथ *

॥ विश्वकर्म्म शिल्पसागर ॥

* दुर्गादास कृत *

* छठा काण्ड *
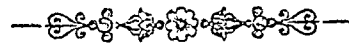
॥ विश्वकर्म साङ्गीतपद ॥

१ मंगलाचार–सब मिलि करहु मंगलाचार, इस उत्सवमें आनेवाले ॥ टेक॥ धन्य धन्य हरि जग कर्तार, तुमही सबसुखके भंडार, प्रभुतेरी महिमा बड़ी अपार, सबको धर्म दिलाने वाले ॥ सब० ॥ १ ॥ है यह प्रभु जी सभा तुम्हार, आपहि याको करहु सुधार, कीजै वैदिक धर्म प्रचार, धर्म के सेतु बनाने वाले ॥ सब० ॥ २ ॥ आये भाइ बंधु मेहमान, पंडित उपदेशक विद्वान, करती भजन मंडली गान, सत उपदेश सुनानेवाले ॥ सब० ॥३॥ गाओ बिश्वकर्मा धनियाद, सुनैंगे सुहृत की फिरियाद, करैंगे पूरी सभी मुराद, प्रभु हैं दुःख मिटाने वाले ॥ सब० ॥ ४ ॥ कृपा कीजिये दीनदयाल, दिन दिनहो यह सभाबिशाल, रक्खैं सदाधर्म का ख्याल, सत वेदोंकी आज्ञा पाले ॥ सब० ॥ ५ ॥ होवैं बाल तेज तप धारी, ईश्वर करैं बनै उपकारी, गुरु से पढ़ै–रहैं ब्रह्मचारी, उत्तमशिक्षा पानेवाले॥सब०॥६॥ राखो दुरगदासबिश्वास, पूरी करैं प्रभूजी आस, रहना बिश्वकर्मा पद पास, दासकि प्यास बुझाने वाले ॥सब० ॥ ७ ॥

२ चेतावनी–सुनो को कास मेरे प्यारे धरम क्या २ तुम्हारे हैं ॥ टेक० ॥ बढ़ाओ मेल अपने में, करो मति बैर सपने में, मज़ा कुछ है न तपने में यह दो दिन के उजारे हैं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ यह हम सब एकही भाई, अहैं एक बंश के जाई, रहो हिल मिल के एक जाई, इसीसे सब सुधारें हैं ॥ सुनो ॥ २ ॥ मिटाओ कुल कुरीतोंको, निबाहो न्यायनीतोंको, सँभालो सब सुरीतों को, जो वेदों ने पुकारा है ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ बनाकर शिल्पशालौं को, सिखावो शिल्पविद्या को, सुधारो उनके चालो को, यही करतब तुम्हारा है ॥ सुनो० ॥ ४ ॥ अविद्या बस निकल भाजै, घरो घर ज्ञान गुण गाजै, हृदय में सभ्यता राजै, सभी संकट किनारे है ॥ सुनो० ॥ ५ ॥ नियम बिश्वकर्मा के पालो, उन्हें मत भूल कर टालो, कहै दुर्गा य प्रति पालो, यही बिनती हमारीहै ॥ सुनो ॥६॥

३ लावनी-तुम सुनो कुशिक कुल सब मेरे हो भ्राता ॥ एक विनय करत करजोरि सर्व सुख दाता ॥ टेक ॥ आलस त्यागो तन से मेरे हे भाई, साहस करि २ आगे दो कदम बढ़ाई ॥ जाते बिगरी ये बात सबै बनि जाई, नहिं लागे दूषण भूषण परै लखाई ॥ अब चेत करो नाहीं तो सर्बस जाता ॥ एक विनय करत० ॥ १ ॥ जो अब पिछड़े तो पीछे है पछिताना, यह गया वक्त नहिं हाथ कभी फिर आना ॥ नादान बनो मत यार बनो अबदाना, नहिं अन्य जाति के लोग देईंगे ताना । याते सब श्रेष्ठ सुजान सुनो मेरि बाता, ॥ एक बिनय करत० ॥ २ ॥ सब मिलि जुलि के तदबीर यही अब करिये, करि नगर नगर में सभा दुःख सब हरिए । आलस कुबुद्धि जड़ता को दूर निकरिए, विग्रह विरोध के फंदे में ना परिये । फिर जग में कैसा प्रबल प्रताप दिखाता ॥ एक बिनय करत० ॥ ३ ॥ अब करते हो क्यों देर कमर कसि लीजै, दिन दिन गरुई है ज्यों२ कामर भीजै । सब सुनो सभासद सभाका अमृत पीजै, अपनी सम्मति देने को आया कीजै । कहैदुर्गादास विश्वकर्मासरणसुनाता ॥ एक बिनयकरत०॥४॥

४ ॥ लावनी-सुधरना अपनी जातों का-कहो किसको न भाता है । वह सचमुच नर नहीं हैगा न जिसको यह सोहाता है ॥ टेक० ॥ तरक्की जाति की कीन्ही, उसीका जगमें है जीना । न तो संसार चक्रों में कवन आता न जाता है ॥ सुधरना० ॥ १ ॥ अविद्या जब तलक प्यारे, घुसी है अपनी जातो में । तबी तक जाति उन्नतिका न दौरा आने पाता है ॥ सुधरना० ॥ २ ॥ तबाही जातिकी प्यारे, कहो कब तक निहारोगे । दशा अब देखकर आँसू, भरा आंखों में आता है ॥ सुधरना० ॥ ३ ॥ उठो सब जाति के प्रेमी, करो तदबीर तन मन से । पढ़ाओ खूब बिद्या को, अभी संकट मिटाता है ॥ सुधरना० ॥

४ ॥ कमर कस २ के लगजाओ, घरों घर जाय सिखलाओ । बिना विद्या सुनो प्यारे, न उज्ज्वल दिन दिखाता है ॥ सुधरना० ॥ ५ ॥ नसीबा हो नहो तो भी मगर विद्या जो है कामिल । मज़ा एक बार दोलत का, उसे ईश्वर चखाता है ॥ सुधरना० ॥ ६ ॥ सहारा श्याम का लेकर, भलाई जाति की करनी । यही है सार दुनिआं में, सुनो दुर्गा ये गाता है ॥ सुधरना० ॥ ७ ॥

५ भजन—सुनौशिल्पकारो मेरी अब दोहाई, सुनों० ॥ करो कुछ ख्याल अब गफ़लत बिहाई ॥ टेक ॥ दशाथी तुम सबोंकी कैसी ऊँची, मगर वह जारही दिन दिन दबाई ॥ सुनो० ॥ १ ॥ कमाई ज़र ज़मीनों शान शौकत, बड़ों की हाय ! सब दीन्ही गँवाई ॥ सुनो० ॥ २ ॥ अविद्या से किये हो प्रीति प्यारे, इसीसे है हुई यह हीनताई ॥ सुनो० ३ ॥ कुशल अब भी जो सन्तानो कि चाहो, तो कर कोशिश उन्हें दीजै पढ़ाई ॥ सुनो० ॥ ४ ॥ बिना बिद्या न जग सन्मान होता,यही सिद्धांत लो मनमें बसाई ॥ सुनो० ॥ ५ ॥ रसम बचपन के शादी की मिटादो, इसी ने है दिया तुम को गिराई ॥ सुनो० ॥ ६ ॥ घरो घर धूम बिद्या का मचावो, अविद्या बीज बिल्कुल दो बहाई ॥सुनो० ७ ॥ कहै दुर्गा ये हिम्मत को न हारो, मदद भगवान की लीजै मनाई॥ सुनो० ॥ ८ ॥

६ भजन—सुनो सुत्हार औ शिल्पकार भाई, बनेहौ छोटे क्यों बिद्या गँवाई ॥ टेक०॥ पढ़ाओ खूब कोशिश करके विद्या ॥ करो इस में न किञ्चित् भी कचाई ॥ सुनो ॥ १ ॥ पढ़े बिन ज्ञान ईश्वर का न होता । पढ़े की शान अति अदभुत लखाई ॥ सुनो ॥ २ ॥ पढ़े बिन मर्म वेदों का न जानै । नतो निज धर्म्म का पहिचान पाई ॥ सुनो ॥ ३ ॥ पढ़े बिन रूप यौवन कुल बृथा है-पढ़ों के बीच में होती

हँसाई ।। सुनो ।। ४ ।। पढ़े बिन दुःख है क्या क्या कहूं मैं । सभा में बात बतियाते लजाई ।। सुनो ।। ५ ।। कहै दुर्गा अभी से तुम जो चेतो । करैं शिल्प देव तुम सबकी भलाई सुनो ॥ ६ ॥

७ भजन—जागी है शिल्पकार कि तक़दीर आजकल । उन्नति के हेत, होती है तदबीर आजकल ॥ टेक०॥ भाई शहर व गांव के आपुस में मिलगये । जकड़ी है ऐकताइ कि जंजीर आज कल ॥ १ ॥ कितने ही कारखाने अब शिल्पी के खुलगये । बिद्या की गुंज छाइ है गंभीर आज कल ॥ २ ॥ मिलती किताबै फ़ीस है लड़के गरीब के । चंदेक जोर हो रहा अकसीर आज कल ॥ ३ ॥ शाखा सभा के फैसले होतेहैं न्याय से आपुस में कुछ न उठतिहै तक़रीर आज कल ॥ ४ ॥ झगड़े तनाज़े रंज के चलते न हैंगे बस । विग्रह विरोध बैर हैं दिलगीर आज कल ॥५॥ दुर्गा हरी कि बंदना करिये सभासदों । कीन्हीं कृपा न थोरी पै गंभीर आज कल ॥ ६ ॥

८ भजन—देखो तो कैसा सुधार-सुधार-सुधारमेरे प्यारे ॥ टेक० ॥ देश देश के भाई महाशय, आयेहैं सभा मझार-मझार-मझार-मेरेप्यारे, देखो० ॥ १ ॥ मेल मिलापों के खम्भे गड़े हैं, उन्नति की बहती बयार-बयार-बयार मेरे प्यारे देखो० ॥ २ ॥ पंडित महानो सुजानोंके लेक्चर, करते धरमका प्रचार-प्रचार-प्रचार मेरे प्यारे, देखो० ॥ ३ ॥ सुंदर सुरागों में भजनो को सुन२, अवगुण का होता निकार-किनार-किनार मेरे, प्यारे ॥ देखो० ॥ पूरी भई दुर्गा की आसा थाप्यौ विश्वकर्म्मा दर्बार-दर्बार- दर्बारमेरे प्यारे ॥

९ ॥ भजन—(ग़ज़ल की लै में) ॥ नमो हो नमो विश्वकर्मा निरञ्जन । नमो हो नमो हो नमो दुःख भञ्जन । नमो हो नमो हो नमो हो विधाता । नमो हो नमो सर्व आनन्द दाता । नमो हो नमो

हो नमो सृष्टि कर्त्ता। नमो हो नमो दुःख दारिद्र हर्त्ता। नमो हो नमो हो नमो दीन बन्धू। नमो हो नमो हो नमो करुणासिन्धू। करो अब कृपादृष्टि मुझ पर कृपालू। नमो हो नमो दीनबन्धू दयालू। नहीं कोइ दुनियां में तुझसा है दाता। न तेरी दया बिन कोईशान्ति पाता। वो है जन अभागी तुझे जो भुलाता। पड़ा चक्र चौरासी में चक्र खाता। नमो नाथ बल बुद्धि के देन हारे। पड़ा दास अबतो शरण में तुम्हारे। हरो पीर जनकी व्यथा ताप तनकी। तुम्हें बादि किस्से कहूं बात मनकी। सिवा तेरे दीनों का दाता न कोई। मदद गार अपना दिखाता न कोई। हुआ तंग दुनियां से नाचारहूं मैं। दया का तेरी अब तलब गारहूं मैं। नमोनाथ निर्बंधहो हे निर्बिकारी। करो तीन तापोंसे रक्षा हमारी। मैं हूं दास दुर्गा अनुग्र तुम्हारी। मिलै भक्ति सिक्षा मुझे अब उदारी॥ १॥

१० ग़ज़ल—देव सुखदानि विश्वकर्म्मा हमारी अर्ज़ लीजै। फंसा भ्रमजाल दुनिया में दयाकर अब छुटा दीजै॥ सहायक कोई सम्बन्धी नज़र आता नहीं हमको। यहां खुदगर्ज़हैं सारे भरोसा कौन पर कीजै॥ १॥ दिलों में छा रही भारी अविद्या की घटाकारी। दुराचारी ने धरदाबा दया बुद्धीपै कर दीजै॥ २॥ जुआ चोरी दग़ाबाज़ी नशा व्यभचार अरु हिंसा। बढ़े दुष्कर्म दुनियां में धर्म अब दिन ब दिन छीजै॥ ३॥ सनातन धर्म बैदिक की करो रक्षा तुम्हीं स्वामिन्! ॥ शरण अपनी में लेकरके अभय दुर्गा को करदीजे॥४॥

११ भजन—जबसे छोड़ी कला शिल्पकारी। तब से होगया देश भिखारी॥ टेक॥ पहिले विद्यालय थे जारी ऋषि मुनि बनते ब्रह्मचारी॥ जी॥ जब से बैरन अविद्या पधारी॥ तब०॥१॥ नल नील इञ्जिनियर भारी। बांधा बांध समुद्र मझारी॥ जी॥ जबसे

हुई निर्बुद्धि तुम्हारी ॥ तब० ॥ २ ॥ यूरोप वालों ने चुम्बक कि शक्ति पाई । लिया कुतुबनुमा को बनाई ॥ जी ॥ तुम पै सुस्ती ने मोहनी डारी ॥ तब० ॥ ३ ॥ रेलें भाफ़ के बलसे चलाई । बिजुली तार खबर पहुंचाई ॥ जी ॥ तुमने कोई नबात बिचारी ॥ तब० ॥४॥ फोटू फोनू ग्राफ़ बनाये । खींची सूरत गाने सुनाये ॥ जी ॥ रबि देव की लखि उजियारी ॥ तब० ॥ ५ ॥ थर्मामीटर बैरोमीटर । नापे गर्मी व दाब हवा कर ॥ जी ॥ तुमको नैरन्द ये निंदिया है प्यारी ॥ तब० ॥६॥ ना तो भाकृति उन्नतिपाई । नहीं वेदों की विद्या फैलाई ॥ जी ॥ छूटी रचना विमानसवारी ॥ तब०॥७॥ उठो अब भी आलसको हटाओ । जो भी ढूंढोगे वह यहीं पाओ॥ जी ॥ कहे पाठक लो समझ अनारी॥ तब०॥८॥

१२ भजन—जोगिया धुन, ताल ३—समय रात ॥ चर्खा काया रूप प्रभुने, अजब बनाया है ॥ टेक ॥ गर्भक्षेत्र में पिन्डा गढ़कर, हाड़ मांसकी पङ्खड़ि मढ़कर । इन्द्रिय खूंटे लगा कैसा तन तनसा बढ़ाया ॥ च० १ ॥ रग पट्ठों की मढ़ अदवायन, बुद्धि माल बतलाई साधन । मन का तकला डाल मास नवमें दरशाया है ॥ च० २ ॥ चित्त रूप हथकी रच सुन्दर, कर संकल्प रूप भेरे पर । कर्म रुई का तार जीवकातन बैठाया है ॥ च० ३ ॥ शुभ अरु अशुभ तार कई भांती, ज्ञान ईश में रह पांती २ । जैसा काते तार वैसा चर्खा कतवाया है ॥ च० ४ ॥ ये चर्खे हैं लख चौरासी, न्याय पूर्बक कोई मिल जासी । उत्तम मनुज स्वरूपा बड़ी, मुश्किल से पाया है ॥ च० ५ ॥ जब निष्काम तार बन जावे, तब कुछ दिन चर्खा छुटपावे । इस छूटन की आश ने तुमको यहां बुलाया है ॥ च० ६ ॥ परिमित चाल अवधि भी परिमित, भूल भुमाते हो । हा ! जित तित पाठक समझो सार इसे कब किसने । गढ़ाया है ? ॥

१३ भजन—मिटाकर ब्रह्मचर्य्यों को बिपत नरनारि बोते हैं ॥ टेक० ॥ लड़कपन में करी शादी, हुई बिद्या कि बरबादी ॥ बदन की जोति बुतबादी, पड़े बेताब रोतेहैं ॥ मिटा० ॥ १ ॥ हुएहैं सूख के दुर्बल, जनैं सन्तान को निर्बल । मुसीबत झेलते हरवल, जो वैदिक धर्म खोतेहैं ॥ मिटा० ॥ २ ॥ पड़े परमेह में घुलते, मसूढे दांत सब हिलते । कँहरते कांपते चलते, मरीज़ी उम्र ढोते हैं । मिटा० ॥ ३ ॥ उमर जब तीस का आया, निशानी मौत दिखलाया । पचासा वितन् नहिं पाया, चिता पर जाय सोते हैं ॥ मिटा० ॥ ४ ॥ रहा सौ बर्ष का जीना, उसे तो खाक कर दीना । कहै दुर्गा ये गुण बीना, सबी कुल को डुबोतेहैं ॥ मिटा० ॥ ५ ॥

१४ परनारी—भजन—(ख्याल) परनारी से करो न यारी तेज़ कटारी परनारी, इस के पीछे मुये मौत बिन, बड़े २ बानाधारी ॥ टेक० ॥ सिया हरण रावण ने कीन्हा, कुला भंग होगइ सारी । चली न कुछ भी शूर वीरता, धरी रही सब होशियारी ॥ मेघनाद से पुत्र पहलवाँ, कुम्भकरण से बलधारी । कई लाख सेना वीरों की अकाश में लड़ने वारी ॥ सब स्वाहा होगई पलक में, गढ़लंका की सरदारी । इसके पीछे मुए मौत बिन० ॥ १ ॥ शुम्भ निशुम्भ बड़े योधा थे, उन्हें सिखायापर नारी । परनारी ने दिये बालि बल सालि बालि से बलधारी ॥ पर नारी ने भस्मासुर कर, दिये भस्म कर सिरधारी । चला न एको दाँव पेंच सोगये ज़मी में सिर मारी ॥ इसी कर्म में लाखों लुटगये, हुई बहुत पीछे ख्वारी । इसके पीछे मुये मौत बिन० ॥ २ ॥ परनारीसे नाश हुआ वह कौरव दल जो था भारी । दुश्शासन की भई दुर्दशा जानत जिसको संसारी ॥ अष्टादश क्षौहिणी सैन गइ इसी के पीछे सब मारी । मचा घोर संग्राम हुई भारत सम्पति स्वाहा सारी ॥

बड़े बड़े ज़रदार ज़िमींदारों की बिकगई ज़िमिदारी। इसके पीछे हुये मौत बिन॰ ॥ ३ ॥ पर नारी ने शृङ्गीऋषि की खराब मिट्टी कर डारी। योग भ्रष्ट होगये हज़ारों लुटगये लाखों तपधारी ॥ यती छुपे जंगल में जाकर थर थर कापे ब्रह्मचारी। इसी के पीछे हुये खून होरहे ज़ुल्म लाखों जारी ॥ दुर्गादास यह कहेरहे कातिल मत करना इससे यारी। इसके पीछे हुये मौत बिन बड़े बड़े बानाधारी ॥

१५ भजन—उत्सव विश्वकर्मा सालाना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो, सभी भाई का मिलजाना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ टेक० ॥ करहु धनिवाद विश्वकर्मा, करी जिसने सभा कायम। धरम जलसों का दिखलाना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ १ ॥ अहो धन भाग नगरी का, जहां किरपा करी ईश्वर। ध्वजा धर्मोंका फहराना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ २ ॥ हमारे धर्म के प्यारे, पधारे हैं जो जलसे में। महानों का यहां आना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ ३ ॥ नगर के बासियो भाई, बड़ी किस्मत तुम्हारी है। महानों का दरश पाना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ ४ ॥ यह दुर्लभ है सभा तुमको, करो मिलकर धरम चरचा। तुम्हे यह वक्त शुभ आना, सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ ५ ॥ कहैं दुर्गा सुनो प्यारे, करो उन्नति यह मंदिर की। धरम अपने का फैलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ ६ ॥

१६—दीनबंधु कृपासिंधु मेरी ओर हेरिये। मेरे अपराध नाथ अबतौ क्षमा कीजिये ॥ संकट को नाश करि चित्त में सुख दीजिये। अपगति को दूर कर अचल भक्ति दीजिये ॥ दुनियां के जाल कपट फंदसे बचाइये। अपने चरणों में नाथ मेरोमन लगाइये ॥ गृहस्ती के भार से उबार मेरो कीजिये। दुर्गा यह बिनय करत सो प्रभु सुनि लीजिये ॥

१७ भजन—दस चिह्न धरम के भाई, महाराज मनू बतलाते ॥

टेक०॥ प्रथम धर्म धीरज को धारो, दूजे सब के बचन सम्हारो। तीजे मन अपने को मारो, यहि उपदेश सुनाते॥ महाराज मनू०॥ दस०॥१॥ चौथे तजचोरीका पेशा,मिटेसकल नर तेरे कलेशा। रहो पाँचवे शुद्ध हमेशा सब मुनि यों गाते॥ महाराज मनू० ॥दस०॥२॥ छठे सकल इन्द्रिय बस करना, सप्तम चित बिचार में धरना। अष्टम विद्या मनमें भरना, जो तुम मनुज कहाते॥ महाराज मनू०॥ दस०॥ ३॥ नवें सत्य को धारण कीजे, दसवें क्रोध त्याग तुम दीजे हरिजन सुमिर मुरारी लीजे काहे जन्म गँवाते॥ महाराज मनु०॥

१८ ग़ज़ल–खबरलो नाथ दुनियां से हमारी। भटकते मुद्दतों से सर पटकते। हुई दिलको निहायत बेकरारी॥ १॥ बहारे जिन्दगी नायब हमने बिषयमें आजतक बिल्कुल बिगारी॥२॥ इबादत आपकी दिलसें भुलाकर। करी दुनियांकी हमने ख़ाक सारी॥ ३॥ सताया कामने काबूमें करके। नचाया जिसकदर मर्कट मदारी॥ ४॥ ग़िज़-हरक़िस्मकी बख़्शी जो तुमने। अताकी इल्म दौलत हमकोसारी॥५॥ मगर हम इसक़दर नादान निकले। तुम्हारीयाद हय बिल्कुल बिसारी॥ ६॥ दिखायें कैसे हम मुहँ तुमको अपना। ख़ता ये होगईं जो ऐसि भारी॥ ७॥ हमे अफ़सोस अब अपने किये पर। अमूलक जिंदगी हमने बिगारी॥ ८॥ शुकर इतना सहारा पाके फिरभी। शरण आखिर में ली हमने तुम्हारी॥ ९॥ पतित पावन किये कितनेही तुमने मगर दुर्गा की बारी क्यों बिसारी॥ १०॥

१९ठुमरी–रमापति पावन नामतुम्हारो, हमहिं पबित्र करत फिर कसनहीं लीन्ह तुम्हार सहारो॥१॥ उत्तमआनँद वेदबतावत ऋषि मुनि सबन पुकारो॥२॥ दुर्गुण दूरिकरो करुणामय तुमबिन कौन हमारो॥ ३॥ दुर्गा शरण जानि निज अपने करहु नाथ निस्तारो॥ ४॥

२० भजन—प्रभुसम कौन दीनहितकारी, बिबिधप्रकार सृष्टि अति अद्भुत जिहि प्रभु सकल सँवारी । है व्यापक वही सकल बिश्वमहँ अति गति अगम अपारी ॥ १ ॥ गर्भ मांझ दशमास दिवस निशि जिहि सुधि लीन्ह तुम्हारी । ऐसे प्रभुहिं बिसारि चहत सुख अति मतिमन्द अनारी ॥ २ ॥ प्रभु० ॥ अग्नि वायु शशि सूर्य आदि बहु अमित बस्तु सुखकारी । रचत जीव सुख हेतु ईश वह ऐसा जन सुख कारी ॥ ३ ॥ प्रभु० ॥ सुख भण्डार बिसारि मूढ़मति सुख ढूँढ़त संसारी । अजहुँ न करत बिचार तनक मन सुधि बुधि सकल बिसारी ॥ ४ ॥ प्रभु० ॥ जाकोध्यान धरत ऋषि मुनि सब यश गावत श्रुति चारी । भजिये दुर्गा ताहि सकल तजि जो प्रभु अधम उधारी । प्रभु सम कौन दीन हितकारी ॥

२१ भजन—मोसम कौन कुटिल खल प्रानी । तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहिन व्यापक पूरण ज्ञानी । अति कृतघ्न मैं क्रूर कुटिल खल अघ अवगुण की खानी ॥ १ ॥ कोई शुभ कर्म न कीन देह धरि करत रह्यो मन मानी । धर्मऽधर्म बिचार त्यागि कछु समझ्यो लाभ न हानी ॥ २ ॥ स्वारथरत नित दिवस बिताये सोवत रैन बितानी । भूलिगयो कर्त्तव्य आपनो पड़्यो बुद्धिपर पानी ॥ ३ ॥ विषयाशक्त रह्यो निशिबासर बल बुद्धि सकल नशानी । सुर दुर्लभ तन भोगि श्वानवत तृष्णा तउ न बुझानी ॥ ४ ॥ हिंसारत मैं पतित शिरोमणि शरण पर्‍यो तब आनी । लो पहिंचान दास दुर्गा को सुत गुरदीन को जानी ॥ ५ ॥ मोसम कौन कुटिल खल प्रानी ॥

२२ होली—दिलकी जो करपाऊं तुम्हें होरी खेलि दिखाऊं । हती पूर्व जो रीति सनातन, सोइ अब फेरि चलाऊं ॥ यज्ञ हवन करि पवन मेघको, शुद्धपवित्र कराऊं । समयपर जल बरसाऊं ॥ १ ॥ जो दिलकी० ॥

बाल ब्याह इत्यादि कुरीतिन भारत से उठवाऊं । ब्रह्मचर्य से बेद पढ़ा कर बुद्धिबल वीर्य बढ़ाऊं ॥ ऋषी रणधीर बनाऊं ॥ २ ॥ जो दिलकी० ॥ वर्णाश्रम की बिगड़ी दशाको, फिर से ठीक बनाऊं । कूकरमी बिषई ब्यभिचारिन देशनिकारि दिलाऊं ॥ दम्भकी धूरि उड़ाऊं ॥ ३ ॥ जो दिलकी० ॥ पकरि २ पाखण्डी जुवारिन नाक कान कटवाऊं । मुफ्त-खोर अरु पेटार्थिनपै दिनभर घासछिलाऊं ॥ कठिनमिहनत करवाऊं ॥ ४ ॥ जो दिलकी० ॥ दुष्कर्म छुटवाय सबन पै श्रेष्ठकर्म करवाऊं । सम्मति सुमति शान्ति सुख फिर से भारत मांहिं बसाऊं ॥ फेरि सत-युग बर्ताऊं ॥ ५ ॥ जो मनकी० ॥ सन्ध्या करौं कराऊं सबनपै, अर्थ समुझि सुखपाऊं । दुर्गादास जगत् कर्त्ताके प्रेमसहित गुणगाऊं ॥ ध्यान चरणोंमें लगाऊं ॥ ६ ॥ जो दिलकी करिपाऊं तुम्हें होरी खोलि दिखाऊं ॥

२३ प्रभाती भजन—अरे मन अबहूं न चेतकरौ, झूठे झगड़नमें दिन खोवत कबहुं न हरि सुमिरौ, बिषय भोग की मृगतृष्णामें निशिदिन दौरे फिरौ ॥ १ ॥ (अरे मन०) यह जग विभव संग नहिं जैहैं लालच में न परौ, व्यापिरह्यो संसार सकल में वाहू को तनक डरौ ॥ २ ॥ (अरे मन०) या जग में नहीं कोई तुम्हारो झूंठी आस करो, है रक्षक जो सदा बिश्वपति ताही को ध्यान धरो ॥ ३ ॥ (अरे मन०) अमृत पियें अमर है जैहो फिर फिरि दुःख न भरो, दुर्गा बसौ जाय मुक्ती में काहे को जन्मो मरो ॥ ४ ॥ (अरे मन०)

२४ प्रभाती—तुमहीं कृपालनाथ और नहीं मेरो । मेरेअपराध छिमौ मेरी ओर हेरो ॥ सूझत नहीं और कछू प्राणनाथ मेरो । कासों कहूं कौन सुनै दुःखको दरेरो ॥ पाप मेरे दूरकरो प्रेमदे घनेरो । चरणोंमें चित्तलगै बिकल दास केरो ॥ मोको नहिं तजो प्रभू जानि दीनचेरो । दुर्गा को देहु सदा द्वारपै बसेरो ॥

२५ ख्याल–दुनियां अजब तमाशा यारो सबका दिल भरमाताहै। कोई ढूंढ़े पूरब पश्चिम कोई जंगल धुनी रमाता है॥ पंडित पूजे मंदिर मुल्ला मसजिद बांग लगाताहै। अपने दिलमें क्यों नहिं ढूंढ़े जे ढूँढ़े सो पाता है॥ इसमें मिलै जहूर उसी का कैसे मजे दिखाता है। सच्चे दिल से देख उधरको अपना नूर बताता है॥ दुर्गा ऐसे ख्याल में हरदम अपना दिल समझाता है। बख्शिश है परकाम उसीका वही सबों का दाता है॥

२६ भजन–जानि आपनो दास आस मेरी पूरण अब करदीजिये। मैं अनाथ अति दीन दुखारी तुम हो नाथ दीन दुखहारी॥ दया करो मैं शरण तुम्हारी संकट सब हरलीजिये॥१॥ जानि०॥ जन्मत मरत बहुत दुख पाया, चौरासीमें चक्करखाया। अब मैं नाथ निपट घबराया, अबतो करुणा कीजिये २ जानि०॥ बन्धु नारि सुत मित्रघनेरे, ये सब निज स्वारथ के चेरे। तुमही एक सहायक मेरे, अपनी शरण में लीजिये॥ ३॥ जानि०॥ काम क्रोध आलस का मारा, मैं प्रभु तेरा नाम बिसारा। अपराधी मैं सबसे भारा, औगुन पर मत खीजिये॥ ४॥ जानि०॥ लखचौरासी स्वांग बनाये, तरह २ के रूप दिखाये। जो कोई तेरे मन न भाये, खेल खतमकर दीजिये॥ ५॥ जानि०॥ जो कोई स्वांग तुझे खुश आया, तो वर मिले यही मनभाया। करो नाथ दुर्गा पै दाया, अबहूं तनक पसीजिये॥ ६॥ जानि०॥

२७ लावनी–तुम सुनो दीन के नाथ बिनय यह मेरी। कर गहो आपनो जान करो न देरी॥ यह दास आपकी शरणागत में आया। रख लीजे लाज महराज करिये अब दाया॥ तव नाम अनन्त अपार बेद में गाया। गुण गावत शुक सनकादिक पार नहिं पाया॥ मैं क्या बर्णन करसकूं अल्प बुध मेरी॥ कर०॥ १॥ तुम निर्विकार निरमाल

पवित्र हो स्वामी । मैं महामलिन मतिमन्द कुटिल खल कामी ॥ सच्चिदानन्द सर्वज्ञ सकल घटयामी । मोहि कीजे नाथ अब शुद्ध जान अनुगामी ॥ देओ आनन्द पद में बास त्रास निरवेरी ॥ कर० ॥ २ ॥ इस जगत में जन्मत मरत महादुख पाया । लख चौरासी में भ्रमत २ घबड़ाया ॥ अति दुखित हुआ जब शरण आपकी आया । करुणा निधान जन जान करिय अब दाया ॥ काटो करुणामय कठिन कर्म की बेड़ी ॥ कर० ॥ ३ ॥ मैं किसे सुनाऊं व्यथा नाथ निज मनकी । यहां अपना नाहीं कोई आशा करूं जिसकी ॥ निज स्वारथ को संसार आश करे धनकी । तुमहीं जानत सर्बज्ञ पीर निज जनकी आरत हुई दुर्गादास कहत यह टेरी ॥ कर० ॥ ४ ॥

गज़ल २८—भलाई कर चलो यारो तुम्हारा भी भला होगा । किया जो काम नेको बद वह एक दिन बरमला होगा ॥ सताते हो ग़रीबों को न खाते खौफ़ मालिक का । कभीं देखा जुल्मगर कोई जो फूला और फला होगा ॥ खुदाके हैं सभी बन्दे बनो मत खूनके प्यासे । छुरी जल्लादके नीचे तुम्हारा खुद गला होगा ॥ समझ कर जान अपनी सी दुखावो मत किसी का दिल । जलावेगा तुम्हें बेशक जो खुद तुम से जला होगा ॥ कहै दुर्गा ये बिषयों का तुम्हें यकदिन बला होगा ॥

२९ प्रभाती—भोर भयो पक्षीगण बोले । उठ अब हरिगुण गाओरे॥ १ ॥ लख प्रभात प्रकृति की शोभा । बार बार हर्षाओरे ॥ २ ॥ प्रभु की दया सुमिरि निज मनमें । सरल भाव उपजाओरे ॥ ३ ॥ हुइ कृतज्ञ प्रेम में उन के । नयनन नीर बहाओरे ॥ ४ ॥ ब्रह्मरूप सागर में मनको । बारंबार डुबाओरे ॥ ५ ॥ निर्मल शीतल लहरें ले ले । आतम ताप बुझाओरे ॥ ६ ॥

३०—कहुँ देखी लोगो राम सुरतिया प्यारी । हम बिरहा में तेरे

तड़प रहे देखन रूप बिहारी । रात दिवस तेरो ध्यान धरतहूं लखि नहिं पड़त मुरारी ॥ कैसी सूरति कैसी मूरत दर्शन की बलिहारी । जो कहत सो तनमें बतावत देखि रूप छबिन्धारी ॥ तेरे हृदय में राम बसतहैं देखि झलक तू प्यारी । अब काहे को भ्रमत फिरतहै घटमें देखु सँभारी ॥ सांचे प्रेम से देखि पड़ैंगे राधारमण बिहारी । सूरति की छबि नयन बसैगी दुर्गा बलिबलिहारी ॥

३१–रघुनाथ पियारे कबमिलिहौ ॥ यातो मिलो या नेह हटाओ काहेको मोहिं तरसाय रहेरे । नहिं तुम्हार कोई ठांव बतावत सब जग व्यापक दृष्टि परेरे ॥ अंतर्यामी सुनत तुमनको घटघट में प्रभु छाय रहेरे । भीतर बाहर जल थल अम्बर अग्नि पवन में बासकरेरे ॥ राम प्रकाश जगत उजियारा चंद्र सूर्य में ज्योति पड़ेरे । यह महिमा सब ब्रह्म कहावत सब कोई मनमें जानि रहेरे ॥ मैं नहिं मानत बात केहूकी जबलौं नैनन देख पड़ेरे । दुर्गा को तो भरोस होइ जब प्यारी सूरति दृष्टि पड़ेरे ॥

३२–नाथ कहँ छोड़ी भुजबलकारी । जिन भुजबलसों पृथ्वी उबारयो असुरन दल संहारी ॥ बेद लुसको प्रगट कियोहै सुरन दियो सुखभारी । द्रुपदसुताको कष्ट निवारयो कौरव गर्वप्रहारी ॥ नरसी दासकी हुंडी सकारी । आपै शाह बिहारी ॥ नाशेव जिनकरबल लंका-पति और कंसको मारी । दास विभीषण राज्य दियोहै सुरनर मुनि हितकारी ॥ कोटिन महिमा कहत न पावत जिह्वा थकथक हारी । ऐसे ही बल करो दास पर अब दुर्गाकी बारी ॥

३३–श्याम तुम बड़े गरीब निवाज । विप्र सुदामा को धन दीन्हों ध्रुवको दीन्हों राज ॥ सुग्रीवहुसों करीमिताई द्रुपदी की राखी लाज । बावनरूपधरो करुणानिधि बलिराजाके काज ॥ रावण मारि बिभीषण

थाप्यो रामचंद्र महराज । जैसे तुम औरन को तारो सकल सवांरो काज ॥ तैसे कृपा करो हमहूं पर कृष्णचंद्र ब्रजराज । भवसागर के पार लगाओ राम हमार जहाज ॥ दुर्गादासको आश तुम्हारी सुनिये श्री महराज ॥

३४ भजन–उमरि सब धोखे में बीति गई (अन्तरा) लड़काई अरु तरुण अवस्था ग़फ़लतमें बितई । वृद्धभये इन्द्री सब थाकीं सुधि बुद्धि नाश भई ॥ १ ॥ (उमरि सब०) जिनके हितकर पाप पेटभरि दुःख की बेलि वई । ते सुत बधू पास नहीं आवत निशि दिन करत खई ॥ २ ॥ (उमरि सब०) पर उपकार न कीन्ह देहधरि वृथा बिताय दई । अब पछिताये होत क्या मूरख हाथ की पूंजी गई ॥ ३ ॥ (उमरि सब०) दुर्गा बैस बिताय बिथा अब मनकी कछु न भई । करुणाकरि अब तो सुधि लीजै हे प्रभु करुणामई ॥४॥ उमरि सबधोखेमें बीतिगई ॥

३५ भजन–सजनी रे जुगिनिया ह्वै जैबो ॥ २ ॥ बल्कल बसन जटा शिर कसके अङ्ग बिभूति रमैबो । इंगला पिंगला और सुषुम्णा यही ध्वनि पिया को रिझैबो ॥ प्रत्याहार अघमर्षण करके सांझ सबेरे ध्यान लगैबो । ओङ्कार को अर्थ समझ मन जन्म जन्म के भरम मिटैबो ॥ प्राणायाम का साधन करके । जयकृष्ण प्रभु गुण गैबो ॥

३६–श्याम तुम दीनानाथ कहायो । गोपी गीधगयंद गिरा सुनि नांगे पायन धायो ॥ टेर करी जब द्रुपदसुता ने तब तहँ चीर बढ़ायो । नामदेव जयदेव गुसाइँ सूरदास यश गायो ॥ ते सब और अजामिल आदिक जिन धोखेहु मन लायो ॥ गने न गुण अवगुण अधर्म सब ताजि तुरतै अपनायो । देह दरश तिन को निहाल करि गहि निज लोक बसायो ॥ ऐसी और घनी करनी जग कोटिन गुणिन गनायो । ते सब यश अकाज हैं स्वामिन जो दुर्गा नहिं भायो ॥

३७—कोना तरो जो हरिगुन गायो। जौने जहां जबै सुधि कीन्हीं तब तेहि तहँ अपनायो॥ भाव कुभाव अनख आलसहू जो कहि राम सुनायो। तेहि दुख टारि सकल तेही क्षण पुनि निजधाम पठायो॥ देखहु अजामील गज गणिका बालमीक मनभायो। सवरी सदन कसाई तारत नेक बार नहिं लायो॥ सोई समुझि पतित पावन प्रभु दुर्गा विनय सुनायो। मेरीवेर बार कस लावत केहि औगुण बिसरायो॥

३८— प्रभु मेरी अरज सुनत कस नाहीं। कौन गीधकी गिरा सुहावनि का गुण गणिका माहीं॥ अजामील करि कौन बिधानै ताहिं मिल्यो चितचाहीं। सेवरी सदन कसाई तारत करी बिलम कछुनाहीं॥ कातिनहूं ते अधिक अपावन मोहिं गनत मनमाहीं। मैं आयो लखि अधम उधारन मनमें बहुत उमाहीं॥ सो कस बार लगावत मोको उनमें कहा दरशाहीं। दुर्गा देहु बताइ वहीविधि जस रीझत छिनमाहीं। हौं अजान सीधो शरणागत पाहि पाहि प्रभु पाहीं॥

३९—क्यों नहिं टेर सुनत प्रभु मेरी॥ क्या मैं तेरो जन न कहाऊं जो नहिं कृपादृष्टि करि हेरी। है लालसा दरश तेरेकी सो पुरओ आशा जन केरी॥ प्रणतपाल है नामतिहारो गावत वेदपुराण घनेरी। सो सुनि समुझि चरण तकि आयों राखहु शरण न लावहु देरी॥ जेजे आये पँवरि तिहारी ताकी तुम कीन्ही निरवेरी। बांह गही प्रहलाद विभीषण राखीलाज द्रोपदी केरी॥ गजकी टेर सुनी करुणानिधि काटेउ फंद न लायो देरी। दुर्गादासकी बिनय है सुनहु प्रभू कृपाकरो अब कहत हौं टेरी॥

४० मदिरा खण्डन—मत पियो शराब पागल कर देतीहै। कहीं पीटें कहीं पिटवावें॥ गाली दें गाली खावें। इज़्ज़तहोय ख़राब॥ पागलकरदेती० ॥१॥ जब हँसे हँसे ही जाते हैं। बड़ेज़ोरसे चिल्लाते हैं॥ नहीं

सुन सके जवाब। पागल कर० ॥२॥ कहीं बकें बकेही जाते हैं। या बेसुध सोजाते हैं॥ कुत्ते चाहे करें पिशाब। पागल कर० ॥ ३ ॥ मांगे कलाल धन आके। तुम चोखी पिये थे जाके॥ अब तो मेरा करो हिसाब। पागल कर० ॥ ४ ॥ नहीं आंख नशे में खोलें। रण्डियों के चकले में डोलें॥ बना फिर रहा नवाब। पागल कर० ॥ ५ ॥ बेहोश हुए फिरते हैं। कहीं नाली में गिरते हैं॥ जहां उठरहे डुबाब पागल कर० ॥ ६ ॥ जब शराब पी चुकते हैं। फिर कभी नहीं रुकते हैं॥ ज़रूरी खायँ कबाब। पागल कर० ॥७॥ जो धन शराब में खोओ। उसे धर्मक्षेत्र में बोओ॥ जिस से होय सवाब। पागल कर० ॥ ८ ॥ कहे बासुदेव सुनो भाई। करूं कहांतक इसकी बुराई॥ समझलो तुम्ही जनाब। पागल कर० ॥ ९ ॥

४१ मांस खण्डन—देखो कर ध्यान मांस के खाने वालो। हा मानुष्य कहलाते हो। फिरभी तो मांस खाते हो॥ न बशमें भई जुबान। मांस के० ॥ १ ॥ गर तुम्हें मांस खानाथा। पशु पक्षी बनजाना था॥ बनेथे क्यों इन्सान। मांस के० ॥ २ ॥ बे मोल मनुष्य देह पाई। तज दया बने हैं कसाई॥ मांस मदिरा लगे खान। मांस के० ॥ ३ ॥ हा ज़रा रहम नहिं आया। दीनोंको मारकर खाया॥ पेट किया क़बरस्तान्। मांस के० ॥ ४ ॥ जब कांटा लगे तुम्हारे। भरते हो हाहाकारे॥ कहो हा निकली जान। मांस के० ॥ ५ ॥ दीनो पर छुरी चलावें। क्यां ठकुराई जतलावें॥ शेर देख होवें हैरान। मांस के० ॥ ६ ॥ कोई अण्डे तक खाजावें। वो महानीच कहलावें॥ मूत्र मणी लगगये खान। मांस के० ॥ ७ ॥ जो मनुष्य मांस खाते हैं। वे घातक कहलाते हैं॥ मनमें किया बयान। मांस के० ॥ ८ ॥

४२—रामनामकी यादकरो अब काम न और किये सरि है। पितु

मातु त्रिया धन धाम धरा इनमें परिकै नरकै परिहै। जब आय जरा यमदूत ग्रसै तब व्याकुलता परि का करिहै॥ जप योग कथा बकवाद वृथा जबलौं न हिये हरिको धरिहै। कहि दुर्गा छोड़ि बिकार सबै भजु राम न तौ दुख क्यों टरिहै॥

४३-हमारे प्रभु कोई नहीं जग साथी॥ देइ जन्म पितु मातु बहुत दिन पालि प्रेम प्रिय पाथी। ते सब खींचगये बिच सुरपुर कोरही शेष जिन गांथी॥ औरौ पुत्र कलत्र मित्र सब जे स्वारथ के साथी। तेतो तुरत बिमुख है बैठे लखि निज हितकी लाथी॥ तेल फुलेल लगाय खाय बहु षटरस व्यंजन पाथी। तौन देह यह संग न जैहै गनै कौन रथ हाथी। जप तप योगधर्म नहिं कीन्हे जे परमारथ साथी। दुर्गा जानि अनाथ दास निज आपहि करौ सनाथी॥

४४-मैंतो तेरे दरशका प्यासा॥ दुनियां ठगिनी घेरे रहत है कैसे पहुंचौं पासा। कछु न बनत कछु यतन न सूझत कैसे हो पूरी आशा॥ प्रभु मिलन को जिय चाहत है छिपा है हमरे पासा। छिपि छिपि करि वह नेह करत है होत नहीं परकाशा॥ बिन प्रकाश बिश्वास न उपजत होतहै मनको त्रासा। ताहि निवारो प्रेम मगन है करूं भजन में स्वासा॥ करुणा करहु दास दुर्गापर मोह कपट हो नाशा। मोह कपट जब दूरिभयो प्रभु भई मिलनकी आशा॥

४५-दीनानाथ संत हितकारी॥ दीन रंक द्विज अतिहि सुदामा भेंट तनक कन लाय गुजारी। फंका तीनि दई त्रिभुवनकी सकल संपदा भारी॥ जूंठकरि मीठे फल सवरी तुवहित धरत विचारी। खाये तौन सराहि प्रेम बश जूंठ अजूठ बिसारी॥ बिदुर नारि कदली फल बक्कल देत प्रेम मतवारी। ते गहि कहत मधुरई यामैं सब चीजन से न्यारी॥ याके धन जन बलनहिं एकहु ताके हितू मुरारी। आयो दुर्गा शरण सोई लखि पाहि दीन दुख हारी॥

४६–राम पियारे मिलन कब होइहै। तेरे मिलनकी आश लगी है कब आनँद दरशैहै॥ सुन्दर गात माधुरी मूरति लोचन कमल दिखैहै। घड़ी २ पलछिन तुमको ध्यावत कब नैनन सुखपैहै॥ दरश परश की लवलागी है कब अनंद रूप प्रगटैहै। शंख चक्र अरु कमल गदाधर शीश मुकुट झलकैहै॥ श्रवण लहे मकराकृत कुंडल मृदु मुख बैन सुनैहै। परमानंद रूप हरिको लखि जन्म सुफल ह्वै जैहै॥ दुर्गा चारि बेद यशगावत ताको शीश नवैहै॥ ४६॥

४७–अरे मन क्या भूलै ठग घेरे। ये सुत तिय स्वारथ के साथी हैं सब कुटुम घनेरे॥ अबै तोहिं ऐसे अपनावत अन्त न आवत नेरे। असन बसन भूषण के लालच जनहु बने सब चेरे॥ बैठत उठत संग सँग डोलत बोलत ललकि बखोरे। दरशावत हित अतिहि बढ़ावत प्रेमरंग रसबोरे॥ ते सब सिथिल देखि इंद्रीगण फिरि बोलत नहिं टेरे। मरे लूटि सर्बसु समझावत कौनहते केहि केरे॥ दुर्गा शोचि तजो अबहूं जग ये कोई काम न केरे॥

४८–टेक–मुखड़ा क्या देखै दर्पण में॥ तेरे दया धर्म नहीं मनमें। जबतक फूलरही फुलवाड़ी बास रही फूलन में। एकदिन ऐसा होयगा प्राणी खाक उड़ैगी तनमें॥ मुखड़ा०॥ १॥ चंदन अगर कुसुंभी जामा सोहत गोरे तन में। भर योबन डूँगर का पानी ढुलक जाय एकक्षण में॥ मुखड़ा०। २॥ नदिया गहरी नाव पुरानी उतरजाय एक क्षण में। धर्म्मी धर्म्मी पार उतरिगये पापी रहे अधबरमें॥ मुखड़ा०॥ ३॥ कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी सुरत लगी इस धन में। दश दर्वाजे बंद भये जब रहगई मनकी मन में॥ मुख०॥ ४॥ पगड़ी बांधत पेच सँभालत तेल मले अंगन में। कहत कबीर सुनो भाईसाधो यह क्या लड़ैंगे रणमें॥ मुखड़ा क्या देखै दर्पण में तेरे दया धर्म्म नहीं मनमें॥ ५॥

४९–भजन टेक–क्या तन मांजता रे आखिर माटी में मिल जाना ॥ माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिरहाना । माटी का कलबूत बनाया जिसमें भँवर समाना ॥ क्या० ॥ १ ॥ माटी कहै कुम्हार से तू क्या रूँधै मोय । एकदिन ऐसा होयगा मैं रूँधूंगी तोय ॥ क्या० ॥ २ ॥ चुन २ ॥ लकड़ी महल बनावै बन्दा कहै घर मेरा । ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा ॥ क्या ॥ ३ ॥ फाटा चोला भया पुराना कबलग सीवै दर्जी । दिलका मरहम कोई न मिलिया जो मिलिया अलगर्जी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ दिल के मरहम सतगुरु मिलगये उपकारण के गर्जी । नानक चोला अमर भयो संत जो मिलगये दर्जी । क्या तन माजतारे आखिर माटी में मिलजाना ॥ ५ ॥

५०–चेत कर चलनारे दुर्गा यहां कोई तेरा नहीं । जन्म दे मा बाप ने पाला तो हमको था सही ॥ स्वर्गबासी वे हुये कोई रहा अपना नहीं । अब तू किस्से दिल लगाता सब से बिछुरन है सही ॥ किस का अब होके रहैगा है ये दुनियां धोखही । क्यों नहीं तू दिल लगाता उसही मालिक से सही ॥ छोड़दे दुनियां की माया बैठ कर एकांतही । देख ले प्रतिबिम्ब उस्का दिलमें अपने है वहीं ॥ लेगा वह अपनी शरण पकड़ेगा जो उसको सही । लाज होगी दास दुर्गा की उसै जो बांही गही ॥

५१रागभोपाली–मोको क्या तू ढूंढ़े बन्दे मैं तो तेरे पासमें । टेक । ना छेरी मैं ना भेरी मैं ना छूरी गण्डासमें ॥ ना सींगीमें ना पूंछीमें ना हड्डी ना माँस में । ना मण्डफमें ना मस्जिदमें ना काशी कैलासमें ॥ मिलना होतो तुरतहि मिल लो पलकन रही तलास में । नहिं बन्दे हैं क्रिया करमके बैराग योग संन्यासमें ॥ नहिं अवधपुरी नहिं द्वारिकामें मेरो आश बिश्वास में । हम तो बसें शहर के टपले घर मेरो भौआत

में ॥ कहैं कवीर सुनो भाई साधो इन जियरन के श्वास में ॥

५२ रागकलिंगड़ा-राम सुमिर मन राम सुमिर ले को जानै कल-की। रैनअँधेरी निर्मलचन्दा ज्योति जगै झलकी ॥ धीरे २ पाप कटत हैं होत मुक्ति तनकी। कौड़ी २ मायाजोड़ी करबातें छलकी ॥ शिरपर गठरी पापकी बांधे कौनकरे हलकी। भवसागरके त्रास कठिन हैं हाथ नहीं जलकी ॥ धर्मी २ पार उतरगये डूबी अधमिनकी। कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मंडलकी ॥ भज भगवान आन नहीं कोई आशा रघुवर की ॥ रामसु ॥

५३ पद-फिरै मतवारा किसधुन में रे, भजलेरे श्रीनन्द नँदनको सोच समझ मनमें रे। कबहूं राव करे हैं छिन में रङ्क कभू छिनमें रे, या माया अपना रंग बदले आनन फाननमें रे ॥ फिरे मतवारा० ॥ माटी फूली पवनसों रे हाँ कछु नाहीं यातन में रे, जानत है पर मानत नाहीं अँधरो जोवन में रे। फिरे मत० ॥ कबहूं प्रीति सुतन सों होवे रति कबहूं कामनि में रे, इनसे बचना बड़ो कठिनहै बसकरे नैननमें रे॥ फिरे मतवा० ॥ सहसबाहु दश बदन आदि नृप अजय बीररन में रे, तिनको काल क्रूरने खाया बातन बातनमें रे। फिरे मतवा० ॥ जैसा-ही घरमें रहना है तैसाही बन में रे, दुर्गादास भेद कछु नाहीं निर्गु-ण सर्गुण में रे ॥ फिरे मतवारा किस धुन में रे, ॥

५४ पद-जागते रहना मुसाफिर यह ठगों का ग्रामहै। आँखें खोलो लाड़ले क्या ख्वावे गफलत में पड़ा ॥ दिन तो सारा होचुका अब सि-रपै आई शाम है। तुझसा गाफिल आजतक हमने कभू देखा नहीं ॥ रहनेवाला है कहाँ का क्या तुम्हारा नाम है। जाहिलों की बात क्या है लुटगये आकिल यहाँ ॥ तुझको जो सूझे सोकर कहनाही अपना काम है। तन बरहना खाली हाथों सोने का कछु डर नहीं ॥ सोच

है दुर्गा यही अंटी में तेरे दाम है। जागते रहना मुसाफिर यहाँ ठगों का ग्राम है ॥

५५ पद–मन चेत नहीं पछतावेगा। जा तनमें जा धनमें भूला यहीं पड़ा रहजावेगा ॥ झूठ मित्र स्वारथ के नाते कोई काम न आवेगा। भजता क्यों नहीं नन्द नँदन को जो तोहि पार लगावेगा ॥ जादिन गहरी निंदिया सोवे दुर्गा कौन जावेगा ॥ मन० ॥

५६ भजन–यह काया की ठेल रेलसे अजब निरालीहै। पाप पुण्य की लगा के ताली, अकल सड़क जिसमें से निकाली ॥ दिलका काँटा लगा जिधर चाहे उधर घुमाली है ॥ नेम धर्मके पइये बनाकर, सत्यका लट्ठा खूब बढ़ाकर। ज्ञान कमानी खैंच ध्यानकी संकल जो ढाली है ॥ साँस धुआँ मुँहसे है जारी, नेकी लाट बनी अतिप्यारी। तनका अंजन बना के जिसमें अग्नी बाली है ॥ नवजका घंटा हरदम हिलता, इसका टेम रेलसे मिलता। हाथका सिंगल गिरा रेल अब आनेवाली है ॥ अरे मुसाफिर क्यों दुख भरता, रामनाम का टिकट न लेता सत्य की सीटी बजी रेल अब जानेवाली है। तार खबर हिचकीकी आई, कालबदलिया शिरपर छाई ॥ रेल भँवर गया छूट पड़ा स्टेशन खाली है। यह कायाकी ठेल रेलसे अजब निराली है ॥

५७ रागपीलू–रघुनन्दन आगे मैं नाचूंगी ॥ टेक ॥ अतलश लहँगा कुसुमरँग सारी। पहिर २ गुण गाऊंगी ॥ बाजूबंद अनन्त पहिर के, नामकी नथ झलकाऊंगी। ज्ञान ध्यान के घूंघरू बाँधूं शब्द की मांग भराऊंगी ॥ 'पलटूदास' खेल खेलूंगी बहुरि न यहि जग आऊंगी ॥ रघुनन्दन०

५८ रागजैजैवंती–राम सुमर राम सुमर यही तेरो काजहै। माया को संग त्याग, हरिजी की शरण लाग, जगत सुखमान मिथ्या झूंठो

सबसाज़ है ॥ सुपने ज्यों धन पिछान काहे पर करत मान बारू की भीत तैसे बसुधा को राज है। नानकजन कहत बात बिनस जैहै तेरो गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आजहै ॥ राम सुमर २ यही तेरो काज है ॥

५९ रागकान्हरा–दुर्गा बनिजाइ हो गोविन्द गुण गाये से ॥ टेक ॥ शवरी की बनगई सुदामा की बनगई गणिका की बनगई सुगाके पढ़ाये से। गीध की बनगई अजामिल की बनगई मीरा की बनगई जहर बिषखाये से ॥ ध्रुव की बनगई प्रहलादकी बनगई बिभीषण की बनगई शरणागत आये से। सूर की बनगई कबीर की बनगई तुलसी की बनगई बिनय के बनाये से ॥ दुर्गा० ॥

६०भजन–रामको अधारा सीतारामको अधारारे। मेरी २ कहत जात रैन दिन बिसारारे ॥ सांचो हरिनाम और धुंधको पसारारे। रामको अधारा सीतारामको अधारारे ॥ भक्तनपर भीरपरी आनि खम्भ फारारे। हरनाकश्यप मारके प्रह्लादको उबारारे॥ रामको अधारा सीतारामको अधारारे। भस्मासुर भस्म कियो शङ्कर दुख टारारे ॥ गिरजाको रूप धरयो मोरमुकुट वारारे। रामको अधारा सीताराम को अधारारे ॥ खेलत खेलत गेंद गिरेउ यमुनाबिच धारारे। अबतो गेंद मिलत नाहिं नन्दको दुलारारे ॥ रामको अधारा सीतारामको अधारारे। कालीदह में कूदि परेउ कालिनाग नाथारे ॥ कुबलियाके दन्त तोड़े कंसको पछारारे। रामको अधारा सीतारामको अधा० ॥ लङ्कासों अचलराज छिनकमें बिगारारे। दुष्टनको मारि २ संतजन उबारारे ॥ रामको अधारा सीतारामको अधा० ॥ द्रौपदीकी लाज राखी सभाचीर बाढ़ारे। भिलिनीके बेरखाये कीन्हो निस्तारारे ॥ रामको अधारा सीतारामको अधा० ॥ सूरदास काहकहूं नहीं जाननहारारे ॥

उग्रसेन राजदीन्हो होय जै जै कारारे । रामको अधारा सीतारामको अधारारे ॥

६१ गजल—स्टेशन जिस्म है मेरा नफ़स की रेल चलती है । पकड़ सकता नहीं कोई कि, जब फारम लिकलती है ॥ नहीं आती है जबतक तार, डुरसे लैन क्लियरकी करो दिलकी सफ़ाई फिर, जरा फुरसत न मिलती है । टिकट नेकी का हो जिसपास, वह अन्दर पहुँचताहै ॥ बिना उस टिकटके दुनिया, खड़ीही हाथ मलती है । बजा करती है सीटी रात दिन, या मौतकी लोगों बदों के वास्ते हरदम, पुलिस दरपै टहलती है ॥ गया बचपन जवानी ने, बजाई दूसरी घंटी । चलो जल्दी नहीं तो, तीसरी घंटी उछलती है । उठा असबाब अपना हक, शनासीकर चढ़ो जल्दी नहीं तो पछड़जाओगे, घड़ी इसकी न टलती है ॥ खड़े रहजायँगे चुपचाप, फाटकपर जो गाफिल हैं । वह चलदीरेल श्रद्धा क्या भला अब पेश चलती है ॥

६२—मन पक्षी जादिन उड़िजैहैं । अपने पराये पिंजरा देखिकै मन बहुभांति घिनैहैं ॥ जो निशिबासर प्रेम करत रहे तेऊ अलग ह्वै जैहें । भाई बन्धु जमा इकठौरी लेचल लेचल ह्वै हैं ॥ कोइ बांधत कोइ चिता लगावत तामें अग्नि लगैहैं । जरत देखि थातीका प्यारा बांसन मारि बहैहैं ॥ जरि भुनिकर जब राख भया तन नाम न कोई लैहैं । दुर्गा यह गति देखि जगतकी अपने राम रिझै हैं ॥ वैतो जगत हितू कहिलावत सब विधि संग निबै हैं ॥

६३ लावनी—है एक एक स्वाँस अमोल वृथा मतखोवै । दिन चला जात बेखबर पड़ा क्या सोवै ॥ तू किसीका नाहीं नाहीं कोउ तिहारा। है इन्द्रजालवत झूठा सब संसारा ॥ नरशरीर लख चौरासी भोग कर धारा ॥ जो अब चूका तू जीती बाजी हारा । आपे को देख

बिपरीत बेल मतबोवे ॥ दिनचला जाग बेखवर पड़ा क्या सोवे । एक परमहंस अपनी ध्वनि में आते हैं ॥ दमदम में अलख जगाकर रमजाते हैं । जितने ज्ञानी या ध्यानी कहलाते हैं ॥ उनकी सेवा सब उत्तम बतलाते हैं । मिलजाये जब ढूढ़करके कोई टटोवे ॥ दिनचला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे । दो बागहैं जिससे ब्रह्मलोक शरमावे ॥ एक बाहर दूजा भीतर साफ दिखावे । पत्ते फल फूल निरख मन अतीलुभावे॥ जो खावे फलको अजर अमर होजावे । पर सूझे उसे जो अन्तस् का मल धोवै । दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवै ॥ एकबाग में कोटिन सूर्य का उजियारा । दूजे में अनगिन शशिने प्रकाश धारा ॥ बागों की शोभा ऐसीअगम अपारा । निरखत ही निरखत महाबली मनहारा ॥ करें शेष सुरेश गणेश कथन नहीं होवे । दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥ वो परमहंस जी मुख से कभू न बोलें । नित पवन पै चढ़ दोनों बागोंमें डोलें ॥ कितनाही अंजन इन आंखोंमें घोलें । सूझें जबतक न हिये की आंखें खोलें ॥ बिन विंधा मोती कहो कैसे कोई पिरोवै । दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवै ॥ वो परमहंस जिस मारग आवे जावै । वा मारगमें चित सावधान ठहरावै ॥ चलतेही चलते सन्मुख बाग दिखावे : और परमहंसका भाव समझ में आवे ॥ चलते दुर्गा घृत निकला अवमत छाछ बिलोवै । दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवै ॥

६४ राग गौरी–मन पछितैहै अवसर बीते । दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु कर्म बचन अरु हीते ॥ सहसबाहु दशबदन आदि नृप बचे न कालबलीते । हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठिरीते ॥ सुत बनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबहीते । अन्तहुँ तोहिं तजैंगे पामर तू न तजहि अबहीते ॥ अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु

दुरालाजीते । तुम्है न काम अग्नि तुलसी कहुँ विषय भाग बहु घीते ॥

६५ गज़ल—वह नाथ अपनी दयालुता तुम्है याद हो कि न याद हो । वह जो कौल भक्तोंसे था किया तुम्है यादहो कि न यादहो ॥ सुनीगजकी ज्यूंहीं आपदा न विलम्ब छिनका सहागया । वहीं दौड़े उठके प्यादे पा तुम्है याद० ॥ यह जो चाहा दुष्टोंने द्रौपदी से कि शरम उसकी सभा में ले । बढ़ाया बस्तरको आप जा तुम्है याद० ॥ अजामील एक जो पापी था लियानाम मरने पै बेटेका । वह नरक से जो बचादिया तुम्है याद० ॥ जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्है तुमने ऊंचों का पददिया तुम्है० ॥ खाना भीलनी के वह झूंठे फल कहीं साग दास के घरपर चल । यूंहीं लाखो किस्से कहूं मैं क्या तुम्है० ॥ जिन बानरों में न रूप था न तो गुणही था न तो जात थी । तिन्है भाइयोंकासा मानना तुम्है याद० ॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सब उन्है इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उनके आप ऋणीसदा तुम्है० ॥ कहो गोपियों से कहा था क्या करो याद गीता की जरा । वेदाभक्त उद्धार का तुम्है० ॥ यह तुम्हारा दुर्गादासहै गो फसादमें जगके बन्द है । वह दास जन्म से है आपका तुम्है याद हो कि न याद हो ॥

६६ बिहाग—ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके काह काज जहां आदर भाव न पैये ॥ गुरुमुख नहीं बड़ो अभिमानी कापर सेवक रहिये। टूटी छान्न मेघ जल बरसै टूटो पलङ्ग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक लीन्हो त्रिया कहै प्रभु ऐये । सकुचत बदन फिरत सत छिपाये भोजन काह धँगैये ॥ तुमतो तीनलोक के ठाकुर तुमसे काह दुरैये । हमतो प्रेम प्रीति के ग्राहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तन के बश भक्तन प्रेम बढ़ैये ॥

६७ गज़ल—जो दिल से मेरा नाम गाता रहैगा, तो मुझको भी

हाँ याद आता रहेगा । नहीं पूरे होने के दुनिया के धन्दे, तू कबतक यहां दिल लगाता रहेगा । ये है ज्ञान की बूँटी ऐसी मुजर्रब, अगर ध्यान से इसको खातारहैगा । तो आँखों का कानों का बुद्धी का मन का, मेरीजान सबरोग जातारहैगा। ये मुमकिन् नहीं तुझसे मैं रूठ जाऊँ, जो दुर्गा तू मुझको मनाता रहैगा ॥

६८ भजन–कहो जी कैसे तारोगे मेरो, औगुण भरेउ शरीर । रंका तारेउ बंका तारेउ, तारेउ सदनकसाई ॥ सुआ पढ़ावत गणिका तारी, तारी मीराबाई । घना भगत का खेत जमाया, नामे छान छवाई ॥ सेनभक्तकी बिपति निवारी, आप भये प्रभु नाई । बृन्दाबनकी कुंज गलिन में, लगी श्यामसों डोर ॥ अबकी बेर उबारो प्यारे, लीनी कबीर ने ओर ॥

६९ भजन–हटरी छोड़चला बंजारा ॥ टेक॥इसहटरी बिच मानक मोती, कोइ बिरला परखनहारा । इस हटरी के नौ दरवाजे, दसवां ठाकुरद्वारा ॥ निकलगई थम्मढीपिया मन्दिर, रलगया चिकड़गारा । कहत कबीर सुनो भाइ साधो झूठा जगत पसारा ॥

७० राग भैरो–राम राम राम राम राम राम कहिये ॥टेक॥ मनहीं महँ षटविकार, ताते नित होत ख्वार,षटमुख खट नाम धार बार२ लहिये । कृतयुग करि ज्ञान ध्यान, त्रेता तप यज्ञ दान, द्वापर युग जन प्रमाण, नित गुण गुनि रहिये ॥ कलियुग को टेक एक, साधन सुभ सकल छेक, रसना रटु रामनेक, राम रेक रहिये । साधन षटकर्म कीन, षटरस बहु भोग दीन, तेऊ तन नाम हीन, पीन मीन महिये ॥ धर्म्मन कलिकाल माह, कर्म्मन को रूपनाह, भ्रमन ते तन प्रवाह, थकित थाह चहिये । 'हरजन' हिय हेरि २, गावत गुरु टेरि२, मारिय मन घेरि २, सब की सुध ना सहिये ॥ राम राम० ॥

७१ भजन–दरश अपना जो तुम रघुबर, दिखादोगे तो क्या होगा ॥ टेक ॥ जो तुम भानूसो कुलभानू, तेरा भानूकासा मुखड़ा। सगुणे मन कमल मेरा, खिलादोगे तो क्या होगा ॥ अव इस संसार सागर में, मेरी नैया जो वहती है। निकट तट के जो तुम रघुबर, लगादोगे तो क्या होगा ॥ इसी संसार रजनी में, मुझे आते बड़े सुपने। सो यह ग़फ़लत में मुझको तुम: जगादोगे तो क्या होगा ॥ लगी है प्यास दुर्गा को, तेरे दर्शन की ऐ भगवन। वरसा कर स्वाति की बूंदें, मिटादोगे तो क्या होगा ॥

७२ राग काफी–जोजन ऊधो मोहिंना बिसारे, ताहिना बिसारों छिन एकघरी। जो मोहिं भजे भजूं मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूं जन्म जन्म के फन्दन राखों सुख आनन्द करी। चतुर सुजान सभामें बैठे दुःशासन अनरीति करी ॥ सुमरन कियो द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर अँवार धरी। ध्रुव प्रह्लाद रैनदिन ध्यावें प्रकटभये बैकुंठपुरी ॥ भारत में भँवरी के अंडा तापर गजको घंटढुरी। अम्बरीष गृहआये दुर्वासा कृपा करी जगदीश हरी ॥ जोजन ऊधो० ॥

७३ भजन–दिला इकदम नहो ग़ाफ़िल, यह दुनिया छोड़ जाना है। बगीचे छोड़कर खाली, जमी अन्दर समाना है ॥ बदन नाजुक गुलों जैसा, जो लेटेसेज फूलों पर। यह होगा एकदिन मुर्दा, यँही कीड़ोंने खाना है ॥ न बेली होगया भाई, न बेटा बाप ना माई। क्या फिरता है तू सौदाई, अमलने काम आना है ॥ फरिश्ते रोज़ करतेहैं, मनादी चार खूंटों में। महल्ला ऊंचिया वाले जहांको छोड़ जाना है ॥ पियारे नजर कर देखो, पड़ी जो माड़िया खाली। गये सब छोड़ यह वानी दग़ाबाजीका बाना है ॥ ग़लत फहमीहै यह तेरी, नहीं आराम इस जगमें। मुसाफिर बेवतन है तू, कहां तेरा ठिकानाहै ॥ पियारे न-

ज़रकर देखो, नख़ेशों में कोई तेरा। ज़नों फरज़न्द सब कूकैं, किसे तुझको छुड़ानाहै॥ तमामी रैन गफलतमें,गुजारी चारपाईपर। गुजारे खेलों में वृथा यहां आयू गँवानाहै॥ यह होंगे सर बसर लेखे,हशरके रोज ऐगाफिल। यह दोजख़ बीचबद अमलीसे तन अपनाजलानाहै।

७४ धनाश्री—प्रीतम जानि लेहु मनमाहीं। अपने सुखसे सब जग बाँध्यो को काहूको नाहीं॥ सुखमें आय सभी मिल बैठत रहत चहूं-दिशि घेरे। बिपति परी सबही सँग छाँड़त कोऊ न आवत नेरे॥ घर की नारि बहुत हित जासों सदारहत सँग लागी। जबही हंस तजी यहकाया प्रेत प्रेतकर भागी॥ या बिधिको ब्योहार बन्यो है जासों नेह लगायो। अंतकाल नानक बिन हरिजी कोऊ काम न आयो॥

७५ भजन—मनतू काहे गुमानकरै॥ टेक॥ रामनाम कबहूँ नहीं सुमिरे, ना कछु ध्यान धरे। जो दिन आज है कलको नाहीं, पल पल इक बिछुरे॥ जो कुछकरना है वहकरले, औसर जात टरे। रामचन्द्र से तपसी राजा, तिनपर बिपतिपरे॥ सीताहरन मरन दशरथ का, बन बन राम फिरे। हरिश्चन्द्र और बलिसे न दानी, तिनके मान टरे॥ कहां गये मोरध्वजराजा, जो धर्म बीच अड़े। और अनन्त महा बलकारी कालके मुखमें पड़े॥ दुर्गादास हरि शरण जो आवैं, फिर कस नाहिं तरै॥

७६ भजन—कैसे राममिलैं मोहिं सन्तों। यह मन थिर न रहाईरे॥ निहचल निमिष होत नहिं कबहूं, चहुँदिशि धागाजाईरे। कौन उपाय करूं या मनको, कैसी बिधि अटकाऊंरे॥ ऐसे छूटजाइ यातनते,कित-हूं खोज न पाऊंरे। सोए स्वर्ग पताल निहारे, जागेजात न दीसैरे। खे-लतफिरै विषय बनमाहीं, लिये पांच पचीसौरे॥ मैंजान्यो अबमन थिर होई, दिन दिन परसन लागारे। नाना चीज धरौ ले आगे, तज करंक

पर कागारे ॥ ऐसे मनका कौन भरोसा, छिन छिन रंग अपारारे। सुन्दर कहै नहीं बस मेरा, राखै सिरजन हारारे ॥

७७ राग कालिंगड़ा—हमै नंद नँदन मोल लिये। यमकी फांस काट सुकराये अभय अजात किये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्याम के गुनत सिरात हिये। सूरदास प्रभुजू के चेरे जूठन खाय जिये ॥

७८ राग परज—रेमन रामसों कर प्रीत। श्रवण गोबिन्दगुण सुनों अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत। कालव्याल ज्यों पर्‌यो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज काज पुनि तोहिं ग्रसिहै समझराखो चीत। कहै नानक राम भजलो जात औसर बीत ॥

७९ राग कालिंड़ा—मूरख छाँड़ बृथा अभिमान। औसर बीत चल्योहै तेरो दो दिनको महिमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवीपर रूपतेज बलवान। कौन बचो या काल व्यालते मिटगये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गजरथ सेना नारी चन्द्र समान। अन्तसमय सबही को तजकर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयन में जाबिधि मर्कटस्वान। छिनभर बैठ न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान॥ रे मनमूढ़ अन्त जिन भटके मेरो कह्यो अब मान। नारायण ब्रजराज कुँवरसों वेगहिं कर पहिंचान ॥

८० भजन—सैर चमन की करता था वह निकल गया यहां से माली। खट्टा मीठा नीबू था, जामन इमली दुखसे पाली ॥ तख्ता लाल हज़ारों का, यह बाग पड़ा साराखाली। बारहदरी जड़ाऊ के सब, टूट गये दर और जाली ॥ बाग फ़वारा बाक़ी रहगया बन्द ड़ी नाली नाली। बाग़ रहा ना कुआरहा, अरु भागगये सारेहाली ॥ लूट खसोट करी सब घरकी, भेड़ चले तालाखाली। उनसे जाकर यूं

अब कहियो, क्या करते टालाबाली ॥ खुशदिल अपने बागों की वह आप करेंगे रखवाली ॥

८२कजरी--लगी लगन मेरी है। प्यारी बंशीधर गिरधारीसे नन्द-लाल गोपाल कन्हैया कृष्णमुरारी से ॥ १ ॥ मन मोहन ब्रजनाथ सँवलिया श्यामबिहारी से ॥ २ ॥ फलीनाथ जगनाथ नरोत्तम हां बन-वारी से ॥ ३ ॥ दुर्गादास कहै मिलूं कवन बिध कहै लाचारीसे ॥ ४ ॥ पहिले करके प्यारे कौल हमै अब क्यों तरसातेहौ। वादा कर कलगये आज सूरत दिखलाते हौ ॥ १ ॥ मुझे छोंड़कर भला गैर सँघ क्या रस पाते हौ ॥ २ ॥ जाउ चले बस अभी जहां तुम आते जाते हौ ॥ ३ ॥ दुर्गा दास कहैं जहां में । क्यों बदनाम कराते हौ ॥ ४ ॥

८३—बंश कोकाश का बिरवा दुर्गा चले लगाय । सींचन की सुधिराख्यो कहुँ बिसरि न जाय ॥ माघसुदी सनि सप्तमी । रहा उनइस त्रैसठ साल ! रचना मन्दिर बिश्वकर्मा की दी आरम्भ कराय ॥ १ ॥ कहुँ बिसरि न जाय सींचनकी सुधि । राख्यौ नहिं जइहै कुम्हिलाय॥ सीताराम कोषाधीषा दुर्गा प्रथम प्रधान धन्नुराय भये मन्त्री कुलदीन जोहाय ॥ २ ॥ सींचनकी सुधि राख्यो कहुँ बिसरि न जाय । बंश कोकाश का पैसा जमालीन कराय ॥ मांगि मांगि जन जनसे मठ दीन बनाय ॥ ३ ॥ सींचनकी सुधि राख्यो कहुँ बिसरि न जाय। दुर्गादास विश्वकर्मा सूरत पधराय ॥ विनय करय कर जोरय ॥ ४॥ कहुँबिसरि न जाय सींचनकी सुधिराख्यो। दुर्गा चले लगाय बंश कोकाशका बिरवा॥

इति छठाकाण्ड समाप्तः ॥

——:※:——
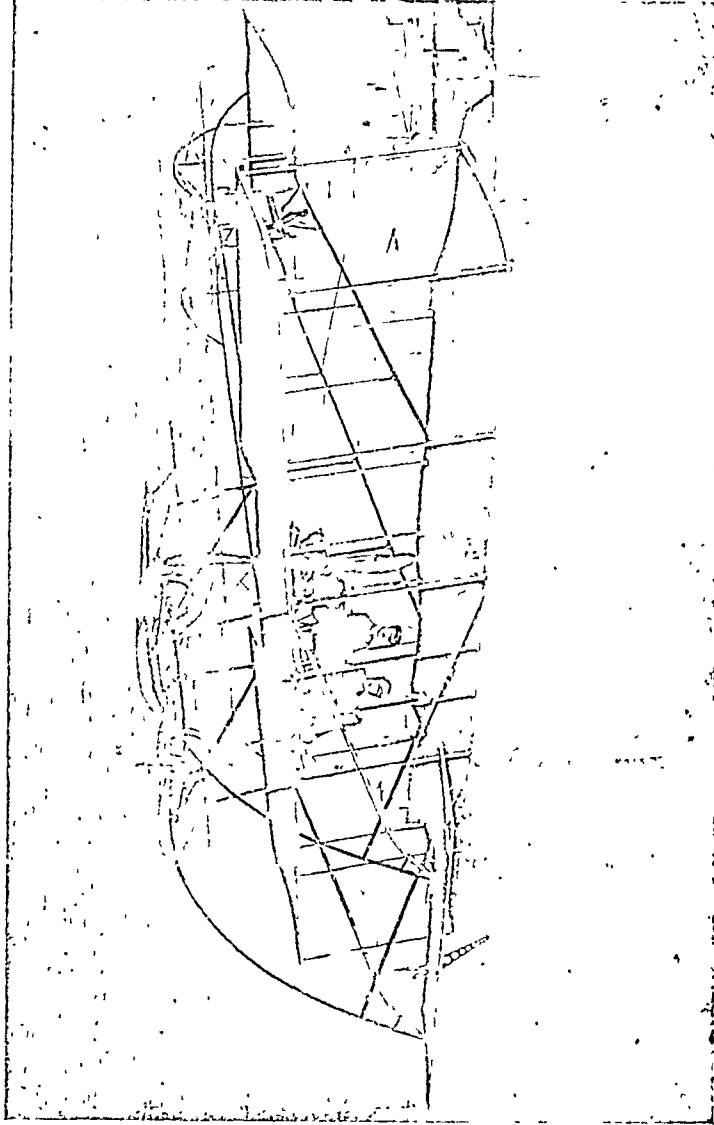
आकाश मार्गी विमान नमूना कारीगरी पाताल लोक के शिल्पकारों की ।

❊ श्रीगणेशायनमः ❊

❊ अथ ❊
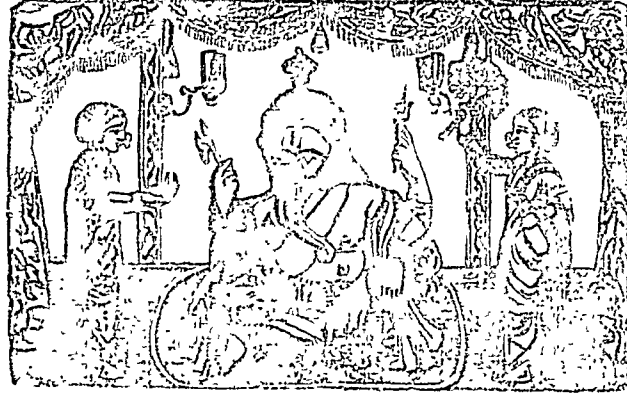
॥ विश्वकर्म्म शिल्पसागर ॥

❊ दुर्गादास कृत ❊

❊ सातवां काण्ड ❊

॥ शिल्प विद्यासागर ॥

वास्तुज्ञानमथातः कमलभवान्मुनिपरंपराप्राप्तम्। क्रियतेऽधुना मये दं विदग्धसांवत्सरप्रीत्यै ॥ किमपिकिलभूतमभवत्सन्धानं रोदसी शरीरेण। तदमरगणेन सहसा विनिगृह्याऽधोमुखंन्यस्तम् ॥ पत्रचयेन गृहीतं विबुधेनाधिष्ठितः स तत्रैव। तदमरमयं विधाता वास्तुनरं कल्पयामास ॥ उत्तममष्टाभ्यधिकं हस्तशतं नृपगृहं पृथुत्वेन। अष्टाष्टोनान्येवं पंच सपादानि दैर्घ्येन ॥ १ ॥

गृहमध्ये हस्तमितं खात्वा परिपूरितं पुनः श्वभ्रम्। यद्यूनमनिष्टं तत्समेसमं धन्यमधिकं यत् ॥ श्वभ्रमथवाम्बुपूर्णपदशतमित्वागतस्य यदि नोनम्। तद्धन्यं यच्चभवेत्पलानि पास्वाढकं चतुःषष्टिः ॥ आमेवा मृत्पात्रे श्वभ्रस्थे दीपवर्तिरभ्याधिकम्। ज्वलतिदिशि यस्यशस्तासा भूमिस्तस्य वर्णस्य ॥ २ ॥

श्वभ्रे सितं न कुसुमं यस्मिन् प्रम्लायते नु वर्णसमम्। तत्तस्य भवति शुभदं यस्यच यस्मिन् मनो रमते ॥ सितरक्तपीतकृष्णा विप्रादीनां प्रशस्यते भूमिः। गन्धश्च भवति यस्या घृतरुधिरान्नाद्यमद्यसमः ॥ कुशयुक्ता शरबहुला दूर्वा काशावृता क्रमेण महा। अनुवर्ण वृद्धिकरी मधुरकषायाम्लकटुका च ॥ ३ ॥

कृष्टां प्ररूढबीजां गोऽध्युषितां ब्राह्मणैः प्रशस्तां च। गत्वामहागृहपतिःकालेः सांवत्सरोद्दिष्टे ॥ भक्ष्यैर्नानाप्रकारैर्दध्यक्षतसुरभिकुसुमधूपैश्च। दैवतपूजां कृत्वा स्थपतीनभ्यर्च्य विप्रांश्च ॥ विप्रः स्पृष्ट्वा शीर्षं वक्षश्च क्षत्रियोविशश्चोरू। शूद्राःपादौ स्पृष्ट्वा कुर्यांद्रेखां गृहारम्भे ॥ ४ ॥

अंगुष्ठकेन कुर्यान्मध्यांगुल्याथवा प्रदेशिन्या। कनकमणिरजतमुक्तादधिफलकुसुमाक्षतैश्चशुभम् ॥

शस्त्रेण शस्त्रमृत्युर्बन्धोलोहेन भस्मनाग्निभयम्। तस्करभयं तृणेन च काष्ठोल्लिखिताच राजभयम् ॥ वक्रापादालिखिता शस्त्रभयक्लेशदा

विरूपाक्ष । चर्माङ्गारास्थिकृता दन्तेन च कर्तुरशिवाय ॥ दैरपसव्य लिखिता प्रदक्षिणे सम्पदो विनिर्देश्याः । वाचः परुषा निष्ठीवितं क्षुत चाशुभं कथितम् ॥ ५ ॥

अर्धनिचितं कृतं वा प्रविशन् स्थपतिर्गृहानमितानि । अवलोकयेद्गृहपतिः कसंस्थितः स्पृशति किंचांगम् ॥ रविदीप्तो यदि शकुनिस्तस्मिन्काले विरौति परुषरवः । संस्पृष्टांगसमानं तस्मिन्देशेऽस्थि निर्देश्यम् ॥ ६ ॥

शकुनसमयेथ शान्तेहस्त्यश्वश्वादयोऽनुवाशंते । तत्प्रभवमस्थितस्मिंस्तदंगसंभूतमेवेति ॥ सूत्रेप्रसर्पमाणे गर्दभरावेऽस्थिशल्यमाचष्टे । श्वशृगाललंघिते वा सूत्रेशल्यंविनिर्देश्यम् ॥ दिशिशांतायांशकुनो मधुरविरावीयदातदावाच्यः । अर्थस्तस्मिन्स्थाने गृहेश्वराधिष्ठितेंऽगेवा ॥७॥

सूत्रच्छेदेमृत्युः कीलेचावाङ्मुखे महान्रोगः । गृहनाथस्थपतीनां स्मृतिलोपेमृत्युरादेश्यः ॥ स्कंधाच्युते शिरोरुक्कुलोपसर्गोऽपवर्जितेकुंभे । भग्नेपिचकर्मिवधश्च्युते करादृगृहपतेर्मृत्युः ॥ दक्षिणपूर्वेकोणेकृत्वापूजांशिलांन्यसेत्प्रथमाम् ॥शेषाःप्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवंसमुत्थाप्यः॥८॥

छत्रस्रगम्बरयुतः कृतधूपविलेपनः समुत्थाप्यः । स्तम्भस्तथैव कार्यो द्वारोच्छ्रायः प्रयत्नेन ॥ विहगादिभिरवलीनैराकंपितपातितदुःस्थितैश्च तथा । शक्रध्वजसदृशफलंतदेवतास्मिन्विनिर्दिष्टम् ॥ प्रागुत्तरोन्नते धनसुतक्षयः सुतवधश्च दुर्गन्धे । वक्रेबन्धुविनाशो न संति गर्भाश्चदिङ्मूढे ॥ ९ ॥

इच्छेद्यदि गृहवृद्धिंततः समन्ताद्विवर्धयेत्तुल्यम् । एकोद्देषं दोषः प्रागथवाप्युत्तरे कुर्यात् ॥ प्राग्भवति मित्रवैरं मृत्युभयं दक्षिणेन यदि वृद्धिः । अर्थविनाशः पश्चादुदग्विवृद्धौ मनस्तापः ॥ ऐशान्यां देवगृहं महानसंचापिकार्यमाग्नेय्याम् । नैर्ऋत्यांभाण्डोपस्करोऽर्थधान्यानि मारु

स्यात् ॥ प्राच्यादिस्थे सलिले सुतहानिः शिखिभयमरिभयंच । स्त्री कलहः स्त्रीदौष्ट्यं नैः स्व्यंवित्तात्मजविवृद्धिः ॥ १० ॥

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजेश्च धान्यभांडार दैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः । तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्य रोदनरतौषधसर्व धाम ॥ ११ ॥

व्यासात्षोडशभागाः सर्वेषां सद्मनां भवति भित्तिः । पक्केष्टकाकृतानां दारुकृतानां तु न विकल्पः ॥ एकादशभागयुतः स सप्ततिर्नृपबले शयोर्व्यासः । उच्छ्रायोऽंगुलतुल्यो द्वारस्यार्द्धेन विष्कम्भः ॥ विप्रादीनां व्यासात् पञ्चांशोऽष्टादशांगुलसमेतः । साष्टांशोविष्कम्भो द्वारस्य त्रिगुण उच्छ्रायः ॥ १२ ॥

उच्छ्रायहस्तसंख्यापरिमाणान्यंगुलानि बाहुल्यम् । शाखाद्वयेऽपि कार्य्यं सार्द्धं तत्स्यादुदुम्बरयोः ॥ उच्छ्रायात्सप्तगुणादशीतिभागः पृथुत्व मेतेषाम् । नवगुणितेशीत्यंशः स्तम्भस्य दशांशहीनोऽग्रे ॥ समचतुरस्रो रुचको वज्रोष्टाश्रिर्द्विवज्रको द्विगुणः । द्वात्रिंशतातुमध्ये प्रलीनकोवृत्त इतिवृत्तः ॥ १३ ॥

खगनिलयभग्नसंशुष्कदग्धदेवालयश्मशानस्थान् । क्षीरतरुधवविभीतकनिम्बारणिवर्जितांश्छिद्यात् ॥ रात्रौकृतबलिपूजः प्रदक्षिणं छेदयेद्दिवावृक्षम् । धन्यमुदक्प्राक्पतनंन ग्राह्योऽतोऽन्यथा पतितः ॥ छेदो यद्यविकारी ततःशुभं दारु तद्गृहोपयिकम् । पीते तु मण्डले निर्दिशेत्तरोर्मध्यगांगोधाम् ॥ मंजिष्ठाभे भेको नीले सर्पस्तथाऽरुणे सरठः । मुद्गाभेऽश्मा कपिले तुमूषकोऽम्भश्च खड्गाभे ॥ १४ ॥

सूत्राष्टकं दृष्टिनृहस्तमौंजं कार्पासकंशाह्वलसंज्ञकं च । काष्ठंच यष्ट्याख्यमथोऽव लम्बमित्यष्ट सूत्राणि वदंति तज्ज्ञाः ॥ १५ ॥

चैत्रे शोककरं विद्याद्वैशाखे च धनागमम् । ज्येष्ठमासे च पीडयंते

आषाढे पशुनाशनम् ॥ श्रावणे धनवृद्धिश्चशून्यं भाद्रपदे भवेत् । कलहं चाश्विने मासे भृत्यनाशं च कार्तिके ॥ मार्गशीर्षे धनप्राप्तिः पौषे च धनसम्पदः । माघे चाऽग्निभयं कुर्यात् फाल्गुने श्रेय उत्तमम् ॥ १६ ॥

यथा "पाषाणेष्ट्यादिगेहं तु निंद्यमासे न कारयेत् । तृणकाष्ठगृहारम्भे मासदोषो न विद्यते" ॥ १७ ॥

प्रतिपत्कृष्णपक्षीया द्वितीया वास्तु कर्मणि । तृतीया पंचमी चैव सप्तमी दशमी तथा ॥ एकदशी अनंगाख्या तिथयश्च शुभावहाः ॥ १८ ॥

कन्यातुलावृश्चिकेऽर्के न गृहं पूर्वसन्मुखम् । धने च मकरे कुंभे न कुर्याद्दक्षिणोन्मुखम् ॥ मीने मेषे वृषे चैव न कुर्यात्पश्चिमोन्मुखम् । मिथुने कर्कटे सिंहे न कुर्यादुत्तरोन्मुखम् ॥ १९ ॥

सिंहे चैव तथा कुंभे वृश्चिके वृषभे रवौ । नैव दोषो भवेत्तत्र कुर्याच्चातुर्दिशंमुखम् ॥ २० ॥

शुभाऽशुभार्थं गेहानां प्रासादानां विशेषतः ॥ आयर्क्षं च व्ययं तारा अंशकादि विलोकयेत् ॥ घाम्नश्च दीर्घतोव्यासं गुणयेच्चाष्ट भाजिते । एकादिशेषे जानीयादायाश्चैव ध्वजादयः ॥ २१ ॥

ध्वजो धूम्रस्तथा सिंहः श्वानो वृषखरौ गजः ध्वांक्ष आयाः समुद्दिष्टाः प्राच्यादिषु प्रदक्षिणाः ॥ २२ ॥

अन्योन्याऽभिमुखास्तेच कर्मच्छंदानुसारतः । ध्वजः सिंहो वृषगजौ शस्यैते शुभवेश्मसु ॥ अधमानां खरध्वांक्षधूम्रश्वानाः शुभावहाः २३ ॥

ब्राह्मणानां ध्वजः श्रेष्ठः क्षत्रियाणां हरिस्तथा । वैश्यानां वृषभश्चैव शूद्राणां कामदो गजः ॥ २४ ॥

ध्वजे चैवार्थलाभश्च धूम्रे संताप एव च । सिंहे च विपुला भोगाः सदा श्वान कलिर्भवेत् ॥ धनं धान्यं वृषे चैव स्त्रीमृत्युर्गर्दभे तथा । गजे भवेच्च कल्याणं ध्वांक्षे च मरणं ध्रुवम् ॥ २५ ॥

प्रासादे प्रतिमालिंगे जगतीपीठमण्डपे । वेद्यां कुंडे क्रतौ चैव पताकाछत्रचामरे ॥ वापीकूपतडागानां कुण्डादीनां जलाशये । शुभ स्थानेषु सर्वेषु ध्वजं तत्र प्रदापयेत् ॥ २६ ॥

आसने देवपीठेषु वस्त्रालंकारभूषणे । केयूरमुकुटादौ च ध्वजं तत्र निवेशयेत् ॥ अग्निकार्येषु सर्वेषु पाकशाला क्रमेषु च । धूम्रोऽग्निकुण्ड संस्थाने होमकर्मगृहेपि वा ॥ २७ ॥

आयुधेषु समस्तेषु शास्त्राणां भवने षु च । सिंहासने नृपस्थाने सिंहं तत्र निवेशयेत् ॥ श्वानो म्लेच्छालये प्रोक्तो वेश्यागारे नटस्यच । नृत्यकाय॒ सर्वेषु शुनां श्वानोपजीविनाम् ॥ २८ ॥

वणिक्कार्येषु सर्वेषु भोजने पंक्तिमंडपे । वृषस्तुरगशालायां गोशा लागोकुलेषुच ॥ वादित्रनृत्यशालायां वृषमंच निवेशयेत् ॥ २९ ॥

मठेषु चैत्यशालायां जैनशालादिषुक्रमात् । ध्वांक्षश्चैव प्रदातव्यः शिल्पकर्म्मोपजीविनाम् ॥ ३० ॥

पूर्वे आयं ध्वजं दद्यादाग्नेय्यां धूम्र मेव च । सिंहं दद्याद्दक्षिणस्यां नैर्ऋत्येश्वानमेव च ॥ पश्चिमायां वृषं दद्याद्वायव्यां खरमेव च । उत्तरे च गजंदद्यादीशान्यां ध्वांक्षमेव च ॥ ३१ ॥

आयोंका स्वरूप कहते हैं–

ध्वजं पुरुषरूपं च धूम्रं मार्जाररूपिणम् । सिंहं सिंहस्वरूपंच श्वानं श्वानस्वरूपकम् ॥ गजरूपं गजं ज्ञेयं ध्वांक्षं काकस्वरूपकम् । वृषं वृषभ रूपं च खरं गर्दभरूपिणम् ॥ ३२ ॥

मुखाः स्वनामसदृशाः नराकाराः करोदराः । सिंहतुल्या गलाश्चैव पादाः कुक्कुटवत्स्मृताः ॥ सर्वेषां सिंहवद्ग्रीवाप्रालंबाश्च मदोत्कटाः । महागणेशरूपाश्च अष्टौ चैव दिशाधिपाः ॥ ३३ ॥

एकोनितेष्टर्क्षहताद्दितिथ्यो रूपो नितेष्टाय हते न्दुनीगैः । युक्ताघनैश्चापि युता विभक्ता भूपाश्विभिः शेषमितोहिपिण्डः ॥ स्वेष्टायनक्षत्र भवोथ दध्यं हृत्स्या हिस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ॥ ३४ ॥

इष्ट नक्षत्र की संख्या में १ हीनकरे तदन्तर १५२ से गुणाकरे इसीतरह इष्टाय में १ हीनकरे शेषको ८१ से गुणाकरे उसके बाद दोनों गुणनफलों को जोड़दे और उस जोड़ में १७ और जोड़े फिर २१६ का भाग दे शेष पिण्ड जाने फिर इस पिण्ड में लम्बान का भाग दे तो चौड़ान तथा चौड़ान का भाग दे तो लम्बान प्राप्तहो ॥

आयाध्वजोधूमहरिश्व गोखरे भध्वाङ्क्षकाः पिण्ड हृताष्टशेषिते । ध्वजादिकाः सर्वदिशिध्वजे मुखंकार्यं हरौपूर्व यमोत्तरे तथा ॥ प्राच्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजेथवा पश्चादुदक् पूर्वयमोद्विजादितः ॥

पिण्ड में ८ का भागदे जो १ बचें तो ध्वज, २ बचें तो धूम, ३ बचें तो सिंह, ४ बचें तो श्वान, ५ बचें तो वृष, ६ बचें तो खर, ७ बचें तो गज ८ बचें तो ध्वाङ्क्ष आय जानो–यदि ध्वाङ्क्ष आय हो तो चारों दिशाओं को घरका दरवाजा करे, सिंह आय होने पर पूर्व, दक्षिण, उत्तरदिशाओं को, वृष आयमें पूर्व को, गज में पूर्व, दक्षिण को घर का दरवाजा करना चाहिये–ब्राह्मण ध्वज आयमें पश्चिम को, क्षत्रिय सिंह आयमें उत्तर को, वैश्य वृष आयमें पूर्वको, शूद्र गज आय में दक्षिण को दरवाजा करे ।

पिण्डेजवाङ्काङ्कगजीग्ननागनागाब्धिनागैर्गुणितेक्रमेण।
विभाजिते नागनगाङ्क सूर्यनागर्क्ष तिथ्यर्क्षखभानुभिश्च॥
आयो वरांशकोद्रव्य मृणमृक्षंतिथिर्युतिः।
आयुश्चाथ गृहेशर्क्ष गृहभैक्यं मृतिप्रदम्॥ ३५॥

पिण्ड को नव जगहों पर स्थापित करके उसको क्रमसे ९,९,६,८,३,८,८,४,८ इन अङ्कों से अलग २ गुणाकरे फिर गुणनफल में अलग२ क्रमसे ८,७,९,१२,८,२७,१५,२७,१२० का भागदे जो लब्धाङ्क १,२,३,४,५,६,७,८,९ ये आवें और इनकी बराबर गृहस्वामी व गृह नक्षत्र का योग हो तो मरण हो॥

मिसाल-जैसे किसी मकान की लम्बाई, चौड़ाई मान कर उसको परस्पर में गुणा करने से १२१५ गृह पिण्ड का अङ्क हुआ उसको ९ से ज़रब किया तो १०९३५ हुआ इन अङ्कों को ८ से तक्सीम किया तो ७ बचे जिससे कि गज आय हुआ-गज आय वाले मकान के दरवाजे पूर्व व दक्षिण की तरफ़ करने चाहिये इसी तौर से मकान की लम्बाई चौड़ाई जोड़कर आय निकालना चाहिये। यदि इससे विशेष जानना हो तो मुहूर्त्तचिन्तामणि गृह निर्माण प्रकरण से ज्ञात करो।

संधिश्रवणकार्य्याणि सर्ववीजानि वापयेत्। दमनं कृषिवाणिज्यं गमनं क्षौरकर्म च॥ रहटं चक्रयंत्राणि तानि सर्वाणि कारयेत्। तपश्चर्याणि कार्याणि शकटावाहनं तथा॥ गजाश्वोष्ट्रप्रयाणं च महिषीणां क्रयस्तथा। वाहनानि च यंत्राणि नौका कार्यं विनिर्दिशेत्॥ ३६॥

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः। बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्वामी तु चन्द्रमाः॥ सूर्य्यक्षेत्रं भवेत् सिंहः शनिर्मकरकुंभयोः। धनुर्मीनेश्वरो जीवः कथितं शिल्पजीविभिः॥ ३७॥

तक्षा, स्थपति, सूत्रधार, रथकार, यानी मिस्त्री का काम।

तक्षा, स्थपति, सूत्रधार, रथकार, यानी मिस्त्री जो पदहै यह बिश्वकर्मा बंशियों केही वास्ते सनातन से निर्द्धारण किया गया है परन्तु इस समय तो नीच कौमें बगैर विश्वकर्मा जीका पूजन किये और भेंट चढ़ाये विश्वकर्मा बंशियोंके कामको करके मिस्त्री कहलाते हैं जिससे विश्वकर्माबंशियोंपर नीचता का धब्बा पड़ने का संदेहहै प्राचीन समय में इनका महत्त्व और सन्मान होता था जैसा कि द्विजातियों का होताचला आरहा है–प्रमाण ऋग्वेद मंत्र ४ अ० ४ सू० ३६ ।

श्रेष्ठंवः पेशाअधि धायि दर्शतं स्तोमो वाजा ऋभवस्तन जुजुष्टन ।
धीरां सोहिष्ठाकवयो विपश्चित स्तान्व एना ब्रह्मणो वेदयामसि ॥ ४ ॥

मिस्त्रियोंकी बहुत आवश्यकता होतीहै इनसे ओवरशियर आदिक भी रायलेते हैं, कारण कि हरएक आदमी इमारत की अच्छाई के लिये पैमायश आदिको नहीं समझ सक्ता इसलिये मिस्त्रीलोगों की सलाहसे ही सब प्रकार से उत्तमता होसक्तीहै इनके मुख्य औज़ार येहैं–१ कन्नी, जिससे चूनाआदिको रखते हैं–२ बसूली, जिससे ईंटको दुरुस्त करते हैं–३ सहावल, जिससे दीवारका सिधान देखते हैं इसमें एक लकड़ीका टुकड़ा होता है उसमें एक सूराख़ करके डोरा डालदिया जाताहै उस लकड़ी के टुकड़ेको पकड़कर ऊपर दीवार में भिड़ाकर नीचे गोले को लटकाते हैं यदि दीवार उभड़ी बनजाती है तो गोला दीवारको नहीं छूता इसतरहसे उस दीवारको सिधानमें लाते हैं–४ गुनियाँ, इसका आकार समकोण त्रिभुज कासा होता है इससे लाइन आदिकों के लम्बान का सिधान देखना और कोने बनानाआदि मालूम होता है। इसके लिये नव और बारह तथा पंद्रह इंचकी लम्बी तीनसींकें लेकर

उनके कोनोंको मिलादो बस यही समत्रिकोण त्रिभुजहै इसीके आकार की लोहे अथवा लकड़ी की गुनियां बनवा लेनी चाहिये ५-सूत इसको दीवारके लम्बान तक फैला देतेहैं तो निकली हुई ईंट या पत्थर मालूम होजाताहै तब उसको ठीक कर देते हैं और पत्थरकी पंसाल देखने के लिये काम आता है तीनटुकड़े चार इंच लम्बे जिनको पत्थर के दोनों कोनोंपर और मध्य में उन तीनों कैंडोंपर सूत तानकर देखो जबतक तीनों कैंडों पर डोरा न बैठे तब तक कैंडों के नीचे पत्थर छीलतेरहो जब सूत कैंडों पर बैठजावे तब जानो कि पंसाल होगया और ऐंठ मिटगई और पत्थर आदिपर सीधा निशान डालने के लिये कोयले या गेरू अथवा खलीमिट्टी को पानी में घोलकर उसमें सूत भिगोकर तदनन्तर फैलाकर फटकदो निशान बनजावेगा-६ लेबिल यह ज़मीन की पंसाल देखने का आला है और वलायती कम्पास के मुवाफ़िक़ मामूली इमारतों में काम देताहै इसकी तरकीब यहहै कि एक बोतल में आधी दूरतक पानी भरो और डाट लगाकर दरिया के पानी की सतह के बराबर बोतल लिटादो जब बोतल का पानी और दरिया के सतहका पानी एक पंसालमें हो जावे तब वैसाही बोतल पर निशान खींचलो इस तरह पंसाल बनाई जाती है अब उसबोतल को जिस ज़मीनपर कैंडों के ऊपर बोतल लिटाके देखोगे और जो निशान बोतलपर पड़ाहै उसके बराबर बोतल का पानी जब सीध में पावो तब जानो कि ज़मीन की पंसाल ठीकहै अगर किसीतरफ़ निशान के बोतलका पानी खाली ऊँचा देख पड़े तो कैंडों को नीचे ऊँचे करके पानी निशानके बराबर करलो इससे दश फुट तक बहुत अच्छीतरह से सच्चाकाम हो सकताहै ॥

१ मकान की ज़मीन का शुभाशुभ जानने के लिये घरके मालिक

के हाथ की लम्बान चौड़ान और गहरान का गड्ढा खोद उसी मिट्टी से पूरो जो मिट्टी कमपड़जावे तो अशुभ जानो और बढ़जावे शुभहै॥

२ जहां घर बनाना हो वहां बीच में गड्ढा खोदकर चारबत्ती चारों दिशाकी ओर जलाकर एक चिराग़ उस गड्ढे के अन्दर रखदो और देखो जिसतरफ़की बत्ती देरतक जलती रहे उसी तरफ़ दरवाज़ा क़ायम होनाचाहिये।

३ दरवाज़े के अगल बगल कड़ी रखना चाहिये किन्तु मध्य में न रखना चाहिये क्योंकि यह अशुभ है। ४ चौखट के बीच में गुरुत केन्द्र बचाने के वास्ते एक सुपारी पीले कपड़े में रखकर या रेणुका बांधनी चाहिये। ५ धन्नियां इस रीति से डालना चाहिये कि तीन से पूर्ण भाग जा सके-जिसको 'इन्द्र यम राज' कहकर सभी लोग गिन लेते हैं अर्थात् इन्द्र पर डालने से अक्सर मकान टपकता रहता है और यमपर डालने से अशुभ होता है तथा राज पर डालने से बहुत अच्छा होताहै॥

मकान की शुभ और अशुभ सूरत जैसे (१) बघमुहा मकान उसको कहते हैं जो निकास की तरफ़ चौड़ाई में ज्यादह हो और पीछे का रुख़ चौड़ाई में तंग यानी कम हो (२) नागमुखी, भुजा-हीन वग़ैरह उनको कहते हैं जिनमें कोने नहीं ऐसे मकान अशुभ कहलाते हैं॥

गोमुखी मकान उसको कहते हैं जो निकास की तरफ़ चौड़ाई में तंग यानी कम हो और पीछे की तरफ़ चौड़ाई में ज्यादह हो यहशुभ होताहै अगर ज्यादह तफ़सील देखना हो तो विश्वकर्मा प्रकाश ग्रन्थमें देखनेसे मकान की शुभ और अशुभ सूचक बातें मालूम हो सक्तीहैं। मिस्त्री को नक्शा समझना और इमारत का तख़मीना यानी इस्टिमेट

समझना ज़रूरी है लेकिन नक्शे का बनाना नक्शे नवीश का कामहै यानी ड्राफ़्समैन (Draftsman) (Estimate) तख़मीना यानी इस्टिमेट जिससे मालूम होसक्ताहै कि इस इमारत में कितना मसाला मज़दूरी और लागत खर्च पड़ेगा पहले नाप बुनियाद की खोदाई और मिट्टी की लिखोबाद बजरी यानी कंकरीट (Can crete) बुनियाद और छतकी एक जगह शामिल करो उसके बाद चुनाई कच्ची ईंट तथा पकसा तथा कच्ची पक्की चुनाई यानी पक्की ईंट गारेसे तथा पक्की चुनाई चूना और ईंट की तथा डाट वग़ैरह की अलग २ क़िस्म की लिखो– दरवाज़े और खिड़की चुनाई से मिनहाई दो इसके बाद कच्चा तथा पक्का तथा टीपकारी को नापकर लिखो इस नाप में दरवाज़े और खिड़की की मिनहाई नहीं लीजाती क्योंकि पक्खे और किवाड़े के पीछे तक प्लास्टर वग़ैरह होताहै बाद लकड़ी का काम रेल टीन छप्पर इत्यादि की लिखनी चाहिये । डाटकी नाप इस रीति से करे कि लम्बाई + ऊँचाई + गोलाई के बीच से लो डाटकी गोलाई के किनारे कोनों में जो चुनाई भरी जाती है उसको त्रिभुजाकार विभाग कहते हैं उस की नाप इस तरह करना चाहिये कि लम्बाई + आधी चौड़ाई + बीच की गहराई लेना चाहिये ॥

एक पाकिट बुक में नव ख़ाने ऊपर से नीचे को खींचो और उसी में कुल प्रति एक २ नाप लिखकर घन फुट निकाल लो उससे दरवाज़े खिड़की और डाटकी मिनहाई करदो कंकरीट व प्लास्टर और छतके चौके व कंकरीट व प्लास्टर चटाई नाप से दिया जाता है ।

पाकिट बुक में जो नव खाने होते हैं जिनमें हेडिंग इसभांति से लिखो कि (१) किस्मकाम (२) नामकाम (३) मौक़ा काम(४) लम्बाई (५) चौड़ाई (६) उँचाई (७) अदद यानी जिसामत(८) जोड़ (९) कैफ़ियत ॥

नक्शा बनाना अर्थात् ड्राफ़्ट्समैनका काम।

इमारतके नक्शा बनाने में तमाम सूरत इमारत की तीन नक्शे बनाकर दिखलाना चाहिये (१) प्लेन (Plan) यानी जमीनपर बुनियाद की सूरत दिखावे (२) येलीवेशन (Elevation) यानी जो इमारत बाहरसे तैयारहोने में देखपड़े (३) क्रास सेक्शन (Cross Section) जो इमारत का बीचो बीच काटकर मकान के अंदर की ओर बुनियादकी सूरत देखनेमें आवे इनतीनों नक्शोंके अलावह एक आब्लीकसेक्शन (Oblique Section) जिसमें तिर्छी काटकर इमारतकी तफ़सील (Detail) दिखाते हैं अगर इमारत चारोंतरफ़ मुतफ़र्रिक सूरत की हों तो उतने येली वेशन बनाने चाहियें॥

मकान की बुनियाद यानी प्लेन (Plan) बनाने का क़ायदा।

पहले मकान के बाहर भीतर की दीवार को नापो जैसी मोटाई लम्बाई पावो उसी तरह स्केल से नाप कर काग़ज़ पर लकीर खींचते जावो जिससे हरएक घरकी नाप ठीक मिलती रहे—दीवार दो लकीरों से बनाई जाती है—दीवार की मोटाई भी स्केल देखकर खींचो जहां दरवाज़े क़ायम किये जावें वहां नक्शेमें हद बांधकर दरवाज़े की लकीर मोटाई स्केल से देखकर खींचो और जहां डाट क़ायम करना हो वहां दीवार की हद बांध दो लकीरें बिन्दीदार तिर्छी एक दूसरी को काटती हुई खींचो और खिड़की के वास्ते दीवार की लकीरें [illegible]यम रख कर जितने नापकी खिड़की हो दो लकीरें स्केल देखकर खींचो जिन से दीवार और खिड़की दोनों मालूमहों—नीवमें कचका छोड़ना यानी अधिक चौड़ी होने पर दीवार के लकीर के अलावह तीसरी लकीर

खींचो अगर ज्यादह कचके हों तो उतनीही लकीरें और खींचो-जहां२ सीढ़ी कायम करना हों तो सीढ़ी के जितने ओटे हों उतनी लकीरें खींचदो-छतमें जितने लट्ठे व गाटर व कैंची या दूसरी लकड़ी जो पड़े उनको बिन्दीदार लाल लकीरों से प्लेन में दिखलाना चाहिये ॥

प्लेन (Plan) जब बनजावे तो जिस तरफ का रुख़ (Elevation) दिखलाना हो उस तरफ़ के पाये दीवार दरवाज़े नापकर स्केल के बमूजिब उतनीही उँचाई दिखलावो और जिस सूरतमें दरवाज़ा खिड़की व कानिस वग़ैरह की सूरत बनाकर नक्शे में दिखाना चाहिये और डाट की भी सूरत दिखाना चाहिये-दरवाज़े के पल्ले शीशे या दिलहेदार अलग २ दिखाना चाहिये ग़रज़ यह कि बाहर के देखनेसे इमरत यानी (Elevation) से मिलती रहै अगर सीढ़ियां हों तो उनकी लकीर बुनियाद वाली दो लकीरों के बीच में दिखावो ॥

येलीवेशन (Elevation) जब तैयार होगया तब क्राससेक्शन (Cross Section) का नक्शा बनाना चाहिये जिसका तरीका यहहै कि अगर छतसे लेकर नींव तक उस इमारत को बीचसे चीरो तो उसकी जैसी सूरत नज़र में आवे वैसा नक्शा खींचना चाहिये और जिस जगह पर चीरी इमारत यानी (Cross Section) दिखलाना हो उसको प्लेन (Plan) पर एक लकीर सेक्शनके वास्ते खींचकर दिखावो जिससे प्लेन और सेक्शन का मिलान मिलता रहे अगर कमरे मुतफ़र्रिक़ नापके हों तो प्लेन (Plan) पर टेढ़े नीचे या ऊपर जैसा मौक़ा हो दिखावो इन लकिरों के लिये पहिचानके हरूफ़ ए,बी,सी, (A. B. C.) एक घुमाव से दूसरे घुमाव तक लगादो लकड़ी व गाटर वग़ैरह की मोटाई व गहराई व छतकी कंकरीट व डाट ये सब दिखानी चाहिये।

येलीवेशन (Elevation) तो सिर्फ़ ज़मीन की सतह के ऊपर दिख

लाया जाता है लेकिन सेक्शन में बुनियादकी गहराई तक दिखातेहैं पहले कंकरीट दिखाते हैं फिर ईंटकी बुनियाद मय कचकों के दिखाते हैं डाट और कानिस वग़ैरह की बनावट भी सेक्शन में लकीरें खींच कर दिखाते हैं ॥

पुलके दोनों पहलू एक मुवाफ़िक बनते हैं उसका नक्शा प्लेन में आधा बुनियाद का नक्शा और आधे में उसकी मुंडेर और सड़क तक दिखाते हैं इस लिये उसके नक्शे में येलीवेशन (Elevation) ऐसा बनाते हैं कि आधेमें असली बुनियाद देख पड़ती है और आधे में मिट्टी के बाहर दिखाता है सेक्शन इसका इसतौर से बनायाजाता है जैसे पानी के बहाव की लकीर से काटा गयाहो पहले पुलके बनाने में प्लन (Plan) बनाना ज़रूरी है उसके बाद सेक्शन (Section) और येलीवेशन (Elevation) ऐसा बनावो कि प्लनकी लकीरों के सामने येलीवेशन और सेक्शन की लकीरें मिलाने से सामने पड़ें ताकि हरएक दीवार की जगह प्लेन के मुताबिक सामने ठीक आसानी से समझ में आवे ॥

क़ायदा नक्शा खींचनेका ।

नक्शा बनानेका काग़ज़ ख़ास मोटे क़िस्मका होताहै जो ड्राइंग पेपर कहलाताहै उसपर नक्शा पेंसल से खींचा जाता है उसको गोल लपेटकर रखते हैं तह करने में टूटजाता है जब पेंसल से बिल्कुल नक्शा तैयार होजावे तब उसपर स्याही की लकीरें फेरदो नक्शा बनाने की स्याही की टिकिया एक ख़ास होती है जो फैलती नहीं है नक्शा बनाने के पेश्तर पेंसल की नोंक बहुत बारीक बनानी चाहिये और लकीरें बहुत आहिस्ते से हाथको साधकर खींचनी चाहिये जिससे

गहरी लकीर न पड़े और जो रबड़से आसानीसे मिटसके लकीर मिटाने के लिये रबड़ एकतरफ़से चलावो ताकि उसकी स्याही काग़ज़को मैला न करे और जब काग़ज़पर स्याहीकरो तब ऊपरसे नीचेकी तरफ़ खींचो ताकि हाथसे धब्बा न पड़े लकीरके खींचने की तारीफ़यहीहै कि मोटी पतली नहो नक्शा खींचनेके वास्ते एक ख़ास क़लम चोंचदार होतीहै जिसको ड्राइंगप्यन (Drawing pen) कहतेहैं उसकीचोंच में स्याहीभर मोटीया पतली लकीर खींचतेहैं स्याही को पतली रखना चाहिये और क़लममें स्याही भरकर नक्शा बनानेके पेश्तर दूसरे काग़ज़पर आज़मा- यश कर लेना चाहिये जिसमें क़लम साफ़ चलसके नक्शे में रंगबहुत हलका भरना चाहिये मोमजामा यानी ड्राइंग क्लाथ (Drawing cloth) जिसको ट्रेसिंग क्लाथ (Tracing cloth) भी कहतेहैं अगर इसमेंरंग भरना हो तो स्याही भरेहुये तरफ़ की पुश्तपर रंगभरना चाहिये ताकि अस ली तरफ़ साफ़ मालूम दे इसके अलावह एक क़िस्मका चिकना बारीक मज़बूत अकसके वास्ते ड्राइंग पेपर (Drawing paper) भी मिलता है॥

नक्शा बनाने के औज़ारों के नाम।

ड्राइंग प्यन (Drawing pen) पियाली स्याही घोलने की जब स्याही पियाली में घोल दीगई तब एक कागज़ के टुकड़े से पियाली की स्याही उठाकर ड्राइंगप्यनकी चोंचमें रखकर पेंच कसते जावो जितनी पतली मोटी लकीर करना हो, ड्राइंग कम्पस यानी परकाल (Drawing Compass) जिसमें जब चाहो पेंसल लगावो चाहे स्याही भरने की चोंच लगावो और जितनी चाहो घटाते बढ़ाते रहो यह महराब और डाट और गोलाई के बनाने में काम आती है, पैरेलल रूलर (Paralel Ruler) यानी समानान्तर लकीर खींचने का औज़ार जिससे कि हरएक लकीर बराबर और सीधी खिंचै पहले इसके दोनों पट मिलि

लकीर खींचो फिर नीचे के पटको जितने फ़ासले पर लकीर खींचना हो पटको खसकाते और लकीर खींचते जावो बराबर लकीर बनती जावेगी इसी कामके लिये एक औज़ार दुसरा पीतलका जिसमें पहिये लगे होते हैं काग़ज़ पर चलाने से समानान्तर सरकताहै और उससे लकीर बराबर औरसीधी बना सकते हो, मार्केस् स्केल (Marqaois Scale) जिसपर स्केल के चिह्न लगे होते हैं यह बड़े कामकी चीज़ है दूसरा एक तीन कोने की लकड़ी की तख्ती जो बहुत चिकनी होती है फुट से मिला कर जिस तरफ़ चाहो उसको सरका कर लकीर खींचलो और उसी में एक तरफ़ पख लगी होती है जब स्याही की लकीर खींचना हो तो पख का रुख काग़ज़ पर रक्खो ताकि स्याही काग़ज़ पर न फैले पेंसलकीलकीर खींचना हो तो पखको पलटकर ऊपर करलो जिससे पेंसल बराबर मिलकर चले, प्रोट्रेक्टर (Protector) उसको कहते हैं जो छह इंच लम्बा एक लकड़ी या हाथी दांत का टुकड़ा होता है यह कोना और एंगल (Angle) बनाने के काम आता है, स्केल (Scale) एक लकड़ी के फुटा को कहते हैं जिसपर इंची और सूत के चिह्न होतेहैं, नक्शा बनाने के लिये पेंसल कड़ी होना चाहिये जो दो या तीन यच (HHH) के निशान की बाज़ार में मिलती है और नक्शा बनाने की निब (Nib) ख़ास बहुत बारीक होती है, पेन्टेग्राफ (Pentegraph) जो एक क़िस्म का आला होताहै जिससे नक्शा छोटेसे बड़ा और बड़ेसे छोटा बन सकताहै और कुछ फ़र्क़ नहीं होता, सेक्सन पेपर (Section paper) चार ख़ानेदार काग़ज़ को कहते हैं पीली या लाल लकीरों से ख़ाने स्केलसे बने होते हैं उसपर मकान वग़ैरह का नक्शा बहुत जल्द तैयार होजाता है और अक्सर छह इंच का स्केल लियाजाता है नक्शे के औज़ारोंके साथ बुरुश रबड़ और रेज़र वग़ैरह की जरूरत पड़ती है ।

नक्शे बहुत किस्म के बनते हैं मकानों के नक्शों का तो बयान होही चुका लेकिन दूसरे नक्शे किस्तवार के जिसे शजरा कहते हैं इसमें एक गांव के तमाम खेतों की शक्लें बनी रहती हैं और उनके नम्बर उसपर लिखे होते हैं अक्सर ड्राइंग क्लाथपर अक्स बनाये जातेहैं अक्स खींचने के लिये एक टट्टी जिस पर बारीक कपड़ा मढ़कर बनाते हैं उसी पर असल नक्शा आलपीन से लगाकर धूपकी ओर टट्टी खड़ी करके जिससे कुल लकीरें मालूम करके स्याही खींच देतेहैं और आबादी पेड़ और कुवां वगैरह के चिह्न मामूली तौर पर होते हैं नक्शेपर अंक बहुत साफ़ और शुद्ध लिखना चाहिये।

प्रिन्टिङ्ग (Printing) यानी नक्शेपर हुरूफ बनाने का तरीका हुरूफ़की लम्बाई और चौड़ाई तथा उँचाई का एक ख़ास तरीका उन के लिखने के कायदे यानी ब्लाक प्रिन्टिङ्ग (Block printing) ओल्ड इंग्लिश (Old English) आर्नामेंटल लेटर्स (Ornamental) वगैरह ब्लाक प्रिन्टिङ्ग तथा आर्नेमेंटल से हेडिंग बनाई जाती है इसका कायदा यह है छह सीधी समानान्तर लकीरें अक्षर की उँचाई के समान रक्खो फिर उतनी मोटी पांच लकीरें हरएक अक्षर के लिये ऊपरसे नीचेको खींचो उसके बाद एक भागकी लकीर वास्ते स्पेस हर एक अक्षर के बीचमें छोड़ो और छह लकीरों के मुवाफ़िक एकअक्षर का स्पेस हरएक लफ्ज़के बाद छोड़ो पहले हुरूफ़ पेन्सलसे बनालो बाद उनके कोनों में बारीक कलमसे स्याही भरदो इसके बाद कोनेसे कोने तक ड्राइंग प्यन् से स्याही खींचदो जिससे साफ़ और सीधे खुश्नुमा देख पड़ें अक्षर के लिये हद्द यह है कि आई (I) को एक दर्जा—जे (J) को तीन दर्जा—ए,यफ़, यल्, पी, आर, सी, जी (A F. L, P, R, C, G) का तीन २ दर्जा—यम,डबल्यू (M. W.) को पांच २ दर्जा देना चाहिये॥

हरएक [illegible] की सूरत मुतफ़र्रिक़ रंगोंमें दिखाई जाती है यानी कच्ची रास्ताके वास्ते पीलारंग–पक्की सड़कके वास्ते लाल रंग–कच्ची ईंट का मकान पीलारंग पक्कीईंट का मकान लेक रंग–पत्थरके मकान का बर्न्ट अम्बररंग–लोहे के कामके वास्ते नीला रंग–लकड़ी के कामके वास्ते भूड़ी का रंग सलामी या साया में हरारंग अगर लोहा लगाहो तो पर्शियन ब्लूडार्क रंगदिखावो और ढले हुये लोहे को कालारंग नदी और नहर वग़ैरह के लिये दो लकीरें खींचकर बीचमें नीलारंगभरदो–गारे के कामके वास्ते लाइट रेड् वाश दिखावो–पहाड़, रेगिस्तान,पेड़, पुल, रेलकी सड़क, तालाब, कुवां, गांव, सरहद, कंकरीट, पिचिङ्गको क़िस्म २ के रंगों से दिखाना चाहिये ।

घड़ी बनाने की तर्कीब ॥

———:o:———

घड़ियां बहुत प्रकार की होती हैं इनके बनानेके वास्ते ज़ियादह तर मश्क़ की ज़रूरत है हरएक प्रकार की घ[illegible] के पुर्जे और बनावट कुछ न कुछ और २ क़िस्म की होती है जबतक तमाम क़िस्म की घड़ियों को घड़ीसाज़ नहीं देखता और नहीं बनाता तबतक कारीगर नहीं होसक्ता सीखने के वास्ते सीखनेवालोंको ऐसा करना चाहिये कि एक कम क़ीमती घड़ी ख़रीदकर उसके तमाम पुर्जों को खोल के देखकर फिर अपनी २ जगह पर उन पुर्जों को जुड़ावे दश पांच मर्तबा ऐसा करनेसे काम बख़ूबी समझमें आजावेगा अब कुछ मुख्य २ प्रसिद्ध घड़ियों की सफ़ाई तथा मरम्मत करने के विषय में लिखाजाता है–

टाइमपीस (Time Piece.) यानी बर्मन फुल प्लेट बनावट की घड़ी में पुर्जे नीचे लिखे प्रकार के होते हैं फनर (Funner.) मेनस्प्रिंग, फनर का पहिया,कुत्ता,कमानी कैंकलाट ये सब एक साथ मिले होते

हैं। सेंटरबाल, कमरख, सेंटर स्कैयर ये सब पुर्जे बीचमें होते हैं जिसके दूसरी ओर डायल की तरफ़ ये पुर्जे लगे होते हैं-गुर्जक, मिनटवील, जिसका मिलान गुर्जक से तथा मिनटवील के गुर्जक से मिलान आवरवील का उसके बाद तीसरी जगह पर थर्डवील, गुर्जक उसके बाद चौथी जगह पर सेकंडवील लगता है ॥

हारी जन्टल (Horrigental.) पहिया छोटासा जिसका मिलान लीवर से होता है लीवर पंखा गोल होता है और स्प्रिंग नक्शे को नम्बरवार मिलाकर पुर्जों की सूरत और उनकी जगह समझो ॥

फनर उसको कहते हैं जो चाभी लगाने से कसजाता है कस जाने पर फनरबाल को ज़ोर देकर चलाता है फनरवील मिलताहै सेंटरवील की गुर्जक से इस वास्ते सेंटरवील की दूसरी गुर्जक चलाती है मिनट वील कोयह तरीक़ा घड़ी के चलने का है कि फनर जब खुलने वाला होता है तो एक पहिये को चलाताहै जिसके ज़ोर से अपने २ दांतों के मुवाफ़िक़ सब पहिये मिनट, घंटा, सेकंड और तारीख़ महीनातक के जितने हों सब चलने लगते हैं ॥

सब घड़ियों में पुर्जे इसी क़िस्म के होते हैं सिर्फ़ कुछ थोड़ा २ फ़र्क़ उनकी सूरत और जगह में बदल देते हैं ॥

टाइमपीस की सफ़ाई इस तौर से होती है कि अव्वल दोनों पावों को और ऊपर की कुंढी को जिसमें पेंच कटे हैं खोलो पश्चात उसकी चाभियां अलाहिदा करके ढकना उतार लो फिर डिबिया और पुर्जों को बाहर निकाल लो उसके बाद सुइयां अलग करलो डायल की दो कीले निकालकर अलग करलो पंखा जिसमें बालकमानी लगी है पहले उसकी पिन को खोलो जो सूराख़ में लगी होती है बाद पेंच को ढीला कर पंखा निकाल लो यदि कूक भरी हो तो फनर

को आहिस्ते से उतार लो जिससे उछलकर चोट न लगे फनर इस तरीके से उतारो कि पहिले उसपर चाभी भरदो और चाभी को बांक में कसदो कि छूटने का डर न रहे फिर कुत्ते पर से कमानी निकाल लो चाभी को थोड़ा सा घुमावो परन्तु डिबिया हाथ से गिरने न पावे धीरे २ चाभी घुमाते रहो जब तक कि ज़ोर ख़तम न होजावे बाद को आसानी से खोल डालो सेंटरवील के गुर्जक को हथौड़ी की चोट देकर खोलदो बाद दोनों प्लेटों और फ्रेम को खूब कपड़े और तेलसे साफ़करो बाद दिया सलाई की महीन नोक बनाकर उसके सूराखों को साफ़करो, बड़े सूराखों को कपड़े की बत्ती बना कर साफ़ करो, पुर्जों को यानी दांत और गुर्जक इत्यादि को बुरुश से साफ़करो फनरको कपड़े से पोंछों, बालकमानी के पंखे के दोनों पेंच जिनसे बालकमानी रुकी रहती है दियासलाई के गुटके से साफ़ करलो।

पुर्जों का जुड़ाना यानी फिटिंग (Fitting) साफ़ करने के बाद पुर्जे जहां के तहां लगावो पहले नीचे के प्लेट में फनर के पहिये को रक्खो फिर उसका मिलान कर सेंटरवीलको लगावो बादको थर्ड-वील फिर सेकंडवील उसके बादहारीजेंटल फिर लीवर को जिसमें दो पिन लगी हैं जिसका तअल्लुक़ हारीजेंटल से है लगादो उसके बाद दोनों पेंचों पर पंखे को रखदो पंखे में एक पिन लगी होती है वह रूबी पिन कहलाती है वह लीवर की मछली के मुँह में होनी चाहिये बाद उसके लोहेका घेरा लगादो सेंटरवील की गुर्जक हथौड़ी से चोट देकर लगावो ज्यादा मतठोंको कि प्लेट से मिलजावे उसको प्लेटसे थोड़ी उठी रहना चाहिये नहीं तो घड़ी न चलेगी उसके पश्चात् मिनटवील लगावो बादको जितने और दूसरे वीलहों लगादो फिर डायल लगाकर सुइयां लगादो पहले आवर हेंड को किसी एक अंकपर क़ायम करो और मिनट हेंडको ठीक बारह के अंकपर क़ायम कर ठोंकदो मगर इतना

ज्यादा न ठोंको कि सख्त होजावे,हिलतारहे,ठोंकनेके बाद घंटी लगा के चला कर थोड़ी देर देखलो फिर बादाम का तेल निकालकर हर सूराखपर किसी सलाई से: पंखे के दोनों पेंच, रूबीपीन और लीवर के दोनों प्लेटों पर तेल लगाना चाहिये बाद इसके शीशे को साफ़ करके चूड़ी को डालकर डिबिया बिठादो केसके और डिबिया यानी लुगदी के सूराखों का ध्यान रखकर पाये व कुंडा सही करदो ॥

घड़ी की मरम्मत ॥

जब घड़ी बंद होजावे तब देखो कि कौनसी वजह से बन्द है कोई दांतटेढ़ा तो नहीं होगया,लाग का फ़ासला कम या बहुत होना देखो, सुइयों का ज्यादा सख्त ठुकजाना देखो, चूलोंका टेढ़ा होजाना देखो, कोई पहिये का सख्त लगजाना इत्यादि देखो, घड़ी का नुक्स देखने के वास्ते पहले पंखों को व लीवर को खोलकर चाभी के ज़रीये चक्कर सर्राटे से देखो यदि कुल पहिये ठीक चलते हों तो कोई ऐब नहीं है बाद उसके लीवर की निबों को देखो टेढ़ी तो नहीं हुईं अगर ठीक हैं तो लीवर को चढ़ाकर पंखे की चोबों पर नज़र करो अगर खराब होगई हों तो पथरी पर घिसकर नोकें बना लो बाद उसके डायल को देखो कि सुइयों से लगता तो नहीं है ॥

तरकीब बादाम के तेल निकालने की यह है कि बादाम को छीलकर उसकी गूदी दो पैसों के बीचमें रख किसी सँडसी या हथकल या बाँक के दबाने से तेल बहुत अच्छा बे दाग़ पुर्जों पर लगाने के वास्ते निकल आवेगा ॥

यदि कोई पुर्जा टूटा देखो तो घड़ीसाज़ों की दूकान से उसी मुवाफ़िक़ मोल लेकर फिट करदो पुर्जे के दांत वगैरह गिनकर उसी

टूटे हुये पुर्जेकी शक्ल का ख़रीदना चाहिये और ट्रेटों में लगाकर ठीक हो तो खरीदलो-विलायत से विलायती पुर्जे रद्दी घड़ियों के घड़ी साज़ों के यहां ख़रीदे जाते हैं क्योंकि इनका बनाना हिन्दुस्थान में कठिन है॥

मरम्मत घर्षघड़ी की-आजकल क्लाक और ऐं सोनिया मेकर की बनी हुई ज्यादा काम में आती हैं इनकी मरम्मत और सफ़ाई इस तौरपर करनी चाहिये कि पेश्तर उसकी पिन खोलकर सुइयां निकाल दो बाद डायल के पेंच खोलकर निकाल लो और तीन पेंचों को जिन से लुगदी केस में जड़ी होती है खोलकर लुगदी को अलग करलो, चाभी यानी कूक उतारने का कायदा यह है कि जैसे घंटे में चाभी लगाते हैं उसी तौर उसके भील यानी एडन्लाट में लगाकर चाभी के सूराख में कोई संसी डाल दो और मज़बूती से पकड़ कर कुत्ते पर से कमानी हटाकर धीरे २ चाभी यानी कूक उतारलो इसी तौर दोनों फनरों की चाभी उतार लो और याद रक्खो जिस जगह से जो पुर्जा खोलो वहीं लगाना चाहिये, फ़िटिंग के वक्त ख्याल रखना चाहिये कि एक पहिये का सम्बन्ध दूसरे से ज़रूर होवे और ज़रूरी बात यह है, कि स्ट्राइक यानी घंटी बजाना दुरुस्त करने के वास्ते बाजके पुर्जों को छेड़कर देखो कि कैसी बजती है अगर हथौड़ी और तार अलग २ गिरें तो उनको एकही समय में गिराना यानी जिस समय खाँचेमें तार बैठे उसी समय हथौड़ी भी गिरना चाहिये,बाजके पंखे की बराबरवाले पहिये में एक पिन लगी रहती है जो आवाज़ करने के समय उस तारके टुकड़ेपर आकर ठहरनी चाहिये अगर न ठहरती हो तो उस पहिये को सूराखसे हटाकर उस तारकी टक्कर पर उस पिनको लगादो और पहिये को फिर अपनी जगह लगाकर देखो ठीक हुआ

या नहीं जब तार और हथौड़ी साथ गिरने लगे फिर चाबी देकर बाज को बजावो और देखो कि हरएक खांचे में गिरता है फिर डिटैच लगाकर चाबी देकर देखो कि डिटैच चालू है अगर चालूहै तो पिंडूलम वायर जो उसमें से निकला होगा लगादो और तेल देकर केसमें फ़िट करदो पिंडूलमको आंकड़े में लगा कर हिलादो और कानसे उसकी टक टककी आवाज़ सुनो दोनों आवाज़ें एकसी होनी चाहियें अगर न हों तो समझो कि उसकी जगहकी हमवारी में फ़र्क़ है अगर जगह हमवार ठीक है और चोट में फ़र्क़ है तो डिटैच को थोड़ा खम जरूरत मुवाफिक देकर चोटको सही करलो॥

ठीक एलार्म देखना यानी एलार्म का डायल आवर वीलकी लाट पर क़ायम कर उसका तार डायल की घोड़ी में लगाकर नीचे एलार्म की हथौड़ी से सम्बन्ध करदो फिर बजाकर देखो एलार्म डायल के खाँचे में घोड़ी के पड़ने से एलार्म होना चाहिये यदि बिना खांचे बजता हो ठीक नहीं इस ऐब को निकालो कि नीचे हथौड़ी के तारको जिसमें तार का सम्बन्ध है खम देकर सही करदो उसका ठीक करना सिर्फ़ खम देनेसेही होता है॥

घड़ी की रेग्यूलेटिंग करना यानी पिंडूलममें नीचे ढेबरी लगी होती है जो पेंच से खिसकती रहती है अगर घंटा सुस्त बजताहो तो ढेबरी ऊपरको खसकादो और तेज़ होतो ढेबरी नीचेको खसकादो यह कायदा धर्मघड़ी के वास्ते है। टाइमपीस और जेबी घड़ीमें रेग्यूलेटर साथही लगा रहताहै जिसपर स्लो,फ़ास्ट या रिटायर एडवांस लिखारहताहै॥

जेबी घड़ी यानी जनेवावाच अधिक प्रसिद्ध है जिसका वर्णन लिखते हैं उसी क़िस्म से दूसरी घड़ियों के भी पुर्जे समझ लेना।

जेबी घड़ी का खोलना यानी प्रथम पिछला ढकना खोलो जहां से

चाभी दीजाती है अन्दर की तरफ़ एक छोटा पेंच लगा मिलेगा उस को खोलो जिसमें घुंडी अर्थात् चाभी बाहर निकल आवे फिर एक पेंच खोलो जो कटा हुआ लगा होगा फिर लुगदी को बाहर निकाल लो उसके बाद सुइयां इत्यादि निकाल लो फिर डायल निकाल लो जो दो पेंचों पर लगा रहता है और पेंच अन्दर की तरफ़ होतेहैं फिर आवरवील, मिनटवील, वगैरह निकाललो उसके बाद अन्दर की तरफ़ एक पेंच पंखे की घोड़ी पर लगा रहता है उसे खोलकर मय घोड़ी पंखा अलग करलो, घोड़ी के अलग करतेही कुल पहिये एक साथ घूमने लगें गे जिनको सेंटरवील पर धीरे से अंगुली रख धीरे २ घूमने देना चाहिये नहीं तो चूर टूट जाने का खटका होता है फिर सेंटर क्वायर जिसमें एक गुर्जक लगी होती है और जिसपर सुई लगाई जाती है चोट देकर गुर्जक वगैरह को अलग निकाललो फिर हर जगहके पेंचों को खोल कर घोड़ी निकालते जावो जिससे कुल पुर्जे घोड़ियों से अलग होजावें बादके खड़िया मिट्टी इत्यादि से उन पुर्जों को साफ़ करलो लेकिन सख्त हाथ से किसी पुर्जे को न दबाना पुर्जे बहुत नाजुक होते हैं टूट जाने का खटका रहताहै गुर्जक को गुटके से साफ़ करके फिर जिस तरह पुर्जे खोले हैं उसी तरह लगाते जावो जो पुर्जे सबसे पीछे खोले थे उनको पहले लगावो उसी तौर नम्बरवार लगालो पुर्जे बिठाते समय दोनों सूराख़ों में ठीक पहले अन्दाजकर बैठालो ताकि पेंच कसने के वक्त दोनों चूलें टूट न जावें॥

दूसरे प्रकारकी जेबी घड़ियों का वर्णन॥

जनेवा वाचकी बनिस्बत एक पुर्जा लीवर वाचमें अधिक होताहै इसी लिये यह लीवर वाच नाम से प्रसिद्ध है। लीवर पुर्जे की सूरत

मछली कीसी बनावट होती है उसका सम्बन्ध हारी जंटल से लगा रहता है ॥

जनेवा वाचके हारी जंटल में लीवर की ज़रूरत नहीं रहती वाच के कुल पुर्जों को आई ग्लास लगाकर देखना चाहिये अन्धेरे में काम न करना चाहिये जब तबीअत घबड़ा जावे तब कुछ देर के वास्ते काम को रोक देना चाहिये । दांतों को बेंड़े बाल वाले बुरुश से साफ़ करना चाहिये ॥

घड़ी साज़ के औज़ारों के नाम ॥

स्क्रयू ड्राइवर यानी पेचकश ॥

फ़ोर्शिप यानी चीमटी बुरुशवालों की ।

प्लायर यानी प्लास जो एक किस्म की संसी होती है उस से तार भी कट जाता है ॥

हेंड वायस और बेंच वायस जिसको बांक और हथकल बोलतेहैं ॥

पिनवायस जिसमें पिनको दबाकर रेतते हैं । फाइल्ज़ यानी कई किस्म की रेतियां चपठी, गोल, बादामी ॥

चाक यानी खड़ियामिट्टी इससे प्लेट वगैरह पर बुरुश जिला करते हैं ॥

सलाई तार के टुकड़ों को कहते हैं जिसको रेतकर नोक निकाल लेते हैं और ज़रा पीटकर उससे पुर्जों में तेल देते हैं ।

रबड़ की मुहर बनाने की तरकीब ॥

मुहर बनाने के लिये जो सामान इकट्ठे करने चाहियें सो लिखते हैं । अंग्रेजी, हिन्दी, फ़ारसी वगैरह के हर किस्म के टाइप, स्टाम्प,

प्रेस, प्रेस, मोल्डिग प्लेट, प्लास्टर आफ़ पैरिस, ग्लेसरीन, इंडियनरबड़ और मोल्डिंग कम्पोजीशन ॥

जिस शक्ल की गोल या बैजावी और जिस नाम की मुहर बनानी हो पहले उस नामको टाइपसे कम्पोज़ करो बाद को प्लास्टर पैरिसको घोलकर सख्त लुगदी बनाकर सांचा उठालो, सांचा सुखाकर और उसके ऊपर एक रबड़ का टुकड़ा रखकर प्रेस में दबादो और प्रेसको गर्म करते वक़्त देखते रहो जब रबड़ पिघल कर सफ़ेद रंग से काला होजावे उसी वक़्त प्रेस से मोल्डिंग प्लेट निकाल लो मोल्डिंग प्लेट ठंढा होजाने पर उससे रबड़ निकाल लो फिर धोकर बुरुश वग़ैरह से साफ़ करके सरेश से एक लकड़ी के गुटके पर चपका कर काम में लावो ॥

मोल्डिंग प्लेट लोहे का होता है इस में चार खूंटी उठी होती हैं नीचे के प्लेट में हर्फ़ आजाने भर की एक बाढ़ लगी होती है खूंटियों में बैठजाने वाला चार छेद का ढकना होता है जो उसपर कस दिया जाता है और प्रेस भी लोहे का बना हुआ मिलता है और लोहे की चद्दर का बन भी सक्ता है जिस किस्म की मुहर बनाना हो अंग्रेज़ी, हिन्दी अक्षरों में उस नामको कम्पोज़ कर उसका प्रूफ़ लेलो उसके बाद प्लास्टर पैरिस में मोल्डिंग कम्पोज़ीशन जो बना हुआ मिलता है और थोड़ी ग्लैसरीन डालकर उस प्लास्टर को पानी से घोलकर मोल्डिंग प्लेट की बाढ़ के अन्दर लगावो उसे थोड़ीदेर सुखाकर उसपर कम्पोज किये हुये नक्शे को रखकर थोड़ा सा दबावो तो उन हरूफ़ों का ठीक सांचा प्लास्टर पैरिस में बन जावेगा दबाने के वक़्त बड़ी होशयारी रखनी चाहिये कि चारो तरफ़ बराबर दबे और उठाते वक़्त हुरूफ़ की नोक न टूटजावे अगर कोई ठप्पा या हर्फ़ टूटजावे तो उस मोल्डिंगको निकालकर फेंक दो और ऊपर लिखे हुये बमूजिब प्लास्टर

पैरिस घोलकर दुबारा मोल्डिग प्लेट पर लगावो जब ठप्पा ठीक आ जावे तब मोल्डिग प्लेट को कुछ देर सूखने के लिये रखकर फौरन् ही प्रेस को गर्म करने के लिये रखदो उसके बाद गट्टापर्चा यानी रबड़ का मुहर के बराबर टुकड़ा काटकर उस प्लेट पर रखकर उसके ऊपर एक मोटा कागज़ रखकर थोड़ा सा कसदो ताकि रबड़ अपनी जगह से हिले नहीं जब प्लेट गर्म हो और देखते रहो जब रबड़ कुछ पिघलने लगे उस वक्त प्रेस को कसदो और थोड़ीदेर के बाद प्रेस को उतार मोल्डिगको निकाल लो देर तक आगपर रखने से रबड़ जलजाने का अंदेशा होता है इसका ख्याल रखना चाहिये ठंढे होने के बाद रबड़ निकाल कर देखो अगर न ठीक बनी हो तो दुबारा रखकर आंच दो और जो ठीक बनजावे तो निकाल कर पानी से धोकर फ्रेंच चाक लगाकर चिकनी चमकदार बनालो फिर चपड़ा या सरेश से लकड़ी के गुटके या मुहर पर चिपका कर काम में लावो ॥

चांदी सोने की मुलम्मा साज़ी ॥

यह दो क़िस्म की होती है एक बैटरी के ज़रीये से की जाती है दूसरी घिसने से होती है लेकिन बैटरी वाली मज़बूत और अच्छी होती है-बैटरी दो क़िस्म से बनाते हैं एक चीनी की दूसरी तांबे की लेकिन गिलट करने वाले लोग तांबे की डोलची पसन्द करते हैं जिस डोलची के बनाने की तरकीब यह है कि उसके दोनों तरफ़ दो कुंढे पीतलके जड़दो फिर उसके अन्दर रखनेके वास्ते एक मिट्टीकी डोलची बनवावो ताकि तांबे की डोलचीके अन्दर रखनेसे दो २ अंगुल चारो तरफ़ छूटी रहे और एक जस्तेकी मूसली बनाकर उसमिट्टीकी डोलची के बीचो बीचमें लटकी रहे उसके बाद तांबे की डोलचीमें नीलाथोथा

यानी तूतिया, या गन्धक का तेज़ाब या नौसादर भरकर पानी डाल दो उसके बाद मिट्टी की डोलची में सांभर नोन और पानी डाल कर व जस्ते की मूसली लगाकर तांबे की डोलची जो तेज़ाब से भरी है उसमें रखदो और दो तार तांबे के लेकर उनमें से एक तार तांबे की डोलची में कसदो और दूसरा तार मिट्टी की डोलची में जस्ते की मूसली जो लटकती है उसमें कसदो बस अब बैटरी का सामान तैयार होगया॥

अब चांदी चढ़ाने की तरकीब यह है कि एक चीनी के प्याले में चांदी का पानी भर कर तांबे की डोलची का तार और जस्ते की मूसली का तार इन दोनों तारों के सिरे उस प्याले के पानी में डाल कर देखो अगर उस तार के डालने से बुल्ले उठने लगें तो जानो कि बैटरी ताक़तदार है और अगर बुल्ले न उठें तो तांबेकी बालटी में थोड़ा सा तूतिया डालदो बैटरी की ताक़त बढ़जावेगी॥

तरकीब चांदी गलानेकी यहहै कि एकतोला असली चांदीके बारीक टुकड़े करके एक चीनीके प्यालेमें नाइट्रिक एसिड यानी शोरा का तेज़ाब भरकर चांदीके टुकड़े डालदो वे टुकड़े तेज़ाब की गर्मीसे गलना शुरू हो जावेंगे और प्याले में से धुवां उठने लगेगा इस धुवें से अपनी आंखें बचानी चाहिये अगर तेज़ाब कमज़ोर पावो तो प्याली के नीचे आंचदो कि ताक़तवर होजावे जब कि कुल चांदी गलजावे और धुवां निकलना बन्द होजावे व चांदी के टुकड़े सब स्याह दीखें तब जानो कि गलगई–तेज़ाब हलका और कमज़ोर खरीदने से प्याले के नीचे आग रखनी पड़ती है इसलिये तेज़ाब तेज़ और असली होना चाहिये–चांदी गलजाने के बाद तेज़ाब जो बचरहे उसको तेज़ आंच करके उड़ा देना चाहिये और तेज़ाब से जलीहुई चांदी का महीन रेत

हरे रंगका पतला पानी सा होजाताहै और टुकड़े काले होजाते हैं इस जलीहुई चांदी को धोनेकी तरकीब लिखते हैं कि अव्वल में चांदीको चीनी के प्याले में रखकर नमक मिले हुये जलसे धोवो,नमकके जलसे धोतेही हरी और स्याह सब चांदी की राख दूधके समान सफ़ेद होजावेगी उसके बाद उसको निर्मल जलसेइसक़दर धोइये कि तेज़ाब का होना पूरे तौर से जातारहे और चांदी की सफ़ेद राख रहजावे इसको कुश्ता चांदीका कहते हैं अंग्रेज़ी में इसको नाइट्रिक सिलवर कहते हैं॥

बनाना चांदी के पानी का इसतौरपर है कि उसको एक प्याले में रखकर पानी भरकर डेढ़ तोले के क़रीब साइनेडाफ़ पुटाश डालदो जिससे चांदी का पानी बन जावेगा उसके बाद ब्लाटिंग पेपर में छान कर इस्तेमाल में लावो ॥

किसी चीज़पर चांदी चढ़ाने की तरकीब यह है कि अगर तांबे या पीतलकी अदद पर चांदी का मुलम्मा चढ़ाना हो तो पहले उस अदद को खूब साफ़ करलो कि किसी क़िस्मका धब्बा या गड्ढा या किसी क़िस्म की चिकनाई न लगने पावे नहीं तो उस मौक़ेपर चांदी न चढ़ेगी और चांदीका पानी भी खराब होजावेगा अब वह चीज़ कि जिसपर मुलम्मा करना है उसके मुवाफ़िक़ चीनी का प्याला या कोई और उसी क़िस्म के बर्तन में चांदी का पानी इस क़द्र भरो कि वह चीज़ उसमें डूबजावे उसके बाद ज़स्ते की मूसली में जो तांबे का तार लगारहता है उस तारके सिरेपर एक टुकड़ा बेदाग़ चांदी का बांधकर उसी चीनी के प्याले में डालदो और तांबेकी डोलची में जो तांबेका तार लगा है उसके सिरेमें जिस चीजपर मुलम्मा चढ़ाना है तारको उससे बांधकर उसी पानी में डालदो—पानी के अन्दर दोनों तारों को आपस म मिलाना न चाहिये अगर चांदी का पानी थोड़ा

हो या बैटरी की ताक़त कमहो तो उस प्याले को कोयले की आंचपर थोड़ा गरम करोगे तो चांदी चढ़ने लगेगी और जितनी देर उस चीज़ को पानी में रक्खोगे उतनीही ज्यादा चांदी उसपर चढ़ जावेगी अब उस अदद को पानी से निकालकर उसपर पालिश करदोगे तो चमकीली निकल आवेगी ॥

दूसरी हिकमत चांदी चढ़ाने की किसी चीज़पर यह है कि उस चीज़ पर पारे की कलई इस हिकमत से करनी चाहिये कि पहले पारे को नाइट्रिक एसिड में चांदी की तरह गला दो तो वह भी राख हो जावेगा उसी राख को साफ़ धोकर और दूसरे पानी के साथ मिला कर किसी चीज़पर लगाने से उसपर कलई चढ़जावेगी मगर यह कच्ची कलई कहलाती है सर्दी में कुछ देरतक रक्खे रहनेसे काली पड़जाती है लेकिन अगर किसी चीजपर इसका अस्तर देकर चांदी चढ़ाई जातीहै तो फिर पालिश करने की कोई ज़रूरत नहीं होतीहै॥

बिना बैटरी के चांदी पर सोना चढ़ाने की तरकीब यह है कि सोने के वर्कों को पहले जया में गलावो और उसी प्याले में सफ़ेद महीन टुकड़े कपड़े के भिगोकर सुखालो बाद को उन टुकड़ों को जलाकर ख़ाक करके एक डिबिया में रखलो जिस चांदी की चीज़ पर सोना चढ़ाना हो उसको खूब साफ़ करके हैड्रो क्लार्क एसिड में गोता देकर सुखालो फिर उसी अदद पर वह ख़ाक मलो जितनी देर तक चढ़ाते रहोगे उतनीही मज़बूत होगी ॥

चांदी पर सोना चढ़ाने की दूसरी हिकमत यानी क्लोराइड आफ़ गोल्ड १ हिस्से और पानी १० हिस्से एक प्याले में डालो और उस के एक तिहाई बाईकारबोनेट आफ़ पोटाश मिलाकर चूल्हे पर चढ़ादो जब घुलने लगे तब दो घंटे चूल्हे पर रहने दो फिर एक टुकड़ा

तांबे के तार से चांदी की अदद को बांधकर उस प्याले में लटकादो और देखते रहो जब तांबे की रंगत उस चांदी की अदद पर चढ़जावे तब तांबे के टुकड़े को निकालकर फेंक दो और उस चांदी की अदद को उसी पानी में फिर डालदो जितना सोना चढ़ाना चाहते हो उसी क़दर पानी में रहने देकर निकालकर जिला करलो ॥

लोहे पर मुलम्मा करने की रीति जो मुद्दत तक भी न बिगड़े यह है कि १ तोला तूतिया को और कच्चे साइनेड आफ़ पोटाश को पानी में घोलकर तांबा निकालकर उसको बैटरी के ज़रिये चांदी के मुवा-फ़िक गलाकर चढ़ालो उसके बाद उस चीज़ पर सोना या चांदी जो चाहो चढ़सक्ता है लोहे पर जबतक तांबे का पानी न चढ़ेगा तबतक कोई दूसरी चीज़ नहीं चढ़सक्ती है तांबे की रंगत तूतिया के पानी से निकल आती है मगर ख़ास तांबा गलाना कठिन है ॥

पारे की कलई का अस्तर बहुत मज़बूत होता है उसको ज्यादा दिन ठहरने वाली चीज़ों पर चढ़ाते हैं मामूली चीज़ों पर नहीं ॥

मुलम्मा गंगाजमुनी यानी एक अदद पर सोना और चांदी दोनों देखपड़ें तरकीब यह है कि पहले उस अदद पर लोहे की सलाई या पेन्सिल से फूल पत्ते वगैरह जो कुछ बनाना हो वैसेही आकार करलो उसके बाद उन्हीं आकारों पर मोम गरम करके चिपकादो बादको बैटरी से चांदी चढ़ालो तत्पश्चात मोमको पिघलाकर उन आकारों परसे निकालदो ताकि चिकनाई न रहे फिर चांदी चढ़ी हुई जगह पर मोम लगादो और उन बेल बूटों पर सोना चढ़ाकर पानी से धोके साफ़ करलो इसी तरह अगर लकड़ी पर मुलम्मा करना है तो उसपर पहले तांबा चढ़ाकर सोना चांदी चढ़ा सक्तेहो ॥

———:o:———

अक्स से तसवीर उतारना यानी फोटोग्राफी।

इस काम में बहुत इल्म की ज़रूरत नहीं होती मगर फुर्ती और होशियारी बहुत करनी चाहिये जिससे काम पूरा होजावे अब जिस तौर सूर्य की किरणें लेन्स (Lens) पर पड़ती हैं वही सब इकट्ठी होकर प्लेट पर भी आकर पड़ती हैं सिल्वर ब्रोमाइड मसाले के सबब से प्लेट पर जमजाती है फिर जैसी शक्ल होती है वैसी ही प्लेट पर खिंचजाती है जिसकी तसवीर खींचनी हो केमरे को तिगोड़ियेपर कसकर उसके सामने खड़ाकर उसका फोकस देखो और जब तक ठीक शक्ल न उस पर देखपड़े तब तक उस केमरे को घटाते बढ़ाते रहो जब ठीक होगया तब पीछे की तरफ से डार्क स्लाइड (Dark slide) लगाकर उसपर अक्स जमालो जिसे एक्सपोज़ कहते हैं फिर एक अंधेरी कोठरी में प्लेट को लेजाकर डेबलप (Develope) यानी मसाले से धोकर जमाते हैं ताकि मसाला वैसाही बनारहे उसके बाद फिकसिंग (Fixing) करते हैं जिसके करने से वह तसवीर सूर्य की रोशनी में आने से ख़राब न हो जावे अब नेगेटिब (Negative) यानी शीशे पर तसवीर तैयार होगई अब इससे जितनी तसवीरें चाहो छापते चले जावो॥

काग़ज़ जो मिले हुये तेज़ाबों से बने होते हैं उन पर तसवीर छापकर मिले हुये तेज़ाबों से धोते हैं जिस से ज्यादा तसवीर खिलकर क़ायम होजाती है फिर धूपमें बिगड़ने का डर नहीं रहता उसी काग़ज़ को कईबार साफ़ पानी से धो और सुखाकर कार्ड बोर्ड यानी काग़ज़ की तख्ती पर लेई से चिपका देते हैं जिसको मोल्डिंग कहते हैं।

क़ायदा फोकस देखने का जिसे (Focusing) फोकसिंग कहते हैं

जिसकी तसबीर उतारना हो उसके सामने केमरे को थोड़ी दूर पर रखकर क़ायम करो फिर लेन्स की टोपी निकालकर केमरे के पीछे खड़े होकर केमरे में देखो कि वह शक्ल ठीक दिखाई देती है अगर देखने से भद्दी मालूम हो तो कमरे का पेच घुमाकर लेन्स को आगे पीछे घटाने बढ़ाने से वह सूरत केमरे में जब ठीक कायम होजावे तब उसी जगह पर पेच कसदो अगर आदमी की तसबीर बनानी हो तो उनको हिदायत करो कि वह अपनी जगह पर बैठकर हिलें या हटें नहीं अगर फोकस से तसबीर ठीक न होगी तो तसबीर धुँधली दिखाई पड़ेगी फोकसिंग में उल्टी तसबीर दिखाई दिया करती है और शीशे पर भी उल्टी उतरती है लेकिन छपने पर सीधी होजाती है उड़ने वाले या चलने फिरने वाले जानवरों की तसबीर उतारने के लिये उनका फोकस करना मुश्किल होता है उस काम के वास्ते एक ख़ास केमरा होता है जिस पर फ़ौरन् ही अक्स आजाता है जब तसबीर बड़ी लेनी होती है केमर को नज़दीक रखते हैं और लेन्स को उसकी तरफ़ को बढ़ाते रहते हैं ॥

डार्क स्लाइड में प्लेट लगाने के लिये चाहिये कि एक अंधेरी कोठरी में चिराग़ जलाकर लाल शीशे की लेंपमें रक्खो जितनी बड़ी तसबीर लेना हो उतना बड़ा शीशा डार्क स्लाइड में रक्खो जिसका मसाले दार रुख़ लेन्स की तरफ़ रहे फिर डार्क स्लाइड को काले कपड़े में लपेट कर केमरे के पास रक्खो फोकस लेने के पीछे बहुत ख़बरदारी के साथ जिस से रोशनी न पड़ने पावे डार्क स्लाइड कपड़े में लिपटा हुआ पेश्तर केमरे से फोकसिंग ग्लास की स्लाइड को निकाल लो और उसी जगह डार्क स्लाइड को काले कपड़े से झांपकर केमरे में मसालेदार रुख़ लेन्स की तरफ़ रखकर स्लाइड में डालकर

ढकना स्लाइड का खोल दो लेकिन इस ढकनेके खोलने के पेश्तर लेन्स पर टोपी लगी रहनी चाहिये कि जिससे रोशनी उस पर न पड़े बाद को आसानी से लन्स की टोपी को हटाकर एक दो सेकंड के बाद ढकदो लेन्स प्लेट पर उतर जावेगी अब डार्क स्लाइड को निकाल उसी काले कपड़े में लपेट अंधेरी कोठरी में लेजावो ॥

एक्स पोजिंग (Exposing) यानी तसबीर लेने के लिये जब लेन्स की टोपी हटावो तो होशियारी रक्खो कि केमरा हिलने न पावे और डार्क स्लाइड वाले काले कपड़े से केमरे को ढकदो और ख़बर दारी रक्खो कि रोशनी केमरे के अन्दर न जाने पावे अब मालूम करो कि कितने वक्त तक एक्सपोज़ करना चाहिये यह बात प्लेट की क़िस्म और लेन्स की बनावट और वक़्पर मुनहसर होती है लेकिन मामूली कामों के लिये आदमी जितनी देर में एकसे दशतक गिन सके उतनी देर एक्सपोज़िंग में लगाना चाहिये कोई २ केमरे में एक सटर लगा होता है जो उतनी देरमें आपसे आप बन्द हो जाताहै ॥

डेवलप (Develope) अंधेरी कोठरी में लाल रोशनी के सामने डार्क स्लाइड से प्लेट को निकालकर झिलीवाला रुख़ ऊपर कर चीनीके बर्तन में रखकर साल्यूशन झिल्ली के ऊपर इस तरह डालो कि सब ठौर पर बराबर पड़जावे और जल्दी करो कि बबूला न पड़ने पावे चीनी के बर्तन को हिलाते रहो एक मिनिट भरमें प्लेट सफ़ेद या उस पर रंगत मालूम देने लगेगी कुछ मिनिट में शीशे के नीचे की तरफ़ भी रंग आजावे तब धोडालो ॥

सोल्यूशन (Solution) यह हरक़िस्म की प्लेट के वास्ते अलग अलग बनाया जाताहै इल्फर्ड प्लेटके वास्ते मामूली सोल्यूशन ठीक है जैसे (नम्बर १) नाइट्रिक एसिड २० बूंद ९ औंस पानी में घोलकर उसमें पैरो १ औंस मिलाकर उसके बाद सोल्यूशन (नम्बर २) तैयार

करो यानी सोडा क्रिस्टल २ औंस, सोडियम सल्फाइड २ औंस पुटा सियम ब्रोमाइड २० ग्रेन, गर्म पानी २० औंस मिलाकर तैयार करो उसके बाद सोल्यूशन (नम्बर १) का आधा ड्रामलो और सोल्यूशन (नम्बर २) का डेढ़ औंस फिर बाकी पानी मिलाकर सब ३ औंस बनाकर काम में लावो ।

प्लेट को धोकर दूसरे बर्तन में रखकर उसमें ३ हिस्सा फिटकरी और २० हिस्सा पानी घोलकर ५ मिनिटतक प्लेट पड़ा रहनेदो बर्तन हिलाने की कोई ज़रूरत नहीं यह धोना यानी (Clearing) क्लियरिंग कहलाता है इसके धोने से तसबीर दिखाई देने लगेगी सफ़ेदी की जगह स्याही और स्याही की जगह सफ़ेदी मालूम पड़ेगी ॥

फिकसिंग (Fixing) प्लेट को खूब साफ़ कर तीसरे बर्तन में रक्खो और यह सोल्यूशन यानी हाइपो फास्फेट आफ़ सोडा ३ औंस को पानी १० औंस में घोललो और उस में प्लेट ५ मिनिट तक या कुछ और ज्यादा देरतक प्लेट को इस सोल्यूशन में पड़ा रहने के बाद प्लेट निकालके चार पांच दफ़ा साफ़ मामूली पानी से धोकर ३ घंटे तक पानी में रखकर साफ़ करलो फिर उसे छाया में सुखालो अब नेगेटिब तैयार होगया उसी समय छाप सक्तेहो ॥

तसबीर छापना यानी प्रिंटिंग (Printing)

तसबीर छापने के वास्ते नेगिटिब प्लेट को लकड़ी के चौकठे में ऐसा रक्खो कि उसकी झिलीवाला रुख़ अंदर की तरफ़ रहे और उसी रुख़पर मसाला लगे कागज़ को लगाकर चौकठे का ढक्कन जो कमानी से लगा है बन्द करदो और रोशनी में रखदो और रोशनी की जगह ऐसी हो कि जहां न बहुत धूप और न छाया हो लेकिन शीशे पर रोशनी खूब पड़े इस तरीक़े से सूर्य की किरणें प्लेट पर पड़ेंगी और कागज़ पर छपेगी नेगेटिब पर जैसा गहरा या हलका साया

वैसाही काग़ज़ पर छपजावेगा प्रिंटके काग़ज़ को बीच में से खोलकर देखलेते हैं कि तसबीर ठीक छपी या नहीं अगर कम छपी हो तो धूपमें ज्यादा देर रहने दो लेकिन छपने के वक़् उस पर ख्याल रक्खो ज्यादा या कम वक़् न होने पावे जब तसबीर पूरी छपजावे काग़ज़ को चौकठे से निकाल एक चीनी के बर्तनमें प्रिंटेड काग़ज़ ७ मिनिट तक पानी में पड़ा रहने दो और उस पानी को बार बार बदलते रहो इसके बाद नीचे लिखे हुये सो ल्यूशन में डालो॥

नमक १ हिस्सा, फिटकरी, २ हिस्सा, पानी ४८ हिस्सा इस काम के वास्ते (P. O. P.) काग़ज़ सबसे उम्दह होता है इस काग़ज़ को अगर रोशनी में लगाओ तो कुछ हर्ज नहीं-नेगेटिब ज्यादा तेज़ हो तो धूप में रखसक्ते हो अब तसबीर सीधी बनगई॥

टोनिंग (Toning) यानी उस तसबीरको निचे लिखे हुये सोल्यूशन में डाल रक्खो जब तक कि खूब रंगत खिल न उठे सल्फोड साइनेड आफ़ अमोनिया ३० ग्रेन,क्लोराइड आफ़ गोल्ड २ ग्रेन,छना हुआ बर्साती पानी २० औंस में १० मिनिट तक धोकर इसके बाद फिकसिंग करने के वास्ते १५ मिनिट तक नीचे लिखे हुये सोल्यूशन में डालो हाइपो ३ औंस, पानी २० औंसमें घोलकर प्रिंटेड काग़ज़ को ३ घंटे उसी पानी में डाल रक्खो और पानी कई बार बदलते रहो इस धोने में जल्दी कभी न करना चाहिये नहीं तो तसबीर बिगड़ने और उसका रंग उड़जाने का डर रहताहै-टोनिंग करनेके वक़् अगर हाइपो छुई हुई अंगुली या चिकनालगी हुई अंगुली लगजावे या मसाला ख़राब हो तो लाल धब्बे तसबीर पर पड़जाते हैं इसमें चाहे जितना सोना डालोगे तो भी रंग ठीक न आवेगा-टोनिंग करने के वक़् अगर ज्यादा कापियां हों तो कापियों को फेरते रहना मिलने न पावें॥

अब तसबीर बिल्कुल तैयार होगई उसको कतर कर आरारोट की लेई से मोटे चिकने सफ़ेद कार्ड पर चिपकादो॥

तारबर्क़ी का काम यानी टेली ग्राफ़ी (Telegraph)

तारबर्क़ी के काम में प्रत्येक अक्षर के लिये जो शक्ल और शब्द मुक़र्रर किये गये हैं नीचे लिखे हुवे कायदे से मालूम होंगे यानी 'गर' से सिफ़र (०) और 'गट' से डैस (—)समझना चाहिये 'गर' का शब्द हलका और सिर्फ़ एक तरफ़ चोट देने से होता है तथा 'गट' का शब्द गम्भीर और दोनों तरफ़ आले पर चोट देने से पैदा होता है ॥

शब्द	शक्ल	अक्षर	शब्द	शकल	अक्षर
गर गट	०—	A	गर गर गर	०००	S
गट गर गर गर	—०००	B	गट	—	T
गट गर गट गर	—०—०	C	गर गर गट	००—	U
गट गर गर	—००	D	गर गर गर गट	०००—	V
गर	०	E	गर गट गट	०——	W
गर गर गट गर	००—०	F	गट गर गर गट	—००—	X
गट गट गर	——०	G	गट गर गट गट	—०——	Y
गर गर गर गर	००००	H	गट गट गर गर	——००	Z
गर गर	००	I	गर गट गट गट गट	०————	1
गर गट गट गट	०———	J	गर गर गट गट गट	००———	2
गट गर गट	—०—	K	गर गर गर गट गट	०००——	3
गर गट गर गर	०—००	L	गर गर गर गर गट	००००—	4
गट गट	——	M	गर गर गर गर गर	०००००	5
गट गर	—०	N	गट गर गर गर गर	—००००	6
गट गट गट	———	O	गट गट गर गर गर	——०००	7
गर गट गट गर	०——०	P	गट गट गट गर गर	———००	8
गट गट गर गट	——०—	Q	गट गट गट गट गर	————०	9
गर गट गर	०—०	R	गट गट गट गट गट	—————	10

दूसरे २ इशारे बोल और निशानों के लिये॥

शक्ल शब्द	अंग्रेजी बोल		माने
०० ०० ००	फुलस्टाप	fulstoy	वाक्य समाप्त
००—०	कैरक्शन	correction	कसर
००— —००	रिपीट	Repeat	क्या, दुबारा कहो
००० ००० ०००	एरर	Eror	ग़लती
—०—०—	एंटेक	Entake	बुलाना
—०००—	बाडी	Body	तार का मज़मून
०—०—०	फिनिस	Finish	मज़मून खतम
०—०००	वेट	Wait	ठहरो

इसी आला–आवाज़ निकलने का यन्त्र जिसके ज़रीये से लोग बहुत आसानी से तार का काम सीख सक्ते हैं उसके बनाने का यह कायदा है कि एक छह इंच का लम्बा और पांच इंच का चौड़ा और डेढ़ इंच का मोटा लकड़ी का टुकड़ा लेकर उसको साफ़ करलो इस को प्लेट कहते हैं इस प्लेटके दोनों तरफ़ जगह छोड़कर प्लेटके बीचो बीच में दो कीलें एक इंच का फ़ासला देकर जड़दो उन दोनों कीलों के बीच में एक लकड़ी का टुकड़ा इस तौर पर लगावो कि ढेंकी के मानिन्द होजावे और ढेंकीकी तरह हिलती रहे उस ढेंकी की लकड़ी के नीचे एक कमानी जड़दो और दोनों सिरोंपर एक २ पेंच ढेंकी की लकड़ी में और प्लेट में जड़ दो ताकि हिलाते वक्त दोनों पेंचों पर ठीक बैठकर आवाज़ निकले और उसी ढेंकी की लकड़ी में ऊपर की तरफ़ एक मुठिया लगाकर काम करो तारघरों में डेमियों में कमानी

के बदले तार का चक्कर लगादिया करते हैं जिससे मुठिया दबाने से लकड़ी आप से आप उठजाती है ॥

नये सीखने वालों को चाहिये कि ऐसी एक डेबी बनवाकर उसकी मुठिया को अंगुली से दबाकर आवाज़ पहिचानें और जल्द २ आवाज़ पैदा करने का मश्क़ करें जिससे असल मेंशीन पर काम करने में दिक़्क़त न पड़े ॥

बैटरी (Battery) एक बनाहुआ चीनीका आला होता है जिसमें तेज़ाब भरा रहता है और तांबे और जस्ते के तार एक दूसरे से लगे रहते हैं इसके अलावह तारबाबू को ख्याल रखना चाहिये कि बैटरी के प्यालों में पानी सूखने न पावे अगर पानी सूख जावेगा तो खबर नहीं जासक्ती ॥

पाजेटिव पोल (Positive pole) यह कापरवायर है जो बिजली को पैदा करता है तार की बैटरी के नीचे से निकलता है ॥

नेगेटिव पोल (Negative pole) यह बिजली को रोकता है जिंक वायर कहलाता है ॥ और जिंक प्लेट से निकलता है ॥

स्वीच (Switch) एक पीतल की कीलको कहते हैं जो दो स्टेशनों को जुदा करती है और मिला भी देती है ॥

कोयल (Coil) तार बँधेहुये दो लट्टुओं को कहते हैं ॥

आरमेचर (Armecher) जिससे आवाज बनती है ये भी दो लट्टू जुड़े हुये होते हैं ॥

स्क्रू (Screw) यह इस्ट्रूमेन्ट में छह अदद तारके लगाने के लिये होते हैं ॥

बैटरी कन्टेक्ट (Battery Contact) यह एक होता है और एलेक्टरी सिटी का ख़ज़ाना कहलाता है ॥

की (Key) यह एक होती है और तारके बुलाने की मुठिया कहलाती है ॥

लाइटनिंगडिस्चार्जर (Lighting discharge) यह एक बिजली रोकने का यन्त्र है इसके ऊपर और नीचे के प्लेट कभी मिलना नहीं चाहिये नहीं तो खबर न जासके गी ॥

बेल (Bell) पुकारने की घंटी को कहते हैं ॥

बीट (Beat) आवाज़ को कहते हैं ॥

काम सीखने की हालत में डेमी पर हरएक हर्फ़ की आवाज़ को निकालकर खूब ध्यानमें लावो और उसीपर लफ्ज़ें बनाना भी सीखो मगर सीखने के वक्त जल्दी न करना नहीं तो भूल जाया करोगे कोई दूसरा आदमी डेमी खटकावे औ तुम उस आवाज़ को सुनकर पहिंचानते जावो और एक दो तीन हरूफ़ जोड़कर लफ्ज़ बनाते जावो समझते जावो और लिखते जावो कि यह कौन लफ्ज़ हुई ऐसा न करना कि जब बहुत हरूफ़ होजावें तब लिखो फिर भूलजावो ॥

जब दूसरे स्टेशन से ख़बर आने को होती है तो उसके पहले घंटी बजती है उसके जवाब में यहां की घंटी दबाई जाती है तब वह ख़बर भेजना शुरूअ करता है ॥

एक हर्फ़ समझ लेने के बाद दूसरा हर्फ़ बोला जाता है लेकिन महाविरा करने से इतनी जल्दी होती है कि देर मालूम नहीं पड़ती— अगर कोई हर्फ़ समझ में न आवे तो उसी वक्त अपनी घंटी दबादो कि कि फिर कहो यानी रिपीट करो तब तार भेजने वाला तुम्हारी घंटी सुनकर दुबारा फिर उस हर्फ़ को कहेगा ॥

॥ इति ॥

———:❀:o:❀:-———

विश्वकर्म्म शिल्पसागर दुर्गादास कृत।

Engraved by P. David & Co. Lucknow

दुर्गादासजीकी पाषाण मूर्ति।

स्थापित विश्वकर्म्मा मन्दिर लखनऊ॥